राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक—जितेन्द्रकुमार जैन

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १२०

मीराँ - बृहत्पदावली—द्वितीय भाग

• सम्पादक •

कल्याणसिंह शेखावत, एम. ए. पी-एच. डी.

व्याख्याता—हिन्दी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय

• प्रकाशक •

राजस्थान - राज्य - संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

• • •

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

प्रथमावृत्ति १००० 1975 मूल्य रु. ८.५०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान–राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

• प्रबन्ध सम्पादक •

जितेन्द्रकुमार जैन

ग्रन्थाङ्क १२०

मीराँ - बृहत्पदावली – द्वितीय भाग

• प्रकाशक •

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९७५

• मुद्रक •

सज्जन प्रिंटिङ्ग प्रेस, सरस्वती प्रिण्टर्स, शारदा प्रिण्टर्स एवं साधना प्रेस, जोधपुर

वि. सं. २०३२ ©️ शकाब्द १८९७

विषयानुक्रम

प्रबन्धसम्पादकीय

मीराँ-बृहत्पदावली का यह दूसरा भाग पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रथम भाग सन् १९६८ में प्रतिष्ठान द्वारा ही प्रकाशित किया गया है जिसका सम्पादन सन्तसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ने किया था। बड़े हर्ष का विषय है कि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत ने मीराँ-साहित्य की इस खोजबीन को जारी रखा और बड़े परिश्रम और उत्साह से मीराँ के अनेक पदों का संकलन किया।

डॉ० शेखावत ने अपने सम्पादकीय वक्तव्य में मीराँ के पदों को लेकर प्रचलित अनेक उलझनों का सूक्ष्म विवेचन किया है। डॉ० सत्येन्द्र ने अपनी समीक्षात्मक प्रस्तावना में शेखावतजी के इस परिश्रम का यथोचित मूल्याङ्कन किया है।

मीराँ-शोधसाहित्य में यह ग्रन्थ विशेष उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

जेष्ठ कृ. ३, सं. २०३२
[28 मई, 1975]

जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक

सम्पादकीय

'मीरां वृहत्पदावली, द्वितीय भाग विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत है। प्रस्तुत संग्रह में मैंने राजस्थान की विभिन्न संस्थाओं में संगृहीत हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीरांबाई के कुछ महत्वपूर्ण पद (भजन अथवा हरजस) संकलित किए हैं। इस संग्रह का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है —

कुल पद संख्या – ३७२
सर्वथा अप्रकाशित पद – २१६
राग-रागिनी वाले पद – ५०
पूर्व प्रकाशित पदों से भाव-साम्य रखने वाले पद – ४८
पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद – ४८
परिशिष्ट - अप्रकाशित मूल पदों के १० पाठान्तर—

यह पदावली दो मुख्य विभागों में विभक्त कर दी गई है। सर्व प्रथम है मूलपाठ, जिसमें मीरांबाई के अधुनावधि अप्रकाशित पद रखे गए हैं तथा राग-रागिनियों वाले ५० पद इसके साथ ही सम्मिलित किए गए हैं।

द्वितीय खण्ड में मीरां के ऐसे पदों को संकलित किया गया है जो पूर्व प्रकाशित पदों के साथ केवल अंशतः साम्य रखते हैं। इसमें सर्वप्रथम भाव-साम्य वाले पद हैं, तत्पश्चात् पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद लिए गए हैं।

अन्त में परिशिष्ट रखा गया है जिसमें मूलपाठ के पाठान्तर तथा टिप्पणियों सहित, शब्दार्थ प्रस्तुत किए गए हैं।

ग्रन्थप्राप्ति-स्रोत—

अब मैं प्रस्तुत पदावली के प्राप्ति-स्रोतों तथा हस्तलिखित ग्रंथों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करना चाहूँगा। इस पदावली के सभी हस्तलिखित ग्रन्थों के प्राप्ति स्रोत मुख्य रूप से दो हैं —

१. राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं के संग्रह
२. वैयक्तिक रूप से संगृहीत संग्रह

राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं में भी राजकीय साहित्यिक संस्थाएं तथा गैर सरकारी संस्थाएं, ये दो उपविभाग किए जा सकते हैं।

सरकारी संस्थाएं—

राजस्थान की राजकीय संस्थाओं में, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर और उसकी जयपुर, बीकानेर आदि स्थानों की शाखाएं हैं। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर तथा उसकी दोनों शाखाओं (जयपुर और बीकानेर) के हस्तलिखित ग्रंथों से प्रस्तुत पदावली में अनेक पद लिए गए हैं।

गैर सरकारी संस्थाएं—

इन संस्थाओं में निम्नलिखित संस्थाएं हैं जिनके हस्तलिखित ग्रन्थों से इस पदावली के अनेक पद, संगृहीत किए गए हैं —

१. राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर।

२. अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, लालगढ़ पेलैस, बीकानेर।

३. भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर।

४. संत साहित्य संगम, बीकानेर।

व्यक्तिगत रूप से प्राप्त—

श्री प्रतापसिंह जी द्वारा पिलानी से प्राप्त हरजस भी प्रस्तुत पदावली में प्रस्तुत किए गए हैं।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, से प्राप्त सामग्री—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में हस्तलिखित ग्रन्थों का एक बृहत् संग्रह है। यहां संत-साहित्य की बहुत महत्वपूर्ण सामग्री है। इस प्रतिष्ठान के ५७ हस्तलिखित ग्रन्थों में मीरां-विषयक सामग्री उपलब्ध हुई। प्रतिष्ठान के कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जैसे ग्रंथांक-संख्या, ५२ (इन्द्रगढ़ पोथीखाना), १८८२, १८६०, ३२५७, ३४०८ ६२५७, १०८५० १०८५१, १०८६२, १०८६४, २५३४४, ३७६४४, आदि। मैंने प्रतिष्ठान के जिन हस्तलिखित ग्रन्थों से सामग्री संकलित की है, उनके ग्रन्थांक निम्नलिखित हैं—

३४६२२, ३७६४३, १२५७७, २५३४४, १०४५७, १८८२, १८६०, ३६१५२, ११०७७, ५२ (इन्द्रगढ पोथीखाना), १०८५१, ३७६४४, ६२५६, ७३, ३२२७४, १०८६७, १०८४७, २८२८०, २८१८७, ३४७५६, ३७०३१, ३२८४, १०८६४,

१०८३२, १०८४६, ३७९४०, ३०६०२, ३१८२४, ३१०५४, ३१०५२, ३००२६, १०८६२, १०८४६, ३७९४०, ३०६०२, ३१८२४, ३१०५४, ३१०५२, ३००२६, १५८२०, २०७७८, २०७६८, १२४२०, १२४२६, १२५८६, ५२३, ५५३, १५८०, ३४६६, ३२४, २८७, २६७ आदि ।

प्रतिष्ठान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थ रागरागिनी-पद-संग्रह हैं । यह ग्रन्थ सचित्र है और इसके पद महत्वपूर्ण हैं । इस ग्रन्थ की ग्रन्थांक-संख्या २५५३६ है । इसी ग्रन्थ से मैंने रागरागनियों वाले ५० पद प्रस्तुत पदावली में सकलित किए हैं ।

उपरोक्त हस्तलिखित ग्रन्थों का पूरा ब्यौरा नीचे दिया जाता है ।

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	विवरण	भाषा	लिपि-समय	विशेष
१.	५२	भजनसंग्रह- (मीरां, चंद्रसखी आदि के)	हिन्दी,राज०	२०वीं सदी	इंद्रगढ पोथी खाने से प्राप्त पत्र सं० १-५०
२.	१८८२	मीरां	व्रज., हिन्दी, गुज०	१९वीं सदी	
			व्रज,हिन्दी,राज.	,, ,,	
३.	१८६०	,,	,,	१८६०	पत्र सं० २०
४.	३४०८	पद-संग्रह (मीरां, कबीर आदि)	,,		
५.	६२५६	पद-संग्रह (काव्य)	राजस्थानी	१८वीं ,,	पत्र सं० ११२
६.	१०८४७	मीरां के पद, गोरल ६,३०,२७) आदि	,,	१९०६ वि०सं०	
७.	१०८४६	पद आदि (२६, ४१)	,,	१९३१ तथा १९१६	पत्र सं० ८, ६ तथा ३१
				१९०२	पत्र सं० ६,१४,४४
८.	१०८५१	हरजस	,,	१८६८	पत्र सं० २-३३
९.	१०८६२	पद(मीरां कबीर आदि)	,,	१८६७	पत्र सं० ४५०
१०.	१०८६४	भजन होरी	,,	१८वीं	पत्र सं० ११४-१८६
११.	१२५७७	पद आदि (मीरां कबीर)	हिन्दी राज०		
१२.	२५३४४	पद-सग्रह (,, ,,)	हिन्दी, राज.	१८३६ वि०सं०	पत्र सं० १

१३. २५५३६ राग पद संग्रह(मीरां आदि) राजस्थानी १६ वीं

१४. २८१८७ ,, ,, (,, ,,सूर) हिन्दी १६वीं पत्र सं. १

१५. २८३८० ,, ,, (मीरां,गंगादास) राजस्थानी ,,

१६. ३१०७७ राग पद संग्रह(मीरां-आनंदघन) ,, १८३६ पत्र सं० १२४

१७. ३२५७४ हरजस (मीरां) ,, १६वीं पत्र सं० ४१

१८. ३४७५६ कविता संग्रह(काव्य) हिन्दी १६वीं

१९. ३४६९२ हरजस (मीरां आदि) × ×

२०. ३६१५० पद संग्रह(मीरां आदि) ,, ,,

२१. ३७०३१ पद रागरागनी(,, ,,) हिन्दी, राज. १६वीं ४१ से २४३ तक

२२. ३७६४४ पद संग्रह (,, ,,) राजस्थानी १६वीं पत्र सं. १०२

—आदि आदि

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जयपुर—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर की जयपुर शाखा के ३ हस्तलिखित ग्रन्थों से मैंने, मीरां के ३५ पद संकलित किए हैं। यहां के एक हस्तलिखित ग्रन्थ के साथ दो नवीन कागजों पर मीरां का बारहमासी वर्णन आदि भी दिया गया है। इस शाखा के कुछ पद अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन हस्तलिखित ग्रन्थों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत है —

ग्रंथाङ्क	पद-संख्या	कर्ता	विवरण	लिपि-समय
८	१२	मीरां	स्फुट पद	वि० सं० १८८६
२७	२	,,	स्फुट पद संग्रह	१९वी अदी
७३	३	,,	,, ,, ,,	१९५१ बि. सं.
७३	१७	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,

उपरोक्त हस्तलिखित ग्रन्थों के साथ ही ग्रन्थांक १३८ वाला एक गुटका भी यहां उपलब्ध है, जिसमें मीरां रचित बारहमासी (विरह की) दी गई है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान बीकानेर—

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर की दूसरी शाखा बीकानेर में है। इसमें २० हजार के लगभग हस्तलिखित ग्रन्थ हैं किन्तु अधिकांश संस्कृत अथवा

जैन साहित्य से सम्बन्धित हैं। मैंने इस संस्थान के अनेक ग्रन्थों का निरीक्षण किया – जिनमें से १० हस्तलिखित ग्रंथ, मेरे लिए महत्वपूर्ण थे। इन १० ग्रन्थों में से केवल एक हस्तलिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक १०४५७) में 'मीरां पद संग्रह' का उपलब्ध हुआ, जिसमें से केवल ८ ।१ ग्रहण किए गए।

ये सभी पद अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मैंने जिन हस्तलिखित ग्रथों को इस हेतु देखा, उनकी संख्या निम्नलिखित है – २८६६, पद संग्रह, ६६७६, होरी संग्रह, १०२६६, पदादिसंग्रह. १००५७, पद संग्रह. ५७६६, पद सवैया आदि, ७४५५,८६१४ कबीर आदि के पद, ८६२३ संतों की पदावली आदि।

राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के पश्चात्, राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण गैर सरकारी साहित्यिक संस्थान हैं, जिसमें १२ हजार के लगभग ग्रंथों का संग्रह है। इनमें से अधिकांश ग्रंथ राजस्थानी भाषा के हैं। इस संस्थान में ग्रन्थों के साथ-साथ कुछ महत्वपूर्ण प्राचीन चित्र भी हैं, जिनमें मीरां का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण चित्र भी है।

इस संस्थान से भी मीरां के अनेक पदों का संकलन किया गया है। इस संस्थान के १८५ ग्रन्थों का अवलोकन मैंने किया जिनमें से कुल ४२ हस्तलिखित ग्रन्थों से मीरां के पदों का संकलन किया गया। मैंने संस्थान के जितने ग्रन्थों से सामग्री ली उनके ग्रन्थांक निम्नलिखित हैं।

१०६, १३०, १३१, १४५, १८८, २०६, २८८ २८६, ५६४, ६१७, १०५७, १०६७, १६७६, २८८४, २८६७, ४६७०, ४६७६, ४८५४, ६२६६, ६६६५, ६८४६, ७१४२, ७१४३, ७१७३, ७१७५, ७१८७, ७१८६, ७१६१, ७१६७, ७१६६, ७५७३, ७६३६, ७६६४, ७६६५. ८२५४, ८२६०, ८२६१, ८३६६, आदि।

इस तरह उपरोक्त ४२ हस्तलिखित ग्रंथो से मीरां के कुल पद संकलित किए गए, जिनमें अधिकांश चूंकि पूर्व प्रकाशित संग्रहों से पूर्णतया मिलते थे अतः इस संग्रह में स्थान न पा सके।

उपरोक्त कुछ हस्तलिखित ग्रंथों का पूर्ण व्यौरा—

क्रम सं०	ग्रथ का नाम	कर्ता	विषय	भाषा	लिपि सं०	पत्र सं०	माप विशेष
१६६७	मीरां पद संग्रह	—	भक्ति	राज०	१७ वी.	४	१२"×६"
२८८४	मीरां के पद	—	संतसाहित्य	"	—	२८	६½"×४½"
२८६७	मीरां के पद (स्फुट सग्रह)	—	प्रार्थना भजन	राज. संस्कृ०	—	६४	३½"×२¾"
४६७०	मीरां-पद	मीरां	काव्य	राज०	१८२६	२	७"×६.५"
४८५४	मीरां के हरजस	,,	भजन	"	—	४	५"×४.८"
६२६६	संत पदावली संग्रह	—	संतसाहित्य	ब्रज राज.	—	२१०	८"×५'
६६६५	मीरां के पद	,,	कृष्णभक्ति	राज०	—	१	५.५"×३ ८"
६८४६	मीरां के पद	मीरां बाई	भक्ति पद	,,	१६ वीं	५	११.७"×५"
७१४२	मीरां आदि संतो के स्फुटपद	—	सत्संग	,,	—	१०	२५"×१२.५"
७१७३	,, ,, ,,	—	,,	,,	—	८१	,, ,,
७१७५-३	स्फुट पद (मीरां कबीर आदि)		,,	,,	१६२८	६	१७ ५"×११.३"
७१८७-६	,, ,, (मीरां-संतदास आदि)		हरजस	,,	१८३४	३	१८.५"×११.३"
७१८६	,, ,, (मीरां, सूर आदि)		संत साहित्य	,,	—	४२	१७ ५"×१२ ५"

आदि ।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, लालगढ़ पेलैस. बीकानेर—

बीकानेर के लालगढ़ पेलैस स्थित, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था है। जहां राजस्थानी साहित्य. संस्कृत साहित्य, ज्योतिष तथा इतिहास आयुर्वेद आदि के अत्यंत महत्वपूर्ण-हस्तलिखित ग्रंथ सुरक्षित हैं । मुझे मीरां के पदों वाले भी कुछ महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ यहां देखने को मिले। इस संस्थान के कुल ८ हस्तलिखित ग्रंथों से मैंने कुल ११७ मीरां के पद संगृहीत किए, जिनमें कुछ पद अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां से प्राप्त सभी पदों की अपनी-विशेषता है।

यहां के जिन हस्तलिखित ग्रंथों से मैंने सामग्री ली है उनके ग्रंथाङ्क निम्न हैं—
११२. ११३. १७०. १७२. १७७. १६०, २०६, २२३. आदि।

यहां से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों का पूरा ब्यौरा निम्न प्रकार है—

हिन्दी ग्रंथों की सूची—

अनुक्रमाङ्क	संकलित पद सं०	विशेपांक	पत्रसंख्या	विवरण	सवत् आदि
१७०	(४८)	१७०	१८	मीरां आदि	फुटकर कवित्त
१७२	(६ पद)	१७२	(३-३२)	,,	सं० १६४६
१७७	(२ पद)	१७७	४६	,,	,,
१६०	(११ पद)	१६०	१३ (३-१५)	,,	,,
२०६	(५ पद)	२०६	२२६	,,	,,
२२३	(२ पद)	२२३	८६	,,	,,

राजस्थानी ग्रंथों की सूची—

१२	(१७ पद)	११२	६२	हरजस(मीरां के पद)	सं० १६४७
१३	(३६ पद)	११३	२५०	(,, ,, ,,)	सं० १६६१

कुल पद (इस पदावली हेतु) १२७

भारतीय विद्यामंदिर, बीकानेर—

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के संग्रह में भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें से एक हस्तलिखित ग्रंथ जिसका ग्रंथाङ्क दिया हुआ नहीं था, बहुत महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ से मैंने ४३ पद संकलित किए। इनमें से २१ पद पूर्व प्रकाशित पदों से कुछ साम्य रखने वाले थे शेष सभी नवीन कहे जा सकते हैं। इस का लिपि समय दिया हुआ नहीं हैं। किन्तु १८ वीं शताब्दी का यह गुटका लगता हैं और कोई मीरां-सम्बन्धी हस्तलिखित ग्रंथ यहां देखने में नहीं आया।

संत साहित्य संगम, बीकानेर—

रामस्नेही सम्प्रदाय द्वारा व्यवस्थित किया जाने वाला यह साहित्य संगम, अभी अपनी शैशवावस्था में है। यहां अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जिनमें संत साहित्य से सम्बंधित सामग्री भरी पड़ी है। इस संस्थान द्वारा अनेक हस्तलिखित ग्रंथों को संगृहीत तो किया गया है किन्तु अभी तक उनके ग्रंथाङ्क नहीं लग सके हैं तथा उनकी सूची भी बननी शेष है। इस संस्था के पीछे रामस्नेही संत श्री भगवद्दासजी शास्त्री

की लगन, बुद्धि और उत्साह है, जिससे आशा की जा सकती है कि यह संगम निकट भविष्य में ही सत साहित्य को बहुत कुछ दे सकेगा।

इस संस्थान के कुछ हस्तलिखित ग्रंथों से (जिनके ग्रंथाङ्क लगे हुए न होने के कारण नहीं दिये जा सके हैं। मैंने ३६ पद संकलित किए। यहां से प्राप्त अनेक पद महत्वपूर्ण हैं।

सम्पादन–व्यवस्था–

प्रस्तुत पदावली को मैंने व्यवस्थित तथा विज्ञानसम्मत बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। पदावली के समस्त पदों को अकारादि--क्रम से व्यवस्थित कर, पाठकों के समक्ष रखा है। संयुक्ताक्षरों से प्रारम्भ होने वाले पदों को अक्षर-विशेष के अन्त में स्थान दिया है।

मैंने अपनी ओर से इस पदावली में अत्यन्त अल्प संशोधन, परिवर्तन अथवा संवर्द्धन किया है। मेरी यह मान्यता रही है कि प्रस्तुत पदों को अपनी समस्त कमियों के साथ मूल रूप में ही विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाय तथा अपनी ओर से किंचित् मात्र भी अनावश्यक संशोधन मूलपाठ में न किया जाय किन्तु पदों की मात्रापूर्ति अथवा लय को ठीक करने अथवा लिपिकार के दोषों को दूर करने के लिए अनुस्वार और ह्रस्व–दीर्घ–सम्बन्धी कुछ सुधार अवश्य करने पड़े हैं। साथ ही सम्पादक के कर्तव्य–निर्वाह--हेतु तथा इस पदावली को केवल संकलन-मात्र बनने से बचाने के लिए भी जो परिवर्तन आवश्यक समझे गए, मुझे करने पड़े हैं। इनके अतिरिक्त मैंने और कोई विशेष हेरफेर प्रस्तुत पदों में नहीं किया है।

जिन पदों के साथ रागरागिनियां दी हुई थीं उन्हें उसी रूप में पाठकों के समक्ष रख दिया है और जिन पदों में रागरागनियों का अभाव था उन्हें भी उसी रूप में रखा गया है जिससे कि उनके स्वरूप में कोई आरोपण दिखाई न दे। किन्तु इस मान्यता के निर्वाह में उस समय अवश्य विघ्न पड़ा है जबकि राग-रागिनवियों के पद इस पदावली में सम्मिलित किए गए।

मीरां के रागरागिनियों से युक्त ५० पद मुझे राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के हस्तलिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक २५५३६) से प्राप्त हुए थे। नमें से कुछ पदों की तो रागरागनियां दी हुई हैं और शेष में केवल राग……

लिख कर छोड़ दिया गया है। यहां मैंने यह प्रयास अवश्य किया है कि इन सभी पदों की रागरागिनियां लगवा दी जायें किन्तु ऐसा करते समय भी पदों की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को अक्षुण्ण बनाये रखने का पूर्ण प्रयास किया गया है। रागरागनी वाले पद जो कि * से चिह्नित हैं, में रागरागनियां सम्पादक ने श्री बद्रीदासजी पुरोहित (गुणियां) से लगवाई हैं।

पाद-टिप्पणी (फुटनोट)-व्यवस्था-

प्रस्तुत पदावली के मूलपाठ को अधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से मैंने इस संग्रह में 'फुटनोट' की व्यवस्था रखी है। प्रत्येक पद के नीचे सम्पादक-पाठ, शुद्ध पाठ, शब्दार्थ और किन्हीं किन्हीं पदों के साथ (जहां आवश्यक समझा गया है) टिप्पणियां भी दे दी गई हैं, किन्तु व्यवस्था की दृष्टि से प्रत्येक पद के नीचे केवल सम्पादक-पाठ ही दिया गया है। शेष शुद्ध पाठ, शब्दार्थ और टिप्पणियां परिशिष्ट में रखी गई हैं। इसके साथ ही प्रत्येक पद के नीचे ग्रन्थांक और कहीं-कहीं पत्रांक तक भी दे दिये हैं।

सम्पादकीय पाठ रखने का कारण मेरी भाषागत मान्यता ही है। मीरां के पदों की मूल भाषा तत्कालीन राजस्थानी है तथा अन्य भाषाओं में जो मीरांबाई के पद मिलते हैं वे सभी राजस्थानी भाषा के मूल पदों के रूपांतर, पाठांतर अथवा प्रतिलिपि हैं। अतः राजस्थानी भाषा के मूल शब्द ही इन पदों की आत्मा हैं। इस कारण इन पदों में जहां-जहां मुझे लगा कि राजस्थानी शब्द मूल रूप में नहीं हैं (विकृत अथवा रूपांतरित हैं),मैंने उसे सम्पादक-पाठ में शुद्ध राजस्थानी शब्द में परिवर्तित कर दिया है। जैसे ल को ळ में, चरन को चरण में आदि-आदि। साथ ही जहां जिस भाषा-विशेष का शब्द विकृत मिला, उसे भी उस भाषा-विशेष के मूल शब्द में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया है। सम्पादकीय पाठ के द्वारा शब्दों के विकृत स्वरूप को सुधारने का प्रयास भी किया गया है।

इन पदों के संकलनार्थ मैंने जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर के कुल २३६ हस्तलिखित ग्रन्थों को देखा। इन स्थानों की अनेक सरकारी और गैर सरकारी (साहित्यिक संस्थाओं)के समस्त हस्तलिखित ग्रन्थों में से कुल हस्तलिखित ग्रन्थ ऐसे थे जिनसे मुझे मीरां के पद (भजन अथवा हरजस)-विषयक सामग्री प्राप्त हुई।

वैसे तो सभी संस्थाओं के पास अपने हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचिपत्र (सूची रजिस्टर) थे, कुछ संस्थाओं की तो ग्रन्थ-सूचियां प्रकाशित भी हो चुकी हैं (जैसे अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर तथा राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर आदि) किन्तु सन्त-साहित्य मंडल, बीकानेर के ग्रन्थों की न तो सूचियां ही उपलब्ध हुईं और न सूची रजिस्टर ही। अतः संत-साहित्य-मंडल, बीकानेर से प्राप्त समस्त पदों के ग्रन्थांक नहीं दिये जा सके हैं। मैंने समस्त पदों के ग्रन्थांक, उस संस्था-विशेष की 'सूची के रजिस्टर' के अनुसार ही दिये हैं।

इन सभी स्थानों के हस्तलिखित ग्रन्थों में प्राप्त कुल हस्तलिखित ग्रन्थों से मैंने कुल ११६ पद(भजन अथवा हरजस)संकलित किए। इन समस्त पदों को, उस ग्रन्थ विशेष के पूर्ण विवरण-सहित मैंने बड़ी सावधानी से अलग लिपिबद्ध कर लिया। इस तरह अलग-अलग स्थानों की, भिन्न-भिन्न संस्थाओं के भिन्न-भिन्न हस्तलिखित ग्रन्थों के पदों का संकलन किया गया। जब सभी स्थानों के हस्त-लिखित ग्रन्थों से मीरां के सम्पूर्ण पदों को लिपिबद्ध कर लिया, तब सभी पदों की संस्थान-विशेष के आधार पर अकारादिक्रम से सूचियां तैयार कीं। फिर एक स्थान-विशेष की, समस्त संस्थाओं की सूचियों से, एक (स्थान-विशेष की)पूर्ण सूची तैयार की। इस तरह जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर, इन तीन स्थानों की तीन सूचियां बनीं। पुनः इन तीन सूचियों के आधार पर, एक मुख्य सूची तैयार की। ये सभी सूचियां अकारादि-क्रम से तैयार की गई थीं। इस प्रकार जोधपुर, बीकानेर और जयपुर के हस्तलिखित ग्रन्थों से प्राप्त, मीरां के सभी पदों की अकारादि-क्रम से, एक सूची बन गई, जो मुख्य सूची थी।

तत्पश्चात् अद्यावधि प्रकाशित मीरां के सभी संग्रहों की अकारादि-क्रम से सूचियां बनाईं। इनमें से कुछ संकलित ग्रन्थों की तो अकारादिक्रम की सूचियां,संग्रह विशेष में ही उपलब्ध हो गईं तथा शेष संग्रहों की सूचियों को तैयार किया गया। जब पूर्व प्रकाशित मीरां के सभी संग्रहों की सभी सूचियां बन गईं तब स्फुट रूप से, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य पुस्तकों में प्रकाशित मीरां के समस्त पदों की अकारादि क्रम से सूचियां तैयार कीं। इस तरह मीरां के अब तक प्रकाशित सम्पूर्ण पदों की अकारादि-क्रम से समस्त सूचियां तैयार कर ली गईं

जब मीरां के पूर्व प्रकाशित चियां बन गईं तब इन्हें हस्तलिखित ग्रंथों की मुख्य सूची से मिलाया गया। जो पद पूर्व प्रकाशित पदों से मिलते गए, उन्हें अलग छांट लिया गया और न मिलने वाले पदों को अलग। पुनः पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों की सूचियों से न मिलने वाले हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची के पदों को, पूर्व प्रकाशित संग्रह-सूचियों से मिलाया गया जिससे कि भूलवश बचे हुए पद भी पुनः छांटे जा सके। इस बार भी जो पद नहीं मिले उन्हें अन्तिम बार पुनः इन सूचियों से मिलाया। इस बार पूर्व प्रकाशित संग्रहों की सूचियों से न मिलने वाले पदों को, उन ग्रंथों के सम्पूर्ण पदों से मिलाया गया। तत्पश्चात् इन पदों को प्रस्तुत पदावली के मूलपाठ में अप्रकाशित पदों के रूप में प्रस्तुत कया गया।

मीरांबाई के अद्यावधि ५१ से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट रूप से प्रकाशित मीरां के पदों की संख्या भी कम नहीं है। अतः इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कार्य कितना श्रमसाध्य था।

पदों को इस प्रकार छांटते समय मैंने अनुभव किया कि कुछ पदों की प्रथम पंक्तियों का थोड़ा रूप-परिवर्तन होते ही प्रथम पंक्ति के अकारादिक्रम में अन्तर आ जाता है। चूंकि प्रथम पंक्ति के प्रथम अक्षर से ही अकारादिक्रम की सूचियां तैयार की जाती हैं, अतः इस थोड़े से रूप-परिवर्तन के कारण उस पंक्ति का क्रम बदल जाता है और पद का अकारादिक्रम बिगड़ जाता है, जिससे अभीष्ट पद उस स्थान पर प्राप्त नहीं होता, जहां उसे हस्तलिखित ग्रन्थों की अकारादिक्रम की सूचियों के अनुसार होना चाहिये। इस तरह एक वर्ण अथवा अक्षर का अन्तर पड़ते ही पूरे पद को खोजना कठिन हो जाता है। इसके लिए एक ही पद की प्रथम पंक्ति में प्राप्त सभी शब्दों को, पद की प्रथम पंक्ति का, प्रथम अक्षर मान कर, पद की खोज की गई। इस तरह चार-चार, पांच-पांच शब्दों को प्रथम पंक्ति का प्रथम अक्षर मान कर खोज करनी पड़ी। इस कार्य में श्रम और समय दोनों ही अधिक लगे।

इतना करने के पश्चात् मीरां के हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त, पदों की एक ऐसी सूची बन सकी, जिसे सम्प्रति अप्रकाशित पदों की पूर्ण सूची कहा जा सकता है। यद्यपि मैं ऐसा कोई दावा तो नहीं कर सकता कि पूर्वप्रकाशित मीरां

का कोई भी पद इस पदावली के मूलपाठ में न आया होगा, किन्तु मैंने अपनी ओर से पूर्ण सतर्कता बरती है कि अनावश्यक रूप से पदों की आवृत्ति न हो।

रागरागिनियों के प्रस्तुतीकरण के समय भी पूरी सावधानी बरती गई है कि अनावश्यक पदों की पुनरावृत्ति न हो, किन्तु ऐसे पदों को प्रस्तुत करते समय जो कि राग-रागिनियों की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपर्ण ज्ञात हुए, इस नियम में ील भी दी गई है।

मूलपाठ के पश्चात् दिये गए पदों को, पूर्वप्रकाशित मुख्य ग्रंथों के पदों से मिला कर यह बताने का प्रयास भी किया गया है कि किस पद का कितना अंश पूर्वप्रकाशित, किस संग्रह के किस पद से, किस पृष्ठ पर, कितना मिलता है और कितना नहीं।

मूल पाठ-

मीरां के पद मुख्य रूप से दो परम्पराओं में प्राप्त होते हैं-

प्रथम है (१) मौखिक अथवा लौकिक परम्परा और

द्वितीय है-(२) लिखित परम्परा।

प्रस्तुत संग्रह में मीरां के लिखित परम्परा से प्राप्त पदों को ही स्थान दिया गया है। इस पदावलीका प्रस्तुतीकरण मैंने अपने कुछ सिद्धांतों के आधार पर है।

पदों की मौखिक अथवा लौकिक परम्परा से लिखित-परम्परा कहीं अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होती है। इसी कारण मैंने मुख्यतः हस्तलिखित ग्रंथ से प्राप्त मीरां बाई के पदों को ही इस पदावली में स्थान दिया है। हां, पिलानी से प्राप्त मीरां के केवल- ६. हरजसों जो कि लौकिक अथवा मौखिक परम्परा के हैं, इस संग्रह में अवश्य स्थान पा गए हैं। इन हरजसों को प्रस्तुत पदावली में स्थान देने का कारण, इन हरजसों को छ ऐसी विशेषताएँ हैं जो कि प्रायः लिखित परम्परा के पदों या हरजसों में प्राप्त होती हैं।

मुख्य रूप से मैंने राजस्थानी भाषा विशेष कर मारवाड़ी में प्राप्त पदों (भजनों, हरजसों.) को ही इस संग्रह में स्थान दिया है। मीरां के पदों के अधुनावधि जितने भी संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उनमें से अधिकांश में मीरां की भाषा और

स्थान-विषयक चर्चा अवश्य हुई, है किन्तु उसका पूर्णतया निर्वाह उन संकलनों में नहीं हो पाया है। मीरां की अपनी भाषा राजस्थानी थी और उसमें भी मारवाड़ और मेड़ता की तत्कालीन लोक-प्रचलित भाषा होने के नाते अपना विशेष महत्व रखती है। यही भाषा मीरां की अपनी भाषा है अर्थात् राजस्थानी भाषा की मारवाड़ी (विशेष रूप से मेड़ता क्षेत्रकी)बोली ही और उस पर कुछ मेड़ता की बोली के प्रभाव से युक्त भाषा ही,मीरां की भाषा कही जा सकती है। यद्यपि उसमें ब्रज और गुजराती का भी प्रभाव द्रष्टव्य है। अतः मेरी दृष्टि में मीरां के वे ही पद अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होने चाहिएँ जो राजस्थानी में हैं।

मीरांबाई के उन्हीं पदों को मैं प्रामाणिकता अथवा विश्वसनीयता के अधिक समीप समझता हूँ जो मीरांबाई के जीवन से सम्बन्धित स्थानों में प्राप्त हैं। राजस्थान मीरां की जन्मस्थली है और उसमें भी मेड़ता और जोधपुर का विशेष महत्व है। राजस्थान में मेड़ता और जोधपुर के साथ बीकानेर, चित्तौड़, उदयपुर और जयपुर, मीरां के पदों के प्राप्ति-स्थानों में अपना विशेष महत्व रखते हैं। इसी कारण मैंने यह निश्चय किया था कि सम्पूर्ण राजस्थान के हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीरां के सभी पदों का संकलन-सम्पादन किया जाय। इसी निश्चय के परिणामस्वरूप प्रस्तुत पदों का संकलन-सम्पादन हुआ है। अब तक राजस्थान के (मीरां से सबंधित स्थानों की प्राथमिकता के आधार पर) प्रमुख शहरों तथा जोधपुर बीकानेर, तथा जयपुर के हस्तलिखित ग्रंथों से मीरां के पदों को संकलित कर लिया गया है, किन्तु इनमें भी 'पोथीखाना' जयपुर और 'पुस्तक प्रकाश' जोधपुर की सामग्री सम्मिलित नहीं हो सकी है। इस सामग्री की पूर्ण प्राप्ति होते ही उसे भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की पूर्ण चेष्टा की जायेगी। इसके साथ ही उदयपुर, चित्तौड़, धोली बावड़ी और अलवर-भरतपुर की सामग्री का भी सकलन किया जा रहा है, जिससे कि सम्पूर्ण राजस्थान की मीरां-विषयक (हस्तलिखित ग्रंथों में प्राप्त) सामग्री विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत की जा सके।

तत्पश्चात् राजस्थान के उपरोक्त स्थानों से ही, मीरां की मौखिक परम्परा अथवा लौकिक परम्परा से प्राप्त सामग्री को प्रस्तुत करने की योजना है; जिससे कि सम्पूर्ण राजस्थान की, मीरां-विषयक सम्पूर्ण (लिखित तथा मौखिक दोनों प्रकार की) सामग्री पाठकों के समक्ष आ सके।

इस तरह समस्त राजस्थान की मीरां विषयक सम्पूर्ण सामग्री सामने आने

पर, मीरां की पूर्ण 'प्रामाणिक पदावली' के प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया जायेगा।

मीरां के पदों के संकलन का कार्य तभी पूर्ण कहा कहा जा सकेगा जब कि, भारत के अन्य राज्यों से प्राप्त मीरां के लिखित तथा मौखिक परम्परा के पदों के साथ ही, विदेशों में उपलब्ध, मीरां के लिखित परम्परा के पदों को भी प्रकाशित किया जाय। लेखक इस सामग्री को भी जुटाने में प्रयत्नशील है । संभव है, इस कार्य में कुछ समय और लग जाय, किन्तु इस सामग्री को प्रकाशित करने के लिए, लेखक पूर्ण प्रयास करेगा। इतना होने पर ही मीरांबाई की पूर्ण पदावली को प्रस्तुतीकर क।जायेगा।

लेखक इस बात के लिए भी प्रयत्नशील है कि मीरां के सम्प्रति प्रकाशित सभी सग्रहों की एक पूर्ण सूची तैयार की जाय जो मीरां के अब तक प्रकाशित पद का 'कैटलाग' साबित हो सके।

किसी स्थान-विशेष से सम्बंधित मीरां के पदों को छांटते समय मैंने यह पाया कि ऐसे अनेक हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो लिखे तो किसी दूसरे स्थान पर गए हैं, किन्तु अभी सुरक्षित किसी अन्य स्थान पर हैं। इस तरह वे मूल स्थान से अन्यत्र चले गए हैं, किन्तु इस स्थानान्तरण से उनमें कोई अंतर नहीं आया है। इसीलिए यद्यपि मेड़ता से प्राप्त किसी हस्तलिखित ग्रंथ से प्रस्तुत पदावली का कोई पद नहीं लिया गया है, किन्तु जोधपुर और बीकानेर से प्राप्त अनेक हस्तलिखित ग्रंथों के मेड़ता में लिखित होने का उल्लेख है, अतः उन्हें मेड़ता से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों में माना गया है।

मीरांबाई के पदों में एक भाव-साम्य मिलता है । इस आधार को ध्यान में रख कर भी, प्रस्तुत पदावली का सकलन हुआ है। एकसा भावसाम्य रखने वाले पदों को यहां विशेष महत्त्व दिया गया है । जहाँ पदों के भावों में गतिरोध लगा, उसे प्रक्षिप्त अंश समझ कर, अलग छांटने का प्रयास भी किया गया है। इस भावसाम्य पर विचार करते समय,मीरां के पदों में कृष्ण के प्रति पाये जाने वाले माधुर्यभाव, बंसी और राधा के प्रति पाये जाने वाले-सौतिया-भाव, साधु के प्रति भक्तिभाव, उद्धव के प्रति सम्मानभाव आदि पर भी विचार किया गया है। यद्यपि भाव-विशेषता वाले पदों को एक स्थान पर रखने का भी विचार था किन्तु अकारादिक्रम अपनाने के कारण ऐसा नहीं किया जा सका।

मीरां का जीवनवृत्त और काव्य, दोनों ही जब अद्यावधि विवादास्पद हैं, तब हस्तलिखित ग्रंथों में प्राप्त मीरां के-पदों से वर्णित स्थानों और घटनाओं का एक विशेष महत्त्व है। चूंकि ऐसे पदों के आधार पर मीरां के जीवनवृत्त और काव्य पर प्रकाश डाला जाना चाहिए जिनका कि इतिहास अनुमोदत कर देता है, अतः इस विशेषता को भी ध्यान में रख कर इस पदावली को संकलित किया गया है।

मीरां मूलरूप में भक्त थी। अपने अलौकिक सांवरिया प्रियतम गिरधर नागर के प्रति उमड़ती अनुभूति को, मीरां ने जिन शब्दों में अभिव्यक्ति दी है, उनमें गेयता की प्रधानता होनी चाहिए। यद्यपि इस पदावली के सभी पद लिखित परम्परा के हैं, किन्तु गेयता इनमें अक्षुण्ण है। इन पदों की गेयता मौखिक अथवा लौकिक परम्परा से प्राप्त पदों से भी अधिक सुरक्षित है। इतने प्राचीन और सर्वथा नवीन-पदों के लिपिबद्ध स्वरूप को भी जब राग-रागिनी के अनुसार गाया जाता है, तो वे अपनी गेयता में पूर्ण उतरते हैं। यह इन पदों की सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रस्तुत मीरां-बृहत्पदावली भाग २ को हिन्दी-साहित्य को प्रस्तुत करने में अनेक विद्वानों के आलेखों ने मुझे प्रेरणा दी है।[1] साथ ही हिन्दी-जगत में

---

१. (क) "सम्पादन कार्य इतना सरल नहीं। उच्चतम कोटि की ईमानदारी इसकी पहली शर्त है। यह माना कि प्राचीन प्रतियों में विशेषकर जब छपाई का साधन नहीं था, ग्रंथ हस्तलिखित रूपों में ही प्राप्त होते थे, अक्षर सर्वथा सुन्दर और स्पष्ट नहीं मिलते, फिर सम्पादक यदि शुद्धाशुद्ध के अपने निजी ज्ञान का सहारा न ले तो क्या करे ? किन्तु इस ओर भी श्रेयस्कर नीति यह होगी कि सम्पादक को जो पाठ जिस रूप में मिले हों, मूल आवृत्ति में उन्हें वह ज्यों का त्यों रख दे और अपने सुझावों को टिप्पणी के रूप में दे दे। इसका फल यह होगा कि आगे काम करने वालों को सच्चा प्रकाश मिलेगा और शुद्धाशुद्ध के निर्णय में वह नवप्राप्त सामग्री का अधिक विवेकपूर्ण उपयोग कर सकेगा। अपने पूर्व के सम्पादकों द्वारा दी गई टिप्पणियों का भी वह सच्चा समादर कर सकेगा और जहां तक सम्भव होगा उससे पथ-प्रदर्शन भी प्राप्त करेगा।"

—ललितप्रसाद सुकुल-मीरा स्मृति ग्रंथ-पृ० (न)

हस्तलिखित ग्रंथों के आधार पर तैयार की गई मीरां पदावली के अभाव के विभिन्न संकेतों ने मुझे इस कार्य की ओर प्रेरित किया।[1] प्रस्तुत पदावली को पाठकों के समक्ष रखते समय मैंने अनेक विद्वानों की आशाओं और आकांक्षाओं का भी पूर्ण ध्यान रखा है।

(ख) "अभी तक पद-संग्रह की हस्तलिखित प्रतियों को खोज कर उनमें कौन से पद किस संवत् की लिखी हुई प्रति में मिलते हैं व उसका पाठ क्या है, इस तरह का वैज्ञानिक अनुसंधान और संपादन नहीं हुआ है। इधर-उधर से जिसको जितने पद मिले संग्रह करके छपवा दिये और अपनी मति के अनुसार उन पदों का पाठ दे दिया।"—हिन्दुस्तानी (त्रैमासिक) भाग १९ अंक ४ अक्टू-दिस. १९५८ पृ. ६८.

१. (क) "भारत की भक्त कवयित्रियों में मीरांबाई की सर्वाधिक प्रसिद्धि है। उनके पदों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं पर उनके संग्रह एवं सम्पादन का आधार क्या है, यह सम्पादकों और प्रकाशकों ने अपने ग्रंथों में स्पष्ट नहीं किया है। अधिकांश पद-संग्रह लोक-मुख पर प्रचलित भजनों का है पर कहां से और किन व्यक्तियों से ये सगृहीत किए गए और इनके गाने वालों की उम्र क्या रही है, इत्यादि बातों पर प्रभाव नहीं डाला। हस्तलिखित प्रतियों से भी जिन पदों का संग्रह किया गया हैं वे प्रतियां भी कब की, किससे लिखी हुई और कौन से ग्रंथालय की है। इसका स्पष्टीकरण भी प्राय: नहीं किया गया है। राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश से ही मीरां के पद-संग्रह अधिक निकले हैं पर उन पर की प्रामाणिकता के विषय में निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता। यह तो सभी जानते हैं कि मीरां के नाम से प्राप्त व प्रचलित प्रत्येक पद सभी मीरां के रचित नहीं हैं पर उनमें बहुत से पद अन्य कवियों ने मीरां के नाम से बना कर प्रसिद्ध कर दिये हैं। मीरां ने कितने व कौन से पद बनाये यह नहीं कहा जा सकता। अब आवश्यकता है मीरां के पदों के वैज्ञानिक सम्पादन की।"

अगरचन्द नाहटा—शोध पत्रिका, वर्ष १६, अंक ३-४, जुलाई-अक्टूबर १९६५।

(ख) "वस्तुतः मीरां के प्रामाणिक पदों के आधार पर ही तथ्यातथ्य का निर्धारण किया जा सकता है। अत: पाठालोचन की अभिनव पद्धति पर मीरां के प्रामाणिक पदों का सम्पादन एवं प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है।"

—डॉ० कन्हैयालाल सहल—मरुभारती अक्टूबर १९६४।

(ग) "मीरां के पदों के सम्पादन की आवश्यकता है। पदों का वैज्ञानिक वर्गीकरण भी नहीं है।"

—डॉ० रामकुमार वर्मा—हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ५८८।

मीराँबाई के पदों में 'जोगी'

मीराँवाई ने अपने अनेक पदों में 'जोगी' शब्द का उल्लेख किया हैं। इस कारण यह शब्द (जोगी) मीराँवाई के साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। कुछ विद्वानों ने जोगी शब्द से युक्त सभी पदों को अप्रामाणिक मानने का सुझाव दिया है। यद्यपि मीरां के सभी पदों की प्रामाणिकता का निर्णय करना अत्यन्त कठिन है, किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि 'जोगी' शब्द से युक्त सभी पद अप्रामाणिक अथवा प्रक्षिप्त नहीं हैं। साथ ही यह भी कटु-सत्य है कि इस शब्द वाले सभी पद पूर्णतया प्रामाणिक भी नहीं कहे जा सकते। अतः प्रथम आवश्यकता तो यही है कि मीराँ के सभी प्रामाणिक पदों के प्रस्तुती-करण का प्रयास किया जाय और तत्पश्चात् मीराँ सम्वन्धी कोई निर्णय (मीराँ के पदों के आधार पर) लिया जाय।

इस दृष्टि से लिखित परम्परा से प्राप्त पद ही अधिक विश्वसनीय तथा प्रामाणिक कहे जा सकते हैं।

अद्यावधि अनेक विद्वानों ने अनेक दृष्टियों से 'जोगी' शब्द पर विचार किया है। उनमें से कुछ विचारणीय हैं, कुछ त्याज्य हैं और कुछ उपहासास्पद हैं।

विभिन्न मत

एक विद्वान् का कहना है कि मीराँ जिस जोगी का अपने पदों में वार-वार उल्लेख करती है, जिसके पहनाव आदि का पूरा ब्यौरा देती है और जिसे अपना पति या प्रेमी मानती है तथा जिसके लिए वह रोती है, तड़पती है, वह कोई लौकिक जोगी ही हो सकता है। जब वह जोगी मीराँ से दूर चला जाता है तब वह उसके विरह में प्रमादावस्था को प्राप्त हो जाती है। उपर्युक्त वातों की पुष्टि हेतु, वे मीराँ के निम्नलिखित पद प्रस्तुत करते हैं :-

१- जोगिया की सूरत मन में बसी
२- म्हारे घर रमतो ही आई रे तू जोगिया
३- जोगिया से प्रीत कियां दुख होई
४- जोगियां री प्रीतड़ो है दुखड़ा रो मूल
५- राजेश्वर जोगी अव तेरी मौनज खोल

६– मल्यो जटाधारी, जोगेश्वर बावो
७– जोगिया जी निसिदिन जोऊं बाट
८– जावा दे रे जावा दे जोगी किसका मीत
९– जोगी मत जा मत जा पांव परूं मैं तेरी चेरी हों
१०– जोगियां ने कहियो रे आदेस
११– जोगिया जी छाइ रह्या परदेस

आदि आदि ।

उपर्युक्त विचारों से मेल खाने वाले कुछ विचार डा० सावित्री सिन्हा ने भी अपनी पुस्तक में व्यक्त किये हैं।[1] डा० कृष्णलाल मीराँ के जोगी पर नाथ-पंथी जोगी का प्रभाव देखते हैं।[2] श्रीमती पद्मावती शबनम भी कुछ इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुँची हैं।[3] प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव भी कुछ ऐसा ही कहना चाहते हैं।[4] प्रो० अंचल के विचार भी इन सबसे मिलते हुए ही कहे जा सकते

---

१. "मीराँ के आराध्य का दूसरा निर्गुण पंथी रूप पूर्णतया लौकिक है। जिस जोगी के प्रेम में वह व्याकुल है वह एक साधारण जोगी है, जो उसके मन में प्रेम की अग्नि लगा कर चला गया है।" आगे वे पुनः लिखती हैं– "मीराँ के नैसर्गिक व्यक्तित्व के साथ भौतिक भावना के सम्बन्ध स्थापन से यद्यपि हमारी निष्ठा तथा विश्वास पर गहरा आघात लगता है, पर उनकी अनुभूतियों के आलम्बन जोगी के रूप की स्पष्ट लौकिकता के प्रति निरपेक्षता, सत्य की उपेक्षा होगी।"

—मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियां, पृ० १२६-१२७।

२. "मीराँ के योगी-रूप आराध्य पर स्पष्टतः नाथ सम्प्रदाय के योगियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है।"

—मीराँबाई, पृ० १२९।

३. "मीराँ ने अपने आराध्य को बार-बार जोगी नाम से ही सम्बोधित किया है। मीराँ के जोगी की वेशभूषा भी नाथ परम्परानुसार ही है। पदाभिव्यक्तियों के आधार पर यह सुस्पष्ट हो उठता है कि मीराँ के ये आराध्य नाथ परम्परानुसार वेशभूषा से विभूषित नाथ-परम्परानुकूल जोगी-कर्म में रत हैं।"

—मीराँ : एक अध्ययन, पृ० ११५-११६।

४. "इस गीत में भी स्पष्ट ही जोगी के प्रति प्रेम निवेदित किया गया है। यह गुरु से अनुरोध कभी नहीं हो सकता। यह तो प्रेमिका का प्रेमी से अनुरोध है।"

—मीराँ दर्शन, पृ० १०८।

हैं।[1] डा० हीरालाल माहेश्वरी का स्वर भी इन्हीं स्वरों से समानता रखने वाला है।[2] एक विदेशी लेखक सर जार्ज मैकमन ने मीराँ को एक वेश्या बताया है।[3]

मैकमन के अभिमत को एक भारतीय विद्वान् ने आक्षेप की चरम सीमा माना है[4], परन्तु यदि देखा जाय तो उपर्युक्त विद्वानों के विचार भी मीराँ नाम पर कुछ कम आक्षेप नहीं हैं।

उपर्युक्त मतों की आलोचना

मेरे (मीराँ के योगी के विषय में) विचार उपर्युक्त सभी विद्वानों से भिन्न हैं। मेरे शोध के आधार पर मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मीराँ का किसी भी लौकिक जोगी से प्रेम-सम्बन्ध असंभव है। मीराँ का प्रणय निवेदन किसी लौकिक जोगी के लिए न होकर अलौकिक गिरिवरधारी 'जोगेश्वर' यदुवंशी महाराज कृष्ण के लिए ही है। मेरी यह स्पष्ट और निश्चित मान्यता है कि मीराँ का जोगी और कोई नहीं वल्कि स्वयं योगीराज कृष्ण ही हैं। मीराँ ने उन्हें ही अपना सर्वस्व माना था। इन्हीं अजर अमर अलौकिक 'जोगीराज' के लिए ही उसने अपने लौकिक पति मेवाड़ाधिराजकुमार भोजराज (सांगावत) तक को विस्मृत कर दिया। यह महान् त्याग, एक साधारण लौकिक जोगी के लिए करना न कभी मीराँ को अभीष्ट था और न ही उसके उपर्युक्त पदों अथवा मीराँ के अन्य पदों से यह भाव ही निकलता है।

---

१. "मीराँ की वेदना के पीछे एक कुचले हुए स्वप्न की, एक प्रेमदग्ध हृदय की विकलता है। उस वेदना में पार्थिव यथार्थ है।" —मीरां स्मृति ग्रन्थ, पृ० १२७।

२. "उपर्युक्त पदों से स्पष्ट है कि मीरां की प्रेम-साधना में किसी न किसी जोगी का सहयोग अवश्य रहा था, और संभवतः यह जोगी तथा वह 'गुरु ज्ञानी' एक ही है जिसकी सूरत को देख कर मीराँ मुग्ध हो गई थी (मिलता जाज्यो रे गुरु ज्ञानी)।" —राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० ३२६।

३. "उस शताब्दी में राजपुताना में मीराँबाई हुई, जो कामलिप्सा तथा शक्ति की वैष्णव उपासिका थी, संसार के आनंदमय प्रेमी गोपीनाथ कृष्ण की कीर्ति की उत्साहपूर्वक् गायिका थी तथा लिंग-योनि के रहस्य की उपदेशिका थी। वे वेश्याओं की गुणग्राहिका समझी जाती थी जो प्रायः यही नाम धारण करती हैं। इस नाम को गाँधीगृह में प्रवेश करने पर भिल स्लेड् को धारण करने की आज्ञा नही दी जानी चाहिए थी।" —सर जार्ज मैकमन, दी अंडर वर्ल्ड ऑफ इंडिया

४. डा० हीरालाल माहेश्वरी, 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पृ० ३२८.

हमें मीराँ पर कोई भी निर्णय, उस युग और उसकी परिस्थितियों तथा संभावनाओं के सदर्भ में ही करना चाहिए।

मीराँ के युग और परिस्थितियों के सन्दर्भ में–

मीराँ के युग की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति के सन्दर्भ में विचार करने से भी यही ज्ञात होता है कि उस परम्परा-पालन के युग में, मीराँ का लौकिक जोगी से प्रणय सम्बन्ध नहीं हो सकता। मीराँ का युग, धर्म, श्रद्धा, नैतिकता, सदाचार और सतियों का युग है। वह आन, मान और मर्यादा हेतु, पतगे की तरह मर मिटने वाले अनोखे वीरों का युग है। फिर, मीराँ तो अपनी आन, मान और मर्यादा के धनी, दो राजकुलों (मेवाड़ और मेड़ता) से सबधित है। मेवाड़ और मेड़ता, दोनों अपनी वीरता, आन-बान, चरित्र, सच्चाई, धर्म-सम्मत आचरण, (सदाचार) और नैतिकता के लिए भारतीय इतिहास में विख्यात है। जहां, यहां के रणबाँकुरे वीरों ने अपनी आन-बान की रक्षा के लिए कभी प्राणों का मोह नहीं किया, वहां क्षत्रिय-लाज रखने के लिए यहां की स्त्रियों ने कम जौहर नहीं किए है। हमें इन सभी परिस्थितियों के सन्दर्भ में विचार कर, मीरां पर कोई निर्णय लेना चाहिए। यह नहीं हो सकता कि उस युग की, उस कुल की, उन परिस्थितियों की मीराँ, किसी लौकिक जोगी से प्रणय करे और 'सरेआम' उस प्रणय की अभिव्यक्ति करती फिरे। मीराँ स्वयं ने कभी ऐसी दूषित कल्पना तक नहीं की थी, यह सच है, किन्तु यदि स्वयं मीराँ भी ऐसा करना चाहती तो भी वह कभी संभव नहीं होता। मेड़तिया वीरों की धमनियों का रक्त इतना शिथिल नहीं हो गया था कि वे उस तथा-कथित अथवा आरोपित जोगी से मीराँ को स्वतंत्रतापूर्वक् प्रणय करने देते, जबकि इतिहास इस बात का साक्षी है कि मीराँ के प्रति मेड़ता के राजवंश ने सदा आदर ही दिखाया था।

प्रत्येक वस्तु को विपरीत ढंग से सोचना और प्रस्तुत करना सदैव प्रगतिशील चिन्तन नहीं कहा जा सकता। किसी भी तथ्य के सत्यान्वेषण में न भावुकता से अभीष्ट सिद्धि मिलती है और न मनमानी शाब्दिक ऊहापोह से ही प्रयोजन सिद्ध होता है। ऐसी विवादग्रस्त स्थिति में तो अन्तर्वाह्य प्रमाण ही साक्ष्य माने जा सकते हैं।

वर्त्तमान् युग के मानदण्डों से मीराँबाई का मूल्यांकन करने से मीराँ के साथ न्याय नहीं होगा। यह ठीक है कि आज के समाज में प्रणय-लीला एक

साधारण सी बात हो गई है और वैवाहिक जीवन की पवित्रता में लोगों को अश्रद्धा होने लगी है, परन्तु मीराँ के युग और तत्कालीन समाज में ऐसी खुली 'प्रगतिशीलता' के दर्शन नहीं होते ।

विद्वानों की भूल

वस्तुतः मीराँ के पद स्वयं इस बात के प्रमाण हैं कि मीराँ का वह जोगी कौन था । विभिन्न विद्वानों ने उस जोगी को मीराँ का लौकिक प्रेमी सिद्ध करने के लिये, जिन पदों का आश्रय लिया है, यहां पर उन्हीं की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है । उन पदों से स्पष्ट है कि मीराँ का जोगी और कोई नही स्वयं 'गिरधर नागर' है और मीराँ उसी की एक गोपिका है ।

राजेश्वर जोगी अब तेरी मौनज खोल ॥ ० ॥
पूरब जनम की तेरी मैं गोपिका ।
बीच मांहि पड़ गई झोल ॥ १ ॥
सहस्र गोप्यां संग रमता जी मोहन ।
कई मैं बजाऊं अब ढोल ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ।
पूरब जनम का कौल ॥ ३ ॥

उपर्युक्त पद में स्वयं कृष्ण ही 'राजेश्वर जोगी' है । उन्हीं अजर अमर योगेश्वर की मीराँ 'जनम-जनम की गोपिका' है, जिसके 'बीच मांहि........झोल' पड़ गया है । वे 'मोहन' श्रीकृष्ण ही हैं जो 'सहस्र गोप्यां संग' रमते है । वे 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' क्या कोई लौकिक जोगी हो सकते है जिनका मीराँ से 'पूरब जनम का कौल' है ?

इसी प्रकार मीराँ अपने अलौकिक 'जोगीया' से कहती है—

जोगिया तें जुगत न जाणी हो ।
मैं तो आसिक तोरड़ी तोने दया न आणी हो ॥ ० ॥
पतित पावन तो बिड़द है (याही) बेद बखानी हो ।
मीरां कूं द्यो दरस प्रभुजी अब सुख-दानी हो ॥ ५ ॥

प्रस्तुत पद में भी इस लौकिक जगत् की 'जुगत' न जानने वाला 'जोगिया' भी अलौकिक प्रभु कृष्ण के अतिरिक्त और कौन हो सकता है ? मीराँ 'उसी' अलौकिक जोगिया की 'आसिक' (आशिक़) है, जिसका 'पतित-पावन बिड़द है' जिसे

'वेद' तक ने बखाना है। मीराँ उसी प्रियतम कृष्ण से 'दरस' देने के लिए कहती है, जो स्वयं 'सुखदायी' है।

> जावा दे री जावा दे जोगी किसका मीत ॥ ० ॥
> ....
> मैं जाणूं या पार निभेगी, छांडि चले अधवीच ॥ ३ ॥
> मीरां के प्रभु गिरधर स्याम मनोहर, प्रेम पियारा मीत ॥ ४ ॥

यह 'जोगी' भी वही ब्रह्म का प्रतिनिधि श्री गिरधर गोपाल है, जो 'किसका मीत' हो सकता है? मीराँ को पूर्वजन्म के 'कौल' के कारण, यह विश्वास हो चला था कि यह जोगी उसे भवसागर पार ले चलेगा और इस तरह यह प्रणय 'निभ' जायगा, किन्तु वह तो 'छांडि चले अधवीच'। जोगी के रूप में, 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' ही हैं जिन्हें वह 'स्याम, प्रेम पियारा मीत' सम्बोधित कर, स्मरण करती है। कोई लौकिक जोगी 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर, स्याम मनोहर तथा प्रेम पियारा मीत' कैसे हो सकता है? गिरिवरधारी प्रभु के रूप तो श्रीकृष्ण ही अब तक प्रसिद्ध हैं।

> जोगीया ने कहीज्यो जी आदेस ॥ ० ॥
> जोगीयो चतुर सुजाण सजनी, ध्यावे संकर सेस ॥ १ ॥
> ....
> दासी मीरां राम भजिकै, तन मन कीन्हों पेस ॥ ५ ॥

प्रस्तुत पद के द्वारा मीराँ ने अपने जोगी को और स्पष्ट कर दिया है। जिस 'जोगिया' से मीराँ 'आदेस' कहने की बात कह रही है वह कोई साधारण जोगी नहीं है। वह तो 'चतुर सुजाण' है जिसका ध्यान ब्रह्मा 'संकर' (शङ्कर) और 'सेस' (शेष) भी करते हैं। मीराँ उसी 'चतुर सुजाण' जोगीया की दासी है और उसी को मीराँ ने 'तन मन' 'पेस' (पेश=अर्पित) कर दिया है।

> जोगीया जी छाइ रह्या परदेस ॥ ० ॥
> जबका बिछड्या फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ॥ १ ॥
> ....
> मीरां के प्रभु राम मिलण कूं, जीवनि जनम अनेक ॥ ४ ॥

'परदेस' में बस जाने वाले जोगी भी मीराँ के प्रभु गिरधर नागर ही हैं। वह जोगी कृष्ण ही है जो ब्रह्म के रूप में आत्मारूपी मीराँ से एक बार बिछड़ने पर 'फेरि न मिलिया' और 'बहोरि न दियो संदेस'। वह जोगी और कोई नहीं 'मीरां के प्रभु' ही हैं जिनसे 'मिलण कूं, जीवनि जनम अनेक' अर्थात् अनेक जन्म धारण करने को भी मीराँ प्रस्तुत है। 'परदेस' से तात्पर्य यहां किसी लौकिक भूखण्ड से नहीं है, अपितु वह तो एक दिव्यलोक है, जिसका उल्लेख कबीर, चैतन्य-महाप्रभु, रैदास, दादू आदि अन्य संतों (भक्तों) ने अपनी रचनाओं में किया है। उसी 'परदेस' के वासी सांवरिया जोगी को इस लोक में आने के लिए अनुनय विनय करती हुई मीराँ कहती है—

जोगीया जी आवो ने या देस।
नैणाज देखूं नाथ मेरो, ध्याइ करूं आदेस ॥ ० ॥
....
रावल् कुण बिलमाइ राखो, बिरहनि है बेहाल ॥ १ ॥
बीछड्यां कोई भौ भयो (जोगी) ऐ दिन अहला जाय ॥
एक बेर देह फेरी नगर हमारे आइ ॥ २ ॥
....
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यौ हरि आइ ॥ ३ ॥

उसी अलौकिक तथा 'परदेस' वासी जोगिया नाथ से 'ध्याइ' कर मीराँ 'आदेस' करना चाहती है, उस 'रावल् जोगी' को किसी ने 'बिलमाइ' लिया है, जिसके कारण यह मीराँ 'बिरहनि है बेहाल'। उस जोगी से 'बीछड़्यां कोई भौ भयो' है तथा यह जीवन रूपी 'दिन अहला जाय'। अतः हे जोगेश्वर जोगी 'एक बेर देह फेरी नगर हमारे आइ'। मीराँ का वह जोगी 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी' से भिन्न नहीं है, इसीलिए वह उस जोगीया हरि से कहती है—'दरसण द्यौ हरि आइ'।

जोगिया मेरे तेरी मनसा वाचा करमणा प्रभु, पूरवौ मेरी ॥ ० ॥
मैं पतिवरता पीव की मोल लयी चेरी।
तुम बिना कोऊ दूजो देवा सुपनै नाहि हेरी ॥ १ ॥
....
एक विरियां मेरे नागर प्रभु दे जावो फेरि।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी राखो चरण नेरी ॥ ३ ॥

उल्लिखित पद के द्वारा मीराँ यह और बता देना चाहती है कि उसके 'जोगिया' और 'प्रभु' में कोई अंतर नहीं है। तभी तो वह एक ही पंक्ति में इन दोनों शब्दों के द्वारा अपने स्याम को सम्बोधित करती है। 'जोगिया मेरे' तथा इसी पंक्ति में 'प्रभु पूरबी मेरी' से यह स्पष्ट है। मीराँ कहती है कि उसने अपने इस 'जोगिया - सांवरिया - देव' के अतिरिक्त किसी 'दूजो देवा' को स्वप्न में भी नहीं देखा है (सुपने नाहि हेरी)। इसीलिये तो वह 'पतिवरता' है। अतः उसका निवेदन है कि 'जोगिया'– प्रभु 'एक विरियां मेरे नागर (नगर) देजावो फेरी'। मीराँ अपने 'अविनासी' जोगीया 'प्रभु' से विनीत स्वर में वार-वार कहना चाहती है कि 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी राखो चरण नेरी'। यह 'अविनासीप्रभु' भी वही अलौकिक जोगी, श्रीकृष्ण है। उस 'जोगिया' की प्रतीक्षा करती-करती, मीराँ जैसे अधीर हो उठी है तभी तो पुनः कहती है—

जोगियां रे तू कबहु मिलेगा मोकूं आय ॥ ० ॥
तेरे कारण जोग लिया है, घर-घर अलख जगाय ॥ १ ॥
....
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, मिलकर तपत बुझाय ॥ ३ ॥

पूर्व जन्म के आश्वासन के बाद भी जब वह अलौकिक 'जोगीया' नहीं आया, तब अविश्वास होने लगा और उपालम्भ भरे करुण स्वर में मीराँ कह उठी 'जोगिया रे तू कबहु मिलेगा मोकूं आय'। उस जोगिया कृष्ण से मिलने के लिए वैष्णव-भक्त स्वयं जोगिन बन गई है। मीराँ स्पष्ट कर देना चाहती है कि चूंकि तू जोगीया बन गया है अतः मैंने भी 'तेरे कारण जोग लिया है' और घर-घर अलख 'जगाई' है। इसलिए हे जोगीया बने हुए 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी, मिलकर तपत बुझाय'। यदि श्रीकृष्ण जोगेश्वर रूप में न आते, तो संभव है मीराँ भी 'जोगिन' होकर योग साधना नहीं करती। 'जोगी' और 'जोगनियां' शब्द उन दिनों लोक प्रचलित भी थे तथा लोक में भी इन शब्दों का प्रयोग होता था। तत्कालीन लोककथाओं में ऐसे शब्द मिलते हैं।

माई म्हांने रमइयो दे गयो भेष ॥ ० ॥
हम जानै हरि परम सनेही पूरब जनम को लेष ॥ १ ॥
अंग भभूत गले मृगछाला घर-घर जगत अलेष ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अविनासी सांई मिलण की टेक ॥ ३ ॥

मीराँ स्वयं स्वीकार करती है कि 'माई म्हाने रमइयो दे गयो भेष'। अर्थात् मीराँ का 'जोगिया' भेष उसी के प्रभु का दिया हुआ है। साथ ही वह यह भी कह देती है कि 'उसी परम सनेही' 'हरि' ने 'अंग भभूत गले मृगछाला' धारण कर 'घर घर....अलख' जपना प्रारम्भ कर दिया है। इस कारण मीराँ को पुनः कहना पड़ा 'मीराँ के प्रभु हरि अविनासी' हे 'सांई' आप से ही 'मिलण की टेक' है। मीराँ की प्रतीक्षा पूर्ण हुई। उसकी साधना सफल हुई। मीराँ के 'जोगिया-प्रीतम=स्याम' स्वयं मिलने आये। इस हर्षातिरेक से मीराँ गा उठी—

आंण मिल्यो अनुरागी, जोगियो आंण मिल्यो अनुरागी ॥ ० ॥
सांसो सोच अंग नहि अबतो। तिस्ना दुवध्या त्यागी ॥ १ ॥
मोर-मुकुट पीताम्बर सौहै। स्याम वरण वड़भागी ॥ २ ॥
जनम-जनम को साहिब मेरो। वाही सों लौ लागी ॥ ३ ॥
अपणां पिया सग हिल-मिल खेलूं। अधर सुधारस पागी ॥ ४ ॥
मीरां गिरधर के मन मांनी। अब मैं भई सुभागी ॥ ५ ॥

उस 'अनुरागी जोगिया' के 'आंण' मिलते ही मीराँ ने 'तिस्ना दुवध्या त्यागी'। मीराँ ने अपने 'सांवलिया जोगी' की वस्त्र-सज्जा, आभूषण आदि देकर भी यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके जोगी, जगत्-विख्यात मोर-मुकुटधारी स्वयं स्याम ही हैं दूसरा कोई नहीं। मीराँ ने प्रस्तुत पद से यह भी स्पष्ट कर दिया है कि उसका 'साहिव' भी वही कृष्ण है, जो कभी जोगीया के रूप में उसके द्वारा स्मरण किया जाता है। यह अनुरागी जोगिया वही है जिसके 'मोर मुकुट पीताम्बर सौहै' तथा जो 'स्याम वरण वड़भागी' है जो 'जनम-जनम को साहिव (है) मेरो' वस्तुतः 'वाही सों लौ लागी'। उसी अनुरागी जोगिया गिरधर नागर के साथ मीराँ की अभिलाषा है – 'अपणां पिया संग हिल-मिल खेलूं' इतना ही नहीं वह 'अधर सुधारस पागी' होने की भी महती इच्छा रखती है। मीराँ की यह अभिलाषा किसी लौकिक जोगी के लिए किसी तरह संभव नहीं है। इसे ही स्पष्ट करने के लिए संभवतः अन्तिम पंक्ति मीराँ को कहनी पड़ी 'मीरां गिरधर के मन मांनी' और इसी कारण वह कहती है – 'अव मैं भई सुभागी'। लगता है जैसे मीराँ को चरम लक्ष्य की प्राप्ति हो गई है। किन्तु मीराँ यह नहीं समझ सकी कि उसका यह 'रावलिया जोगी' आया किधर से। तभी तो वह पूछ बैठी –

कणी दशा में रावल आविया रावलिया जोगी ।
कणी दशा में रावल जासी नाव लियां तर जासी ।
भजन कर्‌यां मौज पासी । म्हेजी म्हे देखिया अविनासी ।। ० ।।

यहां भी वह अलौकिक जोगी ही है जिसे वह 'रावल' अथवा 'रावलिया जोगी' के रूप में याद करती है। यह वही अलौकिक जोगी है जिसका 'नाव लियां (मीराँ) तर जासी' और इसे देख कर मीराँ कहती है– 'म्हे देखिया अविनासी'। लौकिक जोगी न तो 'रावल' हो सकता और न ही 'रावलिया जोगी'। कोई भी लौकिक जोगी ऐसा नहीं हो सकता जिसका नाम लेते ही भवसागर पार किया जा सकता है। लौकिक जोगी अविनासी भी नहीं हो सकता। यदि लौकिक योगी होता तो उसके आगमन की दिशा को जानना भी असंभव नही था; परन्तु जो हमारे भीतर विराजमान रहता है उसका जब साक्षात्कार हो जावे, तो निस्संदेह यह कहना पड़ता है कि 'यह कहाँ से आ गया।'

इस विषय में एक बात और है कि ब्रह्म का साक्षात्कार मानव के लिये स्थायी नहीं हो सकता। अतः जब साधक भक्त की आंतरिक दृष्टि से वह (ब्रह्म) हट जाता है तो वह व्याकुल हो उठता है। सूर की गोपिकाओं की शैली में तब वह उपालम्भ देने लगता है। यह कैसी आँख-मिचौनी? कैसा इधर-उधर डोलना? इसी भावना से प्रेरित होकर मीराँ पाती है कि 'रावलिया जोगी' उसके पास आ तो गया, किन्तु मौन धारण किए रहा। अतः मीराँ को कहना पड़ा—

धूतारा जोगी एकर सूं हंसि बोल ।। ० ।।
जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ।
अंग भभूति गले मृगछाला, तू जन गूंढ़िया खोल ।। १ ।।
सदन सरोज बदन की सोभा, ऊभी जोऊं कपोल ।
सेली नाद बभूत न बटवो, अजूं मुनी मुख खोल ।। २ ।।
चढ़ती बैस नैण अणियाले, तूं घरि-घरि मत डोल ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, चेरी भई बिन मोल ।। ३ ।।

प्रस्तुत पद से मीराँ ने जैसे अपने 'जोगीया' की सारी 'गूंढ़िया' (रहस्य) खोल दी है। यह 'धूतारा जोगी' सिवा 'मनमोहन' के और कोई नहीं है जिसके बारे में मीराँ ढ़ोल बजाकर कुछ नहीं कहना चाहती, क्योंकि वह समझती है जैसे सारे जगत को यह रहस्य ज्ञात है किन्तु पुनः जब उसे संशय होने लगता है तब

वह कह उठती है– 'अंग भभूति गले मृगछाला', यह क्या रहस्य है– 'तू जन गूंढ़िया खोल'। एक ओर 'सदन सरोज वदन की शोभा' लक्षित है तो दूसरी ओर 'सेली नाद बभूत न बटवो'। यह रहस्य कुछ मति भ्रमित कर सकता है, अतः हे जोगी 'अजूं मुनी मुख खोल' और सारा रहस्य बतला दे। हे जोगी तेरी 'चढती बैस' है 'नैण अणियाले' हैं। अतः 'तू घर-घर मत डोल'। तूं ही तो 'मीरां के प्रभु हरि अबिनासी' है जिसकी मीराँ 'चेरी भई बिन मोल'।

इतने पर भी वह 'जोगी मनमोहन' नहीं बोला, तब मीराँ को पुनः उसी स्वर में निवेदन करना पड़ा –

धुतारा जोगी एक बेरीया मुख बोल रे ।। ० ।।
कानन कुंडल गल बिच सेली अब तेरी मुन खोल रे ।। १ ।।
रास रच्यो बंसीवट जमुना ता दिन कीनो कोल रे ।। २ ।।
पूरब जनम की मैं हूं गोपिका अब बिच पड़ गयो झोल रे ।। ३ ।।
जगत बदित तुम करो मोहन अब क्यों बजाऊं ढोल रे ।। ४ ।।
तेरे कारन सब जग त्यागो अब मोहे कर सों लोल रे ।। ५ ।।
'मीरां' के प्रभु गिरधर नागर चेरी भई बिन मोल रे ।। ६ ।।

इस पद के द्वारा मीराँ स्वयं जैसे इस जोगीया का भेद खोल दे रही है। कृष्ण ने जोगी-रूप तो धारण किया किन्तु, उनके स्वयं के वस्त्राभूषण और मुख-छवि तथा वदन भव्यता जोगी-रूप के अनुकूल पूर्णतया परिवर्तित नहीं हुई है। यह रहस्य केवल मीराँ ही जानती है। अतः इस रूप को देखते ही वह कह उठी है– 'कानन कुंडल और गल बिच सेली'? कुछ उचित नहीं बन पड़ा, अतः 'अब तेरी मुन खोल रे' तेरा रहस्य मैंने समझ लिया है। तूं वही तो है जिसने 'रास रच्यो बंसी तट जमुना' और तूं ने 'ता दिन कीनों कोल रे'। तूं संभवतः यह सोचे कि इसे यह रहस्य कैसे ज्ञात हुआ तो अब तुझे स्मरण करा दूं– 'पूरब जनम की मैं हूं गोपिका' जिसके साथ हे जोगीया तूने 'कोल' किया था। यह तो न जाने कैसे 'अब बिच पड़ गयो झोल रे'। 'तेरे कारन' ही मैंने 'सब जग त्यागो' अतः अब मोहे 'कर सों लोल रे'। मीराँ ने अपने प्रभु को जैसे जोगीया वेश में भी तुरंत पहचान लिया है तभी तो वह कहती है– 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर चेरी भई बिन मोल रे।'

उपर्युक्त सभी पदों को देखने से ज्ञात होता है कि स्वयं श्रीकृष्ण ही इन पदों के 'जोगीया जोगी' हैं। उन्हीं 'राजेश्वर' अथवा 'रावलिया जोगी' से मीराँ ने 'जनम-जनम की प्रीत' लगाई है। उन्हीं 'गिरधर नागर चतुर सुजान' की वह 'पूरव जनम की गोपिका' है और वे कृष्ण ही है जो सहस्र गोपियों के संग 'रमते' हैं। उन्होंने ही जमुना किनारे रास रचाया था। उन्हीं श्रीकृष्ण से मीराँ का जनम-जनम का कौल है, जो अब जोगी बने हुए हैं। कृष्ण का ही 'पतित पावन बिड़द' है, जिसका वेद ने बखान किया है। वे ही प्रभु 'गिरधर नागर' मीराँ के 'स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत' है।

वह जोगी कोई लौकिक जोगी नही है और वह हो भी नही सकता। श्रीकृष्ण का जो रूप, सौन्दर्य, वस्त्र-परिधान और आभूषण-सज्जा भागवत, पुराणादि ग्रन्थों में वर्णित है उसी का प्रस्तुत पदों में पुनराख्यान है।[1]

---

१. नाना युगों में भगवान श्रीकृष्ण का रूप-सौन्दर्य एवं वस्त्र-सज्जा

सतयुग में–

कृते शुक्लश्चतुर्बाहुर्जटिलो वल्कलाम्बरः।
कृष्णाजिनोपवीताक्षान् बिभ्रद्दण्डकमण्डलू॥ २१॥

(सतयुग में भगवान के श्रीविग्रह का रंग होता है श्वेत। उनके चार भुजाएं और शिर पर जटा होती है तथा वे वल्कल का ही वस्त्र पहनते है। काले मृग का चर्म, यज्ञोपवीत, रुद्राक्ष की माला, दण्ड और कमण्डलु धारण करते है।) पृ० ७३४

हंसः सुपर्णो वैकुण्ठो धर्मो योगेश्वरोऽमलः।
ईश्वरः पुरुषोऽव्यक्तः परमात्मेति गीयते॥ २३॥

(सतयुग के मनुष्य) (वे लोग हंस, सुपर्ण, वैकुण्ठ, धर्म, योगेश्वर, अमल, ईश्वर, पुरुष, अव्यक्त और परमात्मा आदि नामों के द्वारा भगवान की गुण-लीला आदि का गान करते है।) पृ० ७३४

द्वापर में–

द्वापरे भगवाञ्छ्यामः पीतवासा निजायुधः।
श्रीवत्सादिभिरङ्कैश्च लक्षणैरुपलक्षितः॥ २७॥

(राजन्! द्वापर में भगवान के श्रीविग्रह का रंग होता है सांवला। वे पीताम्बर तथा शंख-चक्र, गदा आदि, अपने आयुध धारण करते है। वक्षःस्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह, भृगुलता, कौस्तुभमणि आदि लक्षणों से वे पहचाने जाते है।)

वैष्णव सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण के जिस विरद का गान पुराणादि नाना ग्रन्थों में हुआ है वही 'वीड़द' इस जोगी के हैं।[1] वे 'चतुर सुजांण' श्रीकृष्ण हैं लौकिक जोगी नहीं जिनका 'ब्रह्मा' और 'सेस' ध्यान करते हैं। मीराँ के पदों का जोगी' वह प्रभु अविनासी है जिससे 'दरसण' देने के लिए, मीराँ अनुनय-विनय करती है। उसी 'सांवरिया अथवा सांवलिया' जोगी के लिए मीराँ जोग लेकर 'जोगनिया' वनने को तत्पर है, जिसके सिर पर 'मोर-मुकुट' है, तन पर 'पीताम्बर' शोभित है और जो स्वयं स्याम वर्ण है। वह महायोगी है, वह

तं तदा पुरुष मर्त्या महाराजोपलक्षणम्।
यजन्ति वेदतन्त्राभ्यां परं जिज्ञासवो नृप ।। २८ ।।

(राजन्! उस समय जिज्ञासु मनुष्य महाराजाओं के चिह्न, छत्र, चंवर आदि से युक्त परम-पुरुष भगवान की वैदिक और तांत्रिक विधि से आराधना करते हैं।)—पृ० ७३४।

कलियुग में—

(१) तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ।। २ ।।

(पृ० ३१६ अ० ३२)

(ठीक उसी समम उनके बीचो बीच भगवान श्रीकृष्ण प्रकट हो गए। उनका मुख कमल मंद मंद मुस्कान से खिला हुआ था। गले में वनमाला थी, पीताम्बर धारण किये हुए थे। उनका यह रूप क्या था, सबके मनको मथ डालने वाले कामदेव के मन को भी मथने वाला था।

(२) तं विलोक्यागतं प्रेष्ठं प्रीत्युत्फुल्लदृशोऽवलाः।
उत्तस्थुर्युगपत् सर्वास्तन्व्यः प्राणमिवागतम् ।। ३ ।।

पृ० ३१६ अ० ३२।

(कोटि कोटि कामों से भी सुन्दर परम मनोहर श्याम सुन्दर को आया देख गोपियों के नेत्र प्रेम और आनन्द से खिल उठे।)

(३) उपगीयमानौ ललितं स्त्रीजनैर्बद्धसोहृदैः।
स्वलंकृतानुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणो विरजोऽम्बरौ ।। २१ ।।

(भगवान श्रीकृष्ण निर्मल पीताम्बर और वलरामजी नीलाम्बर धारण किये हुए थे। दोनों के गले में फूलों के सुन्दर सुन्दर हार लटक रहे थे तथा शरीर में अंगराग, सुगन्धित चंदन लगा हुआ था और सुन्दर सुन्दर आभूषण पहने हुए थे।)

(४) संत चित्रमवलाः शृणुतेदं
हारहास उरसि स्थिरविद्युत्।
नन्दसूनुरयमार्तजनाना
नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः ।। ४ ।।

बड़भागी है। वही मीराँ का 'जनम जनम' का 'साहिब' है। उसी से मीराँ की 'लौ लागी' है। वह जोगी कृष्ण ही है जो 'जमना' तट पर रास रचाता है। उसी से मीराँ ने 'कौल' किया है। उसी ने मीराँ को 'पूरब जनम' में पुर्नमिलन का वचन दिया था, मीराँ ही 'पूरब जनम की गोपिका' है।

---

(५) वर्हिणस्तवक धातु पलाशै-
बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः।
कर्हिचित सबल आलि स गोपै-
र्गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥ ६ ॥

(६) अनुचरैः समनुवर्णितवीर्य
आदिपुरूष इवाचलभूतिः।
वनचरो गिरि तटेषु चरन्ती
वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ॥ ८ ॥ पृ० ३४५

(७) दर्शनीय तिलको वनमाला-
द्दिव्यगन्ध तुलसीमधुमत्तैः।
अलिकुलैरलघुगीमभीष्ट-
माद्रियन् यर्हि सन्धितवेणुः ॥ १० ॥ पृ० ३४५
गोपगोधनवृतो यमुनायाम्।
नंदसुनुरनघे तव वत्सो
नर्मदः प्राणयिनां विजहार ॥ २० ॥ पृ० ३४८

(३) पीतनीलाम्बरधरौ शरदम्बुरुहेक्षणौ ॥ २८ ॥ पृ० ३६४

(१०) किशोरौ श्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौ बृहद्भुजौ।
सुमुखौ सुन्दर वरौ बालद्विरद विक्रमौ ॥ २३ ॥ पृ० ३६४

(११) उदारचिरक्रीडौ स्राग्विणो वनमालिनौ ॥

(१२) नाहं तवाङ्घ्रिकमलं क्षणाधमपि केशव ॥

(१३) नौमीड्य तेऽभ्रवपुषे तडिम्बराय
गुञ्जावतंस परि पिच्छलसन्मुखाय।
वन्यस्रजे कवलनेत्र विषाणवेणु
लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ॥ ११ ॥ पृ० २१४, अ० १४

(१४) यथा त्वामारविन्दा क्ष यादृशं वा मदात्मकम् – (कमलनयन श्याम सुन्दर)
पृ० ७९६, अ० १४

श्रीमद्भागवत में कृष्ण महात्म्य

२. (क) तीर्थास्पदं शिवविरिंशिचनुतं शरणम्।
(वे तीर्थों को भी तीर्थ बनाने वाले स्वयं परम तीर्थ स्वरूप हैं, शिव, ब्रह्मा आदि बड़े बड़े देवता उन्हें नमस्कार करते हैं............) पृ० ७३६

कुछ अन्य अन्तःसाक्ष्य

उपरोक्त सभी उदाहरण उन पदों के हैं, जिन्हें उन विद्वानों ने प्रस्तुत किया है जो मीराँ के जोगी को लौकिक जोगी मानते हैं। अब कुछ वे पद प्रस्तुत हैं, जिन्हें मैं उदाहरणार्थ पाठकों के समक्ष रखना चाहता हूँ।

अपने श्याम के प्रिय सखा, उद्धव को सम्वोधित कर मीराँ वह रही है –

उधव जी म्हानै ले चालो स्याम रारे देस ।। टेर ।।
कवकी छोड़ी मथुरा नगरी छोड़ दियो नंदजी को देस ।। १ ।।
कर में कमंडल और मृगछाला करसूं मैं आदेस आदेस ।। २ ।।
कंथा सिवाडुं गल-विच डारूं करुं भगवां भेस ।। ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर मौ मन वडौ अंदेस ।। ४ ।।

मीराँ अपने 'जोगी' के साथ साथ अपने 'जोगनिया' वनने के रहस्य को भी खोल देती है। उधवजी के साथ अपने 'स्याम रारे देस' जाने के लिये वह 'कर में कमंडल और मृगछाला' पहनकर 'आदेस आदेस' करने के लिए तथा 'कंथा सिवा कर गल विच डार कर' भगवा भेस धारण करने के लिए भी तैयार है क्योंकि उसके 'मन वडौ अंदेस' है। यह सब कुछ वह केवल अपने 'गिरधर' नागर को प्राप्त करने, उनके 'देस' जाने के लिए ही कर रही है किसी लौकिक जोगी के लिए नहीं।

अपने स्याम के विरह में व्याकुल हुई मीराँ पुन: कहती है–

(ख) त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सित राजलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ अभिवचसा यदगादरण्यम्।
माधामृग दपितये प्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। ३४ ।।

(भगवन्! आपके चरण कमलों को महिमा कौन करे? रामावतार में अपने पिता दशरथजी के वचनों से देवताओं के लिए भी वांछनीय और दुस्त्यज राज्यलक्ष्मी को छोड़ कर आपके चरण कमल वन वन घूमते फिरे। सचमुच आप धर्मनिष्ठता की सीमा हैं। और महापुरुष! अपनी प्रेयसी सीताजी के चाहने पर जानबूझ कर आपके चरण कमल मायामृग के पीछे दौड़ते रहे। सचमुच आप प्रेम की सीमा हैं। प्रभो! मैं आपके उन्हीं चरणारविंदों की वंदना करता हूं।) पृ० ७३७, अ० ५

कदि रे मिलैगो आई रमयौ म्हांन कदि (रे) मिलैगो आई ।

....

ज्या मिलयां आनंद घणां होई बीछरिया बैराग ।।

....

न जानु कदि हरि आईमी म्हारै ओगणगारी रो नाह ।। ७ ।।

मीराँ ने अपने स्याम, रमैया और 'जोगिया' में कभी अन्तर नहीं किया तभी तो वह कभी कहती है— "जोगिया रे तू कबहू मिलैगो मोकूं आय-।। ० ।।" और कभी 'कदि रे मिलैगो आई रमयौ म्हांन कदि मिलैगो आई'। उसके लिए 'रमयौ' और 'जोगिया' दोनों एक ही है 'ज्यां मिलया आनंद घणां होई बीछरिया बैराग'। मीराँ समझती है मुझ में कोई गुण नहीं देख कर ही संभवत: मेरे स्याम मेरे पास नहीं आना चाहते। तभी तो वह कहती है— 'न जानु कदि हरि आवसी म्हारै ओगणगारी रो नाह।'

कांई रे कारण अण बोला नाथ मांसे मुखडे ।।
क्यु नहीं बोले नाथ मारो ।। टेर ।।

पेली प्रीत करी हरी हमसे प्रेम प्रीत को जोलो नाथ ।। १ ।।

....

मैं छु बेटी राजा राव री कुबज्या बराबर कंई तोलो ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हीरदा री गुंडी कीउं नी खोलो ।। ४ ।।

मीराँ के पदों के 'अणबोला नाथ' भी वे स्याम, गिरधर नागर ही हैं जो योगेश्वर बने हुए हैं। इसीलिये एक पद में मीराँ कहती है 'धूतारा जोगी एक बेरीया मुख बोल रे' तो दूसरे पद में 'कांई रे कारण अण बोला नाथ मासे, मुखड़े क्यु नहीं बोले नाथ मारो'। यही तो वह रहस्य है, जिसे वह पाठक को बार-बार समझाना चाहती है। यदि पाठक अब भी भ्रमित है तो वह पुनः कहती है— यह वही नाथ है जिसने 'पेली प्रीत करी' किन्तु नाथ बनकर नहीं बल्कि ('हरी हमसे') हरि के रूप में। अर्थात् नाथ, हरि, रमयौ, जोगी-जोगिया, स्याम, गिरधरनागर आदि सभी शब्द मीराँ ने अपने एक ही प्रियतम श्रीकृष्ण के लिये प्रयुक्त किये हैं। शब्द और सम्बोधन बदल जाते हैं किन्तु भावानुभूति और भावाभिव्यक्ति में कोई अन्तर नहीं आता, यही कारण है कि मीराँ ने यह सब कुछ अपने 'प्रिय' स्याम के लिए ही कहा है। पुनः देखिए—

"काऊ विध मिल जा रे गिरधारी ।। टेर ।।"

....

"बनरावन में धेनु चरावै ओढ कामलीया कारी ।।"

"काऊ देख्या री घनस्यामा । स्याम हमारे रामा ।।"

इन पदों से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि मीराँ के गिरधारी' घनस्यामा और स्यामा तथा रामा' सभी एक हैं। तभी तो एक पद में उसका कहना है–'काऊ विध मिल जा रे गिरधारी' और दूसरे पद में–'काऊ देख्या री घनस्यामा, स्याम हमारे रामा ।।' मीराँ के स्याम ही मीराँ के राम हैं। वे ही 'वनरावन में धेनु चरावै ओढ़ कामरिया कारी ।'

जोगिया जाय वस्यो परदेस ।

....

मीराँ प्रभु गिरधर के कारनै । पहरया भगवां भेस ।। ५ ।।

ये 'जोगिया' और 'गिरधर' एक ही तो हैं। इसी कारण जोगिया के परदेस वसने पर मीराँ ने 'पहरया भगवां भेस'। किन्तु इतना ही नहीं वह और स्पष्ट कर देती है– 'मीराँ ने प्रभु गिरधर के कारन पहर्या भगवां भेस' (अर्थात् जोगिया और गिरधर, नाम दो हैं किन्तु व्यक्ति एक ही है और वे हैं अलौकिक 'जोगेश्वर' कृष्ण। वे अब वीती बातें भूल गए हैं। पूर्व दिनों की स्मृति कराते हुए मीराँ पुनः कहती हैं–

"जोगियो मेरी न जाणीं पीर ।
अब तो जाय वदेस वैठा । काऊ की सुध न सरीर ।।टेर।।
याद न आवै वृज के मांही । खेलत जमुना तीर ।।
ग्वालन को दूध खोस खाते । खौसि पीवत खीर ।। १ ।।
बन वन डोलत चाव पांवतै । पीवत जमुना नीर ।।
वृज बनिता संगी करै विलास । मन में होत अधीर ।। २ ।।
सो दिन लाला भूलि गयो हो । भूप भये वड भीर ।।
मीराँ के प्रभु गिरधरा ! तुम आखर जात अहीर ।। ३ ।।"

जिस जोगी ने मीराँ की 'न जांणी पीर' और 'अव तो जाय वदेस वैठा', वह नन्द दुलारा गोपाल ही तो है। वह 'जोगियो' कृष्ण ही है जो 'वृज के मांही

खेलत जमुना तीर और जो 'ग्वालन को दध खोस खाते, खोसि पीवत नीर ।।' जिनके 'वन बन डोलत चाव पांवतै' और जो 'पीवत जमुनां नीर'। वह 'वृज वनिता संगी करै बिलास, मन में होत अधीर'। इसी 'जोगिया कृष्ण' से मीराँ उपालम्भ भरे स्वर में पूछ बैठी– 'सौ दिन लाला भूलि गयो हो। भूप भये बडभोर'। वे ही 'मीराँ के प्रभु गिरधर नागर' है, जिनके प्रति व्यंगभरी चुटकी लेती हुई मीराँ कहती है— 'तुम बीते दिन और उन दिनों की मेरी प्रीत क्यों ना भूल जाओ— आखर जात अहीर'।

जोगिया ने कहज्यो रे आदेस।
जोगियो चतुर सुजांन सजनी। ध्यावे ब्रह्मा सेस ।। टेक ।।
करो कृपा प्रतिपाल हम सूं। राखो अपने देस ।।
....
आपने पतित अनेक त्यारे। मेरा तोहि अनेस ।।
अब तो जोगी मेरे मांहि। रह्यो नहीं कछु लेस ।।
मैं मुरख तुम चतुर रावल। कहा करौं उपदेस ।। ४ ।।
दरद दिवांनी भई बावरी। डोली देस वदेस ।।
दासी मीरां गिरधर ढुंढत। पलटे काला केस ।। ५ ।।

यह वही अलौकिक 'जोगिया' है, जो 'चतुर सुजान' है और जिसे 'ब्रह्मा सेस' ध्यान करते हैं, वह 'प्रतिपाल' भी है, जिसका अपना 'देस' है। (यह 'देस' भी वही परदेस ही है जिसका उल्लेख पहले भी कुछ पदों में हुआ है) वह 'चतुर सुजांन' जोगिया पतित उद्धारक है वही गिरधारी है उसने 'आगे भी पतित अनेक त्यारे' हैं। उसी से मीराँ बड़ी दीनता भरे स्वर में विनती करती है– 'मैं मुरख तुम चतुर रावल' 'कहा करो उपदेस'। 'अब तो जोगी मेरे मांहि' 'रह्यो नहीं कछु लेस'। उस जोगिया गिरधर के स्नेह में वह इतनी व्याकुल हो गई कि 'दरद दिवांनी भई वावरी, डोली देस बदेस'। उस गिरधर की दासी मीराँ के, गिरधर को 'ढूंढत पलटे काला केस'।

मीराँ के जोगी और काना में भी कोई अंतर नहीं है, दोनों एक ही हैं। देखिए—

तू मत जा. रे काना पाईयां परौं चिरी तेरी अरे ।। टेक ।।
चंदन काटौं चिता वणावौं अपने हाथ जला जा रे ।। १ ।।
जल वल भई भसम की ढेरी अंग बभूत लगाय जा रे ।। २ ।।

रूपों का परिचय कराती हुई मीराँ कहती है– 'गोपी रूप धरो ज्योगेसुर नरसी सखा बनाय लिय' तथा 'तब बोले गोपेसुर (गोपेश्वर) नायक भगत अनोखा कहा आप रहे'। अतः मीराँ के पदों के 'जोगिया जोगी' यही 'ज्योगेसुर' (जोगेश्वर= योगेश्वर) कृष्ण हैं।

(च) रासोत्सवः सम्प्रवृत्तो गोपीमण्डितः।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्ये द्वयोर्द्वयो ॥ पृ० ३२३, अ० ३३

(छ) प्रपन्नोऽपि महायोगिन् महापुरुष सत्पते।
(भक्तवत्सल ! महायोगेश्वर महा पुरुषोत्तम।) पृ० ३४१, अ० ३४

(ज) वयं त्विह महायोगिन् भ्रमन्तः कर्मवर्त्मसु।
(महायोगेश्वर ! हम लोग तो कर्म मार्ग में ही भटक रहे हैं) पृ० ७४६, अ० ७

(झ) योगेश योगविन्यास योगात्मन् योग सम्भव।
(भगवन् ! आप ही समस्त योगियों की गुप्त पूंजी योगों के कारण और योगेश्वर हैं। आप ही समस्त योगों के आधार उनके कारण और स्वरूप भी हैं।) पृ० ७४८, अ० ७

(ट) कृष्ण कृष्णा प्रमेयात्मन योगेश जगदीश्वर।
वासुदेवाखिलावास सात्वत्तां प्रवर प्रभो ॥ ११ ॥ पृ० ३५६, अ० ३७
(सच्चिदानन्दस्वरूप श्री कृष्ण ! आपका स्वरूप मन और वाणी का विरोध नहीं है। आप योगेश्वर हैं। सारे जगत का नियन्त्रण आपही करते हैं। आप भक्तों के एक मात्र वाछनीय यदुवंश शिरोमणि और हमारे स्वामी हैं।)

(ठ) कृष्ण कृष्ण महायोगिंस्त्वमाद्यः पुरुषः पर:
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं रूपं ते ब्राह्मणा विदुः ॥ २९ ॥
(सच्चिदानन्द स्वरूप ! सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले परम योगेश्वर श्री कृष्ण। प्रकृति से अतीत स्वयं पुरुषोत्तम हैं।) पृ० १८८

(ड) योगेश्वरोतीर्भवतस्त्रिलोक्याम (आप योगेश्वर हैं आदि)

२. श्रीकृष्ण का गोपेश्वर रूप (श्रीमद्‌भागवत में)—

(क) स्वयमात्माऽऽत्मगोवत्सान् प्रतिवार्यात्मवत्सपैः।
क्रीडन्नात्मविहारैश्च सर्वात्मा प्राविशद् व्रजम् ॥ २० ॥
(सर्वात्मा भगवान् स्वयं ही बछड़े बन गये और स्वयं ही ग्वाल बाल। अपने आत्म स्वरूप बछड़ों को अपने आत्म स्वरूप ग्वाल-बालों के द्वारा घेर कर अपने ही साथ अनेकों प्रकार के खेल खेलते हुए उन्होंने ब्रज में प्रवेश किया।)
—पृ० २०७, अ० १३

(ख) तावत् सर्वे वत्सपालाः पश्चतोऽजस्य तत्क्षणात्।
व्यदृश्यन्त घनश्यामाः पीतकौशेयवाससः ॥ ४६ ॥ (पृ० २११, अ० १३)

मीराँ के उल्लिखित पदों में भी उसके 'जोगी' और प्रियतम 'कृष्ण, गिरधर नागर, राम, श्री पत, श्री भगवान्, हरि, गोपाल, साहिब, स्याम, घनस्याम, हरी, ज्योगेसुर, गोपेसुर आदि सभी अभिन्न हैं। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि मीराँ का 'जोगी' कोई लौकिक जोगी नहीं हैं। वह तो आध्यात्मिक अलौकिक पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण ही हैं। हाँ, कुछ पद ऐसे अवश्य हैं[1] जिनसे किसी लौकिक जोगी का भ्रम होता है, किन्तु वे भी वस्तुतः श्रीकृष्ण की ओर ही स्पष्ट संकेत करते हैं।

---

१. (क) जोगिया ने कहियो रे अदेस।
आऊंगी मैं नाहिं रहूं रे कर जटाधारी भेस ॥ ० ॥
चीर को फाड़ कंथा पहिरुं लेऊंगी उपदेस।
गिनते गिनते घिस गई रे मेरी उंगलियाँ की रेख ॥ १ ॥
मुद्रा माला मेख लूं रे, खप्पर लेऊं हाथ।
जोगि होय जग ढूंढ सूं रे, सांवलिया के साथ ॥ २ ॥
मीराँ व्याकुल विरहिनी, कोई आन मिलावे मोय ॥ ३ ॥

—मीराँ सुधा सिन्धु, पृ० ६२८, प० सं० १७

(ख) तेरो भरम नहिं पायो रे जोगी ॥ ० ॥
आसन मांडि गुफा में वैठी, ध्यान हरी को लगायो ॥ १ ॥
गल विच सेली हाथ हाजरियो, अंग भभूति रमायो ॥ २ ॥
मीराँ के प्रभु हरि अविनांसी भाग लिख्यो सोही पायो ॥ ३ ॥

—मीराँ सुधा सिन्धु, पृ० ६२४, पद सं० १

(ग) जोगिया जी निसिदिन जोऊं वाट।
पांव न चालै पंथ दुहेलो, आडा ओघट घाट ॥ ० ॥
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाई।
मैं भोली भोलापन कीन्हौ, राख्यौ नाहीं विलमाई ॥ १ ॥
जोगिया कूं जोवत वोहो दिन वीता, अजहूँ आयो नाहिं।
विरह बुझावण अन्तरि आवो, तपत लगी तन माहिं ॥ २ ॥
के तो जोगी जग में नहीं, कैर, विसारी मोइ।
कांइ करूं कित जाऊं री सजनी नैण गुमांयो रोइ ॥ ३ ॥
आरति तेरी अंतरि मेरे आवो अपनी जाणि।
मीरां व्याकुल हिरहिणी रे, तुम विनि तलफत प्राणि ॥ ४ ॥

—मीरां सुधा-सिंधु, पद सं० ६, पृ० ६२५

उपरोक्त पदों पर गहनता से विचार करने पर कुछ नवीन तथ्य प्रकाश्य होते हैं। मीराँ अपने 'स्याम रा रे देस' जाना चाहती है और इसीलिए वह उधव से कहती है– 'उधवजी म्हानें ले चालो स्यामरा रे देस'। उधवजी जिस 'स्यामरा' के 'देस' मीराँ को ले जायेंगे, वह तो 'जगनायक श्रीकृष्ण' का ही देश हो सकता है, किसी लौकिक जोगी का नहीं। उस अपने स्याम से मिलने के लिए, मीराँ कर में कमंडल और मृगछाला धारण कर 'आदेस आदेस' का शब्द उच्चारण को भी तैयार है। वह तो 'कंथा सिलाकर' गले में धारण करने और 'भगवा भेस' ग्रहण करने को भी तत्पर हो जाती है। अपने 'जनम जनम के सांवरिया गिरधर' से मिलने को वह इतनी आतुर है कि 'जोगनियां' वन जाने तक को वह सहर्ष तैयार हो जाती है। मीराँ की इतनी मिलन-आतुरता केवल अपने स्याम, अपने कृष्ण के लिए ही है, किसी लौकिक जोगी के लिए नहीं। यदि कोई मीराँ के पदों में 'कमंडल, 'मृगछाला', 'आदेस-आदेस' 'कंथा' और 'भगवा-भेस', आदि शब्द देखकर, उसे किसी लौकिक जोगी की जोगनिया मानने की दुष्कल्पना करे तो, यह उसकी जड़ता, कैतवता और मनचलापन ही कहा जायेगा।

सच्चाई यह है कि मीराँ को अपने अलौकिक आध्यात्मिक योगेश्वर श्रीकृष्ण के प्रणय-निवेदन में लौकिक संकेतों, मापदण्डों और शब्दों का सहारा लेना पड़ा। इसके अतिरिक्त प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए, मीराँ के पास और कोई साधन नहीं था। इसी कारण साधारण पाठक को लगता है जैसे मीराँ का प्रिय और प्रणय, आध्यात्मिक और अलौकिक न होकर लौकिक है। यह कठिनाई, केवल मीराँबाई के साथ ही नहीं वल्कि, प्रत्येक संत, भक्त तथा साधु के साथ है। अनेक संतों (भक्तों तथा साधुओं) को अपने अलौकिक प्रेम को लौकिक शब्दों, उपमानों अथवा साधनों के माध्यम से अभिव्यक्ति देनी पड़ी है। चूंकि सार्थक और लौकिक उपमा का ही लोक में अधिक प्रचार और

(घ) कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ॥ ० ॥
आसण मांड अडिग होय वैठा, याही भजन श्री रीत ॥ १ ॥
मैं तो जाणूं जोगी संग चलेगा, छांड गया अधवांच ॥ २ ॥
आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ॥ ३ ॥
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, चरणन आवे चीत ॥ ४ ॥

—मीरां सुधा-सिंधु, पद सं० ७, पृ० ९२५

अधिक महत्व होता है, अतः कबीर ने भी यही कहा– 'मैं राम की बहुरिया'। इसी प्रकार बंगाल में चैतन्य महाप्रभु ने भी स्त्री-भाव से कृष्ण की उपासना की है। कुछ थोड़े से शब्दों के शाब्दिक अर्थों के आधार पर ही हमें इन विख्यात भक्तों को समझने में भूल कर, इनमें स्त्रीत्व का आरोपण नहीं कर देना चाहिये और न ही इनके प्रेम को लौकिक घोषित करने के लिए साधन ही जुटाने चाहिये। यह सब तो केवल एक लौकिक भक्त का, अपने अलौकिक ईश्वर के प्रति लौकिक शब्दों में भक्ति निवेदन ही है। इसी प्रकार लौकिक मीराँ ने भी अपने अलौकिक 'योगेश्वर गिरधर नागर' से लौकिक शब्दों अथवा उपमानों में प्रणय निवेदन किया है। अतः इन पदों के केवल कुछ शब्द महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि सम्पूर्ण पद का सम्पूर्ण भाव ही महत्वपूर्ण है।

'नाथ', 'जोगी', 'अलख', 'कमण्डल' आदि शब्दों से वैष्णव कृष्ण का भाव कम तथा नाथपंथी किसी 'जोगी' या 'नाथ' का भाव अधिक प्रबल दृष्टिगत होता है तथा नाथपंथी 'नाथ' अथवा 'जोगी' का चित्रण ही अधिक स्पष्ट भी होता है किन्तु इन शब्दों के माध्यम से भी मीराँ अपने उपास्यदेव वैष्णव प्रभु 'गिरधर नागर' श्रीकृष्ण का ही ध्यान करती है। अतः हमें गहन अनुभूति के अभिव्यक्ति माध्यम को महत्व न देकर मीराँ की मूल अवस्था अभिव्यक्त आग्रह तथा मूल भाव को महत्व देना चाहिए।

डॉ० सत्येन्द्र के शब्दों में– 'मीराँ ने इस हठयोग का कहीं-कहीं उल्लेख किया है। इस हठयोग की शब्दावली का चमत्कार तो मीराँ में देखने को मिलता है। पर मीराँ का स्पन्दन उसके साथ नहीं है ?[1]

इसी तरह मीराँ का वैराग्य भी उसी अलौकिक 'गिरधर नागर' के लिए ही है, जो मीराँ जैसी 'ओगणगारी रो नाह' है।

मीराँ के पदों में प्रयुक्त 'नाथ' शब्द भी उन्हीं 'स्याम' श्रीकृष्ण के लिए है। भक्ति के आवेश में अनुभूति को अभिव्यक्ति देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग मीराँ ने किया है, हमें केवल उन्हीं पर न अटक कर, पद के सम्पूर्ण मूल भाव को समझने का प्रयास करना चाहिए। मीराँ का 'अणबोला नाथ' कोई लौकिक नाथ या जोगी नहीं है, वे तो जगतनाथ, जगन्नाथ ही हैं अर्थात् श्रीकृष्ण है।

---

१. कला कल्पना और जीवन, पृ १६७।

'नाथ', 'जोगी' आदि शब्द उन दिनों, राजस्थान में अत्यधिक प्रचलित थे, इसी कारण इनका प्रयोग राजस्थान के तत्कालीन प्रायः सभी सन्तों के साहित्य में हुआ है। वस्तुतः ये शब्द लाक्षणिक हैं और नाम प्रतीकात्मक हैं। एक दो पंक्तियाँ अथवा शब्दों को अलग कर, अर्थ का अनर्थ करने की प्रवृत्ति बहुत घातक है। हमें पूरे पद का अध्ययन कर, उसके भाव को सामने रख कर कोई निर्णय करना चाहिए। उपरोक्त पद (सं० ३) को पूरा देखने से ज्ञात होता है कि मीराँ अपने स्याम से कह रही है कि– 'मुझे कुवज्या के बराबर मत तोलौ'। इसी पंक्ति में सम्पूर्ण पद का सम्पूर्ण भाव छिपा है। मीराँ का यह 'अणबोला नाथ' वही स्याम है जो कुवज्या से भी प्रेम करता है। 'कुब्जा' से प्रेम करने वाला नाथ तो वही एक 'जगनाथ'(श्रीकृष्ण) ही, अब तक प्रसिद्ध हैं, किसी लौकिक नाथ के बारे में ऐसा सुना नहीं हैं।

मीराँ के पदों में 'ओढ कामरीया कारी' आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। क्या इन शब्दों के आधार पर यह कह दिया जाय कि मुस्लिम धर्म के 'काली कमली वाले बाबा' से मीराँ का प्रेम सम्बन्ध था? केवल शब्दों के आधार पर तो यह ठीक भी लगता है किन्तु पद के सम्पूर्ण भाव और शब्दों को देखने से ज्ञात यही होता है कि वे कृष्ण ही हैं जो 'काली कमलिया ओढ़े, वृन्दावन में गाय चरा रहे हैं।'

इसी प्रकार मीराँ की पीर न जानने वाले, उस जोगिया का 'पतित पावन बिरद' कहा गया है, जिसका वेदों और पुराणों ने बखान किया हैं। मीराँ उसी 'सुख की खानी' गिरधर से 'दरसण' देने के लिये प्रार्थना करती हैं। विचार करने की आवश्यकता है कि जिस 'जोगीया' का पतित पावन 'विरद' है, वेदों और पुराणों ने, जिसका बखान किया है और जो सभी सुखों की खान है, वह गिरधर क्या लौकिक जोगी हो सकता हैं? नहीं। वस्तुतः वह श्रीकृष्ण के अतिरिक्त कोई दूसरा जोगी हो ही नहीं सकता।

---

१. इसी प्रकार मीराँ के कुछ पदों में है– 'तिलक छापा रुड़ा सोहै वे अमरापुर वाला ।।४।। अमरापुर में सासरो रे पीहर संता पास'। प्रस्तुत पदावली में—पृ० ७५, पद सं० १५५ इस अमरापुर के आधार पर क्या यह कहा जाय कि मीराँ सिन्धी जाति के धर्म में प्रचलित अमरापुर से प्रभावित थी?

है। वह इस लौकिक नगर का नहीं है तभी तो मीराँ उस अलौकिक को अपने लौकिक नगर में बुलाना चाहती है।

जिस जोगीया को मीराँ बार-बार अपने समीप बुलाना चाहती है, वह मन, वचन और कर्म से 'आश' पूर्ण करने वाला है, उसी पति की वह 'पतिव्रता' है। किन्तु वह जोगी कोई साधारण लौकिक जोगी न होकर 'देव' है और उस 'देवा' के अतिरिक्त मीराँ स्वप्न में किसी ओर को नहीं देखना चाहती। उसी सर्व-व्यापक जोगी से, वह एक बार अपने नगर की ओर आने की विनती करती है।

इस उद्भावना (लौकिक जोगी) के मूल में, हमारी विकृत मनोवृत्ति और फ्रायड का आधुनिक प्रभाव ही कुछ हद तक, कहे जा सकते हैं। आज के युग के मानदण्डों, परिस्थितियों तथा उदाहरणों को सामने रख कर, हम (मीराँ पर) अपने निर्णय घोषित करना चाहते हैं, बस यही सत्य दृष्टिकोण में बाधक है। आज के युग का चित्र मीराँ के युग से ठीक विपरीत है। आज के नैतिक मूल्य सदाचार, धार्मिकता, मर्यादा, आनमान, सतित्व आदि सभी बदल गए हैं। वासना प्रधान युग में वासना रहित कल्पना तो, कम हो सकती है किन्तु वासना-रहित युग की महान धार्मिक विभूतियों तक को इस तरह वासना में लपेटा जायेगा, इसकी आशा नहीं थी। किन्तु लगता है जैसे हर असंभव को, संभव कर दिखाने के प्रयास में, संभवतः यह भी संभव हो गया है।

इसी विषय पर विचार करने का एक ओर पहलू भी है और वह है, जोगीमगरा गांव के संबंध को लेकर। थोड़ी देर के लिए यदि यह मान भी लिया जाय कि मीराँ का कोई लौकक जोगी रहा भी होगा और उसका जोगीमगरा से कोई संबंध भी रहा होगा, तब भी यह कल्पना साकार नहीं होती। जोगीमगरा मेड़ता के पास एक गांव अवश्य है, जिसके नाम से मेड़ता जंकशन से जोधपुर की ओर आने वाली रेल्वे लाइन पर, मेड़ता जंकशन के बाद पहला, स्टेशन भी बना हुआ है, किन्तु आज का जोगीमगरा, केवल एक-दो जोगियों की मण्डी के अरिरिक्त और कुछ नहीं था। 'मारवाड़ रा परगना री विगत'[1] में नेणसी ने इस जोगीमगरे का कहीं उल्लेख तक नहीं किया है, न ही

१. 'मारवाड़ रा परगना री विगत' —सम्पा० नारायणसिंह भाटी प्रभापक-प्राच्यविद्या प्रतिक

अन्यत्र प्राप्त किसी प्राचीन सामग्री से इस बात की पुष्टि होती है कि जोगीमगरा मीराँ के युग में भी था। अतः इस कल्पना का मूल आधार ही असत्य है। पुनः न तो जोगीमगरे में कभी जमुना बहती थी, न वृन्दावन वहां है, न समीप गोकल और न ही मथुरा नगरी है। न उस जोगी ने वहां कभी रास रचाई है, न कुवज्या संग नेह बढ़ाया है और न ही मीराँ से उसका पूर्व जन्म का कोई संबंध ही सिद्ध होता है। न तो उस जोगी को 'ब्रह्मा' और 'सेस' ध्याते हैं, न उसका 'विड़द' वेदों ने गाया है, न उसने पतित अनेक उबारें हैं न प्रहलाद की 'प्रतिज्ञा' राखी है और न ही गिरवर धारण किया है। ऊपर वर्णित सभी वर्णनों की मीराँ के पदों में पुनरावर्ती हुई है। तो क्या ऐसे सभी पदों को प्रक्षिप्त मान लें ? किन्तु इतने पर भी बात नहीं बनेगी क्योंकि जोगी शब्द से युक्त सभी पदों में ऐसे वर्णन मिलते हैं। अतः फिर तो यही कहा जा सकता है कि 'जोगी' और 'नाथ' शब्द ही प्रामाणिक है, शेष सब शब्द यहां तक कि पद भी अप्रामाणिक है।

मीराँ के पदों में 'साधु'

मीराँबाई एक महान् भक्त आत्मा है। भक्ति उनके जीवन का मूलमंत्र है, 'सत्संग' और 'हरिकथा' उनके प्राणों की धड़कन है, तीर्थ यात्राएं उनके मन:शान्ति का आवश्यक तत्व है और साधु से बढ़कर पुनीत कर्त्तव्य उन्हें कोई और दिखाई नहीं देता। किन्तु, मीराँ के जोगी और साधु में अन्तर है। 'जोगी' शब्द केवल योगीराज श्रीकृष्ण के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। किन्तु, 'साधु' शब्द का प्रयोग श्रीकृष्ण के लिए न होकर लौकिक साधुओं अथवा संतों-भक्तों के लिए हुआ है। हमें मीराँ के पदों के आधार पर कोई निर्णय देने से पूर्व इस बात को भी दृष्टि में रखना चाहिए। इस पर थोड़ा प्रकाश डालने का प्रयास, श्री शंभूसिंह मनोहर ने, 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका'[1] में लिखे अपने निबन्ध में अवश्य किया है, किन्तु श्री मनोहर, जोगी और साधु को एक ही समझ रहे हैं, इस कारण वे दोनों में अन्तर कर, पाठकों को संतुष्ट नहीं कर सके हैं।

मीराँ का साधुओं अथवा संतों के प्रति बड़ा आदर-भाव रहा है, उनका वह बड़ा सम्मान करती रही है। 'संत समागम' और 'हरिकथा' मीराँ को अत्यधिक प्रिय रहे हैं तथा ये दोनों (उनके अन्तिम समय तक) मीराँ को प्राप्त भी होते रहे हैं। यहाँ भी मीराँ, अपने युग के राजस्थान की धार्मिक परिस्थितियों और परम्पराओं के अनुरूप ही व्यवहार करती है। उस युग में साधु और संत के प्रति, यही आदर-भाव और सम्मान, सम्पूर्ण राजस्थान में व्याप्त था। प्रसिद्धि प्राप्त साधुओं अथवा संतों को, उन दिनों राज-परिवार में भी आमन्त्रित किया जाता था, किन्तु उनके लिए महलों में अलग व्यवस्था होती थी। राज-महलों में भी उन सम्मानित साधुओं अथवा संतों के भजन, हरजस, कीर्तन अथवा उपदेशादि होते थे। स्त्री और पुरुष दोनों ही, बड़ी श्रद्धा से उन्हें सुना करते थे। महाराणा सांगा रायमलोत की झाली रानी के बुलाने पर रैदास का चित्तौड़ आगमन, इसी बात की ओर संकेत एवम् पुष्टि करता है।

संत समाज की आवभगत एवम् उनकी सेवा, आज भी राजपूत समाज तथा राज-परिवारों में है। विवेकानन्द जी को अमेरिका के लिए प्रेरित कर,

---

१ नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग २६।

उनकी पूर्ण व्यवस्था करने वाले खेतड़ी के राजा अजीतसिंह और दयानन्द सरस्वती को राजस्थान में आमन्त्रित करने वाले महाराणा सज्जनसिंह एवम् राजाधिराज नाहरसिंह शाहपुरा ही थे। यहां तक कि पण्डित मदनमोहन जी मालवीय को हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए पूर्ण आर्थिक अनुदान देने वाले भी, राजस्थानी शासक ही थे।

मीराँ के पदों में संतों के प्रति श्रद्धा की भावना व्यक्त मिलती है। वह संत से अनुनय विनय करता हुई कहती है—

संता काले रीज्यौ मारो ईतरो जोर। आज वसो मारे घर ।।टेर।।

छिन घड़ी पल आप पधारिया संता। चरण पवीत कीनी मारी भोम ।।१।।

अचलो विछाय करू प्रनाम। सीस निवाऊं मारा दोनु कर जोर ।।२।।

मारा क्रम कठन होय लागा। आप पधारो जरां निरमल होई ।।३।।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर। सांईया साधुड़ा रो हिरदो वड़ो कठोर ।।४।।

श्रद्धा और भक्ति अपने चरण सोपान पर है। जिस मर्यादा और शालीनता से सत से विनीत आग्रह हुआ है, उसकी अन्यत्र उपलब्धि दुर्लभ है। एक-एक शब्द में संत के प्रति आदर-भाव भरा पड़ा है। संतों को कल रखना है, और उसके लिए अनुनय विनय के अतिरिक्त, एक श्रद्धालु भक्त, और क्या कर सकता है? भक्त की भी तो अपनी मर्यादा की सीमाएँ है, जिन्हें वह लांघना नहीं चाहता। इसीलिए वस केवल इतना शब्द संकेत ही है— 'संता काले रीज्यौ, मारो ईतरो जोर'। इस अनुरोध के पश्चात् भी संत कल तक रुकना नहीं चाहते तो इसका अभिप्राय यह नहीं कि वह उनके आगमन की महती कृपा को विस्मृत कर दे। वह कहती है— "छिन घड़ी पल आप पधारया संता। चरण पवीत कीनी मारी भोम ।।" सतां के इस आगमन पर, श्रद्धा और भक्ति से वह इतनी नम गई है कि "अचलो विछाय करू प्रनाम। सीस निवाऊं मारा दोनु कर जोड़ ।।" मीराँ ने अपनी स्थिति के लिए, एक वैष्णव भक्त की तरह पूर्व जन्म अथवा इस जन्म के कर्मों को ही, कारण माना है— "मारा क्रम कठन होय लागा।" और कर्मों के संकट विमोचन का अमोघ अस्त्र है— "आप पधारो जारां निरमल होई ।।"

किंतना पावन अनुनय है । इसी तरह पुनः द्रष्टव्य है—

धनि आजि की घरी हौ । साद संत में परी ।।टेर ।।
श्रीमद्भागोत श्रवरा सुणी । रसना रटत हरी ।।१।।

मीराँ के संत-समागम से चाहे मेवाड़ राजवंश का अपमान होता हो किन्तु मीराँ के लिए वह पल, धन्य है जब वह 'साद संत में परी ।' 'साद संग' से मीराँ ने 'श्रीमद्भागोत श्रवरा सुणो ।' और 'रसना रटत हरी ।।' जो मीराँ हरीमय हो गई है, उसके जीवन का एक-एक पल, एक-एक घड़ी तभी सार्थक है जब वह संत-समागम में व्यतीत हो । तथा दोनों की तभी सार्थकता है जबकिं वे 'श्रीमद्भागोत' आदि हरि कथा सुने, रसना की तभी महता है, जब वह 'रटत हरी' । मीराँ संत-समागम हेतु जाने का अपना कारण भी स्पष्ट कर देती है—

सहेल्या मारी राम ला(भ)ब म्हे जा(स्यां)सा ।।टेर।।

राम सभा में सतगरु राजा चरणा में सीस नवासां ।।१।।

सतगुरू ग्यान कृपा कर देवे सो हरदे घर लासां ।।२।।

राम सभा में अमरत वाणी सुण सुण (भो) बोत सुख पासां ।।३।।

भेरूं भोपा देवड़ीया जी संक्या न सासां ।।४।।

मीराँ के प्रभु गिरधरनागर चरण कमल चित लासां ।।४।।

'राम लाभ' प्राप्त करने के लिए 'राजसभा' में मीराँ जाना जाहती है । चूंकि रामसभा में 'सतगरू' ही 'राजा' है, अतः भक्त प्रजा होने के नाते 'चरणा में सीस नवासां' । इस पर जो 'सतगुरू ग्यान कृपा कर देवे, सो हिरदे पर लासां ।' 'रामसभा' में अमरत वाणी' की वर्षा होगी जिसे 'सुण सुण बोत सुख पासां ।' मीराँ का मन अपने ही 'प्रभु गिरधरनागर' के 'चरण कमल' में लगा हुआ है अतः वह स्पष्ट कहती है 'भेरूं भोपा देवड़ीया' आदि की 'संक्या न ल्यासां' ।

संतों और साधुओं तथा सतसंग के प्रति मीरां की अनन्य श्रद्धा इतनी सबल है कि वह उसका विश्लेषण करने में भी पूर्ण सक्षम है । सतगुरू को वह जन्म सुधारक के रूप में स्मरण करती हैं—

आजि म्हारे पांवणीया वैरागी जी।
जनम सुधारण सतगुरू आया जी ।।टेक।।
प्रीती करैन राम पद रज लेस्सुं ।
म्हारो सीस चरणां सर देस्युं जी ।।१।।
चरण धोई चरणामत लेस्युं ।
म्हारा पाप विले होइ जासी जी ।।२।।
कर जोड्यां अरज करूं छूं ।
म्हारो जनम सुधारो सतगुरू स्वामी जी ।।३।।

सत-(सत्य) परामर्श दाता = सद्गुरू। इसी व्याख्या के अन्तर्गत मीराँ ने अपने गुरू को लिया है। इस सद्परामर्श के लिए किसी गुरू विशेष से मीराँ बंधी नहीं। वैराग्यधारी 'पांवणीयां' ही मीराँ के 'जनम सुधारण सतगुरू' बन गए हैं। प्रत्येक सत (सच्चा) संत के चरणों में सीस देने को मीराँ प्रस्तुत है। वह सत-संत, सत-साधु और सत्-गुरू के 'चरणां धोय चरणामत' लेने को तत्पर है। मीराँ की दृढ़ धारणा है कि 'इससे 'म्हारा पाप विले होइ जासी जी'। कितनी गहरी आस्था है, कितना दृढ़ आत्म-विश्वास है और कितनी मर्यादा पूर्ण भक्ति है। देख कर आश्चर्य होता है।

'साधां' के आगमन का समाचार सुनते ही भक्त आत्मा, उनके दर्शनार्थ उनकी अमरतवाणी के श्रवणार्थ, अधीर हो उठती है—

रमता लाधा कांकरा सेवा सालगराम ।
यो मन लागो हर नांव सूं रमसां साधां री साथ ।।
साध पधारयां म्हे सुण्या कानां सुणी आवाज ।
सरवर साधां रे वेसणों दूध पखालूं पांय ।।

मीराँ का साधुओं से सम्बन्ध बचपन से रहा है। ज्यों-ज्यों अवस्था बढ़ती गई, संत-समागम और साधु सेवा की प्रवृति भी बढ़ती गई और दृढ़ भी होती गई। जब वह कोमल 'मन लागौ हर नांव सूं' तब तो यह और भी निश्चित हो गया कि 'रमसां साधां री साथ।' 'साध' आगमन की आवाज कानों में पड़ते ही मन हर्षित हो गया, अधीरता बढ़ गई और साधु सेवा अपने पावनतम स्वरूप मे प्रकट हुई— 'दूध पखालूं पांव।'

हिन्दी जगत के जाग्रत पाठक, भक्त के द्वारा साधु के, सतगुरू के, चरण प्रक्षालन के नाना साधनों से परिचित होगें किन्तु दूध से साधु के पैर धोने की मीराँ की अपनी देन है। अब तक इस कार्य हेतु जल का ही अधिक महत्व रहा है चाहे वह सोने और चांदी के कटोरों में भर कर रखा गया हो और चाहे नैन-कटोरों से प्रवाहित हुआ हो, था नीर ही। किन्तु, मीराँ की श्रद्धा इन सबसे दो कदम आगे ही है।

कुछ विद्वानों का विचार है कि मीराँ के पदों का जोगी और साधु अथवा संत एक ही है और उससे उसका लौकिक सम्बन्ध हो सकता है किन्तु इस धारणा से सहमत नहीं हुआ जा सकता। जिन साधुओं अथवा संतों के प्रति मीराँ का इतना आदर, श्रद्धा और पुनीत भाव है, जिनके आगमन पर वह अपने को धन्य मानती है, जिनके पदार्पण की रज-राशि से अपनी 'भोम' को पुनीत हुई मानती है, जिन्हें वह अंचल बिछाकर सादर प्रणाम करती है, कर-बद्ध हो नमन करती है, ऐसे श्रद्धेयों से प्रेमालाप अथवा प्रणय-क्रीड़ा की कल्पना तो क्या, विचार भी असंभव है।

सर्व प्रथम और दृढ़ सत्य तो यही है कि साधुओं, संतों अथवा लौकिक जोगी के साथ मीराँ प्रेम प्रसंग कर ही नहीं सकती, किन्तु यदि कोई यह दुष्कल्पना करे भी, तो उसे इतना और विचार करना चाहिए कि क्या इस अधार्मिक, युग-विपरीत गृहित कृत्य के लिए सतियों, साध्वियों का तब का समाज मीराँ को आदर दे सकता था? क्या मीराँ के पदों को गा गा कर, उसके प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित कर सकता था? मीराँ के प्रति उतना आदर, श्रद्धा और स्नेह हो सकता था, जितना कि आज है? और मान लीजिए कि हो जाता, तो भी क्या ४०० वर्षों तक, वह सम्मान, श्रद्धा और स्नेह अक्षुण्ण रह सकता था? नहीं, कभी नहीं, क्योंकि भक्ति में वासना को कतई
है किन्तु लौकिक प्रेम में वासना सर्वोपरी रहती है। अतः दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर है।

मीराँ लोक कण्ठों पर अपनी अलौकिक भक्ति के कारण ही आज सदियों से विराजमान है। इस अपूर्व जन-श्रद्धा को प्राप्त करने के लिए मीराँ ने महान् त्याग और तपस्या का जीवन विताया है और अपने 'स्व' को सर्वथा त्याग कर प्रकृति के पत्ते-पत्ते में 'साहव' का प्रतिविम्ब देखा है—

"डाल पात के हाथ ना लाऊं ना कोई विरछ सताऊं।
पान पान में सायब देखु झुक करि सीस निवाऊं।
मेरा राम ने रिझाऊं अेजी मैं तो गुण गोविन का गाऊं।।"

ऐसी आध्यात्मिक भूमि पर प्रतिष्ठित भक्ति-भावना के साथ, हमारे विद्वानों द्वारा कल्पित मीरां का लौकिक प्रेम नितान्त भ्रामक और असंगत तो है ही, साथ ही उसे किसी भी आधार पर औचित्य एवं शालीनता की सीमा में भी नहींलाया जा सकता।

मीराँ शब्द की व्युत्पत्ति—

मध्ययुगीन महान् भक्त कवयित्री राजरानी मीराँबाई, भारतीय साहित्य, संस्कृति और भक्ति को, मरुभूमि (राजस्थान) की एक अनुपम भेंट है। शुष्क धरित्री में भक्ति-रस की एक नवीन धारा प्रवाहित कर मीराँ ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया। तलवारों की खनखनाहट, युद्धघोषों के तुमुलनाद तथा सुरा और सुन्दरी से भरपूर वातावरण में मीराँ का भक्तिरस से ओत:प्रोत, जगदीश्वर के प्रति प्रणय-निवेदन और सर्वस्व-समर्पण की तीव्र अभिलाषा, राजस्थान के लिए गौरव और गर्व की वस्तु बन गई है।

मीराँबाई एक ओर अत्यन्त प्रसिद्धि-प्राप्त भक्तमति नारी है, तो दूसरी ओर हिन्दी जगत्, भक्ति-साहित्य और इतिहास में एक अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, यही स्वरूप अब तक मीराँबाई का रहा है। इसका मुख्य कारण भारतीय इतिहास का मीराँ के बारे में मौन रहना ही है। यह वास्तव में अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि मेड़ता, मेवाड़ और मारवाड़ जैसे विख्यात राजकुलों से सम्बन्धित इस विख्यात भक्त-नारी का कहीं प्रामाणिक उल्लेख तक नहीं है। इसी कारण जीवनवृत और काव्य दोनों ही अत्यन्त संदेहात्मक और विवादात्मक बन गए हैं। यहां तक कि मीराँ के नाम पर भी संशय और विवाद खड़े हो गए, प्रामाणिक आधार के अभाव में, बेसिर-पैर की कल्पनाएं उठ खड़ी हुई। ऐसी ही कल्पनाओं और संभावनाओं के सहारे मीराँ नाम की उत्पति को लेकर, हिन्दी साहित्य में एक ज्वार उठ खड़ा हुआ।

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि 'मीराँ नाम नहीं, उपनाम अथवा उपाधि

है।[1] कुछेक विद्वानों का विचार है कि 'मीराँ' नाम तो माना जा सकता है. किन्तु यह शब्द शुद्ध रूप में भारतीय नहीं, अपितु अरबी-फारसी का शब्द है।[2] कुछ विद्वानों ने इस शब्द को भारतीय सिद्ध करने के लिए भी तर्क सम्मत तथ्य प्रस्तुत किए हैं।[3]

मीराँ शब्द को विदेशी सिद्ध करने के लिए, मीराँ के जन्म सम्बन्धी किंवदतियों का जन्म हुआ, जो कालान्तर में ऐतिहासिक सत्य के रूप में मानी जाने लगी। कुछ विद्वज्जनों ने मीराँ का सम्बन्ध अजमेर के मीर साहब से जोड़ा।[4] इस प्रकार हिन्दू धर्म में आस्था रखने वालों ने मीराँ के नाम सम्बन्धी कुछ ऐसी ही कल्पनाएं कीं। इस तरह अनेक मत रखने वालों ने, अपनी मान्यता अथवा धारणा हेतु अनेक प्रमाण भी जुटाए। विचार-शृङ्खला

---

१. स्व० डा० पिताम्बरदत्त बड़थ्वाल, सरस्वती, भाग ४०, अंक ३, मीराँ–बाई नाम।

२. (क) स्व० पुरोहित हरिनारायण जी, संतवाणी पत्रिका, वर्ष १ अंक ११ पृ० २४ तथा मीराँ वृहत्पदावली प्रथम भाग, पृ० २।
(ख) स्व० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, सरस्वती, भाग ४० अंक ३ मीराँबाई नाम।
(ग) श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा, मीरा स्मृति ग्रंथ, पृ० ५२-५३।
(घ) परशुराम चतुर्वेदी, मीराँबाई की पदावली, पृ० २४२-२४३।
(ङ) श्री विश्वेवर नाथ रेऊ, संतवाणी पत्रिका, अंक ११ वर्ष १ पृ० २४।

३. (क) पं० के० का० शास्त्री, कवि चरित भाग १ तथा मीराँबाई नाम, बुद्धिप्रकाश अक्टू० दि० १९३९, पृ० ४२०।
(ख) श्री ललिता प्रसाद सुकुल, मीरा स्मृति ग्रंथ पृ०।
(ग) श्री नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थानी साहित्य, उदयपुर वर्ष १ अंक २।
(घ) श्री ब्रजरत्नदास, मीराँ माधुरी, पृ० ११४-११५।
(ङ) श्री महावीरसिंह गहलोत, मीराँ, जीवनी और काव्य, पृ० १७।
(च) दलाल जेठालाल वाडीलाल, मीराँ स्मृति ग्रंथ, पृ० ११५।
(छ) डॉ० मंजुलाल मजूमदार, संस्कृत भविष्य महापुराण, प्रतिसंग, अध्याय २२, श्लोक४१-४२।
(ज) डॉ० गोकुलभाई पटेल, स्वर भार अने व्यापार पृ० २१६।
(झ) डॉ० भगवानदास तिवारी, मीरा नाम : एक समस्या ? सम्मेलन पत्रिका, भाग ५०, सं० २-३ चैत्र भाद्रपद शक १८८९।

४. स्व० पु० ह० ना० पुरोहित— मीराँ वृहत्पदावली, प्रथम भाग पृ० २ (भूमिका)।

मीराँ शब्द की शुद्धि-अशुद्धि तक भी पहुँची। अल्प मत इस बात के पक्ष में था कि 'मीरा' शब्द शुद्ध है।[1] अनेक विद्वान् 'मीरां' शब्द मानते हैं[2] और ऐसे भी हैं जिनके अनुसार 'मीराँ' शब्द ही शुद्ध है।[3] उपरोक्त विभिन्न मान्यताओं के कारण मीराँ शब्द का प्रयोग भी तीन प्रकार (मीरा, मीरां, मीराँ) से होने लगा। इस तरह केवल 'मीराँ' शब्द को लेकर ही बहुत विचार-विमर्श हुआ। केवल मीराँ शब्द के लिए ही अनेक निबन्ध लिखे गए। इस प्रकार मीरांबाई के नाम को लेकर विद्वानों में तीन श्रेणियां बन गई। इनमें से दो श्रेणियां ही मुख्य

---

१. (क) डॉ० सत्येन्द्र।
(ख) डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल (स्व०), (ग) नरोत्तमदास जी स्वामी, मीरां मंदाकिनी।
(घ) डॉ० सावित्री सिन्हा, मध्यकालीन हिन्दी कवियित्रियां पृ० १०५-१५८।
(ङ) भुवनेश्वर मिश्र माधव, मीराँ की प्रेम साधना।
(च) मीरा स्मृति ग्रंथ— बंगीय हिन्दी परिषद् कलकत्ता।

२. (क) हरिसिद्ध भाई दिवेटिया, मीरांबाई ना भजनो :
(ख) मुंशी देवीप्रसाद, मीरांबाई का जीवन चरित्र।
(ग) तनसुखराम मनसुखराम त्रिपाठी, बृहतकाव्य दोहन पृ० ७।
(घ) प्रो० मुरलीधर श्री वास्तव, मीराँ की प्रेम साधना।
(ङ) इच्छाराम सूर्यराम देसाई, बृहत्काव्य दोहन पृ० ७।
(च) डॉ० भगवानदीन तिवारी— मीरां नाम ? एक ससस्या ? सम्मेलन पत्रिका, भाग ५० संख्या २-३ चैत्र भाद्रपद शक १८८६।

३. (क) डॉ० मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी भाषा और साहित्य।
(ख) डॉ० श्री कृष्णलाल मीरांबाई।
(ग) श्री परशुराम चतुर्वेदी, मीरांबाई की पदावली, पृ० २४२।
(घ) डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, राजस्थानी साहित्य पृ० २६५।
(ङ) श्री ब्रजरत्नदास, मीराँ माधुरी।
(च) श्री स्वामी आनन्द स्वरूप जी, मीराँ सुधा सिन्धु।
(छ) श्री महावीरसिंह गहलोत, मीराँ, जीवनी और काव्य
(ज) श्रीमती पद्मावती शबनम, मीराँ बृहत पद संग्रह तथा मीरां एक अध्ययन।
(झ) श्री रामचन्द्र नारायण ठाकुर, मीराँ प्रेम दिवानी।
(ट) पं० रामलोचन शर्मा कण्टक— मीराँ की प्रेम वाणी।
(ठ) श्रीमती विष्णुकुमारी मंजु— मीराँ पदावली।
(ड) श्री ज्ञानचन्द्र जैन— मीरां और उनकी प्रेम वाणी।
(ढ) श्री कार्तिकप्रसाद खत्री— मीराँ बाई का जीवन चरित्र

कही जा सकती हैं—

१. मीराँ शब्द को विदेशी शब्द मानने वाले

२. मीराँ शब्द को भारतीय मानने वाले

इसी तरह—

१. मीराँ शब्द को नाम मानने वाले

२. मीराँ शब्द को उपाधि मानने वाले

सर्व प्रथम स्व० डा० पीताम्वरदत्त वडथ्वाल ने मीराँ नाम के प्रश्न को उठाया। उनके अनुसर यह फारसी के 'मीर' शब्द से वना है तथा किसी संत (विशेष कर मुसलमान संत) द्वारा दिया गया उपनाम है। आपने कवीरदास जी के चार दोहों [1] में आए हुए मीरां शब्द का अर्थ परमात्मा अथवा ईश्वर से तथा वाई का 'अर्थ' पत्नी से लगा कर, मीराँवाई का अर्थ निकाला— 'ईश्वर की पत्नी'।

---

१. (अ) कवीर चाल्या जाइ था, आगै मिल्या खुदाइ।
मीरां मुझसौं यौ कह्या, किनि फुरमाई गाइ॥

(आ) हज कावै हूवै हूवै गया, केती वार कवीर।
मीराँ मुझमें क्या खता, मुखाँ न वोलै पीर॥

(इ) सुर नर मुनिजन, पीर, अवलिया, मीरां पैदा कीन्हा रे।
कोटिक भय कहालूं वरनूं, सवनि वयाना दीन्हा रे॥

(ई) कहुँ कवीर न दर करेजे मीरां, राम नाम लगि उतरे तीरा।

डॉ० भगवानदास तिवारी की मान्यता है— 'हिन्दी साहित्य के इतिहास में सवसे पहले कवीर की तीन साखियों में मीरां शब्द का उल्लेख पाया जाता है—

चोहरे च्यंतामणि चढ़ी, हाड़ी भारत हाथि।
मींरां मुझसूं मिहिर करि, इव मिलौं न काहू साथि॥१॥
कवीर चाल्या जाइ था, आगें मिल्या खुदाइ।
मीरां मुझ सौं यों कह्या, किनि फुरमाई गाइ॥२॥
हज कावै हूवैं हूवै गया, केती वार कवीर।
मीरां मुझ में क्या खता, मुखां न वोलै पीर॥३॥

—मीरां नाम : एक समस्या ? सम्मेलन पत्रिका पृ० १८७, भाग २-३ चैत्र भाद्रपद शक १८८६।

इसी आधार पर डा० बड़थ्वाल ने मीराँ को निराकारवाद की पोषिका सिद्ध करने का प्रयास किया। उनके विचार से मीराँ ईश्वरवादी शब्द का पर्याय तथा संतों द्वारा दिया गया उपनाम था। इसी धारणा को लेकर, उन्होंने मीराँबाई का अर्थ ईश्वर की पत्नी लगाया और मीराँ को कबीर तथा रैदास से प्रभावित माना।

श्री विश्वेवर नाथ रेऊ ने भी डा० बड़थ्वाल के स्वर में स्वर मिला कर कहा कि मीराँ शब्द संस्कृत का नहीं है।[1]

गुजराती साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान श्री केशवराम काशीराम शास्त्री ने भी इस (मीराँ) शब्द पर विचार किया और इसके मूल रूप की संस्कृत के मिहिर' शब्द से संभावना व्यक्त की।[2]

राजस्थानी साहित्य के विद्वान श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने प्राकृत तथा अपभ्रंश के व्याकरण के आधार पर, मीराँ का मूल रूप बीरां' माना।

मीराँबाई पर कार्य करते हुए, जीवन के अनेक वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् स्व० हरिनारायण जी पुरोहित इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अजमेर शरीफ के सिद्ध मीराशाह की मनौती से उत्पन्न होने के कारण, उनका नाम

---

१. प्रसिद्ध इतिहासवेता श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ का लिखना है कि— "नागौर में मुसलमानों का अड्डा होने व मेड़ते के, उसके निकट रहने से, अथवा अन्य कारणों से उनका प्रभाव राजपूतों पर पड़ा होगा। मीरां शब्द फारसी में मीर का बहुवचन हैं और शहजादों के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

—संतवाणी-पत्रिका, अंक ११, पृ० २४, वर्ष १।

२. के० का० शास्त्री के अनुसार— मिहिर— सूर्य से मिहिरा, मिइरा और फिर मिरा बना। मीरां शब्द का स्त्रीवाची 'आं' नामों के साथ गुजरात में अत्यधिक प्रचलित है। रूपां, धनां, तेजां, शोभां, लीलां, जीपां आदि ऐसें ही शब्द हैं। इसी प्रसंग में वे आगे लिखते हैं— देशी मिरिया झोंपड़ी नाम के लिये प्रयुक्त हुआ होगा। देशी मइहर गांव का अगुआ मइहर, मीअर, मीरा मीरां-गांव के अगुआ राजा की पुत्री मीरा हुई—

—मीरांबाई नाम - बुद्धिप्रकाश - अक्टू० दिस० १६३६, पृ० ४२०

मीरां रखा गया।[१]

श्री ललिता प्रसाद सुकुल ने 'मीराँ' की उत्पति के लिए मेड़ता (शहर) शब्द की व्याख्या को महत्व देते हुए मीर से जलाशय का अर्थ ग्रहण किया और इसी जलाशय के प्रतीक के रूप में, (मीराँ के दादा) राव दूदा जी द्वारा अपनी पौत्री का मीरा नाम रखना सिद्ध किया है।[२]

श्री व्रजरत्नदास मीर या मीरा शब्द को संस्कृत का मानते हैं और इसकी व्युत्पति मि+हरा=मीरा बतलाते हैं।[३]

श्री परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार 'मीराँ' शब्द का मूल रूप 'मीर' ही है।

---

१. अरबी भाषा के अदारी केवल रूप का बना। अम्र से फईल के वजन पर अमीर बना। अमीर का संकुचित रूप मीर हुआ मीर का बहुवचन और प्रतिष्ठा द्योतक मीरां शब्द बना।

—पु० ह० ना० (स्व०)

२. मीर+ता=मीरता। मीर शब्द का अर्थ संस्कृत कोष के अनुसार जलराशि, समुद्र, किसी पर्वत का कोई भाग, सीमा और पेय विशेष और एकाक्षर कोष के अनुसार का शब्द लक्ष्मी शब्द का वाचक है।

—ललिताप्रसाद सुकुल

३. "फारसी के कोषों में मीर शब्द अमीर का मुखफ्फफ अर्थात छोटा रूप लिया गया है और अधीर का अर्थ सर्दार है। मीर का बहुवचन मीरान् या मीरां होता है। इससे अनेक शब्द बनते हैं, जैसे— मीरक=छोटा मीर, मीरजाद या मीरजा=मीर का वंशज, मीर मजलिस = सभापति आखोर = अस्तबल का दरोगा आदि। मुसलमानों में यह प्रमुख सैयदों का अल्ल भी होता है। मुगल दरबार से मीर मीरान् मीरां का सरदार पदवी दी जाती थी और सम्मान के लिये एक मनुष्य को 'मीरान् जी' कह कर सम्बोधित किया जाता था।'

—मीरां माधुरी (भूमिका) पृ० ११२

श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा की सूचना के अनुसार मीर शब्द अरबी फारसी का भी है।[1]

डा० गोकुल भाई पटेल ने गाथा सप्तमी का आधार लेकर मदिरा से महरा और मइरा से मीरा शब्द की उत्पति मानी है।[2]

डॉ० भगवानदास तिवारी के अनुसार, "जहां तक मीरा शब्द की व्युत्पति का सम्बन्ध है, मीराँ शब्द संस्कृत के मीर शब्द से उद्धृत माना जा सकता है; और उसमें मीराँ+अ=मीराँ नाम बन सकता है, किन्तु राजस्थान के क्षत्रिय कुल में प्रयुक्त मीराँ शब्द फारसी के मीर शब्द से व्युत्पन्न नहीं माना जा सकता।"[3]

दलाल जेठालाल वाडीलाल के अनुसार, मीराँ जन्म के समय, एक अलौकिक प्रकाश विम्ब दिखाई पड़ा था, इसी कारण पुत्री का नाम मही+हरा=अर्थात् मीरा रखा गया।[4]

---

१. 'मइहर शब्द का अर्थ मिहिर, मेहर, दयावाला, दयालु भी पदवि है किन्तु वह जन्मभूमि, पीहर, पितृगृह का द्योतक है। उदाहरणार्थ— बाबूस मीरा मइहर छूटी जाय। मातृगृह=माइहर, महिअर, महिअर फ्रान्सीसी भाषा में मिलने वाला समुद्रवाची मेरला मेरमेडिट्रान्ने भूमध्य सागर शब्द इसी अर्थ में संस्कृत शब्द महापर्व विद्यमान है, जिसका रूप गुजराती भाषा के कवि भालण (संवत् १४६०-१५७०) की कादम्बरी में मिलता है— मिहरामण अति कोडी।........मुझे दिखाई देता है कि मीरां शब्द के नामार्थ में मिहिर सूर्य से अधिक ठीक है। सूर्योदय के पर्वत को बागविल में मेरा से कहा गया है। यही हमारा सुमेरु है। मिहिर कुल नाम भी है और सूर्य वंश का द्योतक भी सूर्यकुल से मीरां का सम्बन्ध था ही।

—मीरा स्मृति ग्रंथ, पृ० ५३-५४

२. स्वर भार अने व्यापार पृ० २१६

३. सम्मेलन पत्रिका, पृ० १६२-१६३ (भाग ५०, सं० २-३, चैत्र भाद्रपद शक १८८६)।

४. 'प्रेम लक्षणा भक्ति थी वंश कीधां करतार।
धनधन मीरांबाई ने गिरधारी शूं प्यार॥'

मीरां के जन्म के समय अलौकिक प्रकाश का विम्ब दिखलाई पड़ा था, जिससे कुमारी का नाम मही+इरा अर्थात मीरा रखा गया। मही का अर्थ पृथ्वी और इरा का अर्थ तेज या प्रकाश हुआ। मीरां ने पृथ्वी पर निर्दोष प्रेम-भक्ति का प्रकाश फैलाया और अपने पिता रत्नसिंह से प्रगट होने के कारण रत्न के प्रकाश के समान यह उज्ज्वल तथा निर्मल थी।'

—मीरां माधुरी पृ० ११६ (भूमिका)

कुछ विद्वानों ने मीराँ शब्द को अंग्रेजी कोषों में ढूंढने का प्रयास भी किया है।[1]

इस तरह मीराँ नाम को लेकर पर्याप्त विचार किया गया है, किन्तु दृष्टिकोणों को छोड़, अधिकांश में भारतीय दृष्टि का अभाव ही है। 'मीर' शब्द के कारण अधिकाँश विद्वानों की दृष्टि अरबी और फारसी भाषाओं पर लगी रही। कुछ विद्वानों ने अवश्य ही भारतीय दृष्टिकोण से इस शब्द पर विचार किया। कुछ विद्वानों ने इस नाम को लेकर नवीन कल्पनाएं भी कीं। इस तरह यह शब्द विवादास्पद वनता गया।

मीराँवाई द्वारा अपने प्रति अथवा किसी समसामयिक भक्त अथवा साहित्यकार द्वारा मीराँ के प्रति पूर्ण और प्रामाणिक उल्लेख न करने के कारण भी यह नाम (मीराँ) एक समस्या वन गया।

लेखक की मान्यता—

वस्तुत: मीराँ शव्द पूर्ण भारतीय शव्द है, जिसकी व्युत्पति संस्कृत भाषा से हुई है। यह शव्द भारतीय संस्कृति और वाङ्गमय में इतना प्रसिद्ध और घुला-मिला है कि आज हम इसे चाह कर भी भारतीय संस्कृति और और वाङ्गमय से अलग नहीं कर सकते। मीराँ शव्द संस्कृत का है जिसका तात्पर्य है— लक्ष्मी। लक्ष्मी के रूप में यह शव्द भारत में अत्यन्त प्रचलित रहा है तथा आज भी है किन्तु मीराँ के रूप में नया लग रहा है।

प्रस्तुत है मीराँ शव्द की व्युत्पति प्रक्रिया—

मीर— पुं० (मिन्वति प्रक्षिपन्ति नद्या जलान्यत्रेति)

मिज्+"श्रुसि चिमित्रा दीर्घश्च।" उण ०२।

---

१. अंग्रेजी के कोषों को देखने से ज्ञात होता है कि एंग्लो-सेक्शन शव्द मेअर (एम०, ई०, आर० ई०) का अर्थ झील या ताल है। जर्मन तथा डच भाषाओं के 'मेर' (एम० ई० ई० आर०), लेटिन के मेअर तथा फ्रेंच के 'मेर' (एम० ई० आर०) या मेअर समानार्थी है। इन सबका अर्थ समुद्र है। इन कोषों में यह टिप्पणी भी है कि यह शव्द संस्कृत मरु (रेगिस्तान) या म्रि (मरना) शब्दों से व्युत्पन्न है और इसी से मेराइन (समुद्री) तथा मार्श (दलदल) शव्द बने हैं।"

श्री ब्रजरत्नदास, मीरां माधुरी पृ० ११३

२५।इति क्रन् दीर्घत्वश्च । समुद्रः । इत्युणादि कोपः ।

पव्र्वतैक देशः । सीमा । पानीयम् । इति संक्षिप्रसारोणादिवृतिः ॥

मिञ् धातु, उणादि प्रत्यय 'र' मिय के उकार को दीर्घ मीर कर देता है। शब्द कल्पद्रुम में इसके समुद्र, पर्वत का एक भाग, सीमा, जल आदि अर्थ दिये हैं।

मीर शब्द मिञ् धातु से बना है। इणादि प्रत्यय 'र' लगा है। 'र' प्रत्यय के जुड़ने से (लगने से) 'मि' धातु दीर्घ हो गई, जिसका अर्थ हुआ— जहां नदियां अपना जल डालती हैं, वह मीर है। इसके दूसरे अर्थ, पर्वत का एक भाग, सीमा और जल भी दिये गए हैं।

मीर से उत्पन्न होने वाले को 'मीरज' कहेंगे। इसमें मीर+अन् धातु में 'ड' प्रत्यय है और यह 'ड' प्रत्यय सप्तमी उप-पद रहने पर लगता है अर्थात् मीरे जायते इति 'मीरज' (समुद्र में उत्पन्न होने वाला)। इसका स्त्रीलिंग शब्द 'मीरजा' होगा और इसके अकार का लोप हो जाने पर मीरा शब्द बनेगा। इस प्रकार मीरा का अर्थ होगा— समुद्र से उत्पन्न होने वाली अर्थात् लक्ष्मी।

इस प्रकार के लोप होने का संस्कृत में एक सूत्र दिया गया है— "क ग च ज त द पयवाम प्रायोलोपाः।" इस सूत्र के आधार पर 'मीरज' से जकार का लोप होते ही 'मीरज' 'मीर' बन गया तथा 'मीरज के स्त्रीलिंग 'मीरजा' से अकार लोप होते ही मीरा बन गया।

इस तरह मीराँ शब्द शुद्ध संस्कृत का है। संस्कृत का यही शब्द 'मीरा' राजस्थानी में 'मीरां' अथवा मीराँ बन गया। संस्कृत के अनुसार 'मीरा' (अनुस्वार रहित) शब्द ही शुद्ध कहा जायेगा, किन्तु हिन्दी तथा राजस्थानी भाषाओं में 'मीराँ' अथवा 'मीरां' शुद्ध माना जायेगा। राजस्थानी भाषा के अधिकांश विद्वान 'मीराँ' को ही शुद्ध मानते हैं।[1]

यह कहना सत्य नहीं है कि मीराँ शब्द भारतीय न होकर विदेशी है और यह फारसी अथवा अरबी से आया है और न ही 'मीर साहब' की मनौती वाली किंवदन्ती ही सत्य है। यह कहना भी उचित नहीं है कि मीराँ उपनाम अथवा उपाधि थी। मेड़ता के जलाशय की कल्पना भी सुन्दर ही कही जा सकती है, सत्य नहीं।

पाठालोचन की दृष्टि से–

प्रस्तुत पदावली को पाठालोचन के सिद्धान्तों के आधार पर सम्पादित करने का प्रयास किया गया है। पाठालोचन का सम्बंध इसी प्रकार के सम्पादन[1] से अधिक होने के कारण, मैंने पाठालोचन के सिद्धान्तों को आधार बनाया है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर कवि के मूलपाठ का अनुसन्धान ही सामान्यत: पाठालोचन कहा जाता है।[2] पाठालोचक के समक्ष एक ही कवि के काव्य की अनेक प्रतियाँ होती हैं, जिनमें से कुछ विभिन्न स्थानों, समय तथा ग्रन्थों में होती हैं, तो कुछ एक ही स्थान, समय एवं ग्रन्थ से। पाठालोचक इन ग्रन्थों के माध्यम से कवि के मूलपाठ तक पहुँचने का प्रयास करता है और इसके लिए उसे मूलपाठ अनुसंधान सम्बंधी सिद्धान्तों तथा मूलपाठ अनुसंधान सम्बंधी सिद्धान्तों तथा मूलपाठ अनुसंधान सम्बंधी प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ता है। यद्यपि यह सत्य है कि प्रत्येक विषय, कवि अथवा काव्यकृति (हस्तलिखित ग्रन्थों सहित) के मूलपाठ तक पहुँचने के लिए अध्ययनकर्ता को अन्तत: अपनी बुद्धि एवं विवेक से ही कार्य करना होता है[3] क्योंकि प्रत्येक ग्रन्थ की पाठ-समस्याएं भिन्न-भिन्न होती हैं, किन्तु कुछ सामान्य सिद्धान्त अवश्य हैं जिन्हें सभी ग्रन्थों के पाठालोचन में लागू किया जा सकता है। मैंने अपने सम्पादन में इन्हीं सामान्य सिद्धान्तों का उपयोग किया है।

पाठालोचन के सामान्य सिद्धान्त

पाठचयन का एक सामान्य सिद्धान्त यह है कि सभी प्रतियों में समानरूप से प्राप्त होने वाला पाठ किसी समान उद्गम की ओर संकेत करता है। संभव है वह समान उद्गम रचयिता का स्वहस्तलेख ही हो।[4]

---

१ पाठालोचन–सिद्धान्त और प्रक्रिया–डॉ० मिथिलेश कान्ति एवं डॉ० विमलेश कान्ति, पृ० १

२ पाठालोचन सिद्धान्त और प्रक्रिया–डॉ०मिथिलेश कान्ति एवं डॉ०विमलेश कान्ति,पृ० १

३ Postgate; Encyclopeadia Britanica, (Texual criticism)

४ Hall, Companion to classical taxts.

—पाठालोचक अपने कार्य को सुचारुरूप से सम्पन्न करने के लिए अनुपलब्ध प्रतियों का भी अनुमान करके चलता है।

—पाठालोचक यह मान कर चलता है कि जो भी रचना प्रतिलिपि के रूप में होती हुई आज हमें प्राप्त होगी उसमें अवश्यमेव अशुद्धियां आ जाएंगी और यह प्रतिलिपि मूल से जितनी दूर होगी उतनी ही उसमें अधिक अशुद्धियां भी होंगी।

—पाठालोचन का यह सामान्य सिद्धान्त बन गया है कि जितना ही कठिनतर, अप्रचलित तथा संक्षिप्त पाठ मिले उसे उतना ही प्राचीन तथा प्रामाणिक माना जाना चाहिए।

—पाठचयन करते समय हम एक निर्धारित विधि से क्रमशः प्राप्त पाठ से अप्राप्त पाठ की ओर बढ़ते हैं और इसी क्रम से हम धीरे-धीरे रचयिता के मूलपाठ तक पहुँचते हैं।

—उन समस्त पाठों को विकृत-पाठ की संज्ञा दी जायगी, जिनके मूल लेखक द्वारा लिखे होने की किसी प्रकार की कल्पना नहीं की जा सकती और जो लेखक की भाषा - शैली और विचारधारा के पूर्णतया विपरीत पड़ते हैं।

पाठालोचक का उद्देश्य–

पाठालोचक का उद्देश्य प्राचीनतम पाठ प्रस्तुत करना नहीं, वरन् कविकृत पाठ प्रस्तुत करना है और कविकृत पाठ प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक है कि वह कवि की भाषा-शैली, उसकी विचारधारा आदि का सम्यक् अध्ययन करे, यह देखे कि जो पाठ हमें मिल रहा है वह लेखककृत हो भी सकता है कि नहीं; कहीं कोई पाठ की विचारधारा का विरोध तो नहीं कर रहा है, और वह प्रक्षिप्त तो नहीं है, कहीं अनावश्यक पुनरावृति तो नहीं हो रही है, और कहीं बीच में लेखक द्वारा अपनाई गई छंद, गति आदि की अवहेलना तो नहीं होती है।

—पाठालोचन का उद्देश्य किसी रचना के मूलपाठ का पुनर्निर्माण करना होता है।

एक पाठालोचक की तरह मेरा भी एक मात्र ध्येय यही रहा है कि मैं मीराँबाई की मूल रचना को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकूँ। मेरा यह भी उद्देश्य रहा है कि मीराँ के मूल पदों का अनुसंधान कर, उन्हें अधिक से अधिक सुन्दर और मीराँबाई द्वारा अभीष्ट रूप में प्रस्तुत कर सकूँ। इस उद्देश्य की पूर्ति-हेतु मैंने एक ओर केवल लिखित परम्परा से प्राप्त मीराँ के पदों को संगृहीत किया तो दूसरी ओर प्राचीनतम हस्तलिखित ग्रन्थों में प्राप्त पदों से कविकृत पाठ को प्राप्त करने के लिए, प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के सभी पदों का संकलन किया। संकलित पदों के माध्यम से कवि के मूल पाठ तक पहुंचने के लिए पाठालोचन के सिद्धान्तों का सहारा लिया। यद्यपि पाठालोचन का आधार वह समस्त सामग्री मानी जाती है जिसमें कविकृत पाठ मिलने की संभावना रहती है अर्थात् लिखित एवं मौखिक दोनों परम्पराओं से प्राप्त सामग्री होती है। किन्तु, मैंने इस सम्पादन कार्य तक केवल हस्तलिखित-परम्परा से प्राप्त सामग्री को ही आधार बनाया है।

इसी प्रकार पाठालोचन का प्रमुख सिद्धान्त है कि प्राप्त अनेक हस्तलिखित प्रतियों से किसी एक को आदर्श प्रति के रूप में स्वीकार कर, कवि के मूल पाठ तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है, किन्तु चूंकि मीराँबाई के समस्त पदों का संकलन कार्य अभी सम्पूर्ण नहीं हुआ है तथा मेरे पास मीराँ वृहत्पदावली के अगले भाग की सामग्री एवं योजना है अतः अद्यावधि प्राप्त किसी हस्तलिखित प्रति को आदर्श प्रति मान कर, पाठ-अनुसंधान की प्रक्रिया इस पुस्तक में नहीं रखी गई है।

इसके साथ ही चूंकि पाठालोचन-पद्धति का उद्भव एवं विकास योरोप में प्राचीन ग्रन्थों के सम्पादन से हुआ है और मेरी दृष्टि में पाठालोचन के उन सभी सिद्धान्तों को भारतीय ग्रंथों पर पूर्णतया लागू नहीं किया जा सकता। अतः मैंने बहुत सावधानी से पाठाचोलन के सिद्धान्तों का वहीं आधार बनाया है जहां इनकी आवश्यकता समझी गई है।

पाठालोचन की शास्त्रीय तथा वर्तमान में मान्य विधि के अनुसार मैंने भी अपने इस अनुसंधान को निम्नलिखित चार भागों में बांटा है—

१. पद-संग्रह और वंश-वृक्ष निर्माण (Heuristics)

२. पाठनिर्माण Recensio

३. पाठसुधार Emendatio

४. पाठविवेचन Higher criticism

सर्व प्रथम मैंने प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीराँबाई के सभी पदों का संग्रह किया। तत्पश्चात् अब तक प्रकाशित मीराँ के पदों का संकलन किया। सामग्री-संग्रह के पश्चात् उसकी अंतरंग एवं बहिरंग परीक्षा की और सामग्री की प्रामाणिकता तथा प्राचीनता के आधार पर उसका अपेक्षित महत्त्व स्थिर किया। अंत में प्रतियों के पाठों का मिलान कर, प्रतियों के मुख्य तथा गौण सम्बंधों को निश्चित किया।

पाठालोचन के प्रमुख सिद्धान्त के अनुसार मैंने विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त मीराँ के पदों के पाठों में (प्राचीनतम पाठ के इतिहास में पैठ कर तथा कवि-पाठ का अनुमान लगा कर) उन पदों को अधिकाधिक सुन्दर एवं प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करने की दृष्टि से आवश्यक सुधार किए हैं। 91492

मैंने मीराँबाई के पदों के मूल स्रोतों का अध्ययन करते हुए Higher Criticism को भी अपने सम्पादन का आधार बनाया है। मीराँ की भाषा, विचारधारा तथा पदों एवं इतर ग्रथों में प्राप्त विचार शृंखला को सम्पादन में विशेष स्थान दिया है, किन्तु यह क्रम अभी पूर्ण नहीं हुआ है।

प्रस्तुत सम्पादन में सम्पादक का ध्येय यही रहा है कि मीराँबाई के पदों के मूल पाठ का अनुसंधान किया जा सके न कि प्राचीनतम पाठ का। अतः सम्पादक को अन्त:साक्ष्य[1] तथा बाह्यसाक्ष्य[2] को महत्त्व देना पड़ा है। मीरां की

---

१. Internal Probability–अन्त:साक्ष्य वह साक्ष्य है जो पाठ-विज्ञानी को लेखक की कृति के अध्ययन से प्राप्त होता है। पाठालोचन-सिद्धान्त और प्रक्रिया-डॉ० मिथिलेश कान्ति एव डॉ० विमलेश कान्ति पृ० ५०

२. Documental Probability–

"किसी भी पाठ-सामग्री के सम्बन्ध में यह देखना कि उसके लिपिकाल, लिपि-प्रयोजन आदि के सम्बंध में उसमें जो कुछ कहा या लिखा हुआ है, वह कहां तक विश्वसनीय है, अथवा यदि उसमें इस प्रकार का उल्लेख नहीं है, फिर भी इन विषयों पर उसके सम्बंध में कोई प्रसिद्धि रही है, तो वह कहां तक मान्य है यह प्रति की बहिरंग परीक्षा कहलाती है।"

डॉ० माताप्रसाद गुप्त: अनुसंधान की प्रक्रिया (पाठानुसंधान) पृ० १२३

समस्त विशेषताओं का ध्यान रखते हुए उसके प्रयोग एवं सन्दर्भों को भी जानना पड़ा। इस भाग में मैंने केवल संक्षिप्त संशोधन ही किए हैं।

—प्रस्तुत मीरांवृहत्पदावली भाग २ विद्वत्समाज को भेंट करने में जिन सज्जनों की प्रेरणा, सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ है उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। इस कार्य के सम्पूर्ण होने में हितैषियों की प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा सहयोग एवं गुरुजनों की शुभाशीष व शुभकामना सदा साथ रही है। यदि इन महानुभावों का सहयोग न मिल पाता तो संभव है, यह अनुष्ठान पूर्ण ही न होता।

सर्व प्रथम मैं श्रद्धेय डॉ० सत्येन्द्र (भू० पू० विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं वर्तमान निदेशक, राज० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर के प्रति नतमस्तक हूं, जिन्होंने इस पुनीत कार्य की ओर मुझे प्रेरित किया और अन्त तक पूर्ण निर्देशन तथा प्रोत्साहन देते रहे। इस प्रकाशन के समाचार मात्र से जो हर्ष डॉ. साहब को हुआ, वह इस बात का परिचायक है कि आपको इस कार्य से संतोष अवश्य हुआ। आपकी सद्प्रेरणा, सद्परामर्श एवं सुयोग्य मार्गदर्शन न होता तो संभव है यह कार्य न हो पाता। इसके साथ ही मेरे अनुरोध पर आपने अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी इस पुस्तक की महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना (समीक्षात्मक अध्ययन सहित) लिख कर मुझे प्रोत्साहित किया है, इसके लिए मैं विनम्र शब्दों में आपका आभार प्रकट् करता हूं।

मैं आदरणीय डॉ. फतेहसिंहजी (भू पू. निदेशक प्राच्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) का किन शब्दों में आभार प्रदर्शन करूँ। आप मेरे श्रद्धाकेन्द्र हैं। आपने ही इस ग्रन्थ का, हिन्दी-जगत् के लिए महत्त्व समझ कर, इसे प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित करने का निर्णय लिया। आप जैसे मनीषी के सत्संग से जो ज्ञान और निर्देश प्राप्त हुआ, उसके लिए मैं आपका ऋणी हूं।

इसी प्रकार सम्माननीय डॉ. दशरथजी शर्मा भू. पू. इतिहास विभागाध्यक्ष जो.वि. वि. एवं वर्तमान—(निदेशक, राजस्थान प्राच्च विद्याप्रतिष्ठान, जोधपुर) का कृतज्ञ हूं कि आपने मेरे शोध-कार्य के प्रति आशा और विश्वास रख कर मुझे सदा प्रोत्साहित किया। आपने ही मुझे राजस्थान इतिहास कांग्रेस के प्रथम (जोधपुर) अधिवेशन में 'मीरांबाई के जीवनवृत पर पुनर्विचार'-निबन्ध लिखने तथा निबन्धपाठ करने को प्रेरित किया था। आपने ही मुझे यह सिखाया कि सत्य का अन्वेषण बड़ी ईमानदारी से होना चाहिए। सच तो यह है कि आप ही मेरे नवजीवन के निर्माता हैं। ऐसे तपस्वी साधक को मैं नमन करता हूं।

मैं विशेष रूप से (राव साहब मसूदा) श्री नारायणसिंह तथा डॉ० करणीसिंहजी (भू० पू० महाराजा बीकानेर) का उनकी मीरांभक्ति एवं राज-

स्थानी भाषा प्रेम के साथ-साथ मेरे प्रति स्नेह सहयोग एवं आशीर्वाद के प्रति आभार स्वीकार करता हूं।

डॉ. नारायणसिंह भाटी (निदेशक, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी जोधपुर) ने प्रारम्भ से ही मेरे इस कार्य में विशेष रुचि लेकर सहयोग एवं सुझाव दिए। आपने राजस्थानी शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थों को देखने उनकी प्रतिलिपि करने की जो सुविधा दी तथा संस्थान स्थित दुलर्भ एव मूल्यवान मीरांबाई के हस्तचित्र की 'फोटोकॉपी' करने की अनुमति प्रदान की, वह आपके अपनेपन एव विद्यानुराग का परिचायक है। अपने ही बड़े परिश्रम एव लगन से लगभग १५,००० ग्रन्थों एवं सैकड़ों मूल्यवान हस्तचित्रों को संगृहीत कर इस शोधसंस्यान का स्थायी महत्व स्थापित कर दिया है।

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के सहयोग को विस्मृत कर देना, वास्तविकता छिपाना होगा। राजस्थानी भाषा और साहित्य के इस प्रसिद्ध विद्वान् ने जिस आत्मीयता, परिश्रम एवं लगन से इस काय में आद्योपांत सहायता की, उसे शब्दों में व्यक्त करना, इस मौनसाधक की भावनाओं को ठेस पहुंचाना होगा, अतः हृदय से अनुगृहीत हूँ।

राजस्थान प्राच्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के सर्व श्री पुरुषोतमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी तथा विशेष रूप से श्री गिरधरवल्लभ दाधीच से प्राप्त सहयोग को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

इसी प्रकार राज० प्रा० विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, जयपुर तथा बीकानेर शाखाओं, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर, संत साहित्य संगम, बीकानेर आदि संस्थाओं के प्रबन्धकों, संचालकों एवं कर्मचारियों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

मेरे स्वजनों में श्रद्धेय मामा-ले० कर्नल धोंकलसिंहजी एवं उनके अनुज कमान्डेन्ट श्री सवाईसिंह मेरे अग्रज श्री सायरसिंह तथा पितृ तुल्य श्वसुर श्री ओंकारसिंहजी आइ० ए० एस० का मुझे इस योग्य बनाने में बहुत योग रहा है अतः उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रदर्शित करता हूं।

मेरा प्रथम प्रयत्न विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत है। अनेक अभावों एवं त्रुटियों का रहना संभव है। अतः समस्त भूलों तथा त्रुटियों के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं। मेरे इस तुच्छ प्रयास से हिन्दी साहित्य-भण्डार की श्रीवृद्धि हो सकी, तो मैं अपने कार्य को सफल समझूंगा।

कल्याणसिंह शेखावत
सम्पादक

जोधपुर, १९७३

प्रस्तावना

(समीक्षात्मक अध्ययन सहित)

ले० सत्येन्द्र

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के प्रकाशन में 'मीराँबाई वृहत्पदावली' में मीराँ के पदों के संग्रह का यह दूसरा खंड एक विचित्र संयोग का परिणाम है, क्योंकि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत को राजस्थान विश्वविद्यालय से मीराँबाई पर पी-एच० डी० हेतु अनुसंधान करने के लिए विषय दिया गया था, उसके लिए इन्होंने जो कार्य करना आरंभ किया तो संयोग से इनको ऐसे पद मिलते चले गये जो अब तक प्रकाश में नहीं आये थे। किन्तु, इस संयोग के पीछे कई कारण भी विद्यमान थे; जिनसे यह संयोग सिद्ध हुआ।

सबसे बड़ा कारण तो यह था कि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत का मीराँबाई की वंश-परंपरा से संबंध बैठता है। तभी जब जयपुर में "मीराँबाई शोध संस्थान' या परिषद् की स्थापना का विचार उठा तो इन्होंने बड़ी कर्मठता दिखायी थी। मसूदा के राव साहब श्री नारायणसिंहजी को भी इन्होंने प्रवृत कराया। एक बड़ा आयोजन करने का भी निर्णय उस समय लिया गया था। ये उस समय ही हिन्दी एम० ए० की उपाधि प्राप्त करके किसी विषय पर अनुसंधान के लिए व्यग्र थे। 'मीराँबाई' पर अनुसंधान करने की बात तभी उठी।

प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को मीराँबाई प्रिय है। ब्रजवासी को तो और भी अधिक प्रिय है। पर मीराँबाई अपने क्षेत्रों की सीमाओं को बहुत पहले ही लाँघ चुकी हैं। वे राजस्थान की थीं, वे हिन्दी की थीं-पर वे गुजरात की भी थीं। इन तीनों क्षेत्रों से उनका निजी संपर्क रहा था। राजस्थान में पैदा हुईं, यहीं के एक घराने में विवाहित होकर गयीं-पर राजघराना छोड़कर जब कृष्णयोगिनी मीराँ साधु-संतों में विचरण करने लगीं तो वे वृन्दावन भी गयीं, और गुजरात भी गयीं। इस कारण राजस्थान, उत्तर प्रदेश और गुजरात उन्हें अपना मानते हैं। और यह

विषय अब भी विवादास्पद ही है कि उन्होंने अपने पद राजस्थानी में लिखे, ब्रज में लिखे या गुजराती मे लिखे। किन्तु, बंगाल से ऐसा संबंध न होने पर भी मीराँ बंगाल में भी अत्यन्त प्रिय है। मैं जिन दिनों कलकत्ते में कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष था तो ऐसी कई देवियों से परिचय हुआ जो मीराँ के गीत बड़ी भक्ति से गाती थीं; पर वहीं भारतीय संस्कृति के निष्णात विद्वान डॉ० कालीदास नाग से यह भी विदित हुआ कि बगाल में एक ऐसी भी देवी है जो मीराँ का अवतार ही मानी जाती है। उन्होने कहीं मीराँ के गीत पढ़े-सीखे नही नहीं पर मीराँ के गीत उनके कण्ठ से बिना प्रयास उद्गरित होते है। स्पष्ट है कि मीरां तो लोक-कवयित्री हो गयी हैं, और भारत के घर-घर में संतो की वाणी के साथ-साथ पहुंच गयी हैं।

मेरे कलकत्ते में पहुचने से पूर्व मीरां को लेकर कलकत्ते में एक आंदोलन-सा हो चुका था। वात यह थी कि प्रो. ललिताप्रसाद सुकुल (अब स्वर्गीय) ने 'मीरां स्मृति ग्रंथ' मे मीरां के पदों का संग्रह प्रकाशित किया। डाकोर वाली प्रति को उन्होंने प्रमाण माना और डाकोर प्रति की भाषा को ही मीरां के पदों की भाषा। अब इस पर बावैला मचा। इस बावैले ने मीरां के पदों की भाषा की समस्या और उनके प्रामाणिक पदों की समस्या को उभार दिया। हिन्दी-जगत् में इस सबंध में उस समय बहुत चर्चा हुई।

इससे मीराँ के पदों के संबंध में ही प्रश्न नहीं खड़ा हुआ, सभी संतों के संबंध में ही उठ खड़ा हुआ। मेरे मन में यह विचार उठा कि इन संतों में से प्रमुख की प्रामाणिक रचना और प्रामाणिक पाठ अर्थात् प्रामाणिक भाषा-रूप का निर्धारण शोध-प्रयत्नों से किया जाना चाहिये। तभी एक शोध-छात्र को 'कबीर की भाषा के प्रामाणिक रूप पर अनुसंधान का कार्य मैंने सौंपा। मैं दो वर्ष बाद आगरा आ गया, तब क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ में मैंने मीराँ के समस्त उपलब्ध पदों के स्रोतों पर कार्य कराने के लिए एक विषय डॉ० विमला गौड़ को दिया। मेरा अभिप्राय यह था कि एक बार मीरां के समस्त पद एक संग्रह में प्रस्तुत कर दिये जायँ, उनके विषयों के अनुसार वर्ग कर दिये जायँ, उनके स्रोतों का अनुसंधान हो ले–तो आगे भाषा विषयक अनुसंधान की एक सीढ़ी प्रस्तुत हो जायगी।

नहीं किसी सीमा तक उसकी निजी भाषा के रूप में भी दर्शन कर सकेंगे, क्योंकि मीरांकालीन भाषा ही तो आज की मेड़ता में ढली है। मीरां की भाषा से संबन्धित विवाद की नींव बहुत गहरी है, वह ऊपरी तर्कों और युक्तियों से नहीं सुलझाया जा सकता। हाँ, हम लोग अपना-अपना आग्रह प्रकट् करते है। यह आग्रह समस्या को और उलझाता है। पर यह भी सत्य है कि इस प्रकार सभी आग्रह और दुराग्रह उभरकर ऊपर आ जायं तो फिर यथार्थ की खोज का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है। जो मीरां की भाषा मात्र राजस्थानी मानते हैं, उनके ही तर्क के अनुकूल यह मान्यता अधिक वलवती होनी चाहिये कि मीराँ की भाषा मेड़ती थी। जहाँ तक मेरा संबंध है, मेरा निजी मत तो यह है कि कवयित्री मीरां को व्रजभाषा का ज्ञान था। जो लोग यह कहते हैं कि वे वृन्दावन नहीं गयी थीं, तो यह उस कथन का ही खंडन है जो यह कहते हैं कि वे वृन्दावन गयीं थीं। उनकी वृन्दावन-यात्रा से उनके व्रजभाषा - ज्ञान का संबंध जोड़ने वाले तर्क का भी यह खडन हो सकता है। पर व्रजभाषा के ज्ञान के लिए 'व्रजवास' आवश्यक नहीं था, आवश्यक नहीं रहा है। आचार्य भिखारीदास ने जव यह लिखा था कि 'व्रजभाषा हेतु व्रज वास ही न अनुमानों'-तव उन्होंने एक ऐतिहासिक सत्य तथा तथ्य का ही उल्लेख किया था। राजस्थान और राजस्थान से वाहर के कितने ऐसे कवियों के नाम गिनाये जा सकते हैं, जो कभी व्रज में नहीं रहे।

[illegible] जभाषा अपनी भाषा के रूप में प्रचलित थी। राजस्थान में व्रज-भाषा भारत में अंग्रेजों की तरह विदेशी नहीं थी। फिर भक्ति के क्षेत्र में तो और भी अधिक उदारता थी। कुछ यह परंपरा भी दिखायी पड़ती है कि कृष्ण-काव्य व्रजभाषा में और राम-काव्य अवधी–उन्मुख भाषा में रचा जाय। मीरां भक्त थीं, कृष्ण भक्त थीं, अतः व्रज भाषा में उनके लिए भक्तिगान कोई समस्या नहीं हो सकती थी। फिर वे राजघराने की थी और वे मेवाड़ के महाराणाओं के यहां रहीं। राजघरानों में व्रज का विशेष महत्व था। भक्तों और साधुओं की मंडली जिनसे मीरां घिरी रहती थीं, मीरां को मात्र मेड़ता या मेवाड़ी सीमाओं में ही वांधकर नहीं देखा जा सकता। मीरां की भाषा के संबंध में निराग्रह होकर और दुराग्रह छोड़कर विचार करना होगा और हमें इस प्रकार विचार करने के लिए अभी और सामग्री एकत्र करनी होगी, मीरां के पदों की भी और इतिहास की भी, साहित्य के इतिहास की भी। डॉ० शेखावत का यह प्रयत्न इसलिए अभिनंदनीय है कि उन्होंने जितने भी पद उन्हें अभी तक मिल

और भाव–सम्पति की नाप–जोख हो सकती है और उनकी प्रामाणिकता की यथार्थ कसौटी निर्धारित की जा सकती है।

इस दिशा में डॉ० शेखावत का यह कार्य अभिनंदनीय है। ऐसा कई कारणों से है। पहले तो यह इसीलिए अभिनन्दनीय है कि इतने अछूते पद इस संकलन में हमें मिलते हैं। अभी तक कितने ही संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें कुछ वृहद् संग्रह भी हैं। कुछ में यह दावा भी है कि उन्होंने समस्त उपलब्ध पद तथा नये पद भी दिये हैं। इसके उपरान्त भी इतने अछूते पद डॉ० शेखावत ने यहाँ देकर अभिनन्दनीय कार्य किया है। पर यह भी ध्यान देने योग्य है कि उनका शोध-क्षेत्र केवल राजस्थान ही रहा है यह डॉ० शेखावत के इस विवरण से सिद्ध है कि "इस पदावली के सभी हस्तलिखित ग्रंथों के प्राप्ति - स्रोत मुख्य रूप से दो हैं। (१) राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं के संग्रह (२) वैयक्तिक रूप से संगृहीत संग्रह।" ये सभी राजस्थान के ही हैं।

दूसरी बात जो हमें आकर्षित करती है, वह उस स्थापना का परिणाम है, जो सम्पादक ने की है। संपादक ने कहा है कि मीरांबाई के पदों की भाषा वही होगी जो उनकी जन्मभूमि मेड़ता में बोली जाती है। संपादक ने पदों की भाषा का रूप 'सम्पादक–पाठ' में वैसा ही रखने का प्रयत्न किया है। मेरी जानकारी में मीरांबाई के पदों के संग्रहकर्ताओं में से किसी का मेड़ता से उतना घनिष्ट सम्बन्ध नहीं रहा जितना इस संग्रह के सम्पादक का रहा है। और अपन शोध के लिए उसने मेड़ता-क्षेत्र का विशेष अनुसंधान भी किया है। इस प्रकार मीरां की जन्म भूमि की भाषा की रंगत वह ग्रहण कर सके हैं. और उसी रंगत में ये पद उन्होंने दिये हैं। यह प्रश्न विवादास्पद हो सकता है कि मीरां के पदों की भाषा मेड़ती बोली की रंगतवाली थी, और यह बात भी सब को मान्य नहीं हो सकेगी, कि मीरां के पदों में जो विशिष्ट रंगत मिलती है वह मेड़ती है, या ये मीरां के पदों को मेड़ती रंगत में प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं। क्योंकि मीरांकालीन मेड़ती राजस्थानी. मीरां की भाषा हो सकती है। पर यह निर्विवादा है कि इस दृष्टि से पदों को प्रस्तुत करने का यह पहला और अभिनंदनीय प्रयास है। प्रयास से मेड़नी की रंगत का रूप इसमें है, जिससे मीरां के पदों का स्वाद कुछ और ही हो गया है। मेड़ती रगत समझने के लिए यह संग्रह अध्येता के लिए अनिवार्य रहेगा। इस विधि से हम केवल मीरां के पदों के अर्थ में ही

नहीं किसी सीमा तक उसकी निजी भाषा के रूप में भी दर्शन कर सकेंगे, क्योंकि मीरांकालीन भाषा ही तो आज की मेड़ता में ढली है। मीरां की भाषा से संबन्धित विवाद की नींव बहुत गहरी है, वह ऊपरी तर्को और युक्तियों से नहीं सुलझाया जा सकता। हाँ, हम लोग अपना-अपना आग्रह प्रकट् करते हैं। यह आग्रह समस्या को और उलझाता है। पर यह भी सत्य है कि इस प्रकार सभी आग्रह और दुराग्रह उभरकर ऊपर आ जायं तो फिर यथार्थ की खोज का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है। जो मीरां की भाषा मात्र राजस्थानी मानते हैं, उनके ही तर्क के अनुकूल यह मान्यता अधिक बलवती होनी चाहिये कि मीराँ की भाषा मेड़ती थी। जहाँ तक मेरा संबंध है, मेरा निजी मत तो यह है कि कवयित्री मीरां को ब्रजभाषा का ज्ञान था। जो लोग यह कहते हैं कि वे वृन्दावन नहीं गयी थीं, तो यह उस कथन का ही खडन है जो यह कहते हैं कि वे वृन्दावन गयीं थीं। उनकी वृन्दावन-यात्रा से उनके ब्रजभाषा - ज्ञान का संबंध जोड़ने वाले तर्क का भी यह खडन हो सकता है। पर ब्रजभाषा के ज्ञान के लिए 'ब्रजवास' आवश्यक नहीं था, आवश्यक नहीं रहा है। आचार्य भिखारीदास ने जब यह लिखा था कि 'ब्रजभाषा हेतु ब्रज बास ही न अनुमानों'-तब उन्होंने एक ऐतिहासिक सत्य तथा तथ्य का ही उल्लेख किया था। राजस्थान और राजस्थान से बाहर के कितने ऐसे कवियों के नाम गिनाये जा सकते हैं, जो कभी ब्रज में नहीं रहे।

[illegible] जभाषा अपनी भाषा के रूप में प्रचलित थी। राजस्थान में ब्रज-भाषा भारत में अंग्रेजों की तरह विदेशी नहीं थी। फिर भक्ति के क्षेत्र में तो और भी अधिक उदारता थी। कुछ यह परंपरा भी दिखायी पड़ती है कि कृष्ण-काव्य ब्रजभाषा में और राम-काव्य अवधी–उन्मुख भाषा में रचा जाय। मीरां भक्त थीं, कृष्ण भक्त थीं, अतः ब्रज भाषा में उनके लिए भक्तिगान कोई समस्या नहीं हो सकती थी। फिर वे राजघराने की थी और वे मेवाड़ के महाराणाओं के यहां रहीं। राजघरानों में ब्रज का विशेष महत्व था। भक्तों और साधुओं की मंडली जिनसे मीरां घिरी रहती थीं, मीरां को मात्र मेड़ता या मेवाड़ी सीमाओं में ही बांधकर नहीं देखा जा सकता। मीरां की भाषा के संबंध में निराग्रह होकर और दुराग्रह छोड़कर विचार करना होगा और हमें इस प्रकार विचार करने के लिए अभी और सामग्री एकत्र करनी होगी, मीरां के पदों की भी और इतिहास की भी, साहित्य के इतिहास की भी। डॉ॰ शेखावत का यह प्रयत्न इसलिए अभिनंदनीय है कि उन्होंने जितने भी पद उन्हें अभी तक मिल

सके हैं, आगे की शोध के लिए तथा मीरां के भक्तों के लिए भी और मीरां के पदों के प्रेमियों के लिए भी, इस संग्रह में दे दिये हैं।

पद्मावती शबनम ने 'मीरां - वृहत्पदसंग्रह' में भाषा–चर्चा, स्थान–भेद इतिहास, भाव-भेद, संप्रदाय भेद आदि के आधार पर की है जिसे यहाँ उद्धृत कर देना समीचीन होगा :—

'राजस्थान में ही मीरां ने जन्म लिया और राजस्थान में ही उनका अधिकांश जीवन व्यतीत हुआ। अतः अधिकांश पदों का शुद्ध राजस्थानी भाषा में पाया जाना ही युक्ति-संगत है। फिर भी पुरानी राजस्थानी और आधुनिक राजस्थानी में प्राप्त पदों की भाषा की शुद्धता पुरानी राजस्थानी के माप पर ही निर्धारित की जा सकती है। ऐसा एक प्रयास मैं कर भी रही हूं और आशा रखती हूं कि शीघ्र ही हिन्दी-साहित्य की यह छोटी सी सेवा भी कर सकूंगी।'

इसके बाद वे पद आते हैं जो मिश्रित भाषाओं के अन्तर्गत रखे गए हैं। इनमें से कुछ की भाषा प्रधानतः राजस्थानी होते हुए भी ब्रजभाषा से प्रभावित है। तो अन्य कुछ की भाषा प्रधानतः ब्रजभाषा होते हुए भी राजस्थानी से प्रभावित है। साधु–समागम के कारण भी भाषा का यह सम्मिश्रण सम्भव हो सकता है। अद्यावधि मीरां का ब्रज-क्षेत्र में गमन और निवास भी मान्य है।

तथाकथित मीरां के पदों की एक बड़ी संख्या ब्रज–भाषा में भी प्राप्त है। इनमें से कुछ की भाषा विशुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है। ऐसे कुछ पद साहित्यिक सौन्दर्य का सृजन करने में सूरदास के पदों से भी होड़ लेते हैं। अद्यावधि प्राप्त सामग्री के आधार पर मीरां की वृन्दावन–यात्रा और निवास बहुमान्य होते हुए भी सुनिश्चित इतिहास नहीं अपितु एक अत्यन्त विवादग्रस्त विषय है। इन पदों की साहित्यिकता भी इनकी प्रामाणिकता के विरुद्ध ही गवाही देती है। मीरां को शास्त्रीय अध्ययन का सुअवसर प्राप्त हुआ हो, ऐसा भी कोई निश्चित इंगित प्राप्त सामग्री में नहीं मिलता। प्राप्त पद कवि की रचना न होकर एक स्वतः सिद्ध भक्त के भावातिरेक के सत्यतम चित्र हैं अतः शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा में प्राप्त पदों की प्रामाणिकता विशेष सन्दिग्ध हो जाती है।

गुजरात में भी मीरां के अन्तिम काल में मीरां का द्वारिका गमन और निवास इतिहास सिद्ध है। अद्यावधि मान्य इतिहास, प्राप्त जनश्रुतियों और पदाभिव्यक्तियों से भी उपर्युक्त कथन का समर्थन होता है।

अत्युक्ति न होगी यदि कहा जाय कि प्राप्त सम्पूर्ण सामग्री में यही एक ऐसा पहलू है जो सर्व-सम्मति से सुनिश्चित है। क्रमशः विकसित होते हुए जीवन व अन्य वहुत ही हल्की भावनाओं का चित्रण वहुत सहज नहीं प्रतीत होता। चितौड़ के सम्पूर्ण राज-वैभव व तद्जनित सुख-सुविधा को 'तजि वटुक की नाई' अपने आराध्य के शरण में द्वारिका आ जाने पर मीरां जैसी भक्तिमती नारी की रचना में विराग और नैराश्य की भावनाओं का मिलना ही अधिक सहज है। अस्तु, गुजराती में पद-रचना असम्भव या असंगत नहीं प्रतीत होती तथापि अभिव्यक्ति के आधार पर प्राप्त पदों की प्रामाणिकता में सन्देह ही उत्पन्न होता है।

कुछ गुजराती में प्राप्त पदों में 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' 'मीरां के प्रभु गिरधर ना गुण' में भी परिवर्तित हो गया है—वहुत सम्भव है कि गेय-परम्परा ही इसका कारण हो, अस्तु, ऐसे पदों की प्रामाणिकता और भी संदिग्ध है।

भोजपुरी, अवधी, विहारी आदि विभिन्न बोलियों में भी कुछ पद प्राप्त होते हैं। राजस्थान, व्रज और द्वारिका से बाहर भी कभी मीरां ने प्रयाण किया हो ऐसा आभास कोई नहीं मिलता। साधु-समागम के कारण पड़े प्रभाव के कारण भी ऐसे इक्के-दुक्के पदों की रचना सम्भव नहीं। अतः इन पदों को निश्चित रूपेण प्रक्षिप्त कहा जा सकता है।

खड़ी वोली में प्राप्त कुछ पद भी भाषा की आधुनिकता के आधार पर निश्चित रूपेण प्रक्षिप्त ही कहे जा सकते हैं।

प्रस्तुत संग्रह में बहुत से पदों पर एक ऐसा ★ चिह्न लगा दिया गया है। भाषा और भाव के आधार पर प्रक्षिप्त प्रतीत होने वाले पदों पर ही यह चिह्न लगाया गया है। जैसाकि ऊपर कहा गया है, वहुत सम्भव कि शेष पदों में से भी अधिकांश प्रक्षिप्त ही हों, परन्तु उनको प्रक्षिप्त या प्रामाणिक कहने का कोई सुनिश्चित सूत्र अद्यावधि उपलब्ध नहीं। वहुत सम्भव है कि प्राप्त सामग्री के गहरे अध्ययन के बाद शेष पदों पर भी निश्चयपूर्वक विचार किया जा सके। किसी ऐसे ही प्रामाणिक संग्रह के आधार पर ही मीरां के जीवन-वृत्त को सुनिश्चित् इतिहास का रूप दिया जा सकता है।

किन्तु, भाषा पर यह विचार शबनम जी के अपने 'वृहत्पद संग्रह' के पदों के आधार पर है, अत: इन नये पदों और अनुसंधान में आगे मिलने वाले पदों, सभी को लेकर विचार करना होगा, अन्यथा विचार का आधार अधूरा रहने के कारण निष्कर्ष भी सदोष रहेगा। फलतः डॉ० शेखावत जैसे अन्य प्रयत्न अपेक्षित हैं।

तीसरे महत्त्व की बात स्वयं सिद्ध है कि जब अछूते पद मिलेंगे तो कवयित्री की भाव - सम्पत्ति को समृद्ध करने वाली अछूती भावराशि भी मिलेगी। इस प्रकार मीरां के अब तक उपलब्ध समग्र सामग्री रूप में निश्चय ही एक संवर्धन होगा। कवि की रचना के परिणाम को भी महत्त्व तो है ही, पर उस परिमाण के साथ उसी अनुपात में भाव संवर्द्धन और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। शेखावत को २१६ पद ऐसे मिले हैं जो अन्यत्र प्रकाश में नहीं आ पाये। राजस्थान के ही ग्रथागारों में इतने नये पदों की प्राप्ति स्वयं में ही महत्त्वपूर्ण बात है।

संपादन प्रणाली :

डॉ० शेखावत ने संपादन—प्रणाली के लिए प्रो० ललिताप्रसाद सुकुल से प्रेरणा ग्रहण की है। प्रो० सुकुल ने मीरां स्मृति ग्रंथ में पृ० (न)पर यह सुझाव दिया था कि सम्पादन में 'मूल' को ज्यों का त्यों ऊपर दिया जाय और संप दक अपने सुझाव पाद टिप्पणी में दें। इन्होंने भी पदों का जो रूप हस्तलिखित ग्रंथो में मिला है, वह मूल पाठ के रूप में दिया है। केवल कुछ ऐसे संशोधन ही किये, हैं, जिनसे पद को पढने में कठिनाई न पड़े - अर्थात् 'लघु - दीर्घ' मात्राओं में त्रुटियों को ठीक किया है, और अन्य वर्तनी दोष भी दूर कर दिये हैं। अत: बहुत कम संशोधन किये हैं और अपने सुझाव पाद टिप्पणी में दिये हैं। इन संशोधनों के सुझावों का आधार वह आदर्श है, जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है कि मीरां की भाषा राजस्थानी है।

यद्यपि इसे वैज्ञानिक पाठ नहीं माना जा सकता, क्योंकि वैज्ञानिक पाठालोचन एक जटिल प्रक्रिया है, और विशेष वैज्ञानिक - दक्षता व अध्यवसाय की इसमें अपेक्षा रहती है। इस प्रक्रिया से सम्पादित पाठ की प्रामाणिकता भी स्थापित होती है। साथ ही भाषा का रूप भी प्रामाणिक स्तर पर स्थापित हो जाता है। किन्तु, इसके लिए यह अपेक्षित है कि किसी भी पद के जितने भी पाठ मिलें वे सभी सम्पादक के पास हों। किन्तु,इस समय जो स्थिति है, उससे विदित

होता है कि अब तक के इतने प्रयत्नों के बाद भी अभी सभी पद संकलित नहीं हो पाये हैं। लिखित में भी अभी बहुत खोज शेष है और मुखस्थ या कंठस्थ पदों को संकलित करना भी कितना आवश्यक है। केवल कुछ ही ऐसे पद-८-१० ही अभी सामने आते हैं। यह जब तक नहीं होता अर्थात् यथासंभव समस्त पद प्रकाश में नहीं आते, तब तक वैज्ञानिक पाठशोधन की बात नहीं की जा सकती। वस्तुतः वैज्ञानिक पाठ शोधन के लिए यह आवश्यक है, हमें पहले मीरां के पदों के वे रूप, जैसे ग्रंथों में मिले हैं, या कण्ठ से मिले हैं, यथावत् प्रकाशित रूप में उपलब्ध हों।

इसके लिए हमें उसी प्रणालो का उपयोग करना होगा जिसका उपयोग डॉ० शेखावत ने किया है। इसे आरंभिक वैज्ञानिक संपादन कह सकते हैं। इसमें संदेह नहीं कि डॉ० शेखावत ने यह कार्य सावधानी से संपन्न किया है। इस दृष्टि से भी इस संकलन को महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

अनुसंधान की दृष्टि से इनमें एक और वैशिष्ट्य है। संपादक ने प्रत्येक पद का स्रोत भी पाद टिप्पणी में दे दिया है। कहीं-कहीं ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या दे दी है। यदि इसमें संग्रहों का लिपि - काल भी दे दिया गया होता तो इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता। किन्तु, इस कमी की पूर्ति उन्होंने भूमिका में पृष्ठ ३ पर स्रोतों का पूरा विवरण देकर कर दिया है। इससे इसकी उपादेयता और भी बढ़ गयी है।

डॉ० शेखावत ने इस सपादन-कार्य में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरणा देने वाले कुछ विद्वानों के उद्धरण पृ० १५-१६ पर पाद-टिप्पणी में दिये हैं। उन सभी विद्वानों ने मीरांबाई के पदों के प्रामाणिक पाठ की आवश्यकता पर बल दिया है। प्रेरणाप्रद उद्धरणों से संकेत मिलता है कि डॉ० शेखावत की दृष्टि भी प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने की रही होगी, तभी उक्त उद्धरण उन्हें इस कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दे सके। यह दृष्टि सचमुच श्लाघनीय थी, पर जैसा हम ऊपर कह चुके हैं कि प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने की प्रक्रिया बहुत जटिल है, और उसे आज वैज्ञानिक स्तर पर पहुँचा दिया गया है। डॉ० शेखावत का यह कार्य 'प्राथमिक वैज्ञानिक' सोपान प्रस्तुत करता है। जैसा उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है, कि अभी वे कई महत्वपूर्ण पुस्तकालयों से सामग्री नहीं ले पाये हैं। यह आवश्यक है कि राजस्थान में जितने भी संस्थागत तथा निजी

पुस्तकालय हैं, उन सबसे सामग्री लेकर राजस्थान के क्षेत्र में प्राप्य मीरां के पदों का एक पूर्ण संग्रह प्रस्तुत कर लिया जाय। राजस्थान से ही एक दूसरा संग्रह मौखिक या लोक-परंपरा में जीवित मीरां के पदों का प्रस्तुत किया जाय। वैज्ञानिक दृष्टि से इस लोक-संकलन में यह आवश्यक होगा कि प्रत्येक पद के क्षेत्रीय रूप भी उसमें हुए परिवर्तनों के साथ दिये जायं। ऐसे ही संग्रह उत्तर-प्रदेश, गुजरात, बंगाल, महाराष्ट्र तथा अन्य प्रदेशों से कराये जाय। इन सबके आधार पर पाठालोचन के लिए सामग्री प्रस्तुत की जाय। ऐसे पाठालोचन के लिए स्रोत सामग्री भी अपेक्षित होगी। उसे हम माइक्रोफिल्म आदि यांत्रिक साधनों से अपने मीरां संग्रह में ला सकते हैं।

डॉ॰ शेखावत की इस संग्रह में मुख्य दृष्टि यह रही है कि ऐसे पद ही प्रकाशित कराये जायँ जो अछूते हैं, अभी तक मीरां के सग्रहों में प्रकाशित नहीं हो पाये हैं। जैसा हम ऊपर लिख आये हैं, यह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। पद-पाठालोचन के लिए तो जानी-अनजानी समस्त सामग्री अपेक्षित होगी, और उसे हम अब भी उन स्रोतों से पा सकते हैं, जिनका उल्लेख डॉ॰ शेखावत ने भूमिका में कर दिया है। तात्पर्य यही है कि श्री शेखावत के इस शोध-प्रयत्न से प्रामाणिक पाठ तक पहुँचने के लिए एक अच्छा सोपान मिल गया है।

प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने के लिए या तो 'मीरां शोध संस्थान' स्थापित होना चाहिये, जिसमें मीरां विषयक एक संग्रहालय या म्यूजियम भी हो। यह संस्थान समस्त सामग्री एकत्र करे और प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत कराये। या फिर प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान ही इस महत्कार्य के लिए आगे आये। वह अपने प्रतिष्ठान में एक मीरां शोध अभिकरण स्थापित करे, मीरां विषयक समस्त सामग्री एकत्र कराये, मूल रूप में, या माइक्रोफिल्म, फोटो स्टेट, या फोटो प्रतियों के रूप में और शोधार्थी एवं विद्वानों की एक मंडली को प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने का कार्य सौंपे। आजकल प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ॰ दशरथ शर्मा सूझ-बूझ वाले व्यक्ति हैं और विद्वता मे भी अद्वितीय हैं। वे चाहें तो प्रतिष्ठान से यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करा सकते हैं। 'मीरां अभिकरण' प्रतिष्ठान को उनकी स्थायी देन होगी, और सामान्यजन, शोधार्थी तथा विद्वानों को समान रूप से हितकारी होगी।

भूमिका लिखते हुए, कुछ च्युत होकर, मैंने ऊपर कुछ सुझाव दिये हैं क्योंकि मीरां का महत्व सामान्यजन, शोधार्थी और विद्वान सभी के लिए है। मीरां का काव्य सार्वजनीन हित का कार्य है। आधुनिक युग में विदेशों में जो अध्यात्मकेन्द्रित सांस्कृतिक विद्रोह या क्रान्ति दिखायी पड़ रही है, उसका मानव के अस्तित्व के अतल तल से घनिष्ठ संबंध है। मीरां उस तल में लहराते अध्यात्म सागर को भाव तरगों की गायिका है। यही कारण है कि सहज, सरल भाषा में निबद्ध लोक मानस की भूमि पर गेय पद सभी के मर्म को छूते और प्रभावित करते हैं। शब्दों का ऊबड़-खाबड़ रूप, काव्य-तत्वों की स्थूलता, भाषा का प्रकार-कोई भी मीरां की हृदयस्पर्शिता में बाधक नहीं होता। उसी अंतरंगी अध्यात्म के रंग के कारण मीरां के पद 'कथ्य' से चमत्कारिक तादात्म्य करा देते हैं, तभी उनमें नव-नव स्फूर्तिदायक ताजगी मिलती है और लगता है कि संभवतः इन्हीं बातों के कारण इतने विशाल साहित्य में उनसे तुलनीय पद नहीं मिलते।

'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई' यह चरण कितना सामान्य, सरल और निष्प्रपंच है। पर, क्या इसमें कुछ ऐसा नहीं है कि पढ़ते ही और सुनते ही पाठक और श्रोता का, मानवीय अस्तित्व के सहज अध्यात्म से तादात्म्य न हो जाता हो और ढूंढने पर भी किसी कवि में हमें ऐसा पद नहीं मिलता। वस्तुतः मीरां के पदों में 'आस्वाद' नहीं है, टोना है; और यह टोना भी गजब का है। साहित्य में टोने की बात करना अब से कुछ वर्ष पूर्व उपहास्यास्पद माना जा सकता था। पर,आज जब पाश्चात्य विद्वानों ने इसे मान्यता दे दी है और टोने की चर्चा में वे लगे हुए हैं, तो हम भी उसका उल्लेख तो कर ही सकते हैं। भारत में तो 'अक्षर' को अक्षर-ब्रह्म और शब्द को 'शब्द ब्रह्म' मानकर बहुत पहले ही भाषा को टोने का आधार मान लिया था 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' में भी इसी टोने की ओर संकेत है। शब्द तो शब्द है,टोने का माध्यम, और अर्थ वस्तु है। जब हम 'घोड़ा' कहते हैं तो अर्थ में 'घोडा' नाम की वस्तु अभिप्रेत होती है, और दोनों में, शब्द और अर्थ में, इस प्रकार अभेद होता है।

पाश्चात्य विद्वानों में कॉलरिज को पहला व्यक्ति बताया जाता है जिसमें 'शब्द और अर्थ' के अभेद के लिए छटपटाहट थी, वह शब्द से अर्थ या, वस्तु का तादात्म्य पाना चाहता था। उसने विलियम गौडविन को २२ सितंबर, १८०० के पत्र में लिखा था—

"I wish you to write a book on the power of the words........is thinking impossible without arbitrary 'signs' And how far is the word 'Arbitrary' a misnomer ? Are not words, etc. parts and germinations of the plant ? And what is the law of their growth ? In something of this sort I would endeavour to destroy the old antithesis of Words and Things; elevating, as it were, Words into Things and living things too".

इसका संदर्भ प्रस्तुत करते हुए इस पर जो पाद टिप्पणी दी गयी है वह भी द्रष्टव्य है :

1. Unpublished letters of S. T. Coleridge, ed. E. L. Griggs (London, 1932), I 155-6. A few years later Lord Byron voiced much the same aspiration in his Childe Harold.

I do believe
Though I have found them not,
That there may be
Words which are things.
Canto III, Stanza C XIV.

और इस 'शब्द तथा वस्तु (अर्थ) के अद्वय का चिंतन बढ़ते-बढ़ते वह स्थिति आयी कि प्रतीकवाद (Symbolism) के पोषकों के विविध पक्षों को लेकर जब अनिश्चय का वातावरण बना तो एक परिभाषा यह दी गयी—

'Whether a real school of Symbolism ever existed, remains a problem of speculation........Each poet developed and represented a single aspect of an aesthetic doctrine that was perhaps too vast for one historical group to incorporate ....But more than on any other article of belief the symbolists united with Mallarme in his statements about poetic language. The theory of the suggestiveness of words comes from a belief that a primitive language, half-forgotten, half-living exists in eachman. It is language possessing extraordinary affinities with music and dreams (Mallarme, p 64)

आदिम भाषा आज भी मनुष्य में है, इसीलिए कविता में ऐसी शब्दावली आ जाती है जो अधभूले से, अधजीवा - से होती है। मनुष्य में इस आदिम भाषा के अवशेष के अभिव्यक्त हो पड़ने से आधुनिक काल में 'मिथ' के अस्तित्व को प्रोत्साहन मिला तथा मनुष्य टोने तक पहुँचा गया।

इस टोने के संबंध में ईट्स (Yeats) ने अपने मैजिक (Magic) नामक निबंध में लिखा कि वह उन तीनों सिद्धान्तों में विश्वास करता है, जो किसी भी जादुई आभास या करतब में आधार रूप में मिलते हैं। ईट्स के शब्दों में वे हैं :—

(1) That the borders of our minds are ever shifting, and that many minds can flow into one another, as it were, and create or reveal a single mind, a single energy.

(ii) That the borders of our memories are as shifting, and that our memories are a part of one great memory, the memory of Nature herself.

(iii) That this great mind and great memory can be evoked by symbols.

Literary Criticism : A short History में विम्सेटट तथा ब्रुक्स ने ईट्स के इन सिद्धान्तों का पृ० ५९८-५९९ पर उल्लेख करते हुए पाद टिप्पणी में बताया है कि Great Mind तथा Great Memory में जुंग (Jung) के Collective unconscious (सामूहिक अवचेतन) की छाया दिखायी पड़ती है, जिसके साथ जुंग के आर्कीटाइपों (मूलस्थापितों) का भी संबंध है।

इस प्रकार पाश्चात्य आलोचना-क्षेत्र में शब्द और अर्थ के अर्थात् शब्द और वस्तु के अद्वय सम्बन्ध के चिंतन से शब्द प्रतीक (Symbol) के सहारे टोने को मान्यता मिली। अतः हम आज कह सकते है कि मीरां के काव्य में टोना (Magic) है। यही कारण है कि श्रोता और पाठक मीरां की शब्दावली से मंत्रविद्ध हो जाता है; किन्तु इस मंत्रविद्धता का मूल वह आदिम भाषा की छापे नहीं जिसमें शब्द अधभूले और अधजीवा-से होते

हैं और कवि की अभिव्यक्ति को रहस्याभिमंडित कर देते हैं। जब मीरां कहती है कि—

'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरौ न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरौ पति सोई॥

तो इसमें महामानस (Great Mind) तथा महास्मृति (Great Memory) तो है, और प्रतीक भी है–

मोरमुकुट वाले गिरिधर गोपाल पर भारतीय मानस के लिए मोर मुकुट धारी गिरिधर गोपाल इतना प्रकट है कि उसकी रहस्यमय पक्षता का अर्थ रहते हुए भी नहीं रहता–पर मीरां का टोना मंत्रविद्ध अवश्य कर लेता है। वस्तुतः यह टोना ही है जो मीरां के काव्य में है। एक विद्वान ने बताया है कि "काव्य, धर्म तथा टोने का मूल एक ही है।"[५] आगे इनका कथन है कि "मेरा अभिप्राय यह है कि प्राचीनतम काव्य का उदय मंत्रों से हुआ, सशक्त तथा स्तवनीय शब्दों तथा छन्दता से हुआ, जिनके द्वारा मनुष्य अपने स्रष्टा से साक्षात्कार कर सकता था और साथ ही समस्त सृजित पदार्थों के सारतत्व से भी सपर्कित हो सकता था..............."[६]

मीरां के पद इसीलिए टोना हैं कि वे सशक्त और स्तवनीय (evocative) शब्दों में रचे गये हैं, और उनसे हमें अपने स्रष्टा का, अपने पति का 'गिरधर नागर' का साक्षात्कार होता है। किन्तु, शब्दों की सशक्तना की परीक्षा क्या उस समय तक संभव है, जब तक कि पदों की शब्दावली, उनकी पद-योजना और अर्थाभिव्यक्ति-गतशीलता को उपलब्ध करने का कोई साधन न हो। छन्दता (Rhythm) पर तो हमने अभी विचार आरंभ ही किया है, किन्तु, जब तक कि मीरां की समस्त संपदा सुलभ न हो तब तक छन्दता का रहस्योद्घाटन भी असंभव ही रहेगा क्योंकि मूलतः छन्द और लय का जो रूप काव्य में ढलता होता है वह धरा के छन्द - लय का बीज-मन्त्र होता है।[७] और आगे कासल्स के "एनसाइक्लोपीडिया आफ लिटरेचर" में पोइट्री शीर्षक निबंध में लिखा है कि

'चीन की पवित्र धार्मिक पुस्तकों में यथा लि कि XVII, II (अनुवाद जेम्स लेग्गे) हमें यह पढ़ने को मिलता है कि 'प्राचीन राजा........ संगीत) को जीवन उत्पादक ऊर्जा के संमंजन में ले आये थे–संगीत और काव्य के अभिप्राय तब एक ही थे।

डॉ० हैरीसन उस श्लोक (hymn) के संबंध में, जिसमें से उक्त उद्धरण दिया गया है, कहते हैं कि "वह देवता जिसकी अभ्यर्थना की जा रही है उपस्थित नहीं है.......उसे आने का आदेश दिया जा रहा है और स्पष्टतः उसका आना.... उसका अस्तित्व भी, उस अनुष्ठान पर निर्भर है जिसके द्वारा वह अभ्यर्थित किया गया है।" अर्थात्, उसका आना और उसका अस्तित्व शब्दों के जादू और छन्दता के जादू पर निर्भर करती है।[८]

मीरां के काव्य का भी मूलाधार शब्द और छन्द का टोना है, तभी तो कृष्ण, मोर-मुकुटधारी गिरधरगोपाल से उनका साक्षात्कार होता है। पर, मीरां के शब्दों और छन्दता की ऊर्जा और शक्ति का अभी अनुसंधान कहाँ हुआ है ? और हो कहाँ सकता है, जब तक कि ऐसे-ऐसे संग्रहों के प्रकाशन से मीरां के पदों की समग्र सामग्री अध्ययनार्थ उपलब्ध न हो जाय।

भारत में तो वेद-पूर्वी युग से लेकर मध्ययुग के छोर तक और आधुनिक युग के एक अन्तरंग स्तर पर भी कविता और मंत्र इस टोने के कारण ही धार्मिक भूमि पर मान्य स्वीकृत हुए। समस्त काव्य में स्रष्टा के साक्षात्कार की आस्था अडिग भाव से विद्यमान है। मीरां में यही परंपरा एक वैशिष्ट्य के साथ मिलती है। किन्तु,मीरां का यह वैशिष्ट्य भी समझने के लिए संपूर्ण सामग्री अपेक्षित है। मैंने बार-बार यहाँ इसी बात को दुहराया है कि मीरां के समस्त पदों का संग्रह प्रकाश में लाना अत्यन्त आवश्यक है और इस दिशा में डॉ० शेखावत का यह प्रयत्न श्लाघ्य है। इससे मीरां के समस्त पद तो सामने नहीं आते, पर अब तक जो सामने नहीं आ सके थे उनमें से कुछ तो अधिक ही अब इस रूप में उपलब्ध हैं। इस प्रकार मीरां के काव्य की आत्मा तक पहुँचने के लिए कुछ और चरण हमें प्राप्त हो गये हैं। वस्तुतः मीरां के पदों और उनकी भाषा का यह पक्ष अनुसंधान की दृष्टि से अछूता है, महत्वपूर्ण भी है। सरल और सहज शब्दावली में, वह चाहे राजस्थानी रूप में हो, ब्रज-रूप में या गुजराती रुप में तीनों में,समान भाव से मंत्रविद्ध करने की शक्ति है। यहाँ शब्द-शक्तियों से किसी चमत्कारक अर्थ पर पहुँचने की स्थिति भी नहीं है।

मीरां के काव्य के समस्त स्वरूप को यथार्थतः हृदयंगम करने के लिए आवश्यक है कि शीघ्रातिशीघ्र अधिकाधिक पद संकलित कर लिये जायँ और तब शब्द और अर्थ दोनों के शील को समझने का प्रयत्न किया जाय। मीरां भक्त

थी–इसमें कोई संदेह नहीं, पर भक्त तो और इतने कवि और महाकवि रहे हैं, पर उनमें मीरां-सा वैशिष्ट्य कहाँ हैं ? मीरां में रस–परिपारक की प्रवृत्ति कहाँ है ? 'कवित्व' तत्व भी तो नहीं है किन्तु शब्दार्थ का शील कुछ अद्‌भुत है यथा—

म्हानें चाकर राखो जी
चाकर रहस्यू बाग लगास्यू

यहाँ कुछ विद्‌वानों के उद्‌धरण देना समीचीन होगा। इनसे इस समस्या का रूप कुछ और अधिक समझ में आ सकेगा।

प्रो॰ शंभुसिंह मनोहर ने 'मीरां पदावली' में पृ॰ ५३ पर लिखा है कि "मीरां की प्रेमानुभूति तो सर्वथा अनिर्वच है, जैसा कि देवर्षि नारद ने कहा भी है—

'अनिर्वचनीयं प्रेम स्वरुपं ॥५१॥ मूकास्वादनवत् ॥५२॥ शब्दों में न उसके प्रेमोन्माद को व्यक्त करने की शक्ति है, न उसके विरह को थाह लेने को सामर्थ्य।'

आगे पृष्ठ ५५–५६ पर वे लिखते हैं :—

"मीरां सचमुच प्रेमोन्मादिनी थी। कृष्ण के दिव्य और अलौकिक प्रेमोन्माद में डूबी हुई। उस प्रेमोन्मादिनी का वह कैसा अपूर्व प्रेमोन्माद था कि श्याम के ध्यान में तन्मय होने पर वह अपनी सुध–बुध खो बैठती थी। अपने सर्वान्तःकरण से प्रियतम के चरणों में समर्पित हुई मीरां तब हर्ष - विभोर ह नाच उठती थी—

पग घुँघरू बाँध मीरां नाची रे।
मैं तो मेरे नारायण की हो गई आपहि दासी रे,
लोग कहें मीरां भई बावरी न्यात कहें कुलनासी रे।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सहज मिलो अविनासी रे।

उक्त नृत्य की एक - एक ताल पर शत - शत कैवल्य न्यौछावर होते थे। नूपुरों की एक-एक झंकार पर भक्ति को अनन्त सम्पदाएँ चरणों में लोटती थीं, उस प्रेमदीवानी के मृत्युञ्जयी अधरों के स्पर्श से जीवन का गरल भी अमृत बन गया था। भगवती पार्वती की भांति उस प्रेमोन्मादिनी का वह प्रणय-लास्य भी कुछ ऐसा ही अपूर्व था।"

फिर ७८ - ७९ पृष्ठों पर यह कथन दृष्टव्य है :—

"मीरां के काव्य में हमारी इसी लोकपरक सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष है जो समस्त प्रतिक्रियावादी मान्यताओं एवं वर्ग-भेद-जन्य दुराग्रहों का प्रतिकार करती हुई जाति तथा जगजीवन के साथ एक रूप हो गई है—

"सासू अमारी सुषमणारे, सासरो प्रेम सन्तोष।
जेठ जग-जीवन जगत माँ, म्हारो नावलियो निर्दोष ॥"

प्रो० देशराजसिंह भाटी की पुस्तक "मीराँबाई और उनकी पदावली" के निम्नलिखित उद्धरण भी दृष्टव्य हैं :—

"मीराँ की प्रेम-साधना में शास्त्रीय परिभाषाओं के अनुसार स्वरूप और वर्ग तो मिलते ही हैं, साथ ही इसमें हृदय की जो सहज मंजुल-धारा अजस्र प्रवाह से प्रवाहित है, वह मीरां काव्य की अपनी निजी विशेषता है। इस प्रसंग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के ये शब्द उल्लेखनीय हैं :

"कबीर ने भी 'राम की बहुरिया' बनकर अपने प्रेमभाव की व्यंजना की है, पर 'माधुर्य भाव' की जैसी व्यजंना स्त्री-भक्तों द्वारा हुई है, वैसी पुरुष-भक्तों द्वारा न हुई है, न हो सकती है। पुरुषों के मुख से वह अभिनय के रूप में प्रतीत होती है। उसमें वैसा स्वाभाविक भोलापन, वैसी मार्मिकता और कोमलता आ नहीं सकती। पति-प्रेम के रूप में ढले हुए भक्तिरस ने मीराँ की संगीत-धारा में जो दिव्य माधुर्य घोला है, वह भावुक हृदयों को और कहीं शायद ही मिलें।" [९]

"निः कहा जा सकता है कि मींरां की वेदनानुभूति अत्यन्त उदात्त, परिष्कृत और भावमयी है। प्रो० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल के शब्दों में—

"....................मीरां की वेदना में एक शोधक प्रभाव (Purifying effect) है। उसके गीतों को पढ़कर, सुनकर हम भीतर-भीतर एक आन्तरिक ठहराव, एक जीवन स्थिरता और प्रवृत्ति का मांगलीकरण अनुभव करते हैं। प्रेम की यातना हृदय को द्रष्टा और स्रष्टा दोनों बना देती हैं। श्रीमती ब्राउनिंग के शब्दों में We learn in suffering what we teach in songs. [१०]

"अन्ततः कहा जा सकता है कि मीरां की रसयोजना बहुत ही सफल और मार्मिक है। यद्यपि मीरां का ध्यान इस योजना की ओर बिल्कुल नहीं था, तथापि यह सत्य है कि महती भावनाएं स्वतः योजनाबद्ध होती हैं। इसीलिए

मीरां की रस–योजना में, जहाँ एक ओर हृदय की सच्ची तथा यथार्थ अनुभूतियाँ मिलती हैं,वहाँ दूसरी ओर यह काव्य-शास्त्र के निष्कर्ष पर भी खरी उतरती है।'

'इस प्रसंग में प्रो० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल के ये शब्द उल्लेखनीय हैं'–

"मीरां की वेदना युग-युग से प्रियतम से बिछड़ी हुई प्रीतिदग्ध-प्रणयानुकूल आत्मा की वेदना है। वह अपने को आराध्य की जन्म-जन्म की दासी समझती है और सर्वस्व-समर्पण, जो प्रेम का प्राण है, उसके गीत–गीत में मन के सम्पूर्ण आवेग के साथ उच्छवसित हुआ है। प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक क्षण उसके सामने प्रिय का रूप मंडराया करता है। इष्टदेव के दर्शन की ऐसी तीव्र लालसा, मिलन की ऐसी परिपूर्ण तृष्णा, कामना की ऐसी अविनाशी आग, कम से कम हिन्दी के अन्य किसी कवि में नहीं पाई जाती।"

'डॉ० रामधारीसिह दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' (पृ० ४३४-४३५) में लिखा है, 'प्रेम-पीर' की यही नयी भंगिमा हम मीरांबाई में भी देखते हैं। अवश्य ही, दर्द की यह नयी अदा, विरह-वेदना का यह नया रूप उन्हें कबीर की ही परम्परा से मिला होगा। किन्तु, दूर पर कबीर और मीरां की इन बेचैनियों के पीछे कहीं–न–कहीं, फारस के सूफियों की वेदना का हाथ था, इस अनुमान का खंडन नहीं किया जा सकता।

है री, में तो दरद की मारी दीवानी रे,
मेरा दरद न जाने कोय।

अथवा

काढ़ि करेजो मैं धरूं रे, कागा, तू ले जाइ।
ज्याँ देसाँ मेरा पिउ बसे रे, वे देखें, तू खाइ॥

अथवा

घायल ज्यूं घूमूं सदा री, म्हारी व्यथा न बूझै कोइ।

"इन पंक्तियों में विरह का जो रूप है, उसकी परम्परा न तो मेघदूत में मिलेगी, न माघ, श्री हर्ष और भवभूति में। यहाँ तक कि विरह की इस वेदना का आभास हाल और गोवर्धनाचार्य की सप्त-शतियों में भी नहीं है। सम्भव है, दर्द की यह तर्ज लोक गीतों से उठकर साहित्य के धरातल पर पहुंची हो, किन्तु, तब भी यह विदेशियों के ही साथ इस देश में पहुँची होगी।"

इन सभी उद्धरणों में मीरां के काव्य के transcendental प्रकृति का पता चलता है। उनकी उस मनोभूमि का भी ज्ञान होता है, जिस पर वे सामान्य मानस से सामूहिक मानस (Collective unconscious) अथवा ईट्स के महामानस और महा स्मृति के क्षेत्र में सीमा रहित विचरण करती हैं।

किन्तु, इन सबके मर्म को समझने के लिए शब्द और अर्थ के शील को भली प्रकार समझना होगा।

पाश्चात्य कवि बायरन (Byron) ने लिखा कि–

'मैं विश्वास करता हूँ कि ऐसे शब्द हैं जो वस्तु हैं—यद्यपि मेरा इनसे अभी साक्षात्कार नहीं हुआ है।' पर जब मीरां के पदों को पढ़ते हैं तो लगता है कि उन्हें 'शब्द' गिरधर नागर के साथ साक्षात् गिरधर नागर मिल रहे हैं 'मेरे तो गिरधर गोपाल जाके सिर मोर मुकुट' जैसे इन शब्दों के साथ शब्दगत वस्तु का साक्षात्कार हो रहा है। वही टोना है। मीरां के पद मंत्र हैं। मीरां के लिए भी ये मंत्र थे, और पाठकों के लिए भी सदा-सर्वदा के लिए ये मंत्र रहेंगे। उनमें शब्द - शक्ति, रस तथा अन्य साहित्यिक अध्ययन आरोपित ही रहेंगे।

किन्तु, यह तो बहुत स्थूल निरूपण है। मीरां के शब्द+अर्थ के शील को जानने और उसे विश्लेषण पूर्वक हृदयंगम करने के लिए समस्त पदों का संग्रह पहली आवश्यकता होगी। उस दिशा में यह भी एक श्लाध्य प्रयत्न है। मुझे विश्वास है कि इस प्रयत्न का स्वागत होगा।

पाद टिप्पणियां—

'(१) इन्होंने इसका व्यौरा यों दिया है : कुल पद संख्या—३७२
अप्रकाशित पद—२१६
राग रागिनी वाले पद—५०
पूर्व प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले पद—४८
पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद—४८
परिशिष्ट—अप्रकाशित मूल पदों के १० पाठान्तर

(२) अपने संग्रह के संबंध में स्वयं पुरोहित जी ने बताया है कि मैंने परिश्रम और खोज के साथ ही (संग्रह) किया है। '(क) मेड़ते जाकर

सामग्री एकत्र की (ख) बड़ी रूपाहेली के स्व० ठाकुरसाहब चतुर सिंहजी से (ग) वदनोराधीश गोपाल सिंहजी से, ये दोनों ठाकुरसाहब भी मीरांबाई के मेड़तिया कुल के वंशज थे। (घ) मेड़ता के अन्य लोगों से (ङ) कलकत्ते वाले बाबू अनाथदास से (च) मीरांबाई संबंधी बहुत से लिखित तथा मुद्रित पुस्तकों से सामग्री ली है।'

पुरोहितजी ने पदों के नीचे उनके स्रोत का उल्लेख संकेताक्षरों में किया है, पर उन संकेताक्षरों से क्या अभिप्राय है इसका पता नहीं चलता। क्योंकि पुस्तक में भी इनकी कुंजी नहीं दी। यहां हम संकेताक्षरों में ही उनके स्रोतों का उल्लेख किये देते हैं, जो इस प्रकार है—

१. सं० या—सं० रा० के से।
२. वृ० रा० र० पृ०।
३. आ० सा० भा०।
४. मी० ली० दी० ना० पत्र।
५. मी० ली० स० मा०।
६. सूर्य नारायणजी दाधीच।
७. पु० ना० वा०।
८. बं० पु० (बंगाली पुस्तक)
९. दीना० मं० मी० प०।
१०. मी० प० जमा० राम०।
११. प्रभु नारायणजी का गुटका।
१२. मीरां पदावली वि० कु०।
१३. क० व०।
१४. राम स० गु० (राम स्नेही गुटका)
१५. भजन मंजरी।
१६. का० गु०।
१७. मीरां की प्रेमवाणी।
१८. स० मा० मी० ली० (सरस माधुरी मीरां)
१९. मी० ल० ..० दूधू।
२०. आ० भ०।

२१. गोपीराम व्रजवासी से प्राप्त ।
२२. हरि नारायणजी की पु० ह० ।
२३. का० दो० (काव्य दोहन गुटका)
२४. मंजु पदावली ।
२५. नवनिधि कुँवर बाईजी से प्राप्त ।
२६. वृ० भ० र० (भजन रत्नावली)
२७. का० ह० नं० १ ।
२८. भजन सं० भा० ।
२९. हस्तलिखित पद मुक्तावली ।
३०. मीरां वा० ज० च० ।
३१. व्रजनिधि ग्रन्थावली ।
३२. मीरांबाई के भजन ।
३३. रास पद संग्रह ।
३४. मीरांबाई का जीवन चरित्र (मु० देवीप्रसाद) ।
३५ मीरां मंदाकिनी ।
३६. पु० नाथू नारायणजी की पुस्तक ।
३७. मीरांबाई–हिन्दी पुस्तकालय,मथुरा ।
३८. भक्त-चरितावली ।
३९. प्रहला० भ० पा० ।
४०. नारायणदास नटवाने (ना० दा० जी० पद संग्रह)
४१. मीरां जी० का० प्र० जी० ।
४२. वि० भू० पु० ।

इससे प्रकट होता है कि पुरोहितजी ने ४२ स्रोतों से यह सामग्री छाँट कर इस संग्रह में रखी । यह भी स्पष्ट है इन बयालीस स्रोतों से, उनमें उपलब्ध मीरां के सभी पद उन्होंने नहीं लिए । किसी कसौटी के आधार पर ही ये पद छाँटे गये हैं—वह कसौटी ऐसी रही होगी जिसके आधार पर वे यह कह सकें कि ये मीरांबाई के ही पद हैं और प्रामाणिक हैं । डॉ० फतहसिंह ने प्रकाशकीय में सूचित किया है कि—"भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा के कथनानुसार पुरोहितजी ने पदों की प्रामाणिकता के लिए कोई कसौटी भी निर्धारित की थी

जो उनके सुपुत्र श्री रामगोपालजी पुरोहित ने स्वर्गीय पिता द्वारा संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों तथा मीराँ से सम्बन्धित सभी सामग्री के साथ हमारे प्रतिष्ठान को भेंट कर दी थी। खेद है कि अब कसौटी हमें उपलब्ध नहीं है।"

खेद है वह कसौटी नहीं रही, पर पुरोहितजी के द्वारा प्रसारित ये प्रामाणिक पद इस संग्रह में उपलब्ध हैं। इसलिए यह प्रथम भाग भी बहुत महत्वपूर्ण देन हैं।

(३) प्रो० शम्भुसिंह मनोहर ने निम्नलिखित मीराँ के पद - संग्रहों का उल्लेख किया है, अपनी मीराँ पदावली में:—

१. मीराँबाई और उनकी पदावली—देशराजसिंह भाटी।
२. मीराँ स्मृति ग्रन्थ- -बंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता।
३. मीराँ मन्दाकिनी - नरोत्तम स्वामी।
४. मीराँ माधुरी—ब्रजरत्नदास।
५. मीराँ, जीवनी और काव्य- -महावीरसिंह गहलोत।
६. मीराँ, सहजो और दयाबाई—-वियोगी हरि।
७. मीराँ पदावली—-विष्णुकुमारी मजु।
८. मीराँ पदावली —परशुराम चतुर्वेदी।
९. मीराँ वृहत् पद संग्रह—पद्मावती शबनम।
१०. मीराँ वाई—डॉ० श्रीकृष्णलाल।
११ मीराँ और उनकी प्रेमवाणी—ज्ञानचन्द्र जैन।
१२. मीराँ सुधा-सिन्धु—स्वामी आनन्द स्वरूप।
१३. मीराँबाई नी भजनो (गुज०) हरसिद्धभाई जभाई दिवेटिया।
१४. वृहत् काव्य दोहन (गुज०) (भाग १, ·, ५, ६, ७)।
१५. मीराँबाई का काव्य—मुरलीधर श्रीवास्तव

इस सूची में प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित मीराँ वृहत्पदावली भाग १ का उल्लेख नहीं। तब तक इसका प्रकाशन नहीं हुआ था।

जिन प्रकाशित सग्रहों का उल्लेख ऊपर हुआ है उनके अतिरिक्त भी अन्य संग्रह हो सकते हैं, जिनका उल्लेख न हो पाया हो। इन पदावलियों पर प्रो० शंभुसिंह मनोहर ने अपना अभिमत यों दिया है:

"इस संबंध में, जैसा कि डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने लिखा है-'पदावलियों के सम्पादकों में केवल तीन विद्वानों ने हस्तलिखित प्रतियों के आधार की बातें कहीं हैं। ये हैं श्री नरोत्तमदास स्वामी, श्री उदयसिंह भटनागर तथा श्री ललिता-प्रसाद सुकुल। (डॉ० हीरालाल माहेश्वरी - राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० ३२२.) इनमें से डॉ० हीरालाल माहेश्वरी तथा उनसे सहमत होते हुए प्रो० शम्भुसिंह मनोहर, आचार्य नरोत्तम स्वामी के संग्रह को अधिक प्रामाणिक मानते हैं, क्योंकि उनका पाठ किसी प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ के आधार पर संपादित हुआ है। डॉ० माहेश्वरी ने प्रो० सुकुल के पाठ की सतर्क, सोदाहरण किन्तु कटु आलोचना की है।

ऊपर जिन १५ संग्रहों का नाम दिया गया है, उनमें तीन दृष्टियाँ मिलती हैं: (अ) एक है-छात्रोपयोगी या पाठ्यक्रम में रखवाये जाने की दृष्टि से तैयार किये गये संग्रह (आ) भक्तों के उपयोग के लिए प्रस्तुत किये गये संग्रह, तथा (इ) मीरां पर शोध की दृष्टि से संग्रह।

(४) उत्तर प्रदेश में फतहपुर की यात्रा पर मैं हस्तलेखों की खोज में गया था। वहाँ जिला नियोजन अधिकारी थे कैप्टेन शूरवीर सिंह जिन्हें साहित्य और शोध में बहुत रुचि थी। उन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर अपने वाहन में ही मुझे कई स्थानों की यात्रा करायी थी। इनमें एक स्थान था 'शिवराजपुर'। यहाँ एक सज्जन के पास मीरां के पदों के संग्रह का एक हस्तलिखित ग्रंथ बहुत पुराना बताया जाता था। कैप्टेन साहब ने बताया कि इस संग्रह में मीरां के सर्वाधिक पद हैं। जब हम गये तो उस घर में ताला पड़ा हुआ था। अतः ग्रंथ के दर्शन नहीं कर पाये। मैं समझता हूँ कि यह संग्रह और इसी प्रकार के अन्य बहुत से संग्रह अब भी अछूते हैं। शिवराजपुर में मीरां की बहुत प्रतिष्ठा है। यहाँ एक भव्य मंदिर में 'गिरधर गोपाल' की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा है। यह कहा जाता है कि यात्रा करते हुए मीरां यहाँ आयी थीं, और ये 'गिरधर गोपाल' यहीं स्थापित होने के लिए मचल उठे। तो मीरां जी ने उन्हें यहीं पधरा दिया।

मीरां की कई मूर्तियों का विवरण स्व० पुरोहित जी ने 'मीरांवृहत्पद संग्रह'-भाग-१ की भूमिका में दिया है। किन्तु, इस मूर्ति का कहीं कोई उल्लेख नहीं। यह स्वयं में अनुसंधान का एक विषय है।

पर, इस विवरण से यह बात प्रकट होती है, 'मीरां' पर शोध के लिए अभी कितने ही क्षेत्र अछूते पड़े हैं।

(५) The root of poetry, religion and magic were the same. (P. 423)

(६) I mean that the earliest poetry arose from incantation, from the use of powerful and evocative words and rhythms, by means of which man could come into communication with his creator and with the essence of all created things........(P. 423)

(७) Man believed that by the use of certain rhythms he might obtain a power over rhythms of the earth the budding, growing and reproduction. (P. 423)

(८) In the sacred books of China, for instance in the Li. Ki, XVII, ii (tr. James Legge), we read that 'the ancient Kings........brought (music) into harmony with the energy that produces life'. The purposes of music and of poetry were then one.

Dr. Harrison says of the hymn from which the above quotation is taken, 'The God invoked is not present............ He is bidden to come and apparently his coming........his very existence, depends on the ritual that invokes him'. In other, words, his coming and his existence depend on the magic of words and the magic of rhythms.

(5 - 8 from Cassell's Encyclopaedia of Literature Vol I. pp. 423 - 424)

(९) मीरां की प्रेम-साधना - प्रस्तावना पृ० २

(१०) मीरां स्मृति ग्रंथ पृ० १३७

—संदर्भ ग्रंथ—

१. Literary Criticism : A short history—William K. Wimsatt, & Cleanth Brooks.
२. Cassell's, Encyclopaedia of Literature (Vol I).
३. मीरां वृहत्पदावली (प्रथम भाग)—सं. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी
४. मीरां पदावली—प्रो. शभुसिंह मनोहर
५. मीरां वृहत् पद संग्रह—पद्मावती शबनम
६. मीरांबाई और उनकी पदावली—देशराजसिंह भाटी
७. राजस्थानी भाषा और साहित्य—डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
८. संस्कृति के चार अध्याय—डॉ० रामधारीसिंह 'दिनकर'
९. मीरां की प्रेम साधना—भुवनेश्वर मिश्र 'माधव'
१०. मीरां स्मृति ग्रंथ—वंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता

सत्येन्द्र
निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
जयपुर—४

मीरां-बृहत्पदावली

द्वितीय भाग

१

अपना प्रभूजी की वाट री ॥
मैं कुंण न भेजूं ॥
नेंनन की मुसलात[1] ॥
आपन जाय दुवारका में छाये ॥
झूंठी लख[2] दे पातरी ॥
मोर मुकट पीतामर[3] सोहै ॥
सोधें[4] भीनी गात री ॥
वृंदावन की कुंज गली में ॥
दरसन[5] भई सुनाथ री ॥
मीरा[6] के प्रभू गिरधर नागर ॥
आनि मिले सुप्रभात री ॥ १ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२, पत्राङ्क-१७२

सं० पाठ १- १. कुसलात । २. लिख । ३. पीताम्वर । ४. सौंधें । ५. दरसण । ६. मीरां ।

२

अपराधी तैं रांम न जान्यो रे
हारा सौं तन छाडि[1] कै रस सौं विश्व छान्यौ रे ॥ १ ॥
जठरागिनि तै काढ़ि[2] के वाहर ले आन्यो रे
उहां तै आयौ कौल कर इहां विशरान्यौ[3] रे ॥ २ ॥
मात पिता सुध[4] वंधवा[5] इन सौं मन भान्यौ रे
मीरां प्रभु[6] गिरधर विना कोउ लष[8] सयान्यो रे ॥ ३ ॥

३

अब मारा[1] गोकल[2] का विहारी[3] जीस्या[4] ॥ ठाकुर ना जांणू कद आसी ॥ टेर ॥
प्रभू जी छोड़्या पीयर ओर सासरो ॥ जाय वसाई कासी ॥
मेवाडा[5] को मुख नही देखु[6] ॥ हरी दरसण की प्यासी ॥ १ ॥
अटकी नाव सममद[7] वीच[8] वेडा[9] ॥ प्रभूजी पार लगासी ॥
मीरां को तो कछू नही वीगडो[10] ॥ वीडज[11] रावलो[12] जासी ॥ २ ॥
प्याला मे वीष[13] गोल[14] दीया[15] है ॥ पीया है नीज दासी[16] ॥
कर चरणामत पी गई मीरां ॥ हो गई चंद्रकला-सी[17] ॥ ३ ॥
सब संतन ने देखत मीरां ॥ हरी को नाम समासी ॥
मीरां के प्रभू अवीनासी[18] ॥ राणा जी पीसतासी[19] ॥ ४ ॥

---

१. संत साहित्य संगम बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से उद्धत।

सं० पाठ २- १. छांडि। २. काढ़ि। ३. विसरान्यौ। ४. सुत। ५. वांधव। ६. प्रभू। ७. गिरधर। ८. लख।

„ „ ३- १. म्हारा। २. गोकळ, गोकुल। ३. बिहारी। ४. जिस्या। ५. मेवाड़ा। ६. देखूं। ७. समंद, समद। ८. बिच। ९. बेड़ा। १०. बिगड्यो। ११. बिड़द। १२. रावळो। १३. बिख। १४. घोळ। १५ दिया। १६. निजदासी। १७. चंद्रकळासी। १८. अविनासी। १९. पिछतासी।

४

अब तो बुढ़ापो आयो ये ।। टेर ।।
बालपणु[1] हंस खेल गमायो मात पिता झुलरायो ऐ ।। १ ।।
भरतौ जोबन माही[2] काम कमायो रे लालैच[3] मैं[4] लपटायो ऐ ।। २ ।।
बीरध भयो जदि चेत्या[5] व्यापी रे सीस धूजण ने थायो ऐ ।। ३ ।।
बेटा तो बहू थांरी कांण नै मानै रे डोलां सूं ठुकरायो ऐ ।। ४ ।।
मीरा[6] कहै[7] प्रभु[8] गीरधर[9] नागर गोमद[10] कबुऐ[11] न गायो ऐ ।। ५ ।।

५

अब मोसूं बोलौ म्हारा सैंन ।।
तुम बोल्या[1] बिनि जीवड़ो दुखत होइ ।।
सुख नाहीं[2] म्हारै चैन ।। टेक ।।
काजर झरि झरि बदन बिगरि गयौ ।।
चखरातर झरि नैंन ।।
ऊभी ठाडी[3] अरज करत हूं ।।
अरज करत भई रैंनि[4] ।।
सुकल रैनि मैं[5] सेझ संवारी ।।
कब र पधारौ[6] सुख दैंन ।।
मीरां के प्रभू मोहन पधारे ।।
अंग मिलासे[7] दोऊ नैंन ।। १ ।।

---

१. संत सा० सं० बीकानेर के ह० लि० ग्र० से।

२. भार० वि० मं० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से।

सं० पाठ ४- १. बालपणों। २. मांही। ३. लालच। ४. में। ५. चिंता, चेतना।
६. मीरां। ७. कहे। ८. प्रभू। ९. गिरधर। १०. गोविंद। ११. कबहूं।
,, ,, ५- १. बोल्यां। २. नांही। ३. ठाढ़ी। ४. रैन। ५. में
६. पधारो। ७. बिलासे।

६

राग खबायची

अब माने[1] गुढ़रण दे मोरी माय ।
भव भव मे मैं[2] गऊ चराई
थाके[3] लाका[4] पाय[5] ॥ १ ॥
प्रात समै मैं कर कलेवो
चारण जासु[6] गाय ॥ २ ॥
मीरा[7] के प्रभु[8] गिरधर नागर
लीयो है उर लपटाय ॥ ३ ॥

७

अरी हों तो याही उमाहैं[1] लागि रही री ।
कबऊन[2] पिय मो सौं[3] प्रेम जनायो[4] ।
कबहून[5] हसि[6] मोरी बहियां गही री ।
अब कैसैं जीवन बनैं मोरी आली ।
कबहून पिय मो सो जीय की कही री ।
मीरां के प्रभु[7] गिरधर नागर ।
कोन[8] चूक मोहि मांहि लही री ॥ १ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुरके ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क-६३

सं० पाठ ६- १. म्हांनै । २. मैं । ३. थांकै । ४. लागां, लागूं । ५. पांय ।
६. जास्यूं । ७. मीरां । ८. प्रभू ।

" " ७- १. उमाही । २. कबहूंन । ३. सौं । ४. जणायो । ५. कबहूंन । ६. हंसि ।
७. प्रभू । ८. कौन, कवण ।

८

अरियां[1] नि मांनी सुनि नि अंमा।
मनमोहन दे रूप लुभानी।
साढ़ी गल नेक नाहीं मांनी।
लोकां डर छपक छिपांवा।
भरि भरि आवत पानी।
लाली लखि लखि लूकां लावै।
तकि तकि दै हमुंनै[2] ताना।
मैं भी जीती लाज न कीती।
ओर न दिल बिचि आंनी।
मीरां प्रभु[3] गिरधर गल साढ़ी।
ढ़पी छपी सब जांनी ॥ १ ॥

९

अरी आली तूं उठी लालन कै
अंग संग बिछुरी[1] मांग अलकै
छुटी कांनन कौ कुटिल विराजत
मुकट मणिल सकल बन उलटी
छवि सों मुक्तमाल लर[2] तूटी[3]
आप रंगीली सारी कुचन मै[4] अतिभारी
ऐसी वनी मांनौ[5] बीरबहोटी
मीरा[6] प्रभु[7] पैं अनत तैं संतिमांनी
कांमत पती विरहा लूटी

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क ३२

२. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क-८२

सं० पाठ ८- १. अंखिया। २. दे हमुंनै। ३. प्रभू।

,, ,, ९- १. बिछुड़ी। २. लड़। ३. टूटी। ४. में। ५. मांनो। ६. मीरां। ७. प्रभु।

१०

अलवता मे[1] कंही नार वरी छु[2] जी व्रजराज वड़ी सु[3]
कवकी नार वडी[4] सू जो धीनानात[5] वडी सु
सव गोपीग्रह्व[6] सु लाला हस[7] हस बोलोह[8]
मे[9] कई[10] नार वरी[11] छु[12] जी धीनानात वडी छु ।। १ ।।
सव गोपीग्रया[13] मोतीग्रन की माला मैं तो हीर करोरी जी
वाजराज[14] वडी सु कवकी नार वडी सु जी
धीनानात वडी सु जी ।। २ ।।
सव गोपचा[15] तो लाला चपला[16] री कलिग्रचा[17]
हम नो फूल गुलावी जी वरजराज वडी सु
धीनानात वडी सु जी ।। ३ ।।
मारो[18] तो वेणो[19] सगलो[20] जाणी गोधन जासी प्यारो
वरजराज वडी सू जी कवको नार वड़ी सु जी
धीनानात वडी सू जी ।। ४ ।।
मीरावाई[21] के प्रभु[22] गरधर[23] नागर हरी चरण चत[24] लगोजी
व्रजराज वडी सु कवकी नार वडी सु जी
धीनानात वडी सु जी ।। ५ ।।

११

असल फकीरी रुडी[1] है थारी[2] वैरागी[3] रामां ।। टेक ।।
भिज्ञा[3] घाल्यां लेवो नांही टुकडा[4] मैं[5] सवुरी[6] हो ।। १ ।।
आसण मार इकत छेय वैठा[8] छाड[9] दई दलगीरी हो ।। २ ।।
मीरां के प्रभु[10] गिरधर नागर जोग जुगत सव जांणी हो ।। ३ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०–३४६२२, पत्रांक–१०-११
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४३, पत्रांक–३३

सं० पाठ १०- १. मैं । २. व्रड़ी छूं । ३. सूं । ४. (क) वड़ी (ख) खड़ी । ५. दीनानाथ । ६. गोप्यां । ७. हंस । ८. वोलो । ९. मैं । १०. कहीं । ११. (क) बुरी (ख) वड़ी । १२. छूं । १३. गोप्यां । १४. व्रजराज । १५. गोप्यां । १६. चंपला । १७. कळियां । १८. म्हारो । १९. गेहणे । २०. सगळो । २१. मीरांबाई । २२. प्रभू । २३. गिरधर । २४. वित ।

,, ,, ११- १. रुड़ी । २. थांरी । ३. भिक्षा । ५. टुकड़ा । ५. में । ६. सबुरी । ७. छे ८. वैठा । ९. छोड़े । १० प्रभू ।

१२

अहीर को प्यारो प्यारो री माई सावरो[1] ।
मैं दधि वेचन जात वृंदावन[2] ।। छीन लयो दधि सावरो[3] री ।
येक[4] नाचत येक मृदंग[5] वजावत[6] ।। येक गावत दे दे तारी रे ।।
वृंदावन की कुंज गलींन[7] मैं[8] ।। सेस गोपी यक-कांन कानो री ।।
वृंदावन मैं[9] रास रच्यौ है ।। नरत करै गिरधर धारो री ।।
मीरा[10] के प्रभु[11] गिरधारी नागर ।। हरि चरना[12] चित मेरो मेरो री माई।। १ ।।

१३

अहो मेरे प्रीतम नाहै के तुम भले आव नही ।।
अहो तेरी सुरति[1] की वलिजाउ[2] के दरस दीखावना हो ।।
आयो है सावन[3] मास कै[4] मोर मनारिया हो ।
अहो लाले चात्रग टेर सुनाहै[5] वरसे लाईया हो रे ।।
चात्रग जीहा जाय मेरा साईया[6] ।।
अहो लाल कागद लिखी भेजो पीया रे पीव न हो ।।
निस दिन रहन हो[7] कुसाल सदा सुख जीवना ।।
अहो लाल जैन[8] मीरा[9] वलजाहू[10] येता हठ कु[11] कीया हो ।। १ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६०, पत्राङ्क-४३

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६०, पत्राङ्क-१७३

सं० पाठ १२- १. सांवरो । २. व्रदांवन । ३. सांवरो । ४. एक । ५. म्रदंग । ६. बजावत । ७. गलिन । ८. मे । ९. में । १०. मीरां । ११. प्रभू । १२. चरणा ।

„ १३- १. सुरत । २. वजिजाऊं । ३. सांवण । ४. के । ५. सुनाए । ६. सांईया । ७. ही ८. जन । ९. मीरां । १०. वलिजाऊं । ११. क्यूं ।

१४

अहौ प्यारे वांसुरी नेक सुनाई हौ।
बृंदावन की कुंज में[1] नेक देखि दिखाई।
आव् हौ[2] हम बिरहनि[3] व्याकुल[4] भई।
हमरी वेद न जाय हौ।
या बेदन कौं[5] बैद वांसुरी।
गिरधर लाल वजाय हौ।
जा पर क्रपा[6] करौ[7] नंदन।
ताकै सदाइ सहाय हौ।
मोहन मूरति नवल किशोरी।
दासी मीरां वलि जाय हौ॥ १ ॥

१५

आज रंगीली रेण प्रीतम पांवणा हो राज ॥ टेर ॥
तन सनगारु[1] सेज सवारु[2] ॥ अंजन सारु[3] धन वारु[4] ।
स्याम सुंदर तन धारु[5] ॥ लेसूं भावना माराज[6] ॥ १ ॥
फले मनोहर[7] मन मन फूले ॥ सदा सुवाग पटल तुख डुले ॥
सब दुख भूले ॥ फूले[8] करसु[9] वदावना[10] हो राज ॥ २ ॥
सुणे[11] सखीरी[12] भाग हमारो ॥ वर पायो ब्रजराज दुलारो ॥
नख पर गीखर[13] धारे ॥ वंसी वजावणा ॥ ३ ॥
जनम जनम की पीड[14] मीटाड़ी[15] ॥ अपनी कर लीनी चरनाही ॥
मीरा[16] हरी मन भाई ॥ मगल[17] गावना[18] हो राज ॥ ४ ॥

---

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क ११-१२
२. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ १४- १. में । २. हो । ३. बिरहणी । ४. व्याकुळ । ५. को । ६. कृपा ७. करो ।
,, ,, १५- १. स्रिणगारुं । २. संवारु । ३. सारुं । ४. वारुं । ५. धारुं । ६. महाराज । ७. मनोरथ । ८. फूले । ९. करसुं । १०. बधावना । ११. सखीरी । १२. सुंणे । १३. गिरवर । १४. पीड़ । १५. मिटाड़ी । १६. मीरां । १७. मंगल । १८. गांवणा ।

१६

आज तो माई सांवरा ने वंसरी[1] वजाई[2] है ॥ टेर ॥
सुण मुरली की तांना ॥ सुनी आंका[3] सुटीधांना ॥
सुण कर व्रज वधु ॥ वन ही कु[4] धाई हे ॥ १ ॥
सुण मुरली की तांना ॥ वसत्रा[5] न पोवे घांना ॥
मीन मृग धरे न धीरा ॥ आस चलाई है ॥ २ ॥
सुणत उडगण—पती पवन की मग—गती[6] ॥
जन मीरां जादुपाती[7] ॥ जे जे वंसी गाई है ॥ ३ ॥

१७

आज तो पेच पाग के नीके
मोहन कोंन[1] वनाय दये है ।
ग्रेंडी वेंडी चाल कहां सीखे हो
प्यारे राते नेंनन[2] ये ।
उरन को चहन वन्यों छतीयन पर
ता संग खेल भये हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर वैठौ जु[3]
वौटौ[4] लछन वे न गये हैं ॥ १ ॥

---

१. प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, पत्राङ्क-१६५

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्राङ्क-५२

सं० पाठ १६-१. वसरी, बांसुरी । २. वजाई । . ३. आका । ४. कूं । ५. वसवा ।
६. गति । ७. यदुपति ।

" " १७-१. कौंन, कवण । २. नेंनन । ३. जी । ४. वैठो ।

१८

आजि तो सखी री मेरे उधो[1] आये पांहूणां ॥ टेक ॥
घस—घस चंदण अंग लिपटावौ स्याम
अजहू[2] न आए स्यांम तपति वुझावणां ।। १ ॥
मुथरा मैं कंस मारौ[3] लंकापति आप गारयौ[4]
सोई रूप[5] वलि छल्यौ भेख धरयौ[6] वांवना[7] ॥ २ ।
द्रोपता की लाज काज द्वारिका[8] सो[9] ध्याऐ हे नाथ
मीरां तौ तिहारी दासी प्रभू वेगि आवणां ॥ ३ ॥

१६

आजि म्हारैं पांवणीया बैरागी जी ॥ जनम सुधारण सतगुर आयाजो ॥टेक॥
आजि सखि म्हांनै सुपनौ री आयौ ॥ संत वधाई कोई ल्याया जी ॥१॥
ऊंची चढ़ि हू[1] जोवण लागी ॥ म्हारा सतगुर निजर पशयाजी[2] ॥२॥
प्रेम के धोरैं उतरत देख्या ॥ आण पिया राजन आया जी ॥३॥
भगवांसा कपड़ा कर मं डोरी ॥ दरसण की विलहारी[3] जी ॥४॥
भाव भगति सूं करुं रसाई[4] ॥ प्रीति की झारी भर ल्याऊं जी ॥५॥
आजि सखी हूं तौ हरख फिरुं छूं ॥ सतगुर कांई म्हानै वगसै जी ॥६॥
सील संतोष क्रिपा करि दींन्हा ॥ मो उर आनंद कीन्हा जी ॥७॥
पण परसाधी[5] म्हांनें सतगुर जी दीन्ही ॥ मो उपरि किरपा कीन्ही जी ॥८॥
प्रीति करै न राम पद रज लेस्युं ॥ म्हारो सीस चरण सर देस्युं जी ॥९॥
चरण धोइ चरणामत लेस्यूं[6] ॥ म्हारा पाप विलै[7] होइजासी जी ॥१०॥
कर जोड़्या रामजी अरज करुं छुं[8] ॥ म्हारौ जनम सुधारौ सतगुर स्वामीजी ॥११॥
मीरां कहै प्रभु हरि अविनासी ॥ जनम जनम की मैं दासी जी ॥१२॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९१, पत्रांक-३ ७
२. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।

सं० पाठ १८-१. ऊधो । २. अजहूंन । ३. मार्यो । ४. गार्यौ । ५. रूप । ६. धार्यौ ।
७. बांवना । ८. द्वारिका । ९. सो ही ।

" " १९-१. हूँ । २. परा आया जी । ३. बलिहारी । ४. रसोई । ५. परसादी
६. चरणामृत लेस्यूं । ७. विलय । ८. करूं छूं ।

२०

आली री गुन समंगल वलमां ।
मोहन विचित्र मन मूरति आए ।
मेरे ग्रह है क्रपाल[1] ॥
जवतैं लालन मेरे आंवन कीनौरी ।
तब हौ भारी लीनी भुज अंकमाल ।
पलकै[2] पांवड़े करो ॥
सुभ घरी महूरत जबतै आंवन कीनौ ।
निस भरे सरब मधि ॥
मोरां के प्रभु गिरधर नागर ।
परयेमे[3] रस के सीले[4] लाल ॥ १ ॥

२१

आवण वारा म्हारे कूँण हे जी ॥ म्हारी आंषडली[1] हौरा ऐ फरुकै ॥
आवण हारा मांहार[2] सतगुरु ॥ मांहारी[3] आंषडली फरुकै ॥ टेक ॥
आन साषी[4] सपनौ भईयो[5] रे ॥ म्हारे आंगण आंबौ मौरचो ॥
हरी जी रौ[6] आवण मे सूणीयौ रे हैली ॥ म्हांरे हरदऊग दोड़ीयौ ॥ १ ॥
वटा[7] उण देसरा रे ॥ कहीजे संदेसौ जाई ॥
तुम बिना व्यांकुल मैं भई रे ॥ वार वार सुद लीज्यौ यौ ॥ २ ॥
मीरां कहै सुणौ केसवा ॥ तूम[8] बिनां कहौ कहां कीजै ॥
पल-पल नेण हौ जपूं ॥ म्हांरौ[9] हरी[10] विनां जीवड़ौ[11] सीज ॥ ३ ॥

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७, पत्रांक-६४-६५

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १२५७७, पत्रांक-१७२

सं० पाठ २०-१. कृपाल । २. पलक । ३. परेम, प्रेम । ४. रसीले ।

" " २१-१. आखड़ली । २. म्हारे । ३. म्हारी । ४. सखी । ५. भयो । ६. रो । ७. वराऊड़ा, वटाऊड़ा । ८. तुम । ९ म्हांरो । १०. हरि । ११. जिवड़ो ।

२२

आव री आयो सजनी खेलो होरी ये ॥
चोवा चंदन बुक बंदन अवीर भरे—भरि जोरीया[1] ॥
खेल मच्यौ रस रेलि—पेलि को नवल किसोर किसोरिया[2] ॥ टेक ॥
तुम सावरे[3] हम गोरीया तो कला हमारी करहे देहे रंग चोहोरीया[4] ॥
मीरा[5] कै प्रभु गिरधर नागर चरण–कवल[6] लपटानी ॥ वालु ॥

२३

आवन कीह[1] हरि कह जो गया ॥
कब आवैगी बैरण परसूं ॥ टेर ॥
चित चावै उड़ जाय मिलूं ॥
उड़ीयो[2] नार जाय बिना परसूं ॥ १ ॥
आवो मेरै सांवरा आवो मेरे ज्यांनी ॥
ताहि कूं लगाऊं अपना गलासूं ॥ २ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर ॥
कबही मिलै मोहन हमसूं ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६०, पत्रांक-७१-७२

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से।

सं० पाठ २२-१. जोरी, जोरियां। २. किसोरी। ३. सांवरे। ४. चहोरी, चहोरियां।
५. मीरां। ६. कमल।

„ „ २३-१. की। २. उडियो।

२४

अेजो लाला चरण कमल वीलीअयारी[1] ।
झट मील लो: सपूरण ।
डफ वाजे कुटील कनरीअया[2] को ।
डफ वाजे हो जी लाला ।
गीत नाचत हे वीनमाली[3] ।
ज्या जावे ज्या रत्र[4] में भीजोवे ।
अेजी लाला करत जोवनी अयारी[5] जोवी ।
डफ बाजे कुटल कनईअया को ।
मीरा[6] के प्रवु[7] वेग पधारो ।
अेजो लाला चरणा[8] में चत[9] धारलीअयो[10] ।
डफ वाजे कुटल कनईअया को ।

२५

ऐ मा[1] हेला देति[2] लाजु[3] झला[4] दियो न जाय ।।
तन याकै[5] वसरी[6] किनि[7] छ वसरीया[8] ।।
तन मन हमारो येजि[9] लीवो छ चुराया[10] ।।१।।
हे मा हेला देती लाजूं झालो दियो न जाय ।।
वरज रहि वरजो नंहि मानै ।।२।।
नंद रा[11] गुमानि[12] हासे[13] चलो[14] गयो छै रूठाय ।।
मीरा[15] के प्रभु गीरधर[16] नागर सावली[17] सुरत म्हारे हीये म[18] समाय ।।३।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४६२२, पत्रांक २७

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २५३४४, पत्रांक-७५

सं० पाठ २४-१. वलिहारी । २. कनैया, कन्हैया । ३. वनमली । ४. इत्र । ५. जौवनियारी
६. मीरां ७. प्रभु । ८. चरणां । ९. चित । १०. धारलीयो ।

„ „ २५-१. मां । २. देती । ३. लाजूं । ४. झाला, झालो । ५. याकै । ६. वश री ।
७. कीनी । ८. वंसरिया । ९. ऐजी । १०. चुराय । ११. री ।
१२. गुमांनी । १३. हांसे । १४. चल्यो । १५. मीरां । १६. गिरधर ।
१७. सांवळी । १८. मा, में ।

२६

ऐक[१] दिन क्रिसन[२] मेरै[३] कहै[४] गये आवणां
बाचा तो कुंबाचा[५] भई ॥ पकड़ुगी[६] दावणां ॥
अजहूं न आये मेरै ॥ वंसी के वजावणां ॥ १ ॥
बल[७] कुं[८] छलनि[९] चले ॥ भेख धरे वांवना ॥
मैथरा[१०] म[११] कंस पछाड़े ॥ लकापति रांवणा ॥ २ ॥
प्रैह्लाद[१२] की प्रतंग्या[१३] राखी ॥ वसदेव[१४] के वंध छुडाए ॥
द्रोपदा की लाज्या[१५] राखी ॥ चीर कुं वधावणां ॥ ३ ॥
पीया कौ अनेसौ[१६] भारी ॥ कैसैं कहू[१७] री प्यारी ॥
मीरा[१८] के प्रभू अधर[१९] नागर ॥ तेरो जस गावणां ॥ ४ ॥

२७

उधव जी म्हानै[१] लै[२] चालौ[३] स्यामरा[४] रै देस ॥ टेर ॥
कबकी छौडी मथुरा नगरी छोड दीयौ[५] नंद जी को देस ॥ १ ॥
करमैं[६] कमंडल ओर मृग-छाला करसू[७] मै आदेस आदेस ॥ २ ॥
कंथा सिवाडुं[८] गल विच डारु करु भगवां भेस ॥ ३ ॥
मीरा[९] कहै प्रभु गिरधर नागर मौ मन वडौ अदेश ॥ ४ ॥

---

१. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६६५, पत्रांक-१८
२. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० ११२ से।

सं० पाठ २६-१. एक। २. कृष्ण। ३. मेरे। ४. कह। ५. कुबाचा। ६. पकड़ूंगी। ७. बलि। ८. कूं। ९. छलने। १०. मथुरा। ११. में। १२. प्रह्लाद १३. प्रतिज्ञा। १४. वसुदेव। १५. लज्जा। १६. अंदेसो। १७. कहूं। १८. मीरां। १९. गिरिधर।

" " २७-१. म्हांने। २. ले। ३. चालो। ४. सांवरा। ५. दियौ। ६. कर में। ७. करस्यूं। ८. सिवाडूं, सिलाऊं। ९. मीरां।

२८

उधो[1] वेगा जाज्यो राज ।।

कहैज्यौ[2] सांवरीया नें मारें[3] ।। म्हला[4] आज्यौ राज ।। टेर ।।

वोहोत[5] दिन बीतां म्हारी सुध न लई ।। नैना नीद[6] तो गई ।।

चांनणी सी रात म्हारे ।। वैरण भई ।। १ ।।

सावणीये री रात वागां कोयलीया[7] वोलै ।।

मारी छली[8] क्यूं छौलै ।। पपी रे[9] पपीईया[10] मारौ

अंत क्यूं तोलै ।। २ ।।

मीरां तो वीनां[11] कल नां पडै ।। यौ दुख क्यूं न हेरे[12] ।।

छतीयां तपै नेणां नीर तौ[13] भरै[14] ।। ३ ।।

२९

उधोजि[1] नैण रहे जड[2] लाय

नदीया[3] वइजात[4] दीन - राती[5] ।

मुतलव के गरजु हो उधो

सांम[6] संगाति ।। अकडी० ।।

उधोजि कुवज्या सै नेह लगाय

हमकु[7] लिखी है जोग दिवाति ।

मुतलव के गरजु हो उधो० ।।

उधोजि कव लग करु पुकार

मैं तो कुरल्या–जु[8] कुरलाति[9] ।

उधोजि मीरांवाइ वल[10] जाय

हू[11] तो चरण—कमल रग—राति[12]

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से ।

सं० पाठ २८-१. ऊधो । २. कहज्यो । ३. म्हारे । ४. महलां । ५. वहुत । ६. नींद । ७. कोयलियां । ८. छाती । ९. पापी रे । १०. पपीहा । ११. विन, विना । १२. हरे । १३. तो । १४. भरे ।

,, ,, २९-१. ऊधोजी । २. झड़ । ३. नदिया । ४.वही जात । ५. दिन-राती । ६. स्याम । ७. कूं । ८. कुरज्यां ज्यूँ । ९. कुरळाती । १०. हूँ । ११. वलि । १२. रंग ।

३०

ऊदा जो हरी वना रीश्रोश्र ने जाश्रे[1] सांवरिया ने के दीजो समझाओ[2] ।
वसीवारा[3] ने के[4] दीजो समझाश्रे ।
गंगा जमना त्यों[5] वरई । ऊदा जी कुल नार ईक मलाश्रे ।
साकरी श्रमाने[6] के दीजो समझाश्रे ।
अनखाती राद[7] प्य की[8] जी । ऊदा जी गोपया[9] रई[10] मुरलाई[11] ।
सावरीअयाने[12] के दीजो समझाई ।
आंगलीश्रभारी[13] मुंदड़ी जी । जदा[14] जी रलकी[15] आवे मेरी वाश्रे[16] ।
सांवरीश्रयाने के दीजो समुझांश्रे ।
श्रोइ जल जमना रो जुलबोंजी[17] । ऊदा जी अमारे[18] कदम की छाश्रे ।
सांवरीअयाने के' दीजो समझाश्रे ।
व्रनरावन[19] की कुज[20] में जी । सव गोप्या को संजोग ।
सावरिया ने के दीजो समझाश्रे ।
मीरां हरके[21] लाडली जी । ऊदा जी प्यारे सुरा जो सरजराहार ।
गोवीदा[22] ने के[23] दीजो समझाश्रे ।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३८६२२, पत्राङ्क-३२

सं० पाठ ३०-१. ऊधोजी हरि विन रह्यो न जाय । २. समझाय । ३. वंसीवाळा । ४. कह । ५. ज्यों । ६. सांवरिया नें । ७. राधा । ८. प्यारी । ९. गोप्या । १०. रही ११. मुरझाई, कुरळाई । १२. सावरिया ने । १३. आंगलिया री । १४. ऊदो । १५. रळवी । १६. वाएं । १७. फूलबोंजी । १८. यारे । १९. वृन्दावान । २०. कूंज । २१. हरि की । २२. गोविंदा । २३. कहं ।

३१

उविरी[1] होरी हो रही । तु[2] अब 'क्या सोवै री[3] ॥ टेक ॥
रैनैं[4] गई तो जान दे सजनी । दीनैं[5] मती पोवै[6] री ॥ १ ॥
यो संसार नाव कौ मेलो यामैं तेरा[7] को री ॥ २ ॥
मातै[8] पीता[9] सुत कूटमै[10]–कवीलो । यातै[11] तेरा–मो है री ॥ ३ ॥
मीरा[12] के प्रभू हरि अंवनासी[13] यो नातो दीन[14] दो है री ॥ ४ ॥

३२

रःग मारु

कदि र मिलैगो आई रमयौ[1] म्हांन[2] कदि मिलैगो आई ॥
ज्यांरी ओल[3]री आवै वारुवार[4] ॥ टेक ॥
वुझो[5] रुड़ा जोईसी[6] हो ॥ रुड़ौ लगन विवचांरि[7] ॥
कहै गोव्यंदा[8] कव आयसी[9] ॥ म्हारै आगणिजै[10] पाऊं[11] धारि ॥ १ ॥
पंछी बुझु[12] पल गिणौ ॥ उभी मारिग[13] जोई ॥
कोई बतावै हरि नै आवतौ ॥ माहारौ[14] हीयौ उरे रौ होई ॥ २ ॥
उठत बैठत निरपता[15] हौ ॥ नैन रह्या रत—वाहि[16] ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० (इन्द्र) ५२, पत्राङ्क-२७

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२, पत्राङ्क-५२

सं० पाठ ३१-१. उठो री । २. तूं । ३. सोवे री । ४. रैन । ५. दिन । ६. खोवे । ७. तेरो । ८. मात । ९. पिता । १०. कुटुम्ब । ११. यातें । १२. मीरां । १३. अविनाशी । १४. दिन ।

" " ३२-१. रमैयो । २. म्हांने ३. ओळूं । ४. वारम्वार । ५. वूझो । ६. जोशी । ७. विचार । ८. गोविंदो । ९. आसी । १०. आंगणिये । ११. (क) पांव (ख) पांऊ । १२. वूझूं । १३. मारग । १४. म्हारो । १५. निरखतां । १६. वाही ।

हरिजी रो मारिग हेरतां ॥ म्हांने रैन गई तिन[17] जाय ॥ ३ ॥
अण मिलया औलु[18] घणी हो ॥ मो मनि वारौ-बार ॥
उर्भलि फुटज्या कारज्यौ[19] ॥ म्हांनै नैन षाडि[20] धार ॥ ४ ॥
ज्या[21] मिलयां आनद घणा हौई वीछरिया[22] वैराग ॥
हरिजी रौ मारिग हेरिता[23] ॥ म्हे तौ षडिच[24] उडाऊं काग ॥ ५ ॥
अहि औसर आयें न हौ ॥ गयौ संदेसौ षुटि[25] ॥
हीयौ पुरांणो नाव ज्यौं ॥ म्हांरौ गयो बिचासु[26] टुटि ॥ ६ ॥
हार्थणि देसी वोलीभो[27] हौ ॥ दाझ्या उपरि दाह ॥
न जानु[28] कव हरि आईसी[29] ॥ म्हारै औगणगारी रो नाह ॥ ७ ॥
क्रपा[30] करि आवो हरी हौ ॥ जन अपणां कै भाय ॥
लावै तौ आचलि लेस्या[31] वारणां ॥ ज्याकी[32] जन मीरा[33] वलि जाय ॥

३३

काई[1] रे कारण अण-वोला नाथ मासे[2] मुषडे[3] ॥
क्यु[4] नही वोलो नाथ मारो[5] ॥ टेर ॥
पेली प्रीत करी हरी हमसे प्रेम-प्रीत को जोलो (ड़ो) नाथ ॥ १ ॥
रेसम गाला गाडी गुल[6] रई ॥ कांई रे मीस[7] कर वोलो[8] ॥ २ ॥
मे छु[9] वेटी राजा भीवंरो कुवज्या वरावर कंई तोलो ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गीरधर[10] नागर ॥ हीरदा री गुडी[11] कोउंनी[12] षोलो ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

---

१७. तिन। १८. ओळूं। १९. काळजो। २०. खांडी। २१. ज्यां। २२. बीछड़ियां। २३. हेरतां। २४. खड़ी। २५. खूट। २६. बीच सूं टूट। २७. ओळमों। २८. जानूं। २९. आसी। ३०. कृपा। ३१. लेस्यां। ३२. ज्यांकी। ३३. मीरां।

सं० पाठ ३३-१. कांई। २. म्हांसे। ३. मुखड़े। ४. क्यूं। ५. म्हारा, म्हांसों। ६. गांठी घुळ। ७. मिस। ८. खोलो। ९. छूं। १०. गिरिधर। ११. घुंडी। १२. क्यों नी।

३४

काई हट(ठ) जागो रे मोहग्ग दांग्गी ।। टेर ।।
मैं दुव वेचग्ग जात विनावन[1]। लुटट[2] नार वीडांग्गी[3] ।। १ ।।
व्रंदाविन की कुज[4]-गलग्ग[5] मे । मैं सेरी[6] चाल पिचांग्गी[7] ।। २ ।।
वंसी वजावत ठाडो वाट में ।। किस विध जाउं[8] जमना पांग्गी ।। ३ ।।
मिरां[9] कै प्रभू गीरधर[10] नागर ।। चरग्ग-कमल लपटांग्गी ।। ४ ।।

३५

काऊ विध मिलजा रे गिरधारी ।। टेर ।।
गौकल[1] ढुंढ[2] वनावन[3] ढूंढी ढूंढी मथुरा सारी ।। १ ।।
वनरावन मैं धेनु चरावै औढ कामरोया कारो ।। २ ।।
मोर मुकट पीतांवर सोहै वंसी की छवि न्यारी ।। ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरवर नागर चरग्ग-कमल वलिहारी ।। ४ ।।

३६

कांऊ देख्या री घनस्यामा ।। स्याम हमारे रामां ।। टेक ।।
वरसांग्गै सु[1] छली[2] गुवालग्गी ।। नंद गांव कु जाग्गां ।।
अदवस[3] मोहन वंसी वजाई ।। हरे हमारे प्राग्गां ।। १ ।।
मोरमुगट पीतांवर सोवं ।। कुंडल झलकै कांना ।।
सांवरी सुरत पर तिलक वीराजै ।। जोग्गसु[4] लग्या मेरा ध्यानां ।। २ ।।
सीव-सनकादीक[5] अरु वृमादीक[6] गावत वेद पुराग्गां ।।
मीरां कै प्रभु गीर[7][धर] नागर ।। विज[8] तज अ[न]त न जाग्गां ।। ३ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, पत्राङ्क-११
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०—६२६६, पत्रांक—१४७

सं० पाठ ३४-१. वृन्दावन । २. लूटत । ३. विडांणी । ४. कुंज । ५. गलिन । ६. तेरी । ७. पिछांणी । ८. जाऊं । ९. मीरां । १०. गिरिधर ।
,, ,, ३५-१. गोकुल । २. ढूंढ । ३. वृन्दावन ।
,, ,, ३६-१. सूं । २. चली । ३. अधबिच । ४. जिणसूं । ५. शिव-सनकादिक । ६. ब्रह्मादिक । ७. गिरिधर । ८. व्रज ।

३७

कांनो कुवज्या[1] रे सिपलायो[2] मांसु[3] रुठै रुठै छेजी रुठै छै ॥
हीवडै हाथ न लाय सावरा[4] हूलडी-जीउ[5] रैहै कानो ॥ टेर ॥
आप करी कुवज्या पटराणी मासु[6] फीरै छै अफुटै[7] छै ॥ कानो० ॥
मिरा[8] कहै प्रभु गिरधर नागर लागि लगन माहरि[9] तुरै[10] छै ॥ कानो० ॥

३८

राग नटवा

काहू न सुख लियो रे पीत्त[1] कर काहू न सुख ली लीयौ[2] ॥ टेर ॥
मृगलै प्रीत करी से नादन[3] सै मुनमुख[4] बांण सहो रे ॥ १ ॥
छात्रक[5] पीत[6] करी बुदन[7] सै पीउ-पीउ रटत रहो रे ॥ २ ॥
अलसुत[8] पीत करी जलसुत सें संकट वोत[9] सयो रे ॥ ३ ॥
पतंग प्रीत करी दीपक सै बल-जल भसम हूओ[10] ॥ ४ ॥
ग्योप्यो[11] प्रीत करी माधव सै जावत कसु[12] न कयो ॥ ५ ॥
मिरां[13] कै प्रभु गीरधर[14] नागर तलफ-तलफ यु[15] गयो ॥ ६ ॥

३९

कीन[1] मारी पीचकारी[2] रे गुगट[3] की लपट मै ॥ टेक ॥
ऐक[4] भरी लाला दुजी[5] भराउ[6] ॥ तीजी भरो दडगारी रे ॥ १ ॥
अंग की अंगीया[7] सगली भीज गई ॥ लाल सूनडीया[8] न्यारी रे ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभू गीरधर[9] नागर ॥ फुगवा दो भर डोरी रे ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, पत्रांक—२
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९, पत्राङ्क-१०६

सं० पाठ ३७-१. कुब्जा । २. सिव० । ३. म्हांसूं । ४. सांवरा । ५.हूलडी-जेउ (पक्षी-विशेष) होलडी । ६. म्हासूं । ७. अफूठै । ८. मीरां । ९. म्हांरी । १० तूटै ।
३८-१. प्रीत । २. लियो । ३. नाद । ४. सन्मुख । ५. चातक । ६. प्रीति । ७. बूंदन । ८. अलिसुत । ९. भोत, बहुत । १०. भयो रे । ११. गोप्यां । १२. कछु । १३. मीरां । १४. गिरिधर । १५. यूं॰, जीव । . .
" " ३९- १. किण, कुण । २. पिचकारी । ३. घूंघट । ४. एक । ५. दूजी । ६. भराऊं । ७. अंगियां । ८. चुनरिया । १२. गिरिधर ।

४४

कैसे लगाई जुग प्रीति मेरा दिल हरि बस्त[1] है ॥ टेर ॥
या तन का[2] नोछावर करौंगी[3] सीस करौ बकमीस ॥ १ ॥
मैं जानी प्रभु ले निवहोगे छाडि चले अध–बीच ॥ २ ॥
जाका दिल स्यावित्ति[4] सांई सूं सोई अवलिया[5] पीर ॥ ३ ॥
पहली तौ हर[6] प्रीति लगाई अब कीन्ही विपरीति ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर क्या कपटी सौ प्रीति ॥ ५ ॥

४५

राग मारु

कोई हरिलौ हो हरीलौ हो बोलै । सरि[1] परि[2] हो मटकीया डोलौं(लै) ॥
दय[3] को नांव[4] विसर गई गुवालनि । कोई स्यांम मनौहर हर ल्यौ हरी० ॥टेक॥
क्रस्नरुप[5] गुवालन धरो । कछु और ही धरै बोलै ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[6] नागरि[7] । कोई मौलि[8] लीयौ[9] बीन[10] मौलै ॥१॥

४६

कोई राम पिया घर लावै रे ॥
तलफत प्रांण दुखी अति मेरौ ॥ जरती[1] अगन बुझावौ(वै) रे ॥ टेर ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० ७५७३, पत्राङ्क–१
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७, पत्रांक–३६
३. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।

सं० पाठ ४४–१. बसत । २. को । ३. [illegible] ४. सावति । ५. औलिया । ६. हरि ।
" " ४५–१. [illegible]र । २. प[illegible] ३. दई, दही । ४. नाम ५. कृष्णरूप ।
[illegible]रधर । ७. [illegible]नोल । ९. लियो । १०. विन ।

४२

कुबज्या व दीन क्यु न चीतारो।
कंसराय घर चेरी होतीं वगर भुबारती सारो ।। १ ।।
बन-बन लकरी वा वन माही सीर धर लाती भारो ।।
हात कचोलो चंदन मुओ[१] सघेता[२] गयो जमारो ।। २ ।।
वरसत अंग क्रहन[३] प्यारे कु हो गयो रूप अपारो ।।
मीरा के प्रभु गीरधर नागर बस कीयो बंसीवारो ।। ३ ।।

४३

कैसैं खेलुं[१] मैं होरी सहेली ।। पीय तज गयो रे अकेली ।। टेर ।।
माणक मोती सब ही साच्चा[२] गल मै पैरी सेली
भोजन भवन नीका नही लागै।। पीया कारण भई गैली
मुजै[३] दूरी क्यूं मेली ।। १ ।।
अब तुम प्रीत ओर से जोड़ी। हम सै करी क्यूं पेली
बोहो दिन वीता अजऊ[४] नंही आए ।। लग रही ताला-बैली रे
कणै वलमायो[५] हेली ।। २ ।।
स्यांम विनां जीवड़ो मुरझावै। जैसे जल विन बैली[६] ।।
मीरां कहे प्रभु दरसन दीजो जन्म-जन्म की चेरी
दरसन विन खरी[७] रे दुहेली ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० १९० से।
१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५, पत्राङ्क-४५

सं० पाठ ४२-१. मुठियो। २. घिसतां। ३. कृष्ण।
" " ४३-१. खेलूं। २. सांचा। ३. मुझे। ४. अजहूं। ५. किण बिलमायो।
६. वेलीं, वल्ली। ७. खड़ीं, घणी।

जन प्रहलाद की प्रतंग्या राषी[४]। नृसिंघ[५] रुप ज धारो ॥
षंभ फरि[६] करि प्रगट भयो। हरणाकुस नषन बडारो[७] ॥ २ ॥
जग सब झूठो पति है। रांणेजी कौ न विचार[८] ॥
तूं तो म्हारो झूठो पति है। सांचो मुरलीवारो ॥ ३ ॥
रांणै जी प्यालो विष रो भेज्यो। दे मीरां नै मारो ॥
ऐसे तो वा लेवैगे (गी) नांही। चरनामृत धामें[९] डारो ॥ ४ ॥
जनम-जनम को पति परमेसुर। जांमै[१०] रच्यौ है जग सारो ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ॥ जीवन प्रान हमारो ॥ ५ ॥

४९

गोबंद[१] स[२] अटकी हे र (री) मन गोबीद स अटको री ॥
अेर[३] आली म[४] सावरा[५] क[६] बसी परी सजनी लोग कहे भटकी ॥
बन[७] ही गोपाल लाल बीन सजनी को जान[८] घटकी ॥
अेरी अति करन ककनी[९] उपर सजनी ई (री) दामन सी दमकी ॥
अंग-अंग आभुसण[१०] राज (जे) बनमाला छीटकी[११] ॥
धकती[१२] भयो[१३] दोउ द्रीग[१४] मेरे दे[१५] छीब[१६] नटकी ॥
मीरा के प्रभु संग रमुगी[१९] कुंज-कुंज भटकी ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से।

---

४. राखी। ५. नरसिंह। ६. फाड़। ७. बिडारो। ८. क्यों न विचारो।
९. आ, या में। १०. ज्या ने।

सं० पाठ ४९-१. गोविंद। २. से। ३. अे री। ४. मैं। ५. सांवरा। ६ कै।
७. विन। ८. जानै। ९. किंकिणी। १०. आभूषण। ११. छिटकी।
१२. थकित। १३. भये। १४. दोऊ दृग। १५. देख। १६. छवि।
१९. रमूंगी।

है कोई मित हमारौ अैसौ । जाय संदेसौ सुणावै रे ॥
व्रेह[2]-अगन अति(भई) आतुर । जागत रैण बितावै रे ॥ १ ॥
तलफ-तलफ तन तालावेली । सास[3] कलप-सम जावै रै ॥
नीर बिना मंछी[4] किम जीवै । विछडीया[5] मर जावै रै ॥ २ ॥
अब तौ किरपा कर आवौ मनमोहन । दरस वेग दिखावो रै ॥
जन मीरां व्रेहन[6] अति व्याकुल । मरतक[7] आन जिवावौ रै ॥ ३ ॥

४७

गहरा करी स्याम अमल–पाणी ॥ टेर ॥
चलो स्याम बरसांणे चालो ॥ तेरा भाग में रची सो हम जांणी ॥ १ ॥
तां हो करा होरी को रसीयो[1] ॥ मे[2] सब वणसा अगवाणी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी[3] अवीनासी[4] ॥ वीरपभाण[5] घर मभमानी[6] ॥ ३ ॥

४८

गीरधर[1] संग न टारो हो रांणां जी माहरो[2] गीरधर संग न टारो ॥ टेर ॥
नांमदेव की छांनि छवाई ॥ हस्ती संग उवारो ॥
जन कबीर कें बालद[1] ल्यायो । आप भयो वणजारो ॥ १ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८२६०, पत्राङ्क-६०-६१

---

२. विरह । ३. सांस । ४. मच्छी । ५. बीछड़ियां ६. विरहिणी ।
७. मृतक को ।

" " ४७-१. रसियो । २. म्हें । ३. हरि । ४. अविनाशी । ५, वृषभानु ।
६. मिजमानी ।

" " ४८-१. १. गिरधर । २. मुझो । ३. वळद, बैल ।

है कोई मित हमारौ ग्रैसौ । जाय संदेसौ सुणावै रे ॥
व्रैह[2]-ग्रगन ग्रति(भई) ग्रातुर । जागत रैण बितावै रे ॥ १ ॥
तलफ-तलफ तन तालावेली । सास[3] कलप-सम जावै रे ॥
नीर विना मंछी[4] किम जीवै । विछडीया[5] मर जावै रै ॥ २ ॥
ग्रव तौ किरपा कर ग्रावौ मनमोहन । दरस वेग दिखावो रै ॥
जन मीरां व्रैहन[6] ग्रति व्याकुल । मरतक[7] ग्रान जिवावो रै ॥ ३ ॥

४७

गहरा करी स्याम ग्रमल-पाणी ॥ टेर ॥
चलो स्याम बरसांणे चालो ॥ तेरा भाग में रची सो हम जांणी ॥ १ ॥
तो हो करा होरी को रसीयो[1] ॥ मे[2] सब बणसा ग्रगवाणी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी[3] ग्रवीनासी[4] ॥ वीरषभाण[5] घर मभमानी[6] ॥ ३ ॥

४८

गीरधर[1] संग न टारो हो रांणां जी माहरो[2] गीरधर संग न टारो ॥ टेर ॥
नांमदेव की छांनि छवाई ॥ हस्ती संग उवारो ॥
जन कबीर कैं वालद[3] ल्यायो । ग्राप भयो वणजारो ॥ १ ॥

---

१. ग्रनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के हु० लि० ग्र० सं० १७० से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्र० सं० ८२९०, पत्राङ्क-६०-६१

---

२. विरह । ३. सांस । ४. मच्छी । ५. वीछड़ियां ६. विरहिणी ।
७. मृतक को ।

" " ४७-१. रसियो । २. म्हें । ३. हरि । ४. ग्रविनाशी । ५, वृषभानु ।
६. मिजमानी ।

" " ४८-१. १. गिरधर । २. मूखो । ३. वळध, बैल ।

जन प्रहलाद की प्रतंग्या राषी[४]। नृसिंघ[५] रुप ज धारो ॥
षंभ फरि[६] करि प्रगट भयो। हरणाकुस नषन बडारो[७] ॥ २ ॥
जग सब झूठो पति है। रांणेजी कौ न विचार[८] ॥
तूं तो म्हारो झूठो पति है। सांचो मुरलीवारो ॥ ३ ॥
रांणै जी प्यालो विष रो भेज्यो। दे मीरां नै मारो ॥
श्रैसे तो वा लेवैगे (गी) नांही। चरनामृत धामें[९] डारो ॥ ४ ॥
जनम-जनम को पति परमेसुर। जांमै[१०] रच्यौ है जग सारो ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर॥ जीवन प्रान हमारो ॥ ५ ॥

४६

गोवंद[१] स[२] श्रटकी हे र (री) मन गोबीद स श्रटको री ॥
श्रेर[३] श्राली म[४] सावरा[५] क[६] बसी परी सजनी लोग कहे भटकी ॥
बन[७] ही गोपाल लाल बीन सजनी को जान[८] घटकी ॥
श्रेरी श्रति करन ककनी[९] उपर सजनी ई (री) दामन सी दमकी ॥
श्रंग-श्रंग श्राभुसण[१०] राज (जे) बनमाला छीटकी[११] ॥
धकती[१२] भयो[१३] दोउ द्रीग[१४] मेरे दे[१५] छीव[१६] नटकी ॥
मीरा के प्रभु संग रमुगी[१९] कुंज-कुंज भटकी ॥

---

१. श्रनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से।

---

४. राखी। ५. नरसिंह। ६. फाड़। ७. विडारो। ८. क्यों न विचारो।
९. श्रा, या में। १०. ज्या ने।

सं० पाठ ४६-१. गोविंद। २. से। ३. अे री। ४. मैं। ५. सांवरा। ६ कैं।
७. विन। ८. जानै। ९. किंकिणी। १०. श्राभूषण। ११. छिटकी।
१२. थकित। १३. भये। १४. दोऊ दृग। १५. देख। १६. छवि।
१९. रमूंगी।

५०

गोवीद को सरनु[१] ॥
क्या दुक[२] धन माल की लाहे[३] हम ही कहा करनु[४] ॥
सावरी सुरति चीतवन[५] मे धरनु ॥ (गोविंद को सरनूं)
मीरां के प्रभु गीरधर नागर ॥ बेर बेर वरनु[६] । (गोविन्द को सरनूं)

५१

चंद लग्यो दुष[१] दैण ॥ टेर ॥
माई रो मौनै चंद लग्यो दुष देण ॥ टेर ॥
कांहा[१] वे मोहन कहां वे वतियां, कांहां वा सुष की रेण ॥ १ ॥
तारा गिन-गिन रैई[२] मेरी आली, टपकण लागै नैन ॥ २ ॥
मीरां कैहै[३] परभु[४] गीरधर नागर, दुष-भंजण सुष-देण ॥ ३ ॥

५२

छित्र[१] लालन मोहि[२] भावै वारी[३] चितवन चित ललचावै ॥ टेक ॥
सुंदर वदन कंवल-दल-लोचन मधर-मधर[४] मुसकावै ॥ १ ॥
मोर-मुकुट पीतावर[५] सोहै चंदन षोर[६] बनावै ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर जो सेवै सोई पावै ॥ ३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७७ से।
२. संत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-३०

सं० पाठ ५०-१. सरणूं । २. कहूँ, करूं ३. किला है, ४. करणूं । ५. चितवन । ६. वरणूं ।
" " ५१-१. कहां । २. रही । ३. कहे । ४. प्रभु ।
" " ५२-१. छवि । २. मोही, मो हिय । ३. वांरी । ४. मधुर-मधुर । ५. पीतांवर । ६. खोर ।

५३

जव छल ठग गया दील[1] प्रामा[2] ॥
तव रया हा नही कछु नेमा ॥ टेर ॥
नहीं कछु पाना[3] न कछु पीना हो गया ठंडा हेमा ॥ १ ॥
छकीया डोले मुष से न वोले प्रीत लगी गनसांमा[4] ॥ २ ॥
प्रतपकी[5] रीत वफुल[6] फकीरी हुआ जगत वेकामा ॥ ३ ॥
तक (ख) त हजारा मुलक वजारा त्याग दीया[7] धन–वामा ॥ ४ ॥
मीरावाई[1] भणे भवसागर वे मस्त कीया जग नामा ॥ ५ ॥

५४

फाग
जमना की (के) नीकट[1] वजाई वंसी ॥ टेर ॥
जीव जंत जल थल के मोहे ओर[2] मोहे वन के तपसी ॥ १ ॥
सुर नर मुनी[3] मोह लीऐ[4] हो पुल ग[ये] ताल हसे[5] तपसी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी[6] अवीनासी[7] चरण–कंवल मे प्राण वसी[8] ॥ ३ ॥

५५

जमुना कै तट हरि संग षेलैं गोपी ॥
मोहन लाल गीवरधन धार्यो ताक नष पर ओपी हो ॥ टेक ॥
सजल जलद–तन घन पीतांवर कर मुष मुरली धारी हो ॥
वैन सैन दे कंवर लाडलै ललना सव हंकारी हो ॥ १ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३७९४४, पत्रांक–६६

सं० पाठ ५३–१. दिल । २. एमा प्रेमा । ३. खाना । ४. घनश्यामा । ५. प्रीति की । ५. विकल । ७. दिया ।
„ „ ५४–१. निकट । २. अरु । ३. मुनिजन । ४. लिये । ५. खुल गए ताल हंसे । ६. हरि । ७. अविनाशी । ८. वशी ।

सज सिरणगार चली वृज[1]-वनिता नष सिष उपर[2] ठांनी हो ॥
लोक वेर अरु धरम सहत यहि वदत न काहू की कांनी हो ॥ २ ॥
कर कठ-ताल[3] ताल कै उपर सवहि एक रस वाजै हो ॥
महुर[4] चंग उपंग डां(वां)सुरी मेघ-झड़ी ज्यौ गाजै हो ॥ ३ ॥
नयन वयन[5] वसन एक रस कंठ भुजा पद ग्रीवा हो ॥
मध नायक गोपाल विराजै सुंदरता की सींवा हो ॥ ४ ॥
वल है वल के वीर त्रिभंगी गोपिन के सुषदाई हो ॥
मिट गई विथा[6] सकल तन मन की हरि हंस कंठ लगाई हो ॥ ५ ॥
माधव नारि नारि माधव कौं चरचत चोवा चंदन हो ॥
असो षेल मच्यो अवनी पर नंद-नंदन लग वंदन हो ॥ ६ ॥
कहन केल-कोतुहल[7] माधो मधरी सी बानी गावै हो ॥
पूरण चंद सरद की रजनी चेतन उच उपजावै हो ॥ ७ ॥
सिव सनकादिक अरु व्रह्मादिक सवहि पोहोप-घन[8] वरसै हो ॥
भूर भाग गोकल-वनता[9] मीरां प्रभु-पद परसै हो ॥ ८ ॥

५६

ज[य] ज[य] हो जगदीस तुमारी ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि ज्यांको ध्यान धरत है गावत चारु[1] सीस तुमारी ॥ १ ॥
सेस महेस पुराण वपाण[2] सब के हो तुम सीस हमारी ॥ २ ॥
मीरा नरसी कह्‌ य कह्यो ह[3] धरयो सींगासन[4] सीस तुमारी ॥ ३ ॥

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७, पत्रांक-२

सं० पाठ ५५-१. व्रज। २. ऊपर। ३. करताल। ४. मधुर। ५. वचन। ६. व्यथा। ७. केलि-कोतूहल। ८. पुष्प-घन। ९. वनिता के।
,, ,, ५६-१. च्यारूं। २. वखाणे। ३. कह्यो है। ४. सिंहासन।

५७

जाणीयै जांणीयौ जांणीयै हो हरि ॥
हेत हियानौ जाणीयै ॥ टेर ॥
हमै छा तुमारा तुम छो हमारा जा विच अंतर नथि आणीये ॥ १ ॥
हम छै अवला तुम छै बलवंता छैल छविला[1] माथै ताणीये ॥ २ ॥
दूरा न जावजो वेगलाज थावजौ[2] अरज हमारी मांनीये ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर आसा लगी छै थारा नामनी [ए] ॥ ४ ॥

५८

राम जजवति !।

जाय पधारे गउ-लोक व्रंद्रावन हर सखी रास रचाय रहे ॥ टेर ॥
गोपी रूप धरो ज्योगेसुर नरसी सषा बनाय लिअ (ए) ॥ १ ॥
देष विहार निहारं स्यम क[1] सब सषीयन संग नाच कीये ॥ २ ॥
गावत ह (है) अति मंद-मंद सुर नुपर[2] ताल वजाय रहे ॥ ३ ॥
तब बोले गोपेसुर नायक भगत अनोषा काहा आय रये ॥ ४ ॥
कह (हे) मीरा धन भाग हमारो प्रभु-चरनन प(पै) ध्यन[3] धरो ॥ ५ ॥

५९

जीउं री[1] म[2] सांवलड़ा र[3] वण[4] ॥ टेक ॥
सूवणां[5] सूणत[6] सूद-बूद[7] विसरी विर[ह] विथा[8] भई अ(ए) न ॥१॥
घडी-घड़ी लहर जहर तन व्यापै घूम रही सारी रेण ॥ २ ॥
तम[9] विन मेर (रे) कल न पड़त ह[10] भर-भर लाउ[11] नण[12] ॥ ३ ॥
मिरां[13] के प्रभू गीरधर नाग [र] दूष[14] मेटण सुष-दैण ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० १९० से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ५२,(इन्द्रगढ़ पोथीखाना) पत्राङ्क-१२२
३. संत साहित्य मंडल, बीकानेर के एक ह० लि० ग्र० से ।

सं० पाठ ५७-१. छबीला । २, आवजो ।
,, ,, ५८-१. श्याम के । २. नूपुर । ३. ध्यान ।
,, ,, ५९-१. जीऊं री । २. मैं । ३. री । ४. वेण । ५. श्रवणां । ६. सुणत । ७. सुध-बुध । ८. व्यथा । ९. तुम । १०. है । ११. लाऊं । १२. नैण । १३. मीरां । १४. दुख ।

६०

जैसा 'कर किसाह ना'' होवै तो रषरणा रांम हजुरी[२] ॥
बौदि[३] वजरिया षावरण दीजो नहितर दीजो कुरि[४] ॥
पांसा अमेत[५] कर कै मांनु मो-मौ धणी सबुरी[६] ॥ १ ॥
भारो लांसुँ पुलौ[७] लासुं भेंस दुहा सुं भुरी[८] ॥
रांम रसौई कर जीमाउं जारी[९] लीया हंजूरी ॥ २ ॥
सीरष पथरणा सावदु डौलीयो[१०] नहि तर देजो खजूरी ॥
काली कांवलीया ओडण[११] देजौ पलक न करसुं दूरी ॥ ३ ॥
चरण-कमल की सेवा दीजो चरणामत[१२] की पा (प्या)सी ॥
औ जस गावै मीरांबाई जन्म-जन्म की दासी ॥ ४ ॥

६१

जोगिया आव मैं नेरी[१] ।
मनसा वाचा करमणां प्रभू पुरवो आस (सा) मेरी ॥ टेर ॥
मैं पतिभरता पीव की हो, मोल लई चेरी ॥
तुम विना कोऊ दुजो[२] देवा सुपनै हूँ नां हेरी ॥ १ ॥
मात-पिता सुत वंधू दारा ये पांव मै वेरी ॥
तुम विनां कोउ नांही मेरो पुकार कहूँ टेरी ॥ २ ॥
एक वीरीयां[३] मेरै नंगर[४] दे जावो फेरी ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[५] मैं चरना सुं नेरी ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९० से ।

" " ६०-१. करम-साधना । २. हजूरी । ३. बोदी । ४. कूरी । ५. अमृत । ६. सबूरी ।
७. पूळो । ८. भूरी । ९. झारी । १०. ढोलियो । ११. ओढ़ण ।
१२. चरणामृत ।

सं० पाठ ६१-१. तैरी । २. दूजो । ३. बिरियां तुम आकर । ४. नगर । ५. गिरिधर नागर ।

६२

राग सोरठि गिरना ॥

जोगियो चतर सूजांन सजनी गायो ब्रह्मा सेस ॥ टेर ॥
जोगिया ने कहियी रे आदेस ॥
कृपा करो प्रतपाल मुझि परि[1] राषौ अपणै देस ॥
आवूंगी[2] मै नां रहुँ म्हार (रे) बसां[3] प्रदेस ॥ १ ॥
परण[4] चोलो भस[5] कंथा जोग धरयो दरवेस ॥
तेर (रे) कारण [धारचो] जोया (गा) तज्यौ कुल प्रवैस ॥ २ ॥
आग (गे) पतत[6] अनेक [उ] तारे तोर(रे) मोहि अनेक ॥
ज्यंद[7] करौ कुरबान तुझपैं ओर न दूजी पेस ॥ ३ ॥
दरद दीवांनी भई वावरी डोल बंगालो देस ॥
दासी मीरा लाल अधर[8] पलंटि काले केस ॥ ४ ॥

६३

जोगी मन मतवाला है कोई जोगी मन मतवाला ॥
लोग बसै ढेंकुडो[1] ॥
जोई साधरी[2] नंदा[3] करसी जासो हरदे रुरो[4] ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर घर वर पायो पुरो[5] ॥ १ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३९९,

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९०, पत्राङ्क-८२

सं० पाठ ६२-१. मुझ पर । २. अभागी । ३. वणी । ४. पर्ण पेरण । ५. भेष, भसमी ।
६. पतित । ७. जांन । ८. गिरधर ।

" " ६३-१. छे कूड़ो । २. साधु री । ३. निंदा । ४. हिरदै । ५. रुड़ो ।
६. पूरो ।

६०

जैसा 'कर किसाह ना[१]' होवै तो रपणा रांम हजुरी[२] ॥
वौदि[३] वजरिया पावण दीजो नहितरं दीजो कुरि[४] ॥
पांसा अमेत[५] कर कै मांनु मो-मौ धणी सबुरी[६] ॥ १ ॥
भारो लांसुँ पुलों[७] लासुं भेंस दुहा सुं भुरी[८] ॥
रांम रसौई कर जीमाउं जारी[९] लीया हंजूरी ॥ २ ॥
सीरप पथरणा सावदु डौलीयो[१०] नहि तर देजौ खजूरी ॥
काली कांवलीया ओडण[११] देजौ पलक न करसुं दूरी ॥ ३ ॥
चरण-कमल की सेवा दीजी चरणामत[१२] की पा (प्या)सी ॥
श्रो जस गावै मीरांबाई जन्म-जन्म की दासी ॥ ४ ॥

६१

जोगिया आव मैं नेरी[१] ।

मनसा वाचा करमणां प्रभू पुरवो आस (सा) मेरी ॥ टेर ॥
मैं पतिभरता पीव की हो, मोल लई चेरी ॥
तुम विना कोऊ दुजो[२] देवा सुपनै हूँ नां हेरी ॥ १ ॥
मात-पिता सुत वंधू दारा ये पांव मै वेरी ॥
तुम विनां कोउ नांही मेरो पुकार कहूँ टेरी ॥ २ ॥
एक वीरोयां[३] मेरै नंगर[४] दे जावो फेरी ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[५] मैं चरना सुं नेरी ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।
१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९० से ।

" " ६०-१. करम-साधना । २. हजूरी । ३. वोदी । ४. कूरी । ५. अमृत । ६. सबूरी ।
७. पूळो । ८. भूरी । ९. झारी । १०. ढोलियो । ११. ओढ़ण ।
१२. चरणामृत ।
सं० पाठ ६१-१. तैरी । २. दूजो । ३. बिरियां तुम आकर । ४. नगर । ५. गिरिधर नागर ।

६२

राग सोरठि गिरना ॥

जोगियो चतर सूजांन सजनी गायो ब्रह्मा सेस ॥ टेर ॥
जोगिया ने कहियी रे आदेस ॥
कृपा करो प्रतपाल मुझि परि[1] राषौ अपणै देस ॥
आवूंगी[2] मै नां रहुँ म्हार (रे) बसां[3] प्रदेस ॥ १ ॥
परण[4] चोलो भस[5] कंथा जोग धरयो दरवेस ॥
तेर (रे) कारण [धारचो] जोया (गा) तज्यौ कुल प्रवैस ॥ २ ॥
आग (गे) पतत[6] अनेक [उ] तारे तोर(रे) मोहि अनेक ॥
ज्यंद[7] करौ कुरवान तुझपैं और न दूजी पेस ॥ ३ ॥
दरद दीवांनी भई वावरी डोल बंगालो देस ॥
दासी मीरा लाल ग्रधर[8] पलंटि काले केस ॥ ४ ॥

६३

जोगी मन मतवाला है कोई जोगी मन मतवाला ॥
लोग बसै ढेंकुडो[1] ॥
जोई साधरी[2] नंदा[3] करसी जासो हरदे रुरो[4] ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर घर वर पायो पुरो[5] ॥ १ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० ८३९९,

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० १८९०, पत्राङ्क-८२

सं० पाठ ६२-१. मुझ पर । २. अभागी । ३. बणी । ४. पर्ण पेरण । ५. भेष, भसमी
६. पतित । ७. जांन । ८. गिरधर ।

,, ,, ६३-१. छे कूड़ो । २. साधु री । ३. निंदा । ४. हिरदै । ५. रुड़ो
६. पूरो ।

६४

जो दुष थाय सो थाज्यौ रै रूडा रामजी न[1] भजंतां ।। टेर ।।
पीउ जाय तो राषव[2] लीजो जीव जाय तो जायै रे ।। १ ।।
उचा[3] वाध[4] तल अगनी पू(प्र) जालौ मार समेला री षाज्यो[5] रे ।। २ ।।
लोक नीदै[5] तानै निदेन्वा[6] दीजौ राज डंडै तो डंडाज्यौ रे ।। ३ ।।
मीरा कैहै[7] दुष–कोट[8] सहीनै गुण 'गोविंदजी ना गाज्यौ रैं ।। ४ ।।

६५

भूठो वर कुण परणायो[1] हे मां ।।
परणू तो मेरो मरम जाय कूड़ो वर कुँण परणायो हेमा ।।
लख चौरासी रो चूड़लों में पैर्यो वारंवार ।।
ओ तो वर देही को संगाती मो वर सिरजणहार ।। भूठो वर० ।।
जामण मरण वरया वर[1] केता विखराता नर नार
मेरो मन लागो वाल मुकुँद सूं वर पायो किरतार ।। भूंठो वर० ।।
सात वरस री मैं श्रीरंग सेविया जद पायो सुख सुहाग[2] ।।
मीरा नै [प्रभु] गिरधर मिल्या[3] भव–भा[4] रा भरतार ।। [भूंठो वर०]

---

१. संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्र० से ।

२. पिलानी से प्राप्त हरजस ।

सं पाठ ६४-१. ने । २. राखव । ३. ऊंचा । ४. बांध । ५. निंदै । ६. निंदवा । ७. कहै । ८. कोटि ।

" " ६५-१. वरिया । २. सार । ३. मिलिया । ४. भव–भव ।

६६

टलवता 'पांडणो फुल'[1] गुलावी रग[2] रादकी[3] ओडण चीर जरी का।
जगमग जोत बणी रादे जी की कनांह[4] चदरमा[5] सो नीका।
तीका[6] नेण रादे जी का ज्याने मोग्रा[7] कंवर[4] नंदजी का।
तीका नेण रादे जी का ॥ १ ॥
वींदी वाल[8] नेण बीचे[9] कजला बेर जडाऊ[8] रा टीका।
मोतीप्रेन[10] मांग भरी रादे जी की करोड चदरमा सा नीका।
तीका नेण रादे जी का ज्याने मोज्या कवर नदजी का।
तीका नेण रादे जी का ॥ २ ॥
मीरा बाई के प्रबु (भु) गरधर[11] नागर अत स्याम रादे जी का।
तीका नेण रादे जी का ॥ ३ ॥

६७

राग भभती

टुक धीरों रै[1] रे वंसीवाला तै मैरो मन मोयो ॥ टेर ॥
नष-सष[2] गेणौ[3] सरब सौना रो वीस-वीस मोती पोयो ॥ १ ॥
तुम विन प्रभु मोह कल न परत है नेण भरे-भर जोयो ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर तुम भर जोवन[5] वोयौ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४६२२ से। पत्राङ्क-१०

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९, पत्रांक-२

सं० पाठ ५६-१. पांडुरो (पाउणो) फूल। २. रंग। ३. धाजी का। ४. कृष्ण हैं। ५. चन्द्रमा। ६. तीखा। ७. मोह्या। ८. माल। ९. विच। १०. मोतियन। ११. गिरिधर।

" " ६७-१. रह। २. नख-शिख। ३. गहणों। ४. मोहे। ५. यौवन।

६८

तन मन ललचावै री आवै ब्रजराज कवर ॥
कोटि कांम वारणै ज्जैव मोहना नाचाय्या[1] गावे री ॥ टेक ॥
दाहणै[2] क्र[3] कृसन गेंद वावे[4] हाथि[5] बंसी ॥ १ ॥
चलन रूप माधुरी गज मदन परेस सीव ॥ २ ॥
स्याम सुद्र[6] कवल–नैन अदवुद मुप चंदा ॥ ३ ॥
लोचन प्यासे चक्र तिनकुं मगन लटकी ॥ ४ ॥
मीरां प्रभु भगति–बुद[7] हिरदा मैं गटकी ॥ ५ ॥

६९

तम[1] भज्यां हो महाराज सर्व सुप ॥ टेर ॥
प्रहलाद की प्रतंग्या राषी ध्रूइ[2] अवचल राज ॥
भीवषण[3] को राज दीनो सारीया सव[4] काज ॥ १ ॥
कृष्ण सुदांमो वाल–सनेसी[5] पढते एकण साल ॥
कनक–मैहल[6] चिणाये छिन में जड़त हीरा लाल ॥ २ ॥
जद व्रज पर इंद्र कोप्यो डरे गोपी गवाल[7] ॥
डावै नष पर धारो[8] गिरवर राप लीयो नंदलाल ॥ ३ ॥
आज व्रज मै आंद्र[9] वधाई घर–घर मंगलचार ॥
कहै मीरा भक्त [के] कारण कृष्ण लीयो अवतार ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ९१५९, पत्रांक-५२

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४२, पत्राङ्क-१०६

सं० पाठ ६८-१. नचाय । २. दाहिने, दांये । ३. कर । ४. वांये । ५. हाथ । ६. सुंदर । ७. भक्ति-बूंद ।

,, ,, ६९-१. तुम । २. ध्रुव को । ३. विभीषण । ४. सब । ५. सनेही । ६. महत्व । ७. ग्वाल । ८. धार्यो । ९. आनंद ।

७०

संतै[1] नावै[2] तीयांणो[3] वाणो[4] रामायो[5] हीवैड़ो[6] रो हांरै[7] ॥
मुगतै[8] रौ मार[9] सोहीयो ॥ टेर ॥
मारै सीलै(ल)संतोकै(ष)चुदंडै[10] वाणो रमायो ही सालुड़ा री कोरै(र) ॥ १ ॥
सहेल्यां हे घांणो[11] पेरियौ चीतै[12] चेतनै(न) चुडैलो[13] वांणो ॥ २ ॥
रामायो हे चालैया[14] जी रै लुंबै—भुंबैं वाजुबांदै[15] वाणा ॥
रांमायो है बाजुवादै री लुंबै ॥ ३ ॥
सहेल्यां हे मै तो कांरणी रो काजालै[16] सारियो सील फैरा लाडं ॥ ४ ॥
ईतोरी[17] गांणो जी पैहारै[18] नीकैली[19] चाली रामाया री सैजै ॥ ५ ॥
बाई मीरां ने गंरधारै[20] मील्या[21] पुरी-पुरी[22] य[23] मनैड़ा[24] री आस ॥ ५ ॥

७१

"राग सोरठ होरी"

तुजे (तूने) कीण[1] होरी वेलाई[2] वावरी वण आई ॥ टेर ॥
गुंगट[3] मे चकडोल करत है नेनन से चतराई ॥
सासु[4] पुछे[5] सुणे(न)री वारी ऐ[6] अंगीया[7] काह[8] छीटाई ॥
तुजे कीण होरी षेलाई ॥ १ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ८३९९ से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

स० पाठ ७०-१. तन ने । २. मावै । ३. तियाणों, तिहांरो । ४. वानो । ५. रमैयो ।
६. हियड़ै हिवड़ै । ७. हार । ८. मुक्ती । ९. मारग । १०. चूनड़ी ।
११. गहणो । १२. चित । १३. चूड़लो । १४. चालिया, चाल्या ।
१५. वाजूबंद । १६. काजल । १७. इतरो । १८. पहर । १९. निकली ।
२०. गिरिधर । २१ मिलिया । २२. पूरी-पूरी । २३. या । २४. मनड़ा ।

सं० पाठ ७१-१. किण, कुण । २. खेलाई । ३. घूँघट । ४. सासू । ५. पूछे । ६. वायड़ी,
वहू री, वावरी । ७. अंगीया । ८. कहाँ ।

मे तो गई ती(थी)गुलाब के बाग में फुलन-डार[9] नमाई ॥
डाला टुट[10] पड्या मेरी छतीयां[11] अंगीया रंग लपटाई ॥
तुजे कोण होरी षेलाई ॥ २ ॥
मे जल जमुना भरन जात ही[12] बीच मीले[13] जदुराई ॥
बेठ कदंम-तले वंसी बजाई मदुर-मदुर[14] मुसकाई ॥
तुजे कीण होरी षेलाई ॥ ३ ॥
भर पीचकारी[15] मेरा मुख पर डारी अंगीया रंग लपटाई ॥
तुजे कीण होरी षेलाई ॥ ४ ॥
हात(थ) गेद गुलाल फेट मे, तो सुध नही मोय काई ॥
तुजे कीण होरी षेलाई ॥ ५ ॥
ईण व्रज माय धुम[16] मचा हे सब मील[17] गावत ध्याई[18] ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर नंद को लाल अनाई[19] ॥
तुजे कीण होरी षेलाई ॥ ६ ॥

७२

तुने नीका जानी हे वन की लकड़ी ॥
ते गिरधारी मोहीयो[1] तपस्या कुन[2] करी ॥ टेक ॥
थारो हो तो वृंदावन बास तु(तूं) वन की लकड़ी ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६०, पत्राङ्क-६८

सं० पाठ ७१-९. फूलन–डार। १०. टूट। ११. छतियाँ। १२. रही। १३. मिले। १४. मधुर–मधुर। १५. पिचकारी। १६. धूम। १७. मिले। १८. धाई। १९. कन्हाई।

सं० पाठ ७२-१. मोहियो। २. कौन।

तूनै गावै मीरा दास[3] मोहन अधर धरी ॥
गजराज गुमानण हे सावलीयारी……………… ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण–कमल लपटाय(या)री ॥ ☆

७३

तुम जाने दो जी कपटी से कुन बोले ॥ टेर ॥
मे जल जमुना जात भरन कु नीत उठ आडा डोले ॥ १ ॥
मे दद(धि) वेचन जाती वृद्राबीन[1] रूप देष रंग तोले ॥ २ ॥
प्रीत न करी अनीत करी है वांहे पकड़ गुंगठ[2] खोले ॥ ३ ॥
प्रीत की रीत तो कांहा[3] जांनो प्रभु चाम बराबर माखन तोले ॥ ४ ॥
मीरां कहे प्रभु गीरधर नागर कपट की गांठ न खोले ॥ ५ ॥

७४

तु[1] मति[2] जारै काना पाईयां[3] परौं चेरी तेरी अरे ॥ टेर ॥
चंदन–काटौ[4] चिता चिणावों अपने हाथ जलाय जा रे ॥ १ ॥
जल–वल भई भसम की ढेरी अंग वभूत[5] रमाय जा रे ॥ २ ॥
आसण मार मंढी मै वैठो घर–घर अलष जगाय जा रे ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[6] नागर जोत मै जोत मिलाय जा रे ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४४, पत्रांक-८७

सं० पाठ ७२-३. दासी । ☆ इसी पुस्तक के पत्राङ्क १२६ पर इस पद की निम्न पंक्तियां ही प्राप्त हैं ।

तूने नीका जाणं(णांह (हे) वन को लकड़ी ।
गीरधारी मी दा(वाँ)हन प(पै) सारी कुण [तपस्या] करी ॥
थारो हो तो विदरावन वास तू वन की लकड़ी ।
तू गावं मीरा दासी मोहन अधर धरी ॥

सं० पाठ ७३-१. वृन्दावन । २. घूंघट । ३. कहाँ, क्या ।
सं० पाठ ७४-१. तू । २. मत । ३. पैयां, पैरों । ४. काठ की, काष्ठ की । ५. विभूति, भभूत । ६. गिरिधर ।

७५

तूं तौ वैरी चितार पपीश्रा मोरे प्यारे ॥ टेर ॥
श्राई बैठो श्रंबला-केरी डारी पीव-पीव[1] सब्द पुकारे ॥ १ ॥
श्राधी रात श्रचानक बोले ब्रिहेबा[2] पर मारे ॥ २ ॥
मैं तो सूती मद क(की) माती मेरे छाती जा-जा रे ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभू हर श्रविनासी मिलि करि कारज सारे ॥ ४ ॥

७६

तेर (रे) हरि श्रावगे(वेंगे) श्राजि खेलन फाग री ॥
सूगन समुरत[1] मै सुन्य ी तेर(रे) श्रांगन बोल्या काग री ॥ टेक ॥
गुवाल-मडली सब चली श्राई जाहां ब्रंदावन बाग री ॥
ताल म्रदग डफ में सुंन्यौ री सखी क्या सोव(वे)उठि जाग री ॥ १ ॥
पांनी पांन वीछौना श्रादरा[2] उठी वाके पगी[3] लाग री ॥
मीरां के प्रभु गीरधर नागर तेरो परम सुहाग री ॥ २ ॥

७७

"राग बीलावल"

तेरो मुग नीको मेरो री प्यारी ॥
तन दरपन नोरखत[1] नंद-नंदन सषी कहो वृषभानु-दुलारी ॥
तुम कर पर गोवरधन धारो हम उर पै धार(रे) गीरधारी ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर मैं वनसुं नैही नैक न नारी ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९१ से
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७।
३. श्रनूप सं० ला० लालगढ़, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७७ से।

सं० पाठ ७५-१. पीउ-पीउ। २. विरहबाण।
स० पाठ ७६-१. सुमुहूर्त्त। २. श्रादर, चादर। ३. पग, पद।
सं० पाट ७-१. निरखत।

७८

थान(ने) खडी पुकार(रे) थे सुणज्यो जादवरायै(य) ॥ टेक ॥
आस-पास दोऊ दल भारी वीच मच्यौ घमसाण ॥
कत्तौ[1] मेरा अंड उवारो नतर[2] तजूंगी प्रांन ॥ १ ॥
मेरे पुत्रन के पर पंख नाही लेर[3] ऊठ[4] आकास ॥
वा भारक[5] म अंक[6] पुकार (रे) किस विध वच चे) प्रान ॥ २ ॥
भीम गद(दा) अहराक ते लागी घंट पड्यो घरराय ॥
वा घंट(टा) म(में) अंड वचाय(ये) असे[7] दीन-दयाल ॥ ३ ॥
मीरा कहे मीथुला यण वोसर राष लीये वृजराज ॥

७९

थानै महारी[1] पीड़ नें[2] आवै हो ॥ टे० ॥
महांरा[3] मनै[4] मै थे ई वसो वाला थांने कछु ओर सुहाव(वै) हो ॥
पपीयो पीव-पीव रटे जलहर कौ नहीं भावे हो ॥
मोरां के प्रभु कवहुं कीरपा[5] करि स्वाति-वूंद बीरषाव[6] हो ॥

८०

थारा छा वीहारी माने भूलो छो गणा[1] ॥ टेर ॥
सरणागत छां चरण-कवल का वांही तो समालो[2] आए ॥ १ ॥
भगत-वीछल[3] थारो वीरद कुवावे[4] ओगण मारा चीत ना धरणा ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी अविनासी चाकर छा जी राज पदमाजी[5] तणा ॥ ३ ॥

---

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७ से ।
२. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २८८४, से ।
३. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ ७८-१. के तो, क्या तो । २. नहि तो । ३. ले कर । ४. उड़ूं, उड़ै ।
५. भारत । ६. अंड (?) । ७. ऐसे ।
सं० पाठ ७९-१. म्हारी । २. न । ३. म्हारा । ४. मन । ५. कृपा । ६. वर्षावें ।
सं० पाठ ८०-१. घणां । २. सम्हालो । ३. भक्तवत्सल । ४. कहावें । ५. कदमां जी ।

८१

"राग कालगड़ो"

थारा मीठा बोलण रा मे लोभी ॥ टेक ॥
मुरड़ भगी मुषड़[1] नही बोली मोनी कु[2] हुवा छो म्हान (ने जावा दो जी ॥
सरब गुण थारा बोगण[3] म्हारा बोगण म्हारा चत[4] न धरो जी ॥
म रा कैह[5] प्रभु गरधर[6] नागर दुख-काटण सुप दो जी ॥ १ ॥

८२

"राग ऊजाज सोरठ"

था रै घाली[1] ताना दे छै म्हांनै लोक, रसिक विहारी जी राज थांरै ॥ टेर ॥
आप तौ जाय द्वारिका मै धाऐ हम कू पढायो जोग ॥
कु ज्या दासी कंसराय की ताय कीयौ संजोग ॥ १ ॥
प्र करी तौ ओर निभाईजौ मति हसाईजौ लोग ॥
अबके वेछरे[2] कब [हु] मिलोगे नदी-याव[3] संजोग ॥ २ ॥
व्रहैव्यथा[4] की कहा कहू सजनी छाय रयौ तन-रोग ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर अब छै मिलन कौ जोग ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के (इन्द्र) ह० लि० ग्र० सं० ५२, २ कृति पत्रांक-५७

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से।

सं० पाठ ८१-१. मुखड़ं, मुख से। २. क्युं, क्यों। ३. अवगुण। ४. चित्त। ५. कहै। ६. गिरिधर।

" " ८२-१. गाली। २. विछुड़े। ३. नदी-नाव। ४. विरहव्यथा।

८३

थु(तूं) तो मेरा राम मील्या दीलजानी, मेरे अगर मेरवानी ॥ टेर ॥
देस-देस और मुलक-मुलक मे, पाई नही तेरी नीसानी ॥ १ ॥
जग की आस-वास सब तज दी, लाव[1] होओ चाहे हानी ॥ २ ॥
चाऐ[2] मेर (रे) तारया जग मे, तेरी सुरत मन मानी ॥ ३ ॥
सुणीए[3] साम[4] काम जलदी कर, कहा पत्री लषु[5] छाने ॥ ४ ॥
वाई मीरा भणै सामसु मु[6] जाचक थु[7] दानी ॥ ५ ॥

८४

दरसण क्रपा करो तो पाऊं ॥
बंसि[1] ब्रंदावन-कुंज-कुटी मै पड्यो पड्यो जस गाऊं ॥
संतन की रज धर(रूं) सीस पै जा जमना मै नाहाउ[2] ॥
जीन[3] हरीया[4] संसार सार मै फेर जनम नही पाउ(ऊं) ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर नीत उठ मंगल गाउ(ऊं) ॥
दरसन क्रपा करो तो पाउं ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर, के ह० लि० ग्र० सं० १७० से।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १९० से ।

सं० पाठ ८३ १. लाभ । २. चाहे । ३. सुनिये । ४. श्याम । ५. लिखं । ६. मैं ।
७. थूं, तूं ।

" " ८४-१. वसि । २. न्हाऊं । ३. जन । ४. हरि ।

८५

द्रसण दीजौ राज ॥
कड (र) जौड[1] अरज करें म्हारी बाहें गईया[2] की लाज ॥ टेक ॥
लोक-लाज बिसार डारचौ छाडौ जग उपदेस ॥
ब्रहे-अगन[3] मै प्राण दाजै[4] सूण लीजौ आदेस ॥ १ ॥
पांच(चौं) मुदरा[5] भसम(मी) कंथा नष-सप[6] राष्या सांज ॥
जौगणी[7] होऐ[8]कर जग ढौढसू[9], म्हारी घर-घर फैरी जै ॥ २ ॥
दरद दीवांनी तन-जालण, मीलीया राम दयाल ॥
मीरां कै मनू(न) आनंद उपज्यौ रूंम-रूंम खुसीयाल ॥ ३ ॥

८६

दावन[1] नां वीसमांणो हो सांम[2] राव रे ॥
तागो तुटो[3]तो फेर सध(धे)नही षल[4]टूटो कुमलाव(वे) रे ॥
तारो[5] रूठो सांमरो अस[6] लव-लऊ(?)जाय [वे रे] ॥
काल तन रो[7] पांणी न पीयो[8] काला लूंग न खाऊं ॥
काला कीसनजी री सेज नही जाऊं मैं काली पड जाऊं ॥
कड़व(वा) लीब[9] नीबोली मीठी सरवर मीठा पांणी ॥
काल(ली)कीसन जी रो(री) सेजां भल जोऊ ओड कसुंमल साडो ॥
मीरा कवे(है) परभु[10] गीरधर नागर तम जीते हम हारी ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७, पत्रांक-१७८
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३२५७४, पत्रांक-८

सं० पाठ ८५-१. जोड़ । २. गह्यां । ३. विरहाग्नि । ४. दाझै, दाहै । ५. मुद्रा । ६. शिख । ७. योगिनी । ८. हो । ९. ढूंढस्यूं ।

" " ८६-१. दामन (?) । २. श्याम । ३. टूटो । ४. खाल । ५. थारो (?) ६. ऐसो । ७. काले तन रो । ८. पीऊं । ९. नींब । १०. प्रभु ।

८७

पद राग बहंग

देखो हरि कहां गया नहडो[1] लगाय ।। टेर ।।
छोड चल्यौ बीसवासघाती[2] प्रेम की बात सुणाय ।। १ ।।
घायल कर निरमायल कीनी खबर न लीनी मेरी आय ।। २ ।।
ब्रह-समद[3] मैं छोड गये है नेह की न्याव[4] चलाय ।। ३ ।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर रह्या छै माधोपुर[5] छाय ।। ४ ।।

८८

धर[1] न धरीज(जे) कंवार, भजिये तौ बात भली है ।। टेक ।।
मुथरा बास बहौत दिन कीनौ सूत्र[2] मारे के वार ।।
कालजन[3] चकंद[4] दिसिटि[5] जारी तो भुम कौ भारि मुतारि[6] ।। १ ।।
क्रमा[7] सौरी[8] पुल्ही बाई हरि भजि ऊतरी पार ।।
मीरा प्रभु गीरधर की दासी अवकै सरनै ऊवारि(र) ।। २ ।।

८९

न कस्यो ई कसोटी हौत है वारैह[1] बांनी ।।
सुपच[2] भगत प्रिविप्रसेवारौ[3] मैं हरिदाथि[4] विकानी ।। १ ।।
वीष[5] कौ प्यालो राणो दीयौ अपयो[6] मीरा जांणी ।।
मीरां के प्रभु न्याव निवेड़ौ ।। छाणे दूध र[7] पांणी ।। २ ।।

---

१. संत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।

सं० पाठ ८७-१. नेहड़ो । २. विश्वासघाती । ३. विरह समुद्र । ४. नाव । ५. मधुपुर, मथुरा ।
" " ८८-१. धीर, धैर्य । २. शत्रु । ३. कालयवन । ४. मुचकुन्द । ५. दृष्टि । ६. उतार । ७. करमा । ८. शबरी ।
" " ८९-१. बारह । २. स्वपच । ३. थी विप्र सेवा रो ? । ४. हृदय से । ५. विष । ६. आप्यो, अप यो । ७. अरु ।

९०

राग नट

नणदी हे मोहन मुंदरी ले गयो ॥
ले गयो बद्रीधाम रो र अरी[१] तोर ॥ टेक ॥
मोर-मुकट सीर[२] सोहै हरी पीतांबर की फेंट ॥
हुं[३] दध वेचण जात ही कुंज गली भई भेंट ॥ १ ॥
छगरी तें मुदरी भई और गले को हार ॥
गांव न वसीयो नंद के कहुँ न लगे पुकार ॥ २ ॥
ढुंढी[४] मुथरा नगरी ढूंढ्यो गोकल गाँव ॥
घोटक कहीये नंद को कांनकंवर वाको नाव ॥ ३ ॥
गरे(ले) दुपटा(ट्टा) डार के पायन परीये आय ॥
ज्युं ज्युं हुं नांही न कहु[५] हा हा षाय[६] ॥ ४ ॥
मुदरी के मस[७] मोहन ले गयो चत[८] चुराय ॥
मीरा के प्रभु ढुढत[९] फीरु[१०] जे कहुं देह वताय ॥ ५ ॥

९१

नंद जी कै द्वार आग[१] माला मोरी ले गयो ॥ टेक ॥
माला तो मै फेरि मंगावूं द्रसनै[२] केसै[३] पांवूं ॥
असो[४] है विसवासघाती काया मोरी छो[५] गयो ॥ १ ॥
सषीयां क[६] संगि आवै राग तो छतीसूं गावै ॥
वंसरी बजाव वै कांनौ सैनां मांहि कहि(ह) गयौ ॥ २ ॥
सूंनि[७] हो अधारी[८] लाला चलूंगी[९] तुम्हार रे लारै ॥
मीरां तो तुम्हारी दासी अब क्यूं बिसारि(रो) है(रे) ॥ ३ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ७६६५ से ।

२. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३९९, से ।

सं० पाठ ९०-१. रौके अरी । २. शिर । ३ हूं । ४. ढूंढ़ी । ५. ज्यूं ज्यूं नांही न कहूँ । ६. कुहाय (?) । ७. मिस । ८. चित्त । ९. ढूढत । १०. फिरूं ।

" ,. ९१-१. आगे । २. दर्शन । ३. कैसे । ४. ऐसो । ५. छू । ६. सखियाँ के । ७. सुन । ८. गिरिधारी । ९. चालूंगी ।

९२

नंद जी के राजकुँवार मैं(म्हे) तो होरी थांसु(सूं) खेलां राज ॥ टेर ॥
फागण मास सवायो आयो मो सुगणी कै भाग ॥
चोवा चंदन और अरगजा चंदन चरचुं गात ॥ १ ॥
आवौ री सखी खेल रच्यौ है सरसी सारा काज ॥
गह बांहीया[1] हम हरि-संग खेलां पुरण[2] परम सुहाग ॥ २ ॥
फैट[3] पकड़ हम पुगवा लेस्यां अब कत[4] जाओ भाग ॥
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल अनुराग ॥

९३

नंद जी के लाला वंसी तुमारी सब जग मोहनि(नी) ॥ टेर ॥
हरिया बांस की बांसुरीस रे निकसी परवत फोर ॥
पाड़ बेज मुष पै धारीस रे बाजै बोत कठोर ॥ १ ॥
इद्रं घटा ले उतरयोस रे सुख मुरली की टेर ॥
वंसीवालौ सांवरोस रे लई गवालन घेर ॥ २ ॥
दधि सुत के नीचै बसैस रे मोती सुत[1] के बीच ॥
सो मांगत है राधिका स्याम देऊ द्रिग मोच़ ॥ ३ ॥
नैनी[2] सै मोटि[3] करी से(स) रे काचौ दूध पिलाय ॥
ऐसौ जादू जांणतीस रे देती आग लगाय ॥ ४ ॥
थूं माधव की वंसरीस रे मैं माधव की नार ॥
एक धरां की लाडलीस रे अपनो बिरद विचार ॥ ५ ॥
मोहन वजावै वंसरीस रे जल जमना की तीर ॥
मीरां कंहै प्रभु गिरधर नागर पार करौ बलवीर ॥ ६ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।

सं० पाठ ९२-१. बहियां । २. पूरण ३. फेंट । ४. कित ।

„ „ ९३-१. सूत । २. नन्ही । ३. मोटी ।

९४

नहिं माई बदनूं[1] सारो ॥
प्राणपति को लहरि सजनो डसि गयो कारो ॥ टे० ॥
लोक कह(है) यानैं रोग व्याप्यो, तन सिभी[2] गयो सारो ॥
तनक याक[3] बांण लागो, निकसि गयो पारो ॥ १ ॥
कहत ललना वैद ल्याऊं नंद को प्यारो ॥
उण आंयां थारो रोग जासी, मांनि[4] पनियागो ॥ २ ॥
मो चंदवा क[5] हाथि सो देत ह(है) भारो ॥
दासी मीरां लाल ग्रधर[6] विष कीयो न्यारो ॥ ३ ॥

९५

"राग सोरठ"

नही माहरे[1] सारो साम[2] नही माहरो (म्हारी) सारो ॥
चार पोहोर चार जुग वीतै देषो (रुयो) न सखी उणहारो ॥ १ ॥
माहानै[3] कुण[4] चीतारसी राणा रो नीत वारो ॥
माहाने तो वे ही चीतारसी प्रभु ब्रीरज[5]-चंद गोकल वारो ॥ २ ॥
गोकल ने उधार के प्रभु द्वारका[6] मती पधारो ॥
ग्रबके ग्रावु माहारा रंगीला प्रीतम जी ग्राडो समंदर खारो ।. ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर मोहे [है] पतिहारो ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८३९९, से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

सं० पाठ ९४-१. वैद, वैद्य । २. सीज, सीझ । ३. यांके । ४. म्हांनै । ५. मो चंदवा कै । ६. गिरिधर ।

" " ९५-१. म्हांरो । २. श्याम । ३. म्हांनै । ४. कूण । ५. व्रज । ६. द्वारिका ।

९६

राग भैरवो दीन उंग

नाचत गनगवरी के नंदा ॥
सीर[1] तीलक[2] भाल अर चंदा नाचत गनगवरी के नंदा ॥ टेर ॥
वागो वीस[3] के संग गुगरवा, मोतीयन-माल वेजंदा ॥ १ ॥
ऐक दंत हु(हूँ) जो दयावंत हे(है) लडवा खात मुकंदा ॥ २ ॥
रीदी[4] सीदी[5] के संग मे सोवे, भगतन के सीर[6] बीनंदा ॥ ३ ॥
सेष्टी[7] सारी ध्यावे नर-नारी भाम होय वोहो[8] घनंदा ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु भणत गणपत कु, काटो जग के फंदा ॥ ५ ॥

९७

हरजस

नाचत हे गनपती[1] अनदीया[2] में नाचत है गनपती ॥ टेर ॥
ताल पखावज ब्रमा[3] कु(को) दीना गुगरा[4] चलावे सुरसती ॥ १ ॥
रेवा की दीरा[5] तीरा[6] सवजी[7] वीराजे संग चले मानधाता
बडा जाती ॥ २ ॥
सीव की जठा(टा) मे गंगा वीराजे संग चले पारवती ॥ ३ ॥
पांचु(चूं) षेडा[8] सीवजी वसाया भांग गोठे[9] पारवती ॥ ४ ॥
बाई मीरा के प्रभु गीरधर नागर कंठ वीराजे सरसती ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

सं० पाठ ९६-१. शीर्ष । २. तिलक । ३. विस । ४. घुंघरवा । ५. ऋद्धि । ६. सिद्धि । ७. शिर । ८. सृष्टि । ९. वहु ।

,, ,, ९७-१. गणपति । २. श्री नदिया । ३. ब्रह्मा । ४. घुंघरा । ५. रेवा नदी रा ६. तीर । ७. शिवजी । ८. खेड़ा । ९. घोटे ।

९८

नात(थ) हर ना वोलो खरी, हरी हरी हरदा[1] के माहे दल खोलो खरी ॥
सतगुरु का दुजी संसार जगत तारे वारणे चोडी[2] मे कुल-मरजाद ॥
जाण न दी जी थ्यारे कारणे र जन मीरा टोडारे वेस् मोटी हुई ॥
मेरते आई गड[3] हो चीतोड़ सरव सालगराम के ॥
चीडी[4] गड़ चीतोड राणा जी रो राज है छोडी मुलक मे पाउ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर धणी हो धारण आपने ॥
जागो मारा जुगपती नात(थ) जलमनई की जीहे गावे ॥

९९

नाव किनारै लाव नावडीया[1] तेरी नाव किनारै लाव ॥ टेर ॥
गंगा जमना और सुरसत्ती जन[2] को ओही सुभाव ॥ १ ॥
ईत[3] गोकल ऐत[4] मुथरा नगरी मुधरी[5] सी वैण वजाव ॥ ना० ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर हरी-चरणां चित लाव ॥ ना० ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४९२२ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९ से ।

सं० पाठ ९८-१. हिरदा, हृदय । २. छोड़ी । ३. गढ़ । ४. छोड़ ।

" " ९९.१. नावड़िया, खेवैया । २. जिन । ३. इत । ४. उत । ५. मधुर ।

१००

नींदडीया[1] बैरणि होइ रही नीदडीयां ।। टेक ।।
कै कोई जागै जोगी-भोगी, कै चाकर कै चोर ।।
कै कोई जागै संत बवेकी[2], जाका धड़ परि सीस न होइ ।। १ ।।
बालपणौ हसि खेल गुमायौ, तरणपन[3] रही साइ[4] ।।
तीन अवस्था यूं ही गुमाई, मुकति कांहां सूं होइ ।। २ ।।
नर-तन-रतन गुमाइ कैं मैं रही कसूंव रंग धोइ ।।
अब क्या मुख दिखलाऊं हरि सूं, वेठि[5] जोवन खोइ ।। ३ ।।
रोइ-रोइ नैंन गुमाइयां, मन पिछतावा होइ ।।
मीरां दासी गुन्हैगार है, माफ करौ सांई मोइ ।। ४ ।।

१०१

नोनड़ली[1] थांनै वेच द्यूं जे थारो गायक होय ।।
नींदड़ली बैरण वेच द्यूं ।। टेर ।।
पीसै सेर टकै पंसेरी रिपिया री मण दोय ।।
हेला दे-दे गायक तेडूं घालूं उधारी तोय ।।
वीच वजार विछायत[2] माडूं ऊंची खोलूं हाट ।।
दे दे झोला वधती तोलूं वधता राखूं वाट ।।
सोवत सोवत सब दिन वीत्या दियो जमारो खोय ।।
निनरा[3] वेरण तां घर जावो राम भगत नां होय ।।
आयो साजन मुड़ गयो रे मैं वैरण रही सोय ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर राखी नैण समोय ।।

---

१. भा० वि० मंदिर बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं०..................

२. पिलानी से प्राप्त हरजसो से

सं० पाठ १००-१. नींदडिया । २. विवेकी । ३. तरुणपणै । ४. सोइ । ५. वैठी ।

" " १०१-१. नींदड़ली । २. विसायत, विसारत । ३. निद्रा ।

१०२

नैण हमारे अजब कवोल[1] ॥
सायब कुं दिदारी[2] कटारि(री) मारि[3] पेम दी मारी ॥
सुली[4] उपर[5](रांमा) सेझ हमारो किस विध हुवै जिहार[6] ॥ कटारी० ॥
मिरा[7] कहै प्रभु गिरधर नागर वात वाणि अत भारि(री) ॥ कटा० ॥

१०३

राग सौरठ

नंद[1] जी का राजकुंवार, प्यारा मांनु[2] दरसण राजा दीजौ[3] ॥ टेक ॥
हूँ तो थांरी दासी जनम-जनम की हमारी तुम कूं लाज ॥ १ ॥
बिन देख्यां मोहि कल न पड़त है, तड़फ तड़फ जीव जाय ॥ २ ॥
मीरां कै ऊपर क्रपा[4] कीजौ, बांह-ग्रहां की लाज ॥ ३ ॥

१०४

पंचरंगी लहरयौ भीज(जै) छ मारो[1] पचरंगी लहरयौ ॥ टेक ॥
अमई[2] रगआयो[3] जो मईयान[4] आज ही पहरयौ ॥ १ ॥
काली पीली घटा उमग आई रंग चुव(वै) गहरो ॥ २ ॥
मीरा कह मीथुला यण वोसर चरनन को चहरो ॥ ३ ॥

---

१. राज० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६ से।

३. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से।

सं० पाठ १०२-१. कपोल । २. दीदार । ३. म्हारे । ४. शूली । ५. ऊपर
६. जुहारी, जीवारी । ७. मीरां ।

„ „ १०३-१. नंद । २. म्हांने । ३. दीजौ राज । ४. किरपा, कृपा ।

„ „ १०४-१. म्हारो । २. अम्बई । ३. रंगायो । ४. मैया ने, मैं याने ।

१०५

पड़ गइ(ई) मांनें राम-भजन की वांण जी ॥ आ पड़० ॥
साध-संगत वीनो[1] वोहदीन[2] वीता हो, आइ[3] पडी छै मोय हांण जी ॥पड०॥
देय फूक मै पाव धरूंगी पाणी पीउं(ऊं)गी मै छांण जी ॥पड०॥
घर धंधा मे मेरो मन नही लागै साधा मे बैठु(ठूं)गी आण जी ॥पड०॥
मेरो तो मन हरसु जी लागे छांड डाली कुल की काण जी ॥पड०॥
पांव दीया चल सतसंग करलै हाथ दीया कर दान रे ॥पड०॥
नेण दीया साधु-दरसण करलै कान दियां सुण ग्यांन जी ॥पड०॥
मीरां कवै (है) प्रभु सतगुर सरणैं हरसु पडी छ(छै) पीछाण ओ ॥
पड़ गई मांन(नें) रांम-भजन री वांण जी० ॥

१०६

परम सुंदरी मृगा-नेणी राधे थै मोहन वस कीनौ हो ॥ टे० ॥
मे दुध वेचन जात व्रंदावन गोरस को रस लीनो हो ॥ १ ॥
कोप्यौ सुनो लुग[1] सोपारीं[2] पानन मै कसु(छु) दीनो हो ॥ २ ॥
मिरा[3] कं प्रभु गीरधर[4] नागर चरण-कमल चीत[5] दीनो हो ॥ ३ ॥

---

१. राज प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से ।

सं० पाठ १०५-१. विना । २. बहुत दिन । ३. आ ही ।

„ „ १०६-१. लूंग, लोंग । २. सुपारी । ३. मीरां । ४. गिरिधर । ५. चित्त ।—

१०७

पल ही पल पुकार गरै[1] मेरे(रो) गात है ॥
दिवस न अनि[2] भावै नांही निद्रा राति(त) है ॥ टेक ॥
तुम मोहि मारि डारि प्रेम की कटारी सारि ॥
नैन बैन घाव मारि नैक न चलात है ॥ १ ॥
छिनि-छिनि प्रीत लागी ब्रिह[3] की अगनि जागी ॥
अबै तन जत[4] मेरो कोइ न बुझात है ॥ २ ॥
छडि[5] विसार डारे मघ(ग) जोऊं नैन हारे ॥
अब कब मिलि(ल)न होई कोइ न बतात है ॥ ३ ॥
अब हम नांही जीऊं विष पीऊं........... ॥
दास मीरां आव माधो धीर न धरात है ॥ ४ ॥

१०८

पात-पास व्रदांवन ढूँढे ढूँढे मथुरा कासी ॥
देख्या स्यांम विलासी ॥
मोर-मुगट पीतांबर सोहै कुंडल की छिब असी ॥
आप ही जाय द्वारका छाये ले गए प्राण निकासी ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर तुम ठाकर हम दासी ॥

---

१. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से ।

२. पिलानी से प्राप्त मीरां के हरजसों से ।

सं० पाठ १०७-१. गलै, करै । २. अन्न, अन्य । ३. विरह । ४. जलै, जात ।
५. छांडि, छोड़ ।

१०९

पिछलो वैर संभारयो रे पपीया पापी ॥ टेक ॥

मैं सूती हूं सुख कै भवन मै पीउ-पीउ कहत पुकारयो ॥ १ ॥

दाधा ऊपर लूंण लगावै हिवडै करवत सार्‌यो ॥ २ ॥

उड-उड वठै कदम की डारी वोल-षोल[1] उर जारयो ॥ ३ ॥

अति हठ सों तूं गैल परयो रे मैं तेरो वाप[2] न मारयो ॥ ४ ॥

मीरां गिरधर आरत लागी चरन-कंवल चित धारयो ॥ ५ ॥

११०

पीया घर वार मोर गानी ॥

भोतकाल[1] वीषोयन[2] संग खोयो अव तो नकल[3] जावांरै ॥

कुमती नार तेरे संग खोटी इन सव काज वीगारै ॥

सुमती के घर आवौ मेरे सायव तो सुख होय हमारे ॥

मीरां के प्रभु गीरधर[4] नागरै(र) व[ह] सव काज सवारै ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-५३

२. अनूप सं० ला० लालगढ़, वीकानेर के ह० लि० ग्र०-सं० २०६ से ।

सं० पाठ १०९-१. वोल-वोल । २. वाप ।

" " ११०-१. भूतकाल । २. विषयन । ३. निकल । ४. गिरिधर ।

१११

पीया[1] जोगी भरथरी गुरु गोरख पाया ॥
धनि माता मैणावती सुत राज छुड़ाया ॥
अमल कीया[2] मावा हूवा[3] सुख रैणि विहावौ(वै) ॥
अमल-नुकल हरे[4] पुरवै[5] जस मीरां जी गावै ॥

११२

पीया मे मैं तेरी दासी हो सनमुष होय सुष दीजे हो ॥
मैं आस-पीआसी[1] हो मेरा तो कछु बसि नही सब तेरे सार(रे) हो ॥
तेरी-तेरी सब ही कहै तुम मया विसार(रे) हो ॥
मेरे तो तुम आसा रांम जी तेरी आंन(नी) हो ॥
फीका लागो तुम वीनां[2] सब ज[न] मल[3] जांन(नी) हो ॥
आरतिवंत सुंदरी पीव-पीव पुकार(रे) हो ॥
अजऊ न[4] आये नाथ जीं पछतावा मार[5] हो ॥
मात-पिता कुल छाडि कै तुम-सो ले साथि(थी) हो ॥
हो जने तो नर वाहीयो तेरै वाड़ै वांधी हो ॥
मुज(भ अवला मै चुक[6] का कऊ[7] गई न आये हो ॥
तेरै घर कै वारन[8] सब रैनि गुमाइ(ई)यो हो ॥
येक[9] सगा संसार मै नही ओर न थारा[10] हो ॥
मीरां प्रभु गीरधर वीनां सुष रैनि विहानी हो ॥

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्र० सं० २८९७, पत्रांक-१

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० १८९०, पत्राङ्क-१४४-४५

सं० पाठ १११-१. पिया । २. किया । ३. हुआ । ४. हरि । ५. पूर वै ।

,, ,, ११२-१. आशा-प्यासी । २. विन । ३. मिल जा । ४. अज हूं न । ५. म्हारे । ६. चूक । ७. कहूँ, कहीं । ८. वारणें, द्वार में । ९. एक । १०. थारी, प्यारी ।

११३

प्रभुजी तुम दरसण विन दोरी ॥
मेरी लगन लगी है राम सूं और सकल सूं तोरी ॥ टेक ॥
पीया मोनै मनां विसारी औगुण उर विच लीया ॥
साहिव मेरा सांच न मांनै ध्रिग हमारा जीया ॥ १ ॥
पीया मोसूं मुख[से] न वोले मैं कैसी विध जीऊं ॥
मैं तो प्राण तजत हूं अब ही भर वटकी[1] विष पीऊं ॥ २ ॥
पीया मौ पर म्हैर[2] करीजै मौ अबला क्यूं मारो ॥
जे मौकूं जीवाई चाहौ तो चरण मेरै घर धारो ॥ ३ ॥
चात्रग[3] छांय[4] लगी आकासां धरण पड्यौ नही पीवै ॥
मीरां व्याकुल भई व्रैहनी[5] रांम मिल्यां ही जीवै ॥ ४ ॥

११४

राग साम कठाण

प्रान लागो हरीरवा मुकटवारे स(सै) मेरो ॥ टेक ॥
षेद्रो उन ना वरजो नही मानत सषो नागर नटवारे सै ॥
मोर-मुकट उर माल वीराजत वंसीवीरे[1] पटवारे सै ॥
मीरां कै प्रभु गुरवर[2] नागर वावा नंदजी रा सुतवारे सै ॥ १ ॥

११५

प्रा (आ)यजो मांरो[1] भीर सांवरा जी आयजो भीर ॥ टेर ॥
सुवा[2] पडावता[3] ग्नका[4] तारी तारचो छै जी कालु(लो)कीर ॥ १ ॥
वावा नंद-घर धेन चराई विछणं मै पाई षीर ॥ २ ॥
गोपि व्रज-मंडल मै राच[5] रचाइयो[6] तट जमना की तीर ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभू ग्रिध्र[7] नागर मेटो नी तन की पीर ॥ ४ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४२ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के(इन्द्रगढ़ पोथीखाना) ह० लि० ग्रं० सं० ५२, पत्रांक-४०
३. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से ।

सं० पाठ ११३-१. वाटकी, प्याला २. महर । ३. चातक । ४. छांट । ५. विरहिणी ।
" " ११४-१. वंसी वारे । २. गिरिधर ।
" " ११५-१. म्हांरी । २. सूआ । ३. पढ़ावत । ४. गणिका । ५. रास । ६. रचायो ।
७. गिरिधर ।

११६

फीर[1] गई रांम दुआई[2] रे लंका मै रांम दुआई रे ।। टेक ।।
कैहत[3] मदोवर[4] सुन पीया रांमण[5] ऐसी कुवद[6] चलाई रे ।। १ ।।
मिरां[7] कै प्रभु गीरधर नागर चरण-कमल लपटाई रे ।। २ ।।

११७

बलि जाऊं चरण(णां) की दासी ।। टेक ।।
यां ही मेरै गंगा यां ही मेरै जमना यांही है तीरथ कासी ।। १ ।।
हरिजी मेरा म्है मैं हरिजी की जगत करौ कि न(म) हासी ।। २ ।।
जैसै चंद चिकोर[1] निहारै जल विनि मीन पीयासी ।। ३ ।।
अंन न भावै नीद न आवै निस-दिन फिरत उदासी ।। ४ ।।
मीरां कै सिर उपरि[2] राजै ऐक[3] अंषड[4] अविनासी ।। ५ ।।

११८

बंसो थांरी बाजै जी जमुना री तीर ।।
मै जल जमुनां भरण जात हूँ भरण दे मोहि नीर ।। टेक ।।
यत(इत) गोकुल उत मथुरा नगरी बीच गह्यौ मेरो चीर ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सुधि नही लेत सरीर ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से, पत्राङ्क-९
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८४७ से।
३. राज० शो० सं० चौपासनी बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० २८८४ से।

सं० पाठ ११६-१. फिर। २. दुहाई। ३. कहत। ४. मंदोदरी। ५. रावण।
६. कुबुद्धि, कुविधि। ७. मीरां।
,, ,, ११७.१. चकोर। २. ऊपर। ३. एक। ४. अखंड।

११९

वाईजी म्हारै सांवरियौ आ[1] तो देव बदला में दी(दि)यो ॥
म्हे सेयौ सिरजनहार[2] ॥ टेक ॥
कोई निंदो कोई ब्यंदो[3] कोई कहौ लख च्यारि(री) ॥
सांवरियौ वर पायौ हि[4] म्हाँनै जगत हंसै हौ महारी[5] ॥
सजनी सब तजि जगत विकारी[6] ॥ १ ॥
पाटी पाड़ौं मांग संवारौं नौसत करुंली सिंगार(री) ॥
सांवरियौ चारी सेज सुरंगी म्हे देषूंली नैंना निहारी ॥ २ ॥
साध संगति कीन्ही घनि हौ तीरथ हीये है अधाय ॥
मीरां प्रभू गी(गि)रधर नी दासी चरण कंवल[7] चितलाई(य) ॥ ३ ॥

१२०

बांके छैल वीआरी[1] ॥
ली(लि)खत परवाती कीण्डे[2] जाऐ[3] विलुव्याना[4] म्हे(मैं) हेला दे दे हारी ॥
हो जी खांड भात ओर मेवा मिसरी तोरै कारण लाई जी ॥
उठौ सांवरा भौर भयो सासू छांने आई जी ॥
कण्डे जाए बिलुव्याना म्हें हेला दे दे हारी जी ॥
मेरो तो गागर बोत[5] रसीलो सवधात सोनारी जी ॥
नटनाग्रीअयान[6] लुट लडी से लोग हंसे दे ताली(री) जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हे(मैं) हेला दे दे हारी जी ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से, पत्राङ्क-८४

सं० पाठ ११९-१. ओ । २. सिरजणहार । ३. विंदो, वंदना करो । ४. है । ५. म्हारी । ६. विकार । ७. कमळ

" " १२०-१. विहारी । २. कहां । ३. जाय । ४. विलमाये । ५. भोत, वहुत । ६. नटनागरिया नें ।

१२०

कोई के ओडणा पीत पीतामर[7] कोई के कामल[8] काली[9](री) जी ॥
मे(मैं) तो बृकभाण की कंवरी राधका तुम औ नंददुलारी[10] जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हें हेला दे दे हारी जी ॥
रेण अंदे(धे)री पंत[11] दोभ्रेणो सिर पर गागर भारी जी ॥
मीरां के प्रबु[12] गिरधर नागर चरण-कमल[13] बलिहारी जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हें हेला दे दे हारी जी ॥

१२१

राग पनघट

वारी[1] पनघटवा कैसे जाऊं ॥
घाट बाट मग घेरै ही ठाढो कहौ कैसै भर लाऊं ॥ १ ॥
कांकर मार गागर कूं फूरत[2] कहा[3] कह कर समझाऊं ॥ २ ॥
छिपकै निरख कर ताक लगावै तव काहा[4] भज जाऊं ॥ ३ ॥
ऐसै तौ नित नांहि निभैगी जसोधा(दा) सै कह आऊं ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू अत खुट पचरो चरन कंवल[5] चित लाऊं ॥ ५ ॥

१२२

बूझो-बूझो नै पिडंत जोसी, मोरा रांम मिलन[1] कब होसी ॥ टेर ॥
मेरी आंख फरुकै बांई, मोहि साध मिलै कै सांई[2] ॥
मेरा पीव परदेसां छाया, काही[3] विरहन नै भरमाया ॥ १ ॥
मेरी रोय रोय अंखियां राती, मेरा तन दीपक मन बाती ॥
मेरा झुर-झुर पिजंर खीना, जैसै जल[4] विन तलफत मीना ॥ २ ॥
उड-उड रे कारे कागा, मेरा हरिजी नै घणां दिन लागा ॥
बाजीदौ अैहै[5] विसूरै, मेरी आस गुंसाईयां पूरै ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४६२२ पत्रांक-३०
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २५३४४, पत्रांक-१०१
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८५१, पत्रांक-६

सं० पाठ १२०-७. पीताम्बर । ८. कामळ । ९. काळी । १०. दुलारे । ११. पंथ । १२. प्रभु । १३. कमळ ।
" " १२१-१. बाईरी । २. फोरत । ३. का । ४. कहां । ५. कमळ ।
" " १२२-१. मिलण । २. सांयां । ३. कांई । ४. जळ । ५. बिरह ।

१२३

भली भई मारी[1] मटकी फूटी दद(धि) बेचन सु(सू) छूटी रे ।। १ ।।
ब्रंदावन की कुंज गली में सिर से मटकी फूटी रे ।।
मैं बेटी ब्रखभान राय की कौन कहे जा(जो) मोऐ जुडी[2] रे ।। २ ।।
मैं दद(धि) बेचन जाती वींद्राबीन[3] वीच सांवरे लूटी रे ।।
रपट-जपट मारी[4] बईयां मरोरी लड़ मोतियन की टूटी रे ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरी(रि) चरना[5] की बूंटी रे ।।
हरी(रि) नाम ली(लि)या जिन षुव[6] काम की प्सी (प्यासी) ।।
ओर वात सब जु(झू)ठी रे ।। ४ ।।

१२४

राग विलावल

भली तो निभाई वालापन[1] की रे उधो ।।
व्याकुल भई कल न परत है, सुध न रहत है तनकी ।। रे ऊधो ।। टेक ।।
आपन जाय द्वारका छाये, हमनें(सौं) कही वन-वन की ।। १ ।।
सब सखियन मिल जोग गहीलो, भसम रमाओ मलयागिरी की ।। २ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर कोई न जांनें[2] मांरें[3] मन की ।। ३ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलेस, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ३७६४४, पत्रांक-८

सं० पाठ १२३-१. म्हारी। २. झूठी रे। ३. वृंदावन। ४. म्हारी।
५. चरणां। ६. खूव।

" " १२४-१. वालपण २. जांणें। ३. म्हारें।

१२५

भूल मती जाजो[1] जी मारा[2] राज ॥ टेर ॥
मैं अबला बल नाई गुंसाई तुम मेरे सिरताज ॥ १ ॥
मैं निरगुणी गुण ना(ई) गंसाई तुम गुणवंता राज ॥ २ ॥
मीरां के प्रभू कब रे मिलोगे सरणे मोई[3] नीवाज ॥ ३ ॥

१२६

मगन रो रे[1] परभु के भजन से मगन रो रे ॥
का जांणै रांणों भगतां रो भाव दीनौ जे'(जह)र ईमरत हुय जाय ॥ १ ॥
बटवा में घालो[2] रांणों कालो[3] नाग हु(हो)य गई मूरत सालगरांम ॥ २ ॥
भाडा-भडा[4] अमराव[5] खांन सुरत[6] मनारी गी(गि)रद उडियो गान[7] ॥ ३ ॥
का[8] गये गोपी का गये गवाल[9] का गये भी(वी)ण वजावणहार ॥ ४ ॥
मीरांबाई ने मीलिया घी(गि)रधर लाल तुम छुडाये[10] रांणा मेरो खाल ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से। पत्रांक-११

सं० पाठ १२५-१. जाज्यो। २. म्हारा। ३. मोही।

" " १२६-१. रहो। २. घाल्यो। ३. काळो। ४. वडा (वड़ा) बडा। ५. उमराव। ६. सुरताण। ७. चौगान। ८. कहां। ९. गुवाळ। १०. छुडायाँ।

१२७

मन की मन में रहो रे मांहरे[1] हीरद(दै) करोत भई रे ॥
एक समै हर मेरे ग्रह्[2] आया मै दध मथन रही रे ॥
मै मंदभागण माणस जान्यौ[3] जातन अठ गही रै ॥
इत गोकल उत मथुरा नगरी वैरन बीच भई रे
मैं इत वो वुत ये री सखी री पर(पी)तम भेंट भई रे ॥
सोल-संस्त[4] गोपका छाकी (डी) कुबजा संग लई रे ॥
मनैं[5] (जोग), भोग कुबजा सूं, व्रीज मे न्याव नहीं रे ॥
आपनै जाय दुवारका छाये हमसूं कछू न कही रे
मीरा के प्रभू गिरधर नागर गोप्यां झु(झु)र रहीं रे ॥

१२८

मन मांनै ज्यां[1] जावो छौ राज थांरो ॥ टेर ॥
भीलनी के वोर, सुदामा के तंदुल, रुच रुच भोग लगावो छौ ॥ १ ॥
दुरजोधन का मेवा त्याग्या, साग विदुर घर पावो छौ ॥ २ ॥
राधा रुकमनी तजी[2] सतभामा कुवज्या के मन भावो छौ ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर वोल वचन निभावो छौ ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ वीकानेर, के हृ० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

सं० पाठ १२७ १. म्हारैं । २. घर । ३. जाण्यों । ४. सोळै सहस्र । ५. हमसूं ।

,, ,, १२८-१. जहां । २. तजि ।

१२६

राग तोडी

मनमोहन आवन की सुनकै भयो जो[1] परमानंद रै ॥ टेर ॥
श्रवण सुनत ही अती[2] सुप पायो छूट गया दुख-दुंद रे ॥ १ ॥
सुण रे(रो) सखी ऐ(ए)क वात सैंयानी काहा जो कयौ[3] गोबंद[4] रे ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभू गिरधर नागर काट दी(दि)या जम-फंद रे ॥ ३ ॥

१३०

राग कालिंगड़ो

मनरो[1] वसे छै जांही जाज्यौ जी ॥
राधा रुकमनि अरु सतभांमां कुवज्या कै संग जाज्यौ ॥ १ ॥
कूड़ी प्रीति करौ मनमोहन कूड़ी-कूड़ी सोगन खाज्यो ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु सव वृजनायक प्रांगणिये[2] फिरि आज्यौ ॥ ३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के हु० लि० ग्रं० सं० १७२ से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० ७५७३ से ।

सं० पाठ १२६-१. जी । २. अति । ३. कयौ, कह्यौ । ४. गोविंद ।
" " १३०-१. मनड़ो । २. आंगणिये ।

१३१

राग सोरठ

मना रे गिरधर का गुन गाय ।।
मनसा वाचा करमना रे धणी सौं ध्यान लगाय ।। टेक ।।
कोल करी[1] ग्रभवास में रे सो तैं क्यौं विसराय ।।
पांणी सों पैदा की(कि)यो रे मिनखा देही[2] धराय ।। १ ।।
प्रभू सूं कोल विसार कै रे माया मोह लुभाय ।।
मात पिता सुत बंधु दारा बांधो(ध्यो) सहज सुभाय ।। २ ।।
जौवन तो जातौ रह्यौ रे अब यो बुढापो आय ।।
राम नाम सुमरचो नहीं रे पाछै ही पिछताय ।। ३ ।।
मीरां यौ कर(रु)णां करी तब दया करी रघुराय ।।
घरि बैठां गी(गि)रधर मिल्या तातें दुरि काहै कौ जाय ।। ४ ।।

१३२

राग बिहाग रौ

मंदिर पौढिये रघुराई ।। टेक ।।
कंचन कौ महल कंचन कौ ढुलिया(यो) 'रेसम वान वजाई[1]' ।। १ ।।
फूलन सेज फूलन के गिदवा फूलन लूंब लगाई ।। २ ।।
चौवा चंदन अगर कुंम-कुंमा केसरि अंग लपट पठाई[2] ।। ३ ।।
सीतारांम दोउ(ऊ) संग पौढे वलि जाय मीरांबाई ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८२९० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ९२५९ से । पत्राङ्क-६८

सं० पाठ १३१-१. करचो । २. देह ।

,, ,, १३२-१. रेसम वाण वणाई । २. लपटाई ।

१३३

माई कब देखौं मोंहन मूरति लाला रिसाल को दरस ॥
अंखिया अरबरानी जिय में कछु ओर वां(ठा)नी ॥
अंसुवन जल इद्रं लाग्यौ बरसन ॥
निस-दिन मारग जोऊं कल नां परत मोकौं ॥
अजहूं न आए पी(पि)य लागे ने(नैं)नां तरसन ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर निरखत ही पग पर(स)न ॥

१३४

माई नंद के नंदन मेरो मन हरैया[1] ॥
चित में भई चटपटी भारी चेटक सौ जु कर्यौ ॥
तनक ही मांनक सुनी मुरली की तन मन में न हर्यौ ।
स्याम स्याम रसना रट लागो और सबे विसर्यौ ॥
लोक लाज कुल कांनि बिकाई गई([ग]र्व गुमान गर्यौ ॥
फूली सो डाली डोलति गोकल में घेर घनो पर्यौ ॥
छन मोहन मूरति देखे जो तन धीर धर्यौ ॥
गरिधर हाथ विकांनो मीरा प्रभू दाव परयौ सु पर्यौ ॥ १ ॥

---

१ राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२५६ से । पत्रांक-६८

सं० पाठ १३४-१. हर्यो ।

१३५

माई री लालन आवन कौ मैं आगम जान्या ॥
फरकत लागे री कुच भुज बांही, सुनि सखि एक बात पी(पि)य आवेंगे ॥ १ ॥
प्री(प्रि)या पात फूली आंगन मांही, अंखियां आगोंनी मिलि आई ॥
करवो कंगन देऊंगी, मोतियन की लार[1] देऊंगी ॥ २ ॥
तिन मोरे पियहवू[2] की बतियां सुनाई, कब मिलि भेटौंगी ॥
मीरां के प्रभु कोटिकी[3] करि हौं बधाई ॥ ३ ॥

१३६

माणक मोती सब हम छाडै गल में पहरी सेली ॥
भोजन बसन नीको नहीं लागै पी(पि)या कारन भई गेली[1] ॥
मुजै(झे) दूरी क्यों मेली ॥ १ ॥
अब तुम प्रीति ओर सूं जोड़ी हम सूं करि क्यूं पहलै(ली) ॥
बोहो दिना बीते अजहूं न आए लग रही तालाबेली ॥
किणै[2] बिलमाए[3] सहेली ॥ २ ॥
स्यांम विना जीवयौ(ड़ौ) मुरझैयौ जैसै जल विन वे(बे)ली ॥
मीरां के प्रभू दरसन दीजो जनम जनम की चेरी(ली) ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, १०६७ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७३ से ।

सं० पाठ १३५-१. लड़ (लर) । २. पिय हू । ३. कोटिक ।

,, ,, १३६-१. गै'(ह)ळी । २. किण । ३. बिळमाया ।

१३७

हरजस

मारी[1] गलीयां[2] आवरण हो पीयारा[3] ॥
गंगसम[4] मिजलस आवरण हो गंगसांम ॥ टे० ॥
लग रईयां[5] फूलड़ा झुक रई कालीया[6] ऊंचीं हठाई[7] मारा[8] (रो) ग्राम ॥
सड़ी गलीग्रयां[9] आवरण हो गंगसांम ॥
पीछवाड़(ड़ै) आय हेलो दीजो ललना(ता) सखी मेरो[10] नांम ॥
सोयरव(वै) सब वीरज को लोकग्रो आई हे छल-वल को कांम ॥
..............जावो नी(नि)रमोहीड़ा जांणी थांरी पीत ॥
इमरत छोड जहर कोउ[11] पीये तुम में आकांणा की पीत ॥
पीत लगी जब ओर रीत ही अब भई आन[12] रीत ॥
........जासवो नी(नि)रमोहीड़ा जांणी थांरी प्रीत ॥
मीरां कै है परभु गी(गि)रधर नागर तुम मतलब का मीत ॥

१३८

मारो[1] लालजी छोगालो[2] रे ठाडो जमुना की तीर ॥ टेर ॥
तूं जमना बड़भागणी नी(नि)रमल थारो नीर ॥
पणीयारयां[3] पाणीभरे कांई ओडण चंगा चीर ॥
जी म्हानैं पीयरीऐ[4] पीछावो[5] रे ॥ १ ॥
जमुना तूं दूरी ग(घ)णी मांसु[6] गयो ये न जाय ॥
कीजो[7] मारा[8] सांम[9] ने मानैं[10] गोदचां कर ले जाय ॥
जी में पाली(ळी) कीस(विध)चालू रे ॥ २ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४ से। पत्रांक-७

सं० पाठ १३७-१. म्हांरी । २. गळियां । ३. प्यांरा । ४. गंगश्याम । ५. रह्या । ६. कळियां । ७. हताई । ८. म्हाँरो । ९. गळियां । १०. म्हांरो । ११. (क्यूं) पीऊं । १२. अन ।

" " १३८-१. म्हांरो । २. छोगाळो । ३. पिणयारचां । ४. पिहरिये । ५. पौंचावो । ६. म्हांसूं । ७. कहिज्यो । ८. म्हांरा । ९. स्यांम । १०. म्हांनैं ।

तूं जमुना गेरी[11] ग(घ)णी मांसु उतरयो न जाय ॥
कीजो मारा स्यांम ने माने बेस्यां पकड़ ले जाय ॥
जी में झाला दे दे हारी रे । ३ ॥
मे(मैं) तनें वरजु(जूं) सांवरा रे वरसाणे मत जा(य ॥
वरसाणां री गु(गू)जर्‌यां थांने राखेला बी वि)लमाय ॥
जी मे(मैं) वरजत हारी रे ॥ ४ ॥
मै वेटी वृखभाण की राधा मेरो नाम ॥
पकड़ मगाऊं क्रस्न को कोई छोटो सो नंदगाम ॥
जी माने दया तो तुमारी आवै रे ॥ ५ ॥
छोटो छोटो(मत) कर रादा(धा) मत कर छोटी बात ॥
छोटो दूज को चंद्रमा कई दुनीयां जोड़े हात ॥
जी दुनिया में दो दिन रेणां रे ॥ ६ ॥
अतलस को लैं(ह)गो बणास्यां रे चोली बूंटादार ॥
असी मोहर को तो तेवटो मारी नथड़ी भल(ळ)कादार ॥
जी मारे[12] दांतन चूप दीरावो रे ॥ ७ ॥
तन चोखा मन लापसी ने(नैं)णां घी की धार ॥
दूजो हात(थ) परूसती कांई जीमों क्रस्न मुरार ॥
जी मनुहार कर कर हारी ॥ ८ ॥
वरसाणां रा बाग में रे पाकी छै वडबोर ॥
कीजो मारा स्याम ने कांई लावे लूवां तोड़ ॥
जी में तो ऊबी[13] वाट उडीकूं रे ॥ ९ ॥
गोकल वाजा वाजिया रे वरसाणे सुणीं आवाज ॥
(मैं)में दद(धि)-वेचन जावती कंई आगे खड़ा नंदलाल ॥
जी माने वंसी की टेर सुणाई रे ॥ १० ॥
हरिया कंद की चुंदड़ी रें बूंटी लाल गुलाल ॥
ओडण वाली[14] रा(ध)दका कंई नीरको[15] क्रस्न मुरार ॥
जी मै सेंना में सम(झांवूं)जावु रे ॥ ११ ॥
विनरावीन[16] री कुंजमे रे क्रस्न(ण) रचाया रास ॥
सव मुंनी जै जै करे कंई गावे मीरां दासि ॥
जी चरणां में चित लगाया रे ॥ १२ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ १३८-११. गेहरी, गे'री । १२. म्हांरै । १३. ऊभी । १४. वाळी १५. निरखो ।
१६. वृंदावन ।

१३९

पद

मिजाजीड़ा वंके[1] नैणां में जादू डारचा ।। टेक ।।
घायल की गत घायल जांणै क्या जांणै वेद विचारे ।। १ ।।
तुम तो किसन जनम के कपटी प्रीत करी पछताना[2] रे ।। २ ।।
मीरां कैं प्रभू गिरधर नागर तुम जीत्या हम हारचा(रे) ।। ३ ।।

१४०

मीरां नै जहर इंम्रत कर पीयौ, पीयौ-पीयौ धणीं कै भरोसै ।। टेक ।।
राणों जी कागद मौकल्या जी, द्यो मेड़तणी नै जाइ ।।
साधां री संगति छोड़िद्यो, थांरां कुल[1] नै लांछण थाइ ।। १ ।।
काठन की माला[2] तजौजी, पहरो मोतीहार ।।
भगताई थे दूरि करोजी, सब ही राज तुम्हार ।। २ ।।
काठन की माला हीरां जड़ी जी, म्हांरा हीया सूं लिपटाई ।।
जे थांरै मन भ्रान्ति वसै तौ, हमैं(म) बहन तुम भाई ।। ३ ।।
मीरांदासी राम की जी, निति प्रति रहै हजूरि ।।
हरिजन सूं सुनमुख सदाजी, दुसय्यां[3] सेती दूरि ।। ४ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५७ से ।

२. भा० वि० मंदिर बीकानेर के ह० लि० प्र० से

सं० पाठ १३९-१. वांकै । २. पिछताणां ।

,, ,, १४०-१. कुळ । २. माळा । ३. दुसटां ।

१४१

मुज प्रेम में हरि करोजी हरि आवनां हरि आवनां जी मन भावनां ॥टेक॥
मेर द्रग तलफत[1] द्रग देखन कुं, गल[2] कर दरस दिखायना ॥ १ ॥
लग-लगी सब कोई जाने, अब कहौ कैसे छिपावना ॥ २ ॥
मीरा(रां) कै प्रभू गिरधर नागर, यो ओसर नहीं पावना ॥ ३ ॥
हम कब होंवेंगे व्रजवासी ॥ ४ ॥

१४२

राग कीलन (कल्याण)

मुरली नै म्हांरो जीवैरो[1] मोह ली(लि)च्यौ ॥
बर(स)परी[2] वाजत है निस-दिन अधरन को रस (लि)लीयो ॥
मोर मुकट गल-माल विराजै कुंडल की छव न्यारी ॥
मीरा के प्रभु गी(गि)रधर नागर मन मोह(न) वनबारी[3] ॥

१४३

मेरो प्यारो नंदलाल वंसी बजायो(य) गयो वन में ॥
बंसी की धुन सुन(ण) मैं चली मोहे कछु न सुहाये ॥
बंसी बजाय गयो वन में ॥
विसरि है सुनु धुन तकी[1] तन मन मोहे मेरे प्रान ॥
बंसी बजाय गयो वन मैं ॥
वनहूँ के मिर्गा[2] मोहे चंदा मोहे आकास ॥
पानी तो पाथरा[3] हो गये जमना बाहि आसराल ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से। पत्रांक-२२

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २५३४४ से, पत्रांक-१५

सं० पाठ १४१-१. तड़फत। २. मिल।

" " १४२-१. जीवड़ो। २. वंसरी। ३. वनवारी।

" " १४३-१. सखी। २. मिरगा। ३. पाथर।

कनवा मिलन कूं मे(मैं) चली बिच पाहृ गई नांव ॥
मिरा[४] तो हरजी की लाडली दरसन दिजो नंदलाल ॥
बंसी बजाय गयो वन में ॥ १ ॥

१४४

मेरी आंखिन लगी आई लाज री, मेरौ मन लाग्यौ उनके मनसौं ॥ १ ॥
मन चात्रिग नैंना अति चंचल, ये दोउ(ऊं) कठिन इलाज री ॥ २ ॥
मन कहत नैंना अजहूं मिलि, बिछुरन(त) ये ही जंजाल री ॥ ३ ॥
मीरा प्रभु गिरधर आय मिले, मोंहि जीवन सफल धन आज री ॥ ४ ॥

१४५

मेरी कांनां सुनिजो जी कर(रु)णां निधांन ॥ टेक ॥
रावलो बिड़द मोहि रुड़ो सो लाग परत पराये प्रांन ॥ १ ॥
सगा सनेही मेरे और न कोई वैरी सकल जिहांन ॥ २ ॥
ग्राहा गह्यो गजराज उवारचौ बूडि न दीन्हौ[१] जांनि[२] ॥ ३ ॥
मीरांदासी अरज करत है नंही जी सहारो आंन ॥ ४ ॥

---

१. राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २५३४४ से। पत्रांक-६२

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७, से।

३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७, से।

सं० पाठ १४३-४. मीरां।

" " १४५-१. दीन्ही। २. जांण।

१४६

भुगत रौ ऐ गैहणौं पैरीयौ(पै'रियौ) ॥
पै'रियौ पैंरियौ ऐ सतगुर परताप ॥ टेक ॥
मांरै(म्हांरे) खिम्यांरी चूंदड़ बाण रही रांमइयौ ऐ सालूड़ारी कोर ॥१॥
मांरै(म्हांरे)करणी रौ काजल सारियौ रांमइयौ ऐ मारै तिलक लिलाड़॥२॥
मांरै(म्हांरे) सील संतोख चूंप बणी मांरै(म्हांरे) नथ वेसर गुरग्यांन ॥३॥
मांरै(म्हांरे) तंत नांम तिमण्यौं रांमइयौ ऐ हिवड़ा रौ हार ॥४॥
मांरै(म्हांरे) चित चेतन चुड़लौ वण्यौ रांमइयौ ऐ चुड़ला री मजीठ ॥५॥
मांरै(म्हांरे) ग्यांन बाजूबंद वहुरंगा रांमइयौ ए बाजूबंध री लूंब ॥६॥
हूं तौ इतनौ जी पहिर नीसरी चाली चाली ऐ रांमइया री सेज ॥७॥
बाई मीरां नै गिरधर मिल्या पूरी-पूरीऐ मनड़ा री हूँस ॥८॥

१४७

मैरौ राम नैं रिझाऊं, अजी मैं तो गुण गोबिन्द का गाऊं ॥
डालपात कै .हाथ न लाऊं, ना कोई बिरछ सताऊं ॥
पान पोन में सायब देखूं, झुक झुक सीस निवाऊं ॥
अजी मैं तो गुण········ ॥टेक॥
गंगा जाऊं न जमना जाऊं, नां कोई तीरथ न्हाऊं ॥
अड़सठ तीरथ भरया घट भीतर, ज्यांमें मलमल[1] न्हांऊं ॥ १ ॥
साधू होऊं न जटा बधाऊं, नां कोई खाख रमाऊं ॥
ग्यांन कटारी कस कर बांधूं, सूरतां म्यांन चढाऊं ॥ २ ॥
पारबिरम पूरण पुरसोतम, व्यापक रूप लखाऊं ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आवागमण मिटाऊं ॥ ३ ॥

---

१. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७१४३, से । पत्रांक-५३

२. पिलानी से प्राप्त हरजसो से

सं० पाठ १४७-१. मळमळ ।

१४८

मैं तो छाडी छाडी कुलकी कांनि राणो मेरों कहा करसी ॥ टेक ॥
साधां रे संग जाय दवारका मे(मैं) तो भज्या श्रीरणछोर ॥ १ ॥
दौड़ि रे जास्यो[1] देउरै (देवरै) लेस्यों[2] महाप्रसाद ॥ २ ॥
पगा बजावै घुंघरा हाथ मै लेस्यौं(स्यूं) ताल ॥ ३ ॥
गास्यों(स्यूं) गुंण गोपाल ॥
मीरां पोहर छाडो[3] मेरतो सासरियौ ची(चि)तोड़ ॥ ४ ॥

१४९

मैं वैरागणं रांम की थारै मारै(म्हांरे) कद कौ सनेह ॥
वी(बि)नपांणी बिन साबुनां रे सांवरा हू गई (होगई) धोय सफेद ॥ १ ॥
जोगण हुई[1] जंगल सब हेरु(र्यो) तेरा[2] न पाया[3] भेस(द) ॥
तेरी सूरत कै कारणें सांवरा धरै (र) लिया भगवां भेस ॥ २ ॥
मोर मुगट पीतांबर सोहै घूंघर वाला[4] केस ॥
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर हूँण बडा सनेस ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८९० से ।

२. संत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त ।

सं० पाठ १४८-१. जास्यूं, जास्यां । २. लेस्यां, लेस्यूं । ३. छोड्यौ ।

„ „ १४९-१. होय । २. तेरो । ३. पायौ । ४. वाळा ।

१५०

मोरे[1] घर आज्यो राम पियारा ॥ टेर ॥
मैं नुगणी में गुंण नहीं कोई मो मैं ओगंण सारा ॥
तन मन धन सब अरपण करसूं (स्यूं) भजन करूं (कस्यूं) मैं थांरा ॥ १ ॥
बोहो[2] गुणवंता साहिब मेरा गुनां (न्हां) बकसज्यो सारा ॥
मीरां तो चरणन की दासी तुम बिना नैन दुख्यारा ॥ २ ॥

१५१

मोवन[1] जावोला कठै सांवरिया जावो[ला]कठै अब रे'वौ अठै ॥ टेर ॥
गोकल(ळ) वसवो[2] फीकोई लागे मथुरा में कई[3] लाडू वंटै ॥ १ ॥
रादा (राधा) रुखमण और (अर) सतभामा कुवज्या-
कई[4] थारे लीनी घटे ॥
नितरौ(रा)ई आवौ नितरो(रा)ई जावो नित आयां थांरो मान घटे ॥ २ ॥
नहीं आवौ तो थांने कूंण बुलावै आवौ तो थांने कूंण नटे ॥
बाई मीरा(मीरां) के प्रभु गिरधर नागर थांरो नाम लियां-
म्हांरो दुख कटे ॥ ३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ १५०-१. म्हारै । २. बहु, मो'त ।

" " १५१-१. मोहन । २. वसवो । ३. कांई, कंई । ४. कंई ।

१५२

मोहन रातड़ली का वसिया ॥
थांरा भंवर पटामें आवै वासड़ली रातढली[१] ॥ टेर ॥
काई[२] तुमारो नाम कहीजे काई[३] तुमारी जातड़ली ॥ १ ॥
भगतवछल मारौ(म्हांरो नाम कहीजे जादु[४] हमारी जा(वा)तड़ली ॥ २ ॥
के सतभोमा[५] रे मेल[६] पधारे कै कुबज्या से किवी वातड़ली ॥ ३ ॥
बाई मीरां के प्रभु गिरधर नागर आए मिल्या परभातड़ली ॥ ४ ॥

१५३

म्हानै जावोदो[१] वी(बि)हारी, मारै(म्हांरै) काम सै (छैजी)।
इतनी अरज सुणो जी सांवरा था(थां) विचै मां(म्हां) विचै राम से(छै)जी ॥१॥
इत गोकल उथ(त) मथरा नगरी, जमना क(कि)नारै मेरो गांम(छैजी) ॥२॥
मोरे आ(आं)गण चंदन का वी(बि)रवा[२], सांवरी सषी(खी)मेरो नाम सै(छै)जी ॥३॥
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर, हर[३]-चरणां मेरो ध्यान सै छै)जी ॥४॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ७६६४ से ।

सं० पाठ १५२-१. रातड़ली । २,३, कांई । ४. यादव, जादव । ५. सतभामा । ६. महल ।
,, ,, १५३-१. जावादो । २. विरछा, वृक्ष । ३. हरि ।

१५४

राग सोरठ

म्हांनै लाप(ख) लोग ह(हं)सि जाह्व दासी जगदीस तणी है ॥ टेक ॥
दासी सोई दासातउ जांणै मन में राखै भाव ॥
तन मन धन संतन कौ अरपे(पैं)ह हरि तजि अनत[1] न जाय ॥ १ ॥
व्रंदावन की कं(कुं)ज गलिन में नरतत [2]ताथे इत्ता(ताय)[2] ॥
रुणक भुणक घुंघुरु अति घमकै मुरली रौ अधिक वना(वणा)व ॥ २ ॥
मन वचन क्रम करि गोविंद भजिस्या(स्यां) म्हांरो यौ ही सुभाव ॥
मीरां प्रभु गिरधर नी दासी म्हांरो कांई करैलो रो रांणो राव ॥ ३ ॥

१५५

म्हारां पियरी(रि)यांरो वांतां सतगुरु कैता[1] जाजी[2] ॥ टेर ॥
सतगुरु आया सव रस लाया प्रेम पियाला पाया ॥
सतगुरु सा(सां)चा सूरमा म्हांनै सेजां राम मिलाया ॥ १ ॥
सासरी(रि)या मैं दुख घणो रे सासू नणद संतावै ॥
कैजौ[3] म्हांरा वावा(बावा)जी(सा) नै वे(वे)गा लेवा(बा) आवै ॥ २ ॥
देवर-जेठ म्हांरो कुटंव कवोलौ नित उठ राड़ चलावै ॥
इण घर-धंधै री वातां मांने एक ही दाय न आवै ॥ ३ ॥
मारा[4] पिहरी[5] रो लोक भल(ले) रौ वांधै कंठी माला[6] ॥
तिलक छापा रुड़ा सा(सो)है वे अमरापुर वाला[7] ॥ ४ ॥
अमरापुर में सासरो रे पीहर संता पास ॥
भले (ळे) न इण जुग आवसां[8] गावे मीरा(रां)दासी ॥ ५ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२ से । पत्रांक-१३२
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से ।

सं० पाठ १५४-१. अन्यत्र । २-२. ता थेइ तथ्था ताय ।
" " १५५-१. कैंता कहता । २. जाजोजी, जाज्योजी । ३. कहिज्यो, कैंज्यो ।
४. म्हांरा । ५. पिहरिया । ६. माळा । ७. वाळा । ८. आवस्यां ।

१५६

म्हांरी लागी लगन मत तोड(ड़) सांवरा ॥
गांव(ठ) जु घुर(ळ) गई रेसम की ॥ टेक ॥
स्यांम सुं(सूं) प्रीति करी सजनी ज्यों जाणें ज्यों जोड़ ॥ १ ॥
तुम वि(बि)न मो को कल(ळ) न परत है तो(तूं) मुख मति मोड़ ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर लीज्यो आप बहोड़ ॥ ३ ॥

१५७

म्हांरे हीरदे[1] ली(लि)ख्यो जो हरी(रि) नाम ॥
अब नहीं बीसरु(रूं) म्हांरी सेवामे(में) सतगरु राम ॥ टेर ॥
वी(वि)स का प्याला राणेराइ भेज्या दो(द्यो) मेड़तणी रे हाथ ॥
करी चरणाम्रत पीई गई, थे जांणो रे रगुनाथ[2] ॥ १ ॥
जाई दासी म्हल में, जरे मीरां मुंई क(कै) नांही ॥
मुई वे[3] तो जाल[4] दो(द्यो) जी, ने तो नदी में दो(द्यो) जी बुहाई ॥ २ ॥
पावां बादया[5] मीरा(रां) गु(घूं)गरा जी, हाता(थां) लीनी ताल(ळ) ॥
मीरा(रां) महल में ऐकली जी, भजे राम-गोपाल(ळ) ॥ ३ ॥
रांणो मीरा(रां) परी(पर) कोपीयो जी, मारु ऐ(ए)कण सेल ॥
लांछण लागे जीव कुं(कूं), पीहर दीजो(ज्यो) मेल ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-४१

सं० पाठ १५७-१. हिरदै । २. रघुनाथ । ३. ह्वै । ४. बाळ । ५. बांध्या ।

मीरा(रां) महल सु(सूं) उ(ऊ)तरी जी राणा(णौ) पकडयो(ड़्यो) हाथ ॥
हतलेवा[1] का सांईना मारे(म्हांरै) और न दूजी वात ॥ ५ ॥
रत(थ) वेल्या[2] सीणगारीया[3] उठां[4] कसी(सि)या भार ॥
डावो मेल्यो मेततों(मेड़तो) पहली पोक(ख)र जाई ॥ ६ ॥
सा(सां)ढीड़ा सा(सां)डीयो पीलाण जा रे मीरा(रां) पाची(छी) फेर ॥
कुल(ळ) की(री) तारण अस्तरी मुरड़ चली राठो(ठौ)ड़ ॥ ७ ॥
सांढीडा(ड़ा) सांडयो फेर दे रे पर तन देसु(स्यूं) पांव ॥
ले जाती वैकुंठ में (रे) समज्या(झ्यौ)नहीं सीसोद ॥ ८ ॥
लाजै छै पीयरं सासरो मीरा(रां) लाजे(जैं) छै माय-मोसालं(ळ) ॥
लाजै दु(दू)दाजी रौ मेरतो[5] लाजै गढ ची(चि)तोड़ ॥ ९ ॥
तारु(रूं) पीयर सासरो जी तारु(रूं) माय-मोसाल(ळ) ॥
तारु(रूं) दु(दू)दाजी रौ मेरतो[5] तारु(रूं) गढ ची(चि)तोड़ ॥ १० ॥
लक्ष्मीनाथ के रै देवरे जी बैठौ सीसोदया[6] साथ ॥
मीरा(रां) नाचे ऐकली जी, छाडी कुल(ळ) की लाज ॥ ११ ॥
साध हमारा मे(मैं) साध की, हम हे(हैं) साधां आग(गै) ॥
साध हमारे में रम रै'या(रह्या) ज्यु(ज्यूं) पथरी में आग ॥ १२ ॥
मीरा(रां) को पीयर मेड़तोजी सासरी(रि)यो ची(चि)तोड़ ॥
मीरा(रां) ने गी(गि)रधर जी मो(मि)ल्या नागर नंद-किसोर जी ॥ १३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

सं० पाठ १५७-१. हथळेवा । २. वळद्यां । ३. सिणगारिया । ४. ऊटां । ५. मेड़तो ।
६. सिसोद्या

१५८

म्हांरै मिदरी(रि) ऐ(ए) पधारौ जोऊं थांरी वाट ।। टेक ।।
धरण गिगन विच झो(झ)री लागी ऊगंते परभात ।।
रसनां मेरी रांम रटत है सतगुर जी रै परताप ।। १ ।।
दोइ चोकी मैं(में) सहजै छेकी नाम कवल[1] कै घाट ।।
बंक-नाल पर मुरली वाजै सतगुर मांरचा था(सा)ट ।। २ ।।
काया-नगर मै(में) रास रच्यौ, है सुरत सुहागण नार ।।
जनम-जनम को टोटा भाग्या गुरु(रू) मिलया[2] दातार ।। ३ ।।
इंगला पिंगला सुखमण नारी सहैज रच्यौ घरवास ।।
मीरां नै गुर(रु) गरवा मिलीया[3] जब पायौ बिसवास ।। ४ ।।

१५९

म्हांरो वालो[1] विसां[2] विलंबि रह्यो ।।
मन का मोहन स्यांम जी जाइ विदेसां विलंवि(ब)यो ।। टे० ।।
गगन भव(वं)ती कुंजरड़ी हे कुरजां अेक संदेसौ ले जाइ ।।
म्हांरा स्यांमजी सौं यौ जाइ कहियौ प्यारी विरहन पांन न खाइ ।। १ ।।
काढि कलेजा[3] भुं(भू) धरौं कै ऊबाकूं[4] ले जाइ ।।
जा दिस मेरा पीवजी बसत है वां देखत तूं षा(खा)इ ।। २ ।।
पल पोली[5] पल आंगणै पल-पल ऊभी जा(जो)इ ।।
घायल जूं (ज्यूं)यूं मत फिरौ म्हांरो मरम न जांणै कां(को)इ ।। ३ ।।
राम मिल्यां जीवौ(वो) खरी[6] नहींतर छुटै देह(इ) ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर तुम विन किसा सनेह(इ) ।। ४ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७, से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २८१८७ से । पत्रांक-१

सं० पाठ १५८-१. कँवळ । २, ३. मिलिया ।
,, ,, १५९-१. वाल्हो । २. विदेसां । ३. कलेजो । ४. ऊभाकूं, ऊवांकूं
५. पोली ळी । ६. खरो ।

१६०

म्हे जास्यां सांवरीया र(रं) साथ्य[1] वाइ[2] म्हांन(नैं) जगत
हंसौ(हंसै) है ॥ टेक ॥
जगत हंसै हसि जांण दे री टहैल करां म्हे जाय ॥
माधुरी मु(मू)रति हिरदैं वसै म्हां तो चित में रही है लुभाय ॥ १ ॥
लोग कढ़वी (कुटंवी) निंदवै री प्रति[3] न घटाय[4] ॥
जव देखां तव ही सुख ऊपजै विनि देख्यां जीव[ड़ो] जाय ॥ २ ॥
सास ननद दे ली[5] वोलीवो[6] म्हांनां(रा) मात-पिता पछताय ॥
मीरा(रां) प्रभु(भू) गिरघर नी दासी अव कैसे रेऊ वा(वा)रि ॥ ४ ॥

१६१

म्हे तो जास्या(यां) सांवरिया रि(री) लारि[1] ये मुध्रा रै लारि[2] वाई ॥टेक॥
जगत हस्त(हंसत) हंसै न ध्रौहै ॥ टहैल करै(इ) संग जाय(इ) ॥
माध(धु) री मु(मू)रति मन वसो ॥ महारै(म्हांरै) हिरदै ॥
रही है समाय(इ) ॥ १ ॥
पद नु (नूं) प्रकटि किंकनी हो घुघरांन कौ भु(भं)णकार ॥
मीरा(रां) प्रभु(भू) जोन(नं) मोह लीनी कांई स दु(कहु) नंद-कंवार ॥२॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२, पत्रांक-१२६

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से । पत्रांक-८३

सं० पाठ १६०-१. साथै । २. वाई,माई । ३. प्रीत । ४. घटजाय । ५. देवैली । ६. ओलंभो ।
" " १६१-१. ल्यारी । २. अमीरी ।

१६२

यनको साझ(ध,ज)न राखतां छै भगति में ह्यंण ॥
देवर–जेठ म्हांरै कुवधि[1] नी(नि)त की राड़ै(ड़) पछाड़ ॥
घर-धंधा की वात कहत है म्हांरै दाय न आव(वै) ॥ १ ॥
पीहरी(रि)या रो लोग भलेरो बांधै कंठी माला(ळा)[2] ॥
छापा तिलक मनोहर बांना काटै जम का जाला(ळा) ॥ २ ॥
भोव–साग्र[3] म(में) सासरो पीहर साधा(धां) पास ॥
वहोड़[4] न अण जू(जु)ग आवस्यां यूं गावै मीरा(रां) दास(सी) ॥ ३ ॥

१६३

ये आज आवेंगे मेरै लाल वोलत सुभ वांनी(णी) ॥
कुच भुज फर(रु)कत कंचुकी दरकत करकै करीया[1] कर सरकत ॥
होर छतियां ऊलसानीं दीपग(क) झरत जोति ॥ १ ॥
जगमगांनी यांहू तें मैं जांनो अबै जुपांउ(ऊं)गी[2] ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु तन मन नोछावरि करौंगी ॥ ३ ॥
पीउ(ऊं)गी वारि वारि पानी ॥ ४ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७, से ।

सं० पाठ १६२-१. कु.बुद्धि । २. माळ । ३. भोसागर । ४. वहुड़, बाहुड़, वहुरि ।
,, ,, १६३-१. करियाँ, कड़ियाँ । २. जलाऊंगी ।

१६४

रघुवर मोंहि परना(णां)ई अमां मोरी ॥
सुन्दर सुघड़ सुजांन(ण) सांवरो जनम-जनम भरतार ॥ टे० ॥
मोर-मुकुट पीतांबर सौहै गल[1] मोती(ति)यन की माल[2] ॥ १ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण-कंवल[3] चित लाई ॥ २ ॥

१६५

रघुवर माधो री मु(मू)रत लीलवरन[1]घनस्यांम सीयावर माधो री मूरत ।टेक।
ध्ररग कर तारत सबको दाता मन सारी पूरन(ण) कांम ॥ १ ॥
जनकसुता-वर लक्षमण राजीं(जि)द कीट-मुगट[2] अभैराम[3] ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर चरण कमल नी(नि)ज धाय ॥ ३ ॥

१६६

रमतां लाध्या कांकरा सेवा सालगराम[1] ॥
यो मन लागो[2] हर-नांव[3] सू रमसां[4] साधां री साथ ॥
साध पधारया म्हे सुण्यां कानां सुणीं ग्रावाज ॥
सरवरो[5] साधां ने(नै) वैसणो दूध पखाळुं(ळूं) पांय ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० २८८४ से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से।

३. पिलानी से प्राप्त मीरां के हरजसों से।

सं० पाठ १६४-१. गळ। २. माळ ३. कंवळ।

सं० पाठ १६५-१. नीलवरण। २. किरिट-मुकुट। ३. अभिराम। ४. कमळ।

,, ,, १६६-१. साळगराम। २. लाग्यो। ३. नाम। ४. रमस्यां। ५. सरवर, सरोवर।

विसरा प्याला राणा जी मोकल्या[1] दीज्यौ मीरां रै हाथ ॥
कर चरणाम्रत पी गई भजु(जूं) रुगनाथ ॥
रांणों आघो होय नै जोइयो[7] मीरां मुई कै नांह ॥
पगां बजावे गू(घूं)घरा हाथां बजावै ताल(ळ) ॥
लाजै पीहर सासरो लाजै माय मोसाल(ळ) ॥
लाजै दु(दू)दाजी रौ वेसणौ दूजौ ची(चि)तौड़ी राव ॥
त्यारो पीहर सासरो त्तारचो[8] माय मोसाल(ळ) ॥
त्यारो दूदाजी रौ वैसणो दूजौ ची(चि)तौड़ी राव ॥
ओ मन लाग्यो हर नांव[9] सू(सूं) रमसां साधांरी साथ ॥
ओ मन लाग्यो गुर-ग्यांन सूं ॥

१६७

रसनां तूं राम वि(बि)ना मति बोल ॥ टेर ॥
ओर बोल्यां अपराध लगत है पड़त भजन मांहै झोल ॥ १ ॥
सुखरत सुमरण करलै री आंणीयै दोय वात अमोल ॥ २ ॥
जगत तंणी वातां सब झूंठी राम-नाम मुख बोल ॥ ३ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर की(कि)या छै गरभ म्हांहै[1] कोल ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से।

सं० पाठ १६६-५. सरवर, सरोवर, संवरो। ६. मोकळ्या। ७ जोयो। ८. त्यारों। ९. नाम।
„ „ १६७-१. मांई, मांही।

१६८

राखो र(रा)म हजूरि(री) वाला हम में वडी सबु(बू)री ॥
अज्योध्यापुर[1] में चाव[2] न्यानै[3] तो राखो र(रा)म हजूरी ॥ टेक ॥
हे जी सेरहू(हूं) सेरी वजरी दीज्यो न(ना)तर दीज्यो कूरी ॥
प(पं)चाअम्रत[4] कर-कर मंनु(मांनू) हमनें घडी(णी)[5] सबु(बू)री ॥ टेक ॥
हे जी वोढन[6] को कारी[7] कामरी[8] दीजे[9] न(ना)तर दीज्यो कु(कू)री कमल(ळी) ॥
मैरा जीव सों लागी धरत न मेळो(ले) दूरी ॥ टेक ॥
हे जी चारो ल्यासुं(सूं) पु(पू)लो[10] ल्यासुं(सूं) भैंस दुवासो[11] भूरी ॥
जीमन(ण) चू(जू)ठन(ण) करि-करि मेलु भारी ले'र हजु(जू)री ॥ टेक ॥
हे जी मु(मौ)र मुकट कांना कुंडल(ळ) सोहै और व(बै)जंतीमाला ॥
आठ पहर दरवार खड़ी रहु(हूं) काटो जीव का जाला(ळां) ॥ टेक ॥
मीरांवाई हरि गुन(ण) गावै चरन(ण) क(कं)वल(ळ) की दासी ॥
चरनणकंवळ की सेवा करसुं(सूं) चरनामति[12] की प्यासी ॥ टेक ॥

१६९

राज करे तेरो कानो वी(वि)रज को वि(व)सवो छाड्यौ ॥ टेक ॥
अ(इ)त गोकुल अ(उ)त मथुरा नगरी वी(वि)चे[1] नंदजुको[2] ठाढ़ो ॥ १ ॥
वरज जसोदा अपना(णां) लाल कुँ(कूं) जी(जि)त देखूं ती(ति)त आडो ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर मदन मीत जूको गाढो ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से । पत्रांक-८९-९०
२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १६६७ से ।

सं० पाठ १६८-१. अयोध्यापुरी । २. च्यावो, चाव है । ३. म्हानै, न्याव । ४. पंचामृत ।
५. घणीं । ६. ओढण । ७. काळी । ८. कामळी, कामळिया । ९. दीज्यो ।
१०. पूळो । ११. दुवास्यूं । १२. चरणांमृत ।
„ „ १६९-१. बीच । २. नंदजी को ।

१७०

रादै(धे) ने वंसी चोरी ॥
नई(हीं) है सोना की रादे(वे) नही हे रुपा की ॥
हरी(रि)अया वांस री पोरी रादै(धे) नै वंसी चोरी ॥
काग्रेसे[1] गाहु[2] राधे काग्रसे बजाई (वजाऊं) ॥
कांईसे(काहेसे) लाग्र(ऊं)गह(ऊ) गेरी[3]रादे ने व(बं)सो चोरी ॥
मुक(ख)से गावो काना[4] कर से वजाग्रो ॥
लकड़ी से लावो[5] धीन(धेनु) गेरी(घेरी) रादे नै वंसी चोरी ॥
मीरा(रां) के प्रबु(भु) गी(गि)रधर नागर प्रबु(भु) के चरण च(चि)तधारो ॥

१७१

राधे वासि[1] कीनी हो स्यांम सुजांन(ण) ॥
धन जी रानी कुषि[2] तुमारी धन जी पो(पि)ता वृखभान(ण) ॥ टेक ॥
सुनो रंगवेली राज गहेली कहाँ की(कि)या जी सागर रुप उजगार[3] ॥
अंखियां मं(में) जान[4] वी(वि)जांन ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर दीज्यौ जो भगत(ति) मोंहि दांन ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४९२२ पत्रांक-२८-२९
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से, पत्राङ्क-६१-६२

सं० पाठ १७०-१. काहे से। २. गाऊं। ३. घेरी। ४. कान्हा। ५. ल्यावो।
„ „ १७१-१. बसि, वश। २. कोखि, कूंख। ३. उजागर। ४. ज्यांन।

१७२

रामजी बिना कूं(कुं)ण करै म्हांरी भीर ॥ टेक ॥
ऐ(ए)क समै गजराज उबारयौ काढ्या जहर[1] जंभीर ॥ १ ॥
ऐ(ए)क समै प्रहलाद उबारयौ धारियौ नृसिंघ-सरीर ॥ २ ॥
ऐ(ए)क समै द्रोपति-पत राखी खैंचत वाढ्यो चीर ॥ ३ ॥
रांका भी त्यारया[2](रांमजी)बांका भी त्यारया-त्यारया[3]है कालूकीर ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू हरि अविनासी[4] वै साहिब गहर गंभीर ॥ ५ ॥

१७३

रांम-दिवांनी(णी) हो गई में(मैं) तौ राम दिवांनी(णी) हो ॥
भांवै लोक हांसी करौ मेरे मनमांनी हो ॥ टेक ॥
लोक कुटंब प्रवार[1] तज्यौ लैहों चात्रग पांनी(णी) हो ॥
स्वांत-बूंद रघुनाथ जी तन सूं ललनी हो ॥ १ ॥
प्रेमसुधा-रस पीवतां नही मे(मैं) छूं अघांनी हो ॥
गावै मीरां व्याकुली[2] हरि हाथ वे(बि)कांनी(णी) हो ॥ २ ॥

---

१. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६१ से

सं० पाठ १२७-१. जी हर । २. तारया । ३. तारया । ४. अविनासी ।

" " १७३-१. परिवार, परबार । व्याकुळ ।

१७४

राग खमायची

रांमजी मिलावै तौ फेर मिलैगे मिल वि(बि)छड़ौ मत कोई हो ।।टेक।।
लगन लगी जब लाज कहां रही निंद्यां करौ सब कोई ।। १ ।।
प्रीत करी मैं सुख कै कारण प्रीत की(कि)या दुख होई ।। २ ।।
आपतौ जाय व(बि)देसे[1] वसे हो मिलण किसी विध होई ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हूँण मतै सो होई ।। ४ ।।

१७५

रायघाट सब ढूंढ[1] फिरि ब्रंदावन[2] मेरो सांवरीये(रिया) ।। टेर ।
घर सैं निकसत मोकुं(कूं)छींक भई है आगे बांन सुना(णां)वै कागरी(रि)या ।।१।।
............गोकल लैइया क्या डौलै ।। २ ।।
हलका[3] हुवै सो डिगमग डोलै पूरा भया जब क्या डोलै ।। ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर [नागर] सायब[4] पाया तन औलै ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ से ।

२. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २०६से, ।

सं० पाठ १६८-१. बिदेस, विदेश ।

,, ,, १७५-१. ढुंढि । २. व्रीनराबन, वृन्दावन । ३. हळका । ४. साहिब ।

१७६

रुत आयां बोले मोर हरी(रि) विना जि(जी)व[1] दोरा ॥ टेर ॥
ऊमट[2] घुमड़ आई बदलियां[3] व(ब)रसत है चहुं ओरा ॥ १ ॥
दादर मोर पपैया बोलै कोकी(कि)ल है तन सोरा ॥ २ ॥
नंदि(दी) किनारे सारस बोले कहा जानूं(णों) पिया मोरा ॥ ३ ॥
मि(मी)रां कै हैं[4] गिरधर नागर हरि मिल्यां जि(जी)व शो(सो)रा ॥ ४ ॥

१७७

रेसुं[1] बावा नंद-घर चेरी ॥ टेव ॥
टेल करसुं(सूं)[2] सेवा करसुं(सूं) हरि के चरणां नेड़ी ॥ १ ॥
टेल के म(मि)स दरसंण करसूं धिन जीवन मेरी(रो) ॥ २ ॥
एक व(ब)न ढूंढ सकल[3] वन ढुढे ढु(ढूं)ढी वृ(ब्र)ज सगरी ॥ ३ ॥
व(बं)सरी को सबद सुंण-सुंण भई मगन घणेरी ॥ ४ ॥
सासु(सू)नणद मांरी[4] देवर जेठांणी सबही मिल ज(झ)गड़ी(री) ॥ ५ ॥
माहरौ[5] मन लागोरी[6] या सांवरी सुरत सुं(सूं)जख मारो सगरी ॥ ६ ॥
भली कहो कोई बुरी कहो मैं मा(मां)डली झोली(ळी) ॥ ७ ॥
दासी मीरां लाल गिरधर अज बनी जोड़ी ॥ ८ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से।

२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १६६७ से।

सं० पाठ १७६-१. जीवड़ा । २. उमड़ । ३. बदळिया । ४. कहै ।
,, ,, १७७-१. रेस्यूं । २. करस्यूं । ३. सकळ । ४. म्हांरी । ५. म्हांरो ।
६. लाग्यौ ।

१७८

लखता पल[1]मारे[2] मेल[3] पदा(धा)रो जी पल मारच्(म्हारे) ॥
उगेणौ[4] मारा[5] सासू जी वसत है आतु(थूं)णें गर[6] मारयोजी ॥
पल मारच्ं मेल पधारो जी पल मारच् ॥ १ ॥
जाजर वोल हाता(थां) में लीजो मुगट दुसाला सु(सूं) ढाकोजी ॥
पल मारच् मेल पदा(धा)रो जी पल मारच् ॥ २ ॥
मारा[7] तो घणौ[8] सगलोई[9] जासी गव-धन[10] जासी प्यारोजी ॥
पल मारच् मेल पदा(धा)रो जी पल मारच् ॥ ३ ॥
मीरांबाई के प्रवु(भु) गिरधर नागर हरी(रि) चरणां च(चि)त धारोजी ॥
पलमासु(सूं) पलमासु मेल पधारोंजी पलमासु ॥ ४ ॥

१७९

लग कोपैं मोहै न्यारो ॥ टेर ॥
घायल की गत घायल जांणै क्या जांणै ब(वै)द विचारो ॥ १ ॥
गलां[1] म(में) ऐक घारो[2] लघु[3] मैं प्रेम मगन मतवारो ॥ २ ॥
तेर(रे)भांवै कारीं कंवरी-वारौ[4] मैर[5] हे प्रांन(ण) कौ प्यारौ ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर पल पल प्राण अधारो(रो) ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४९२२ से । पत्राङ्क-१०

२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६६५ से ।

सं० पाठ १७८-१. पैल, पहिले । २. म्हारे । ३. महल, म्हेल । ४. अगूंणौ । ५. म्हांरा । ६. घर । ७. म्हांरो । ८. गे'णें, गेहणें । ९. सगळोई । १०. गो-धन ।
,, ,, १७९-१. गली । २. ग्वाळो । ३. लागूं । ४. कमळी वाळो । ५. मेरे ।

१८०

लागै सोई जांणे हेली मेरो मालक जांणें कठण लगन की प्रीत ॥टेर॥
में(मैं) जंगल की हीरणी री सजनी सतगुर(रु) मारचा तीर ॥ १ ॥
खेंच वांण सतगरु जी दीनो वोकुल[1] भयो सरीर ॥ २ ॥
लागी जब जाण्यां नहीं सजनी अब दुख देन[2] सरीर ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु कब रे मी(मि)लोगे सुखी करोगे सरीर ॥ ४ ॥

१८१

ले जा रे कागदवा नरसी जु(जी) क(के) पास ॥ टेक ॥
रांम-नांम कह दीजो रे सबन को और कहिज्यो साबास र(रे) ॥ १ ॥
कागद को विधि हय (हे) तुमारे तो आओ रथ साज रे ॥ २ ॥
सनमथि[1] मील ही[2] इण वोसर कठन[3] रहन तुम लाज र(रे) ॥ ३ ॥
बचन विन[4] आनंद ड(गि)रधर के गाव मीरा(रां) दासी रे ॥ ४ ॥

१८२

लेलो री भर लोचन लाहो ॥ टेक ॥
चरत सखी एक श्रीरंगपुर की देत सीख फी(फि)र फी(फि)र सव काहू ॥ १ ॥
असो सेट(ठ)कब ह[रि]पुर आवयाकी[1] कीवो[2] र[3] हरी(रि)-पुर आव(ऊ) ॥ २ ॥
दुर्लभ दरस सेस सनकादिक जनम-जनम सखी सव पछिताऊ ॥ ३ ॥
कोउ(ऊ) न हरक की(कि)या असुरन कू चार वरण नर-नार निबाहू ॥ ४ ॥
मीरां कह(है) मो निरभ(भै)कर जानुं(नूं) जन नरख्यो नरसी को साहू ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलेस, वीकानेर, के ह० लि० ग्र० सं० १७० से।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ५२, (इन्द्रगढ़ पोथीखाना) पत्रांक-१२३
३. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से पत्रांक-५

सं० पाठ १८०-१. व्याकुल। २. देत।
,, ,, १८१-१. सनमुख,सन्मति। २. मिलो(आयमिलो)। ३. कठिन,। ४. विन, विना।
,, ,, १८२-१. आव्याकी, आवे यांको। २. किधो, किनो, कैज्यो। ३. रे।

१८३

वन[1] आवै तो हरी(रि)-गुण गाय लै रे ॥
गोवीं(विं)द-गुण गाय लै रे ॥ टेर ॥
कहां रे भयो सपद ठाडे र(रे) जटा रे बधाई ॥
कहा भयौ हरी भभु(भू)त लगाय(ई) ॥ १ ॥
मीरां कैहै[2] प्रभु गी(गि)रधर नागर ॥
हरि-चरणां ची(चि)त लाय ले रे ॥ २ ॥

१८४

वरस(सै) कु[1]नहीं पांणी हो गुमांनी मेहा ॥ टेर ॥
वरसत कु नहीं पांणी ॥ टे०
या वन सव(ब) रे सुकै[2] वनसपती कुमलांणी हो ॥ १ ॥
दादर मोर पपई(इ)या बोलै कोयल मुधरी सी बांणी हो ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर व्रज-वनता बिलवाणी[3] हो ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६, से ।

सं० पाठ १८३-१. वण, वनि । २. कहै ।

,, ,, १८४-१. १. क्यूं । २. सूखै । ३. बिलमांणी ।

१८५

राग सोरठ

वाजूवं(बं)ध तूट पड्यो हसत खेलत आधी रात ।। टेक ।
घर जायां मोरी सासु(सू) लडैगी देख अवीणो[1] हात(थ) ।।
कहो कौंन विध जाई(इ)ये सजनी चित आयो परभात ।। १ ।।
आज की रैंन चैंन सों वी(बी)ती सुंदर प्रीत्म(तम) साथ ।।
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर प्रेम-मगन भई गात ।। २ ।।

१८६

वा(बा)ट वैऊंता वि(वी)र वटाउड़ा वाला को'ऐ रे दवारका नै जाये(य) ।।
गोपि(पी) संदेसो मोकळे रे वाला ओरे(र) जसोदा मायै(य) ।।
सांवरी(रि)आ नै कैजो[2] रे समजाऐ(झाय) ।। टेर ।।
खीर न पीये थांरा वाच्छ(छ)ड़ा[3] रे वाला वन-वन ढूंढी[4] थांरी गाऐ(य) ।। १ ।।
जल जमना रो-ऊमंग्यो नही रै वाला ।।
कुंजर-ई क(के)म तारचौ सांवरा कुबजा आवी थारी दाय ।। २ ।।
कौयल ज्यूं काली भई बागल ज्यु(ज्यू) वरलाय माखी ज्यों(ज्यूं)
मल को भाय ।। ३ ।।
जब लग सांस सरीर मै(में) तव लग हरी(रि)गुण गाऐ(य) ।। ४ ।।
दासी मीरां लाल गिरधर दरसण दीज्यो आऐ(य) ।। ५ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४४ से । पत्रांक-८५

२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १४५, से ।

सं० पाठ १८५-१. आमीणों ।
,, ,, १८६-१. कोई । २. कहज्यौ । ३. वछड़ा । ४. ढूंढो ।

१८७

वाता तो म्हारी[1] हो वारी[2] जी आ(या)द रहेला ॥ टेर ॥
जब ची(चि)त आवे सांवरी स(सू)रत को आडी अवली वहेला ॥ १ ॥
पु(पू)रब जनम री प्रीत सा(सां)वरी(रि)या सोई वात वर्णेला ॥ २ ॥
होणी होई सोई विदना(विध) होली सोच करै सो ही गैला ॥ ३ ॥
मीरा के प्रबु(भु) गी(गि)रधर नागर प्रीतड़ली दुख देला ॥ ४ ॥

१८८

राग मारु

बावरी कीन्ही हो वंसी बावरी कीन्ही ॥
असन वसन ग्रहे[1] भु(भू)लै तन-गत हर लीन्ही ॥ टेक ॥
ऋछु[2] को रंग-रांग राग-मत्र[3] होऐ देह दीनी ॥ १ ॥
चात्रग ज्यु(ज्यूं) वूंद ववीसईसा[4] मे आधीनी ॥ २ ॥
कहा कहु(हूं) कछु कहेत न आवै तन-गत[5] गई छीनी ॥ ३ ॥
मीरा(रां) प्रभु(भू) नी(नि)रखत वहु भई लवलीनी ॥ ४ ॥
हो वंसी बावरी कीन्ही(हो) ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७०, से।

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० २०६ से।

सं० पाठ १८७-१. थांरी, तुम्हारी। २. बिहारी।

,, ,, १८८-१. गृह। २. ऋषि, ऋछु। ३. रागमत्त, रागमंत्र। ४. विश्वास।
५. तनगति।

१८९

व्रजहू की रज में(मै) तो भई कु(क्यूँ)नी वीरा रे ॥ टेक ॥
पड़ी रहत गोकल की डगर में उड-उड लागु(गूं) मै सांम-सरीरा रे ॥ १ ॥
मोरे तो सी(सि)र पर प्रभु पांव धरत है सरवणै[1] सुणत वंसी वट वीरा रे ॥ ३ ॥
वाट-घाट व्रंद्रावन-कुंजन सीतल परसत पवन समे(मी)रा रे ॥ ४ ॥
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर होय गयो सव सुख मिट गई पीरा[2] रे ॥ ४ ॥

१९०

व्रंदावन नी(नि)ज धाम देख्यौ री मैं व्रंदावन नी(नि)ज धाम ॥टेरा॥
श्री जमुना ज्याकै नी(नि)कट वैहत[1] है सव विध पु(पू)रण कांम ॥ १ ॥
श्री वलदेव माहावनौ[2] गोकल मथुरा जी विच रांम ॥ २ ॥
गोवरधन श्री मांणसी गंगा व(व)रसाणै नंदगाम ॥ ३ ॥
कु(कुं)ज-कुंज में कथा व्रसत(वचत) है नी(नि)स-दिन आठुं जांम ॥ ४ ॥
मीरां कैहै प्रभु गो(गि)रधर नागर संतन कै वी(वि)च रांम ॥ ५ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९, से ।

सं० पाठ १८९-१. श्रवणै । २. पीड़ा ।

" " १९०-१. वहत । २. महावली, महावन ।

१६१

व्रंदावन मोहन दध लु(लू)टी ॥ टेर ॥
कहा तोरो हार कहा नख-वेसर कहा मोतीग्रन की लड़ टु(टू)टी ॥ १ ॥
गोकुल हार मथुरा नख-वेसर कुंज-गली में लड़ टूटी ॥ २ ॥
वरजो जसोदा मइया[1] तेरा लाल ने खाई मरुगा[2]वी(वि)स-गु(घूं)टी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु हरी अवीनासी[3] सब रस दे गुजरी छु(छू)टी ॥ ४ ॥

१६२

सतसंग स(सूं,से) किन(ए) टाली ये माई(य) ॥ टेक ॥
सतसंग विन दोहोरी[1] कदिय[2] न सहोरी[3] ॥
तलफ-तलफ जीव जाव(वैं) री माय ॥ १ ॥
जेठानी खोटी देवरा[नी] [खो]टी यो जीवन कस[4] होसी ये माय ॥ २ ॥
देवर खोटो सुसरो अपरादी[5] नणदल कह छ[6] न्यारी हो जाये माय ॥ ३ ॥
पड़ौसणये[7] मिल लेऊं न(नि)त नेमि(मी) कस जीवन होसी ये माय ॥ ४ ॥
मीरां कह(हे) मी(मि)थुला इण वौसर[8] कवरी व्रंहन[9] ॥
गाव(वैं)री मा[य] ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

१. रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से। पत्रांक-२-३

सं० पाठ १६१-१. मैया। २. मरूंगी। ३. अविनाशी।

" १६२-१. दोरी। २. कदी। ३. सोरी। ४. कैसे। ५. अपराधी। ६. कहे छै।
७. पडोसणियां। ८. अवसर। ६. विरहिण।

१९३

राग सोरठ

सवसूं पतम[1] भज्यै गोपाल ।।
कोट-करम भं(जं)जाल जीव कै मीटे जम कै जाल ।। टेर ।।
प्रहलाद की प्रतंग्या राखी ध्रूकुं[2] इवछ(च)ल[3] राज ।।
वभीषरा कुं(कूं) लंक(का) दीनी सायर वांधी पाज ।। १ ।।
क्रस्रा सुदामा बाल-लीला पढै ची(च)टसाल ।।
कंचन-महल वरााय दीना(नां) जडत हीरा लाल ।। २ ।।
ई(इं)द्रदेव रिसाय वरषै डरै ब्री(ब्रि)ज के बाल ।।
अ(आं)गली पर धार[4] गी(गि)रवर राख ली(लि)यौ नंदलाल ।। ३ ।।
सकल ब्रिज मैं(में) अरांद होत है घर-घर मंगलाचार ।।
दासी मीरां लाल गिरधर हर(री) लिया अवतार ।। ४ ।।

१९४

सांकड़ी लौ[1] मै(में) हानैं(म्हांनैं) सतगुर(रु) मिलिया ।।
कींकर फिरूं रे अफूटी ।। १ ।।
सासु(सू) वूरी है मारीं(म्हांरी) नराद हठीली वल मीरां कै प्रभु-
गिरधर नागर ।। २ ।।
चरण-कंवल पर वारी जथ भई रे अंगीठी । ३ ।।
साध संगत मैं(में) नित उठ जातां दुरजन लौकां दीठी ।। ४ ।।
मे(मै) (म्हां)मांरी गिरधर न्याव नवेरो[2] और दुनी[3] सब भूठी ।। ५ ।।
भावै कोई न(निं)दो भावै कोई वंदो चलसी चाल अफूटी(ठी) ।। ६ ।।
मीरां केहै प्रभु गिरधर नागर चढगौ रंग मजीठी ।। ७ ।।

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि ग्र० सं० ७६३६ से ।
२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८७ से ।

सं० पाठ १९३-१. प्रथम २. ध्रुव कूं । ३, अविचल । ४. धारचो ।
„ „ १९४-१. गली । २. निवेड़ो । ३. दुनिया ।

१९५

सांवरे तोय रंग भरूंगी ।। टे ।।
चौवा चंदन और अरगजा केसर घौर(ल) धरूंगी ।।
आवौगे विसवासी कुंजन देखत दाव फी(फि)रूंगी ।। १ ।।
जौ तो मैं आंन जाय पकडूं ले पी(पि)चकारी जडु(डूं)गी ।।
तुम सो(छो)री(रे) ढौटा नंद-मैंर[1] का काजल-रेख करूंगी ।। २ ।।
ब्रिंदावन की कुंज-गलन में तौ संग रास रमूँगी ।।
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर तौ सिर छत्र धरूंगी ।। ३ ।।

१९६

सांवरै मोय रंग भर डारि(री) देखै सब लोघ(ग) खेलारी ।। टे० ।।
सेज[1] सभाव स(च)ली जल जमुना पै [हर] वसंती सारी ।।
आपई ठाढी कदम की सई(छइ)यां हाथ लिवी पी(पि)चकारी ।।
सखी वांकै छ(स)नमुख मारी ।। १ ।।
अंगी(गि)या भीजोई मेरा लैंगा भीजोया और भीज(जो)ई दई सारी ।।
हेरी सखी घर काहा कहु(हूं)गी अैसोई ढोटौ[2] विहारी ।।
सखी वांकै सि(चि)त पर वारी ।। २ ।।
सो(चो)ली का रंग सबई उतर गया लैंगा होय गया भारी ।।
मैं पतली सी ली(लि)प[ट]जाय कमर में चंचल सासु(स) हमारी ।।
सखी मोकु(कूं) डर लागै भारी ।। ३ ।।
या ब्रज को प्रभु लोक स(छ)वियों[3] हंस-हंस दै मोये तारी ।।
मीरां कै प्रभू गो(गि)रधर नागर चरण-कंमल बलिहारी ।।
सखी में तो सबसै न्यारी ।। ४ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

सं० पाठ १९५-१. नन्दमेहर ।
,, ,, १९६-१. सहज । २. ढोठो । ३. छवैयो ।

१९७

सेटा(ठां)णी जी चाल्या वो।ओ)लूड़ी[1] लगाये ।। टेक ।।

क(कि)रपा मौ पर घणीं राखज्यो दरसण दोज्यो फेर आये ।। १ ।।

लक्ष्मी कह(है) सुनु(णों)पुर की नारी वो कंवरी कि[2] तुम माये ।। २ ।।

मीरा(रां) कह(है) मोथुला यण वोसर[3] लखमी लागत पाये ।। ३ ।।

१९८

सुषमण[1] मौं हर[2] विसरत नाय ।। टेर ।।

सरब सोना र(री) बणी रे दुवारका मुथरा की सब नाय ।। १ ।।

न(नि)रमल जल जमुनाजी कौ आचमन गै'री[3] कदम की छांप(य) ।। २ ।।

मैं दध वैचन जात विंद्रावन गौरस को रस नाय ।। ३ ।।

मीरां के प्रभू गी(गि)रधर नागर हरी(रि)-सरणा[4] ची(चि)त लाय ।। ४ ।।

१९९

हम ईसट[1] हमारो ध्यावैं ओर दाय नही आवें ।। टेर ।।

पी(पि)छली रात हात(थ)सेवा कर पीछे भोजन पावै ओर कहा नही जावै ।।१।।

भैरूं पीर मीर भेरंव[2] हम नहीं सीस नमावे ।। २ ।।

बाद-वी(वि)बाद आद[3] नही आवै दरद गम[4] कू खावे ।। ३ ।।

मीरां के प्रभु भणे भवसागर रे'त[5] सदा नी(नि)रदावे ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से।

२. राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९ से।

३. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से।

सं० पाठ १९७-१. लूरी, लूंगी। २. की। ३. ओसर, अवसर।

,, ,, १९८-१. सुख, मन, सुषुम्णा, रुक्मण। २. हरि। ३. गहरी। ४. चरणां।

,, ,, १९९-१. इष्ट। २. भैरवी। ३. आदि, याद। ४. हम(?)। ५. रहत।

२००

हम करें कहन[1] की सेवा तव पावेगी नी(नि)ज भेवा ॥ टेर ॥
काटसा[3]-नगर में त्यारी हे सगरी मींदर[4]-अंदर देवा ॥ १ ॥
हरिजन-धारा[5] सु(सूं) अंग धोय डारा जाप साख[6] कर नेवा[7] ॥ २ ॥
करणी की केसर चढ़े परमेसर प्रेम-पुसव मन-मेवा ॥ ३ ॥
मेहर म(में) मुकट लुकट हात(थ) मैं जनान(ना) के गे'णां पेरवा ॥ ४ ॥
मीरां भणै गढ भीतर रई सब विद[8] करता(ती) सेवा ॥ ५ ॥

२०१

हमारै पै काहे कु(कूं) खीजो ब्रजनारी ॥ टेक ॥
अपनो भाग सोच नही देखो क्रहन[1]-क्रपा कछु न्यारी ॥ १ ॥
सब बेलन मै कड़ी[2] तूमड़ी ले कु(कू)]ड़े] म(में) डारी ॥ २ ॥
आइ(ई) हात(थ) जंत्र तंत्री क(कै) बाज़त राग सुढारी ॥ ३ ॥
टेडो(ढो) अंग सीद्रोई[3] मेरो जान जात पाती कुल नारी ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर हर अपने हात(थ) सुधारी ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं १६० से ।

सं० पाठ २००-१. कान्ह, कवन । २. मेवा(?) । ३. काया । ४. मन्दिर । ५. हरि-जलधार
६. सांस, सहस्र । ७. नेमा । ८. विध, विधि ।
" " ४०१-१. कृष्ण, कान्ह । २. खड़ी । ३. सों द्रोही, सीधो ही । ४. सूं धारी ।

२०२

हमारौ फगवा दे गी(गि)रधारी ॥ टेक ॥

गहै वनमाल जौह कर वाकी मांग(गै) राधा प्यारा ॥ १ ॥

नीची डीठ[1] कीये[2] नहीं छुट(टि) हौ क्यौंहू[3] कुंज-वी(वि)हारी ॥ २ ॥

कै तो देहु नाहै तो अवै हु(हू) नीकस अेव ताहारी[4] ॥ ३ ॥

तनै नहीं राखा(ख)त मनोहर[5] रंग बड्यौ[6] अत(ति) भारी ॥ ४ ॥

जान(जन) मीरा(रां) रसकी भगरन पैर नी(नि)रण[7] हौत बलहारी ॥ ५ ॥

२०३

हरी-चरण[1] ची(चि)त लायो राजी म(मैं) तो हरी(रि)-चरणां चित लायो ।टेर।

राजपाट भूठी सव माया वो भूठो जग दिखलायो ॥ १ ॥

सतगुर(रु) सांमी[2] अंतरजामी वो पूरव पुन(न्न) मिलायो ॥ २ ॥

जनम-मरण का सांसा[3] मेट्या वो निरभै सवद सुणायो ॥ ३ ॥

नंदलाल मथुरा-पुर-वासी. वो रोम-रोम तन छायो ॥ ४ ॥

मीरां कह(है)प्रभू गी(गि)रधर नागर चरणां में सीस नंवायो ॥ ५ ॥

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७ से । पत्रांक-५४

२. संत साहित्य संगम बीकानेर के ह० लि० ग्र० से ।

सं० पाठ २०२-१. दीठ, दृष्टि । २. किये । ३. कवहू । ४. तिहारी, ता हारी ।

५. मान मनोहर(?) । ६. वढ्यौ, वढ्यौं । ७. निरख. निर्णय, नीर-गहीत ।

„ „ २०३-१. हरि-चरणां । २. स्वामी । ३. संशय ।

२०४

हरि व(वि)न चरना क(कि)त धरजौ [नित] उठ मारग जोउ(ऊं) हो ।।टेक।।
तोर(रै) कारण साईयां भर नींद न सोउ(ऊं) हो ।। १ ।।
हरि व(बि)ना सूरत क(कि)त धरजौ मनसा न(नै) बेसारजौ[1] [हूं]हो ।।
न(नि)जर पड़ा त(तु)म उ(ऊ)परै मन-तन[2] वारजे[3] [ऊं] हो ।। २ ।।
अव(वि)न्यासी[4] आया सुन्या(सुणिया) मन-वन[5] धपाई [हूं हो] ।।
मीरां कै दिल माहिला [सारा] दुख [री] टेर सुणाउ(ऊं) हो ।। ३ ।।
वावरिया(यो)[6] कव [इहां] आवसा(सी) कोई कह(है) सनेसा हो ।।
मीरां कहै अ(ऐ)सी वात का प्रभू खरा अनेसा हो ।। ४ ।।

२०५

राग मलार

हरि सैं टेरि कही री द्रौपता ।।
तुंम जनि सौ हौ स्यांम सुंदर वरजे ती(ति)म जस हो(ही) ।। टेक ।।
मै [रि] पति पंच पंचन-पति तुम हौ तंम पति काहा रही ।।
भीखम करण द्रौंण देखंतां दुसासन वां(वां)ह गही ।। १ ।।
सब ठाढे नृपजु(जू) के आगे मिथ्या भाख सही ।।
ऐसो कोई रे न दीसत तासैं थासूं) कौहौ दटो[1] ।। २ ।।
जवर(वरे) सुनी जादूपति-नाथे(य)क कीन्ही साहाये सही ।।
मीरां दासी गी(गि)रधर की म्हमां[2] का पै जात कही ।। ३ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३१०७७ से । पत्राङ्क-२६

सं० पाठ २०४-१. विसारजो । २. मन ते न(?) । ३. वारी जाऊं, वार जोऊं ।
४. अविनाशी । ५. मनवा ने । ६. सांवरियो ।

" " २०५-१. कौ हो दई, कहै देही । २. महिमा ।

२०६

हे जी नरसी जी मा(म्हां)रो लहरचो भीज(जै)छ(छै)जी राज ।। टेक ।।
लहरचौ भीज रंग चुत्र(चूवै) छ(छै) भीज(जै) मारो नोसर-हार ।। १ ।।
काली पीली घटा ऊमगे आई वरसै मूसलधार ।। २ ।।
मीरा(रां) कह(है) मीथुल इण वोसर गावत ह(है) सब नार ।। ३ ।।

२०७

ह(हे)जी म्हारा नैना में सलूनो पानी अलक साम कत गओ(यो)री ।।
जादू कर क(के) ।। टेक ।।
पात-पात व्रंदावन ढूंडी(ढी) कुंज-कुंज सबर(रे) देक(खे) ।। १ ।।
मोर-मुकट पीतांव्र(वर) सोवै कानां कुंडल अलक(कें) ।। २ ।।
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर चरन-कंवल च(चि)त अटक(के) ।। ३ ।।

२०८

राग सोरठ

हे मां मुरली व(ब)जाय मेरो हीयो ला(लि)ए जाय ।।
विनि देखे मोहनी मूरति छिनि जी(जि)या ललचाय ।। टेक ।।
स्यांम व(व)रन तन ऊपरि सजनी पीते वसन फै(फ)हराय ।।
मीरां [के] प्रभु गिरधर नंदलाल(ला) मेरै(रो) रु-रु[1] रह्यो है लुभाय ।। १ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७ से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०(इंद्रगढ पोथीखाना)५२ से पत्राङ्क-२८

३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से। पत्रांक-१२६

सं० पाठ २०८-१. रू-रू, रोम-रोम।

२०६

हेरी मतवारो ठाढो मोरी वाट ।। टेक ।।
हैरी हाहा करत है तेरे पांय परत हों विनती करत मोपै ।। १ ।।
भईया साहाजा [दा ?] अेसो री लंगर ठाढो कनैया ।। २ ।।
मारग रोकि मोपै आढो[1] ठाढो री ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरि-चरना चित लाग्यो सुगर ।। ४ ।।

२१०

हेरी हेली मेरो मन चोरयो आली नंद मेरी चितवन,
चित मो(मेरो) चोर ।।
हेली हूं ठाढी श्रीता[1] ऊपरे मेर(रे) नन[2] करि गयो घात ।। टेक ।।
हेली पंछी वारहै[3] सांवरौ मुधरी सी व(बै)न वज(जाय) ।। १ ।।
'राये राये राची का'[4] मेर(रे) सरवनन[5] गयो सुनाश्रे ।।
हेली आंन[6] सगि हो लो पैण ताकौ कौन उपाऐ ।। २ ।।
प्रान वीन तन क्यौ रहा[7] सो तुमहि(ही) [दो] वताए ।।
मो गति भई जसै मीन मैं तो हु(हू) जल वी(वि)न जीव(वे) ।। ३ ।।
हेली नंदलाल हतौ राधिका हु हती नंदलाल ।।
तौ वीरहनि दुख जानतौ वी(वि)रहनी येही हवाल ।। ४ ।।
हेली मोहन अगमी डाहर मोही रुंमभुम सतकमार ।।
मीरा(रां) न(नै) गी(गि)रधर मी(मि)ल्या नेरी राखू(खो) भरतार ।। ५ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२ से पत्रांक-४३

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७ से, पत्रांक-७६

स० पाठ २०६-१. आडो ।

,, ,, २१०-१. सीना । २. तन, नैणां । ३. बारै, बाहिर । ४.'—'राधे राधे राधिका(?) ।
५. श्रवणन । ६. अन्य । ७. कर रहसी ।

२११

हेली म्हांरे आनंद मंगलचार ॥ टेक ॥
करु सं(सिं)गार रहूं सेझ समांरी प्रसुं(भु) हरि भरतार ॥ १ ॥
पंच सखी मिल मंगल गावै होइ रहै(ही) जै–जै–कार ॥ २ ॥
तन–मन आप अरपूं स्याम कूं विलसुं(सूं)–सुख अपार ॥ ३ ॥
अपने पी(पि)या गलि लागी रहूं अब निरखो नेना निंहार ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु अव नां छाडूं राखौ ज्यूं गल–हार ॥ ५ ॥

२१२

फाग लीखते

हो र(रु)त आई फागरण ग(घि)र आई ॥
रसी(सि)आ र(रु)त आई कोग्रेल के[1] प्रवु[2] वेग पधारो ॥
ग्रे जी लाला चेरी के ग(घ)र तुम कई बसी(सि)य्या ॥ टेर ॥
ल(लि)ख ल(लि)ख पती(ति)या उद(ध)व संग भेजी(जि)ग्रां ॥
हे जी लाला जादु(दू) कीदा (तुम) सासां बीचा वसी(सि)यां ॥ टेर ॥
मीरां के हर वेग पधारो हो जी लाला चरण कंवल–च(चि)त
धार ली(लि)या ॥

---

१. राज० शो० ० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ८२९१ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४९२२ से । पत्रांक-३२

सं० पाठ २१२-१. कूकै । २. अव प्रभु ।

२१३

होरी फागण का दिन में प्रीतम तज गए देस ॥ टेर ॥
कहा करूं कित जाउ(ऊं) मौरि सजनी मो मन वड़ो रे अंदेस ॥ १ ॥
दिन नहि भूख रैण नहि निद्रा सिर पर छूटे केस ॥ २ ॥
तोरै तौ कारण वन-बन ढुंढ्यौ कर जौगण को भेस ॥ ३ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर [नागर] तन-मन छूटे केस ॥ ४ ॥

२१४

श्रीबदरिनाथ तुमारो दरसण भाग विना नही पावै ॥ टेक ॥
सीकां उतरे भा भूला उतरे बकरा वालद लावै ॥ १ ॥
मन भंग सीत भंग कर पार लग(गै)है पंचो(छी) सबद सुनावै ॥ २ ॥
तपत-कुंड असनान करै तो प्रलै होय जावै ॥ ३ ॥
मीरां कै प्रभु गिरिधर नागर हरख-निरख गुन गावै ॥ ४ ॥

२१५

श्रीरंगजी की नार देखो थान(थांनै) सांवर(रो) सेठ बुलावै ॥ टेक॥
आज कीरन बसागां समदन हरद(दै) ग्यान विसेखो ॥ १ ॥
कोकिल भास भर(रे) लखमीजी मधुर व(बै)न गवरी को ॥ २ ॥
मीरां कह(है) मिथुलायन वोसर धन्य भाग कंवरी को ॥ ३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ, पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९६, से।
३. रा० शों० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से ।

परिशिष्ट (१)

राग-रागिनी पद-संग्रह

१. राग मलार, ताल-त्रिताल

अजुह न लिदी साम मोरी खब्रीया[1], ब्रसण[2] लागी बेरण वदलिया।
अजुह न लीदी पीया मोरी खब्रीया। टेक।
हे जावो री पतनीया मोरी खब्रीया, काहा वलमे पीया कोहण नग्रोया[3] ।अ०।
मेरे पीया प्रदेस गवन कीया, जोवत हु मे उनकी डग्रीया ।अ०।
ज्यो पीया आवेंगे आज का हाल में तो, मे रहुगी भुन पकड़ीया ।अ०।
मीरा के प्रबु (भू) ग्रध्र[4] नाग्र[5], हरके चर्ण[6] मेरो चत हु लग्रीया[7] ।अ०।।
[कृति पत्रांक २१]

२. राग देवीचंद ताल कहरवा

अब केसे नीकसन हो दईया, होलि खेले कनईया।
मेरो अब केसे नीकसन हो दईया, होलि खेले कनईया। टेक।
हे सासरे जाउ तो सासु लड़त हे, मे तो पीहर जाउ तो लड़े मेरी मईया।
हे अत डर उत डर भुल गई, में तो मोहन संग खेलु ता थईया। हो०।
हार डोर मेरो सगलो भीजीयो, ओर भीजाई पीलि पगड़ीया।
मे अपना प्रीतम कु केसे भीजोउ, ओड लिवी काली कमलिया। हो०।
वे ब्रजवासि खेलण नीकसे, संग चली ब्रज की सुखीया। हो०।
मिरा के प्रवु ग्रध्र नाग्र, चर्णजीव रहो नंद के छईया। हो०।
[कृति पत्रांक २६]

नोट—रागरागिनी पद संग्रह के प्रस्तुत समस्त पद राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के हस्तलिखित ग्रंथ संख्या २५५३६ से लिए गए है। चूंकि प्राप्ति स्थान और ग्रंथ संख्या इन रागरागिनी के समस्त पदों की एक ही है अतः प्रत्येक पद के साथ ग्रंथ संख्या, और प्राप्ति स्थान का उल्लेख (अलग से) नहीं किया गया है। अतः इन ५० पदों का प्राप्ति स्थान और ग्रंथ संख्या एक ही समझा जाए।

शुद्ध शब्द रूप—१. खबरियां। २. वरसण। ३. नगरिया। ४. गिरधर। ५. न.गर।
६. चरण। ७. लगरिया (लग रहा)।

२१३

होरी फागण का दिन में प्रीतम तज गऐ देस ॥ टेर ॥

कहा करूं कित जाउ(ऊं) मौरि सजनी मो मन वड़ो रे अंदेस ॥ १ ॥

दिन नहि भूख रैण नहि निद्रा सिर पर छूटे केस ॥ २ ॥

तोरै तौ कारण वन-वन ढुंढ्यौ कर जौगण को भेस ॥ ३ ॥

मीरां कहै प्रभु गिरधर [नागर] तन-मन छूटे केस ॥ ४ ॥

२१४

श्रीवदरिनाथ तुमारो दरसण भाग विना नही पावै ॥ टेक ॥

सीकां उतरे भा भूला उतरे वकरा वालद लावै ॥ १ ॥

मन भंग सीत भंग कर पार लग(गै)है पंची(छी) सवद सुनावै ॥ २ ॥

तपत-कुंड असनान करै तो प्रलै होय जावै ॥ ३ ॥

मीरां कै प्रभु गिरिधर नागर हरख-निरख गुन गावै ॥ ४ ॥

२१५

श्रीरंगजी की नार देखो थान(थांनै) सांवर(रो) सेठ बुलावै ॥ टेक॥

आज कीरन वसागां समदन हरद(दै) ग्यान विसेखो ॥ १ ॥

कोकिल भास भर(रे) लखमीजी मधुर ब(वै)न गवरी को ॥ २ ॥

मीरां कह(है) मिथुला यन वोसर धन्य भाग कंवरी को ॥ ३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ, पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, से।

३. रा० शों० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से ।

परिशिष्ट (१)

राग-रागिनी पद-संग्रह

१. राग मलार, ताल-त्रिताल

अजुह न लिदी साम मोरी खब्रीया[1], ब्रसण[2] लागी वेरण वदलिया।
अजुह न लीदी पीया मोरी खब्रीया। टेक।
हे जावो री पतनीया मोरी खब्रीया, काहा बलमे पीया कोहण नग्रीया[3] ।अ०।
मेरे पीया प्रदेस गवन कीया, जोवत हु मे उनकी डग्रीया ।अ०।
ज्यो पीया आवेगे आज का हाल में तो, मे रहुगी भुन पकड़ीया ।अ०।
मीरा के प्रबु (भू) ग्रध्र[4] नाग्र[5], हरके चर्ण[6] मेरो चत हु लग्रीया[7] ।अ०।।

[कृति पत्रांक २१]

२. राग देवीचंद ताल कहरवा

अब केसे नीकसन हों दईया, होलि खेले कनईया।
मेरो अब केसे नीकसन हो दईया, होलि खेले कनईया। टेक।
हे सासरे जाउ तो सासु लड़त हे, मे तो पीहर जाउ तो लड़े मेरी मईया।
हे अत् डर उत डर भुल गई, में तो मोहन संग खेलु ता थईया। हो०।
हार डोर मेरो सगलो भीजीयो, ओर भीजाई पीलि पगड़ीया।
मे अपना प्रीतम कु केसे भीजोउ, ओड लिवी कालो कमलिया। हो०।
वे ब्रजवासि खेलण नीकसे, संग चली ब्रज की सुखीया। हो०।
मिरा के प्रबु ग्रध्र नाग्र, चर्णजीव रहो नंद के छईया। हो०।

[कृति पत्रांक २६]

नोट—रागरागिनी पद संग्रह के प्रस्तुत समस्त पद राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के हस्तलिखित ग्रंथ संख्या २५५३६ से लिए गए है। चूंकि प्राप्ति स्थान और ग्रंथ संख्या इन रागरागिनी के समस्त पदों की एक ही है अत: प्रत्येक पद के साथ ग्रंथ संख्या, और प्राप्ति स्थान का उल्लेख (अलग से) नहीं किया गया है। अतः इन ५० पदों का प्राप्ति स्थान और ग्रंथ संख्या एक ही समझा जाए।

शुद्ध शब्द रूप-१. खबरियां। २. बरसण। ३. नगरिया। ४. गिरधर। ५. नागर। ६. चरण। ७. लगरिया (लग रहा)।

३. राग केदारा ताल कहरवा

अया तो छव (नेण) नरखो नागर नटकी । टेक ।
तो बन (बिन) मारे कुल ण पडत हे, सावली सुरत (मारे) हरदे अटकी । या० ।
अत गोकल (उ)त मुथरा नगरी, अदवीचे (मारी)दद (की) गागर झपटी । या० ।
मोर मुगट मक्राकरत कुंडल (ळ), सोबा (भा) प्रीतांब्र[1] पटकी । या० ।
मीरा के प्रबु(भू) (गि) गरधर नागर, चरण कमल चतवन अटकी । या० ।

[कृति-पत्रांक. २३]

४. राग काफी ताल त्रताल

आज मारो लालजी गआसे रीसाअे रे । आ० । टेर ।
हे कुवज्या वन[2] कोही मान न्हि[3] करे, उण ही लिआ भ्रमाऐ (रे) । आ० ।
सुनि सुनि सेज्म्हे[4] ओजक उठु क्र[5] जगु, कुणि शु घालु गलबांअ रे । आ० ।
धुप दीप ले क्रु [6]आरती, लल (ळ) लल (ळ) लागु हरे[7] पाअे (रे) । आ० ।
हात जोड़ करु बिणती, छन्म्हे[8] लु (ल्यूं) मनाअे रे । आ० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र[9] नाग्र[10], राखो चर्ण वमल री छाअे रे । आ० ।

[कृति-पत्रांक. १७]

५. राग खमाच ताल तिवरा

आज मारे मंद्र[11] मगलाचार रे । आ० । टेक ।
राम लछम्ण मारे मद्र[12] पद्राया[13] । काई अे करु (रूं) मनवार रे ॥१॥ आ० ।
हे धुप दीप ले क्रु[14] आरती । लल (लुळ) लागु हर रे पाअे रे ॥२॥ आ० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र[15] नागर । हर चरण. चत लाव. रे ॥३॥ आ० ॥

[कृति पत्रांक-१८]

६ राग काफी ताल त्रताल

कुण खेले थांसु होरी रे. रे संग लागोई आवे ।
न्ही[16] खेला थांसु होरी रे, रे संग लागोई आवे ।
हा जी लाल न्हो खेलूं थासु होरी । टेक ।
चुवा चुवा चंदन अगर अरगचो, केश्र[17] म गंमद घोरी रे । संग० ।

शुद्ध शब्द रुप– १. पीतांबर २. वन ३. नहीं ४. सेज म्हे ५. कर ६. करुं ७. हर रे ८. छन (छिण) में ९. गिरधर १०. नागर ११. मींदर (मंदिर) १२. मदिर १३. पधार्या १४. करुं १५. गिरधर १६. नहीं १७. केसर ।

हा हा हो लाला मे तो न्ही', मेला थांमु होरी रे। संग०।
भर पचकारी मारा मुग प्र' डारी, तो भीज गई रंग साड़ी रे। संग०।
लारं लागीई भावं, यांकं होरी न्ही गुण' जोरी रे। संग०।
अवके देवो जच मर्द वहुगी, तो अेरी मार पचकारी रे। संग०।
मिरा के प्रभु अर्व नाग्र', तो चर्ण जी रहों या जो(ड़ी)री रे। संग०॥

[कृति पत्रांक ३८]

७. राग कुमायचो ताल चताल

अघारी' पचकारी भर डारी हे माग्रे, उच कल डारी मारी आखन मे। टेक।
मेरी रे ज्योहे सुल्यामल, आवे नेकन न नीडाकन में। अ०।
चुवा चुवा चंदन अग्र' अरगचो, अवि' गुलाल वांरी आखन में। अ०।
हे मिरा के प्रबु(भु) अध्र' नाग्र', रीज खीज वारी नाखन मे॥ अ०॥

[कृति पत्रांक-२६]

८. राग भैरवी ताल कहरवा

चली आव रे गुवालण ददवाली, ददवाली रे गोरसवाली।
चली आव रे गुवालण ददवाली।
अ[११] प्र[१२] माट च्यों[१३] हे म्ही[१३] को, मगन मले अघारी[१४]।
लेंहेगो लाल कसुमल अंगीआ, ओडण कु चंपला साडी। च०।
सीसफुल प्रभु स(सि)र वीराजे, गल कंच्न[१५] की खगवाली। च०।
रण जण[१६] रण जण नेव्र[१७] वाजे, घन जोवन मतवाली। च०।
अखभाणजी की कुन्न[१८] रादका, रुप जोन्न[१९] (सां)चे ढाली। च०।
मीरा के प्रभु अध्र नाग्र[२०], व्रण कमल चतधारी। च०।
चली आव रे गुवालण ददवाली, ददवाली रे गोरसवाली॥ ७॥

[कृति पत्रांक ३]

शुद्ध शब्द रुप— १. नहीं २. पर ३. खण ४. गिरधर नागर ५. गिरधारी ६. अगर ७. अबीर ८. गिरधर ९. नागर १०. सिर ११. पर १२. धर्यो १३. मही (दही) १४. गिरधारी १५. कंचन १६. रुणभुण १७. नेवर १८. कुंवर(कुंवरी) १९. जोबन २०. गिरधर नागर।

९. राग असावरी ताल फहरवा

छेल छबिला छौगाला रे मन मान्याजी।

कांई गुण साग्र[1] गौवींद, मारे घर आज्यौ रे। रे मन मान्या जी। टेक।

पागडलि छौगो वण्यौ[2] रे मन मान्याजी, कांई नखणं[3] त्रछा[4] नेण। मारे०।

मौर मुगट सौवा[5] व्रिण[6] रे मन मान्याजी, कांई कुंडल झलकै कान। मारे०।

काई हात हींराजड़ो मुंदड़ी रे मन मान्याजी, कांई ढल हल मौती कान।
। मारे०।

वागौ तौ सौवे केसरयां रे मन मान्याजी, कांई माथे पचर्ग[7] पाग।
। मारे०।

काँई हात(थ) ही(रा) जड्यौ सेलड़ो रे मन मान्याजी, कांई असल गेंडारी ढाल।
। मारे०।

कांई पांव पीताम्र[8] धोवती रे मन मान्याजो, कांई पाटु सुत्ण पांव।
। मारे०।

कांई पांव लाखीणी मोचड़ी रे मन मान्याजी, कांई जांजर रो झणकार।
। मारे०।

कडस (कंडेर्सू) कटारो वाकडी रे मन मान्याजी, कांई सोरटड़ी त्रवार[9]।
। मारे०।

सौवा तो असी[10] व्णी[11] रे मन मान्याजी, कांई आवुख्ण[12] सौवै अंग।
। मारे०।

मीरा ने ग्रध्र[13] मल्या रे मन मान्याजी, कांई सहेस गोप्यां बीचे काहान।
। मारे० ॥

[कृति पत्रांक–१९]

शुद्ध शब्द रुप– १. सागर २. वणयो ३. न (नि)रखण ४. तिरछा ५. सौभा ६. बणी ७. पचरंच ८. पीताम्बर ९. तरवार १०. ऐसी र ११. बणी १२. आबुखण (आभूषण) १३. गिरधर।

१०. राग देस ताल केहरवा

जतन क्रो[1] हे मारी हे, पीया व(वि)न सुनो मारो देस। टेक।
अस्या हे कोग्रे पीया कु मलावे, तन मन धन क्रु[2] भेट। पीया०।
अेवन ढुंढ्या सकल वन ढुंढ्या, क्र क्र[3] जोगीडा रो भेस। पीया०।
आप जाग्रे दुवारका छाग्रे रह्या हे, पीजर व्हे गया केस। पीया०।
मीरा के प्रबु(भु) गरध्र[4] नागर, तज दीयो नग्र[5] नरेस। पीया० ॥

[कृति पत्रांक २४]

११. राग देस ताल कहरवा

जि जमना जी रे धोरे।
हु(हूं) तो विश्र[6] गई जी मारो, मोतीड़ा रो हार।
हे गढ सु(सूं) गुंवालण उत्री[7], श्र[8] मही रो भार।
आडो काहान जी फर रग्रा, मांगे छे म्ई[9] रो दाण। जी०।
न्दी[10] क्रोडे रुखड़ो, पाणि गुदला (ळा) होऐ। जी०।
फूलि फूलि हूं फरु, गल फुलन की माल।
फुलारां सेज वछाव्णा[11], फुल्या फरे जी नंदलाल। जी०।
रादे हर की लाडली, नत उठ द्रस्ण[12] पाए।
मिरा तो थारी थकी, राखो त्रण[13] लगाऐ।
जि ज्मना जी रे धोरे।
हु तो विश्र गई सु जी, मारौ मोतीड़ारो हार ॥ ४ ॥

[कृति पत्रांक २]

१२. राग आसावरी ताल त्रताल

थे आज्यो जी मारे रमके झुमके, डाव लग्यो हे अबके। टेक।
तम तो मोहन विश्र गग्रेसो, कल ण पड़त हे ह्मको[15]। थे आज्यो०।
मनड़ो मोहन मौहे लीयो से, आखड्या[16] ठमके। थे आज्यो०।

शुद्ध शब्द रूप– १. करो २. करु ३. कर कर ४. गिरधर ५. नगर ६. बीसर (भूल) ७. उतरी ८. सर(सिर) ९. मही(दही) १०. नदी ११. बिछावणा(बिस्तर) १२. दरसण १३. चरण १४. वीसर(भूल) १५, हमको १६. आँखड़ल्याँ।

सासु न्णद[1] मारी गा चली हे, थे मत मन्मे[2] राखो डर्के[3] । थे आज्यो० ।
रमझम क्रता[4] पधारो साञ्रीयां[5], गुगर्न के धमके । थे आज्यो० ।
मिरा के प्रभु गध्र[6] नाग्र[7], काना कुंडल(ळ) झलके । थे आज्यो० ॥

[कृति पत्रांक १८]

१३. राग कुमायचि ताल त्रताल या कहरवा

धिरा झुलो रा, धीरा झुलो रा ।
राज गुमानी, धिरा झुलो रा ।
हे लाडी जी झुले थांरे कानी ।
धिरा झुलो रा ।
छोटी लाडी झुले थांरे कानी, प्यारी लाडी झुले थांरे कानी । टेक ।
घन ग्रजत विजलीआं चमके, झुम्र[8] व्रसे[9] पांणी । धि० ।
चुनड़ भीजे मारी रंग चुवे, रंग लागे छेः कानि कानि । धि० ।
हे नजर नीहारो न्हेको[10], कत हो पेम की सानी । धि० ।
हे झुलत झुलत सब र्स[11] लीनो, मुज प्र[12] कीहे नसाणी । धि० ।
मिरा के प्रबु(भु) ग्रधर[13] नाग्र[14], राखो राखो चरण सवानी । धि० ॥

[कृति पत्रांक-१]

१४. राग सोरठ ताल कहरवा

नंद जी राम्म सुंजाण[15] ।
नंद जी री दुवार थे तो माने, कामणी अछि अछि काही जाणो ।
म्हांने कामणीया की, दासे कांई जाणों ।
राजे माने काम्णोया की, दासे कांई जाण । टेक ।
अर्ज काछा कछु न्सीर वावे, राज्रा[16] गला री रूडी आंण । न० ।
घ्र[17] रो धंधो सब विश्र[18] गई सु(सूं), छोडी छे कुल(ळ) री कांण । न० ।
नेण वाण तम झलक निहारौ, मारो छो भलका ताण । न० ।
मिरा के प्रभु वे च्रंद्रासण दीजो, मत चुको अवसाण । न० ॥

[कृति पत्रांक-४ (८)]

शुद्ध शब्द रुप- १. नणद २. मन में ३. डरके ४. करता ५. सांवरिया ६. गिरधर ७. नागर ८. झुरमुर(झिरमर) ९. बरसे १०. नेहको ११. रस १२. पर १३. गिरधर १४. नागर १५. राम र सुजाण १६. राज रा १७. घर १८. बिसर(भूल) ।

१५. राग सारंग ताल कहरवा

नर ब्रेद्रदी[1] हे वंसरी, बाजी जमना री तीर। बाजी जमना री तीर । टेक ।
आप ही गावै, आपी (ब)जावे, सुद नई रश्रेत[2] श्रीर[3] । न० ।
मोर मुगट श्र[4] छत्र बीराजे, हर न्णदी[5] को वीर । न०
ले मेरो चीर कदम चड बैठा, आखर जात अहीर । न० ।
मिरा के प्रभु ग्रध न ग्रि[6], श्र .... खो श्रीर । न० ॥

[कृति पत्रांक–६]

१६. राग आसावरी ताल कहरवा

पेम सवागरण मर्गा नेणी रादे, तें गोवींद वस कीनो री । टेक ।
गोरा गोरा मुख प्रे[7] तलक बीराजे, हांरे वारी बंद का मे कछु कीनो री । पे० ।
सीसफुल प्रेम टकी बीराजे, हां रे वारी गोरस मे कछु कीनो री ।
हां रे वारी गोरस मे कछु कीनो री । पे० ।
काथो जी चुनो लु (लूं) ग सुपारी, पानन मे कछु कीनो री ।
हां रे वारी पानन मे कछु कीनो री । पे० ।
मीरा के प्रबु(भु) (गि) गरधर नागर, हरी चरण सुख लिनोरी ।
हां रे वारी हरी चर्ण[8] सुख लिनोरी । पे० ॥

[कृति पत्रांक २२]

१७. राग जीझोटी ताल कहरवा

भला सावरीया हो, आछा सात्रया[9] हो प्रित (नि) नवाया व्होगे[10] (गो) । टेक ।
जे तुम हम कु गाली देओगे, तो हर्द[11] मे रख लेउंगी । सा० ।
ज्यो तम हम सु रुस रहोगे, तो राजी कीस वद[12] होवेगे । सा० ।
राणीजी रुखम्णि[13] श्रोर सतभामा, कुवज्या छकीए कु जावोगे । भ० ।
मोर मुगट श्र[14] छत्र बिराजे, कुंडल की झलक वताश्रे जावोगे । भ० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र[15] नाग्र[16], चर्ण[17] सु लपटावेगे । भ० ॥

[कृति पत्रांक–१७]

शुद्ध शब्द रूप– १. बेदर्दी २. रहत ३. शरीर ४. सर(सिर) ५, नणदी ६. गिरधर नागर ७. पर ८. चरणां ९. सांवरिया १०. वसोगी ११. हरदे में १२. बिद(विध) १३. रुकमणि १४. सिर १५. गिरधर १६. नागर १७. चरण ।

१८. राग काफी ताल दीपचंदी

मत डारौ पचकारी रे, हु (हूं) तो सगली भीज गई। टेक।
चुवा चुवा चंदन अवीर अर्गचो[1], केश्र[2] की छव न्यारी। हु०।
रादा(धा) मोहन जी होरी खेले तो, भँ[3] पचकारण मा(रू)री। हु०।
अबके डारी जो तो डार डारी, प्ण[4] अबके डाँरो[5] तो दडगारी। हु०।
मिरा के प्रभु गध्र[6] नाग्र, जुगल केल प्र[6] वारी। हु०॥

[कृति पत्रांक ३१]

१९. राग कालिंगड़ा ताल कहरवा

मोहवत कामलिवाला सु(सूं) जोड़ी, मोहोवत कामलीवाला सु जोड़ी। टेक।
लोग कहे कालीकामली वालो, मारे तो लाख क्रोड़ी[7]। मों०।
उवो रहेत हे कदम की छइया, मारो वंईया पकड़ झकझोरी रा। मो०।
मुथ्रा[8] सु(सूं) आई गुवालणी, गोकल सु(सूं) आयो कान।
अदबीच अडवी रोडी रा। मो०।
मिरा के प्रभु गध्र नाग्र, चर्णजी (व)[9] रअे[10] जोड़ी रा[11]। मो०॥

[कृति पत्रांक–८]

२०. राग परज ताल कहरवा

मलता जाज्यो रा (ज) गुमानी, थारी साबली सुर्त[12] देख लुवाणी।
मलता जाज्यो रा (ज) गुमानी। टेक।
गौकल मे आऐ मारौ घर बु (भ) लीज्यौ, वहोत क्रु[13] मजमानी॥ म०।
नंद म्हेर जी सु(सूं) दस ध्र आगे, रंगीलो पोल(ळ) न्ही छानी। म०।
तम तौ छौ न्दं[14] म्हेरजी के कव्र[15] कनईया[16], हु(हूं) वर्खभाण दुलारी। म०।
मिरा के प्रबु(भु) (गि)गरधर नागर, थांरी मारी परीत[17] न्ही छे छानी। म०॥

[कृति पत्रांक–१८]

शुद्ध शब्द रुप– १. अरगचा २. केसर ३. मर ४. पण(किन्तु) ५. रे डारो ६. पर ७. करोड़ी ८. मथुरा ९. चिरंजीव १०. रहे ११. राज १२. सूरत १३. करुं. १४. नंद १५. कंवर १६. कन्हैया १७. प्रीत।

२१. राग मांडताल कहरवा

मेरो मन मोओ(यो) सेजी, वेण वजाय । टेक ।
सुणत काक ...... ड उठत हे, तलफ तलफ जीव जाओ(य) ।
दी(दि)न न्ही[1] चेन, रेण न्ही नीद्रा, निस......न कछु सुवाय । मे० ।।
तु(तूं) मेरो कयो मान सु (स) खिरी, ब्रज नंद वेग बुलाय ।
मीरा के प्रभु (गि) गरध्र[2] नागर, राखो माने गल लपटाओ । मे० ।।

[कृति पत्रांक-१२]

२२. राग कुमावची ताल केहरवा (सारंग)

रसीओ राम रीजावां हे माओ, रांणो जी रुसे तो मारो कांई क्रसी[3] ।टेक।
राणो जी रुसैं तो मारो काहे नही बीगड़ै, हे सांवरोजी रुस्यां मारे न्ही सरसि ।र०।
हे साध संगत की मे अंध्यिधारी, साध बना मारे नही श्रसी[4] ।र०।
हे बडभागण मेरतणी, च्रण[5] कमल मीरा प्रसि[6] ।र०।

[कृति पत्रांक-५]

२३. राग बलावल ताल कहरवा या त्रताल

रस मे बस काय कु डारे सखि, रस मे वस काय कु डारे सुखि । टेर ।
हे दद म्हेथी[7] घ्रत काड लिओ हे, अब कोरी रह गई छाछ री । र० ।
दुद(ध) दई तो मारे घर व्होतोरो[8], बीन आद्र[9] कीया प्रीत करसे । र० ।
मिरा के प्रवु(भु) ग्रध्र[10] नाग्र[11], खोल गु(घुं)गुट थासु आप हसि । र० ।।२।।

[कृति पत्रांक-४]

२४. राग सारंग ताल कहरवा

रादे(धे) क्रसन रादे(धे) क्रसन, गोवींद गोपाल । टेक ।
मोर मुगट कट काछनी, रे गल मोतन की माल । रा० ।
जमना की नीरा धेन चरावै, वंसी बजावे नंदलाल । रा० ।
मिरा के प्रभु गध्र[2] नागर, (राखो च्रर्ण[12] कमल री छाये) ।
भक्तन के प्रतिपाल । रा० ।।

[कृति पत्रांक-८]

शुद्ध शब्द रुप— १. नहीं २. गिरधर ३. करसी ४. सरसी ५. चरण ६. परसी ७. मथी ८. वहूतेरो ९. आदर १०. गिरधर ११. नागर १२. चरण ।

२५. राग सारंग ताल कहरवा

रे मानु द्रसे[1] बताज्यो जी, रे मानु द्रस बताअे जी। टेक।
जमना की नीरा तीरा धेन चरावे, बंसि को सबद सुरा (राावै) जी। रे०।
माथे मुगट श्र[2] छत्र बिराजे, कंडल की लटक बताअे जी। रे०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नाग्र, हरी का च्ररा सु(सूं) लपटाअे जा (जी)। रे०॥
[कृति पत्रांक-१७]

२६.

रे मे तो ब्रेहे[3] की दादी, प्रा[4] वादा न्ही कछु मो मे।
रे मे तो व्रह की दादी। टेक।
कोट उपाअे कीयो मलवे को, प्रा काउग्रन लादी से री। रे०।
रवि च्द्रं[5] तम कलाअेस मेटो, मत दग दे श्र ग्रादी। रे०।
मिरा के प्रभु कव्ही[6] मलोगे, प्रा कंठरा रेरा रही हे आदी। रे०॥
[कृति पत्रांक-१७]

२७. राग मांड ताल दादरा

सांवरा जी श्राज्यो जी माहरे देस।
वंसीवारा श्राज्यो जी, माहरे देस। टेक।
साव्रा[7] श्राव्रा[8] कॄ[9] गया रे, वारी क्र[10] गश्रा कोल श्रनेक।
हे गराता घसे गई जी मारी ई ई ई ई ई, श्रागलीया री रेख। ब०।
सावली सुरत, वाली बेस। ब०।
प्रीत क्री[11] सुख लेरा कु रै वारी, श्रव लागी दुख देरा। ब०।
श्रसी रे मे जारगती रे वारी, तो प्रीत न क्रती[12] लगार। व०।
सामीने चोगती रे वारी, आव्रा न देती दुवार। व०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, राखो चर्रा[13] की लार। व०॥
[कृति पत्रांक-९]

शुद्ध शब्द रुप- १. दरस २. सिर ३. विरह ४. पण ५. चंद्र ६. कब ही ७. सावर्ण ८. आवंण ९. कहे के १०. कर ११. करी १२. करती १३. चरणां।

२८. राग आसावरी ताल कहरवा

सीताराम समर्जुग[1] हसवा दे, सीताराम समर्जुग हसवा दे। टेक।
हसती की चाल चलो रे मन्मेरा, पिछे कुक्र[2] भुसवा दे। सि०।
राजा लड़े राज के खातर, भुप भडे ज्याने भडवा दे। सि०।
भेरु पु(पू)ज सीतला पुजे, उल्ज्म्र[3] ज्याने मर्वा[4] दे। सि०।
नंदर्या कान सु रो नई दीजे, नं[5] पुंडे ज्याने पडवा दे। सि०।
मिरां के प्रभु गरध्र नागर, हरी का चरण चत क्रवा[6] दे। सि०॥

[कृति पत्रांक–१६-१७]

२६.

सुंद्र[7] साम बिहारी। टेक।
आव्ण[8] आव्न क्र[9] गअे उदो, प्ण कतनीक दुर गोकल रे।
वां ले चल रे उदो। सु०।
आव्न[10] के दन[11] बित्त गअे हे, प्ण लगी हे तपत मेरा तन मे (रे)। सु०।
काहा जी करु कीत जाउ मेरी सजनी, प्राण क्रत[12] तलफल रे। सु०।
सवई राणी सवई सीआनी, प्ण अत न्यामे[13] कुवज्या कुटमरे। सु०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, हरी का चर्ण प्र[14] बलिहारी रे। सु०॥

[कृति पत्रांक–१७]

३०.

सुख सागर में आअेक अे अे अे अे अे,
मत जाअे रे पीआसा हा हा हा। टेक।
ऐ नरमल नीर भरयो घट भीत्र[15] अ अ अ अ अ,
पी जाओ सास उसासा हा हा हा हा। म०।
जल बीचे कमल कमल बीचे कलीया,
जस प्र[16] भमर लोवाणा आ आ आ आ आ। म०।

शुद्ध शब्द रुप– १. समग्रयुग २. कुकर ३. उलझ मरे ४. मरवा दे ५. नर र ६. करवा ७. सुंदर ८. आवण ९. कर(कह) १०. दाघन (दग्घ होने के) ११. दिन १२. करत १३. या में १४. पर १५. भीतर १६. पर।

हाड चाहाम चतां[1] हर लेई ई ई ई ई,

जस प्रे(पर) क्यु धब्रणा[2] आ आ आ आ आ । म० ।

अब तु तूं) चेत चेतन नज प्राणी ई ई ई ई ई,

जम डारेगा गल पासा आ आ आ आ आ । म० ।

मीरा के प्रभु ग्रध्र[3] नाग्र[4] अ अ अ अ अ,

चरण कमल मेरा वासा आ आ आ आ आ । म० ॥

[कृति पत्रांक– ६]

३१. राग बलावल ताल दीपचंदी

हे आवे छे रे, गोपाल रंगीलो । टेक ।

हे ज्र[5] कर्स[6] पाग केश्रीया[7] वामो सोवत, तलक अदक छबीलो । आ० ।

हे व्रद्राबन[8] की कुंज्र[9] मे मोहन मलिया, हस क[10] त्रचो[11] हे गुगट ढीलो । आ० ।

मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[12], सहेस गोप्या रो हे यो, रसिक रसिलो । आ० ।

[कृति पत्रांक–१८]

३२. राग सारंग ताल कहरवा

हे कठड थया हो माधव मुद्रा मे, हारे वारी कागद न्ही लख्यौं[13] कटको रे । टेक ।

गोकल म्हे[14] अब बात क्रत[15] हे, काकान व्र[16] कुबज्या संग अटको रे । क० ।

रुप काली अंग कुबड़ी, हारे वारी ताप्र[17] श्रजी[18] का लटक्यो रे । क० ।

मोर मुगट श्र[19] छत्र वीराजे, कुंडल(ळ) की नाही झलको रे । क० ।

व्रंद्रांबन[20] की कुज गलण मे, हारे यारी देखु हो, सांवरीया थारो लटको रे । क० ।

मिरा के प्रभु गरध्र[21] नागर, नीच संगत संग कांई भटको रे । क० ।

[कृति पत्रांक–७]

शुद्ध शब्द रुप– १. चिता (चित से) २. घबराना ३. गिरधर ४. नागर ५. जर(जरी) ६. कसर ७. केसरियां ८. वृंदावन ९. कुंजन १०. कर ११. कर्‌यो १२. गिरधर नागर १३. लिख्यौं १४. में १५. करत १६. कान कंवर १७. ता पर १८. सरीजी १९. सर(सिर) २०. वृंदावन २१. गिरधर ।

३३. राग आसावरी ताल कहरवा

हे कहेज्यो नींद न आवे, कहेज्यो जी नीद न आवे। टेक।
सेभड़लि सुरंगी वाला भ्री[1] रेणो[2], दुजी नेण सतावे। क०।
कब्रे[3] होसी पापीया तुमारी रे मलण, रमक मोहन घरे आवे। क०।
मीरा के प्रभु गर्ध्र[4] नागर्न[5], वीन वीगत उपजावे। केहे०।

[कृति पत्रांक-७]

३४. राग मांड ताल दादरा

हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलणा,
रे कुण ने सिखाया तुजे मीठा बोलना। टेक।
हे ज्र[6] कसि(यो) फेटो केश्रयो[7] जामो, माथे मुगट सवर[8] क्रोडाना[9]। कु०।
हे हात चंढयो पग पालकी, चाले म्रोडना[10]। कु०।
मिरा के प्रवु ग्रध्र[11] नागर, चर्ण[12] कमल चत जोड़ना। कु०।

[कृति पत्रांक-६]

३५. राग मांड ताल दादरा

हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलना। कु०। टेक।
मोर मुगट श्र[13] छत्र बीराजे, कुंडल(ळ) झलके कपोलना। कु०।
हात चढ्यो पग पावड़ी, चाले मरोड़ना। कु०।
मीरा के प्रभु गध्र[14] नागर, माथै मुगट सवा क्रोडना[15]। कु०।

[कृति पत्रांक—१०]

३६. राग कालिंगड़ा ताल कहरवा

हे कुण माने थारी वातीया[16], कुण माने थारी वातीया।
जाओ झूठा बोला, कुण माने थारी बातीया। टेक।
हे कालकी वाता तो मारा आ ···· ···· ···· हरदा मे खुचत हे,
क्रवत[17] व्हे[18] गई मारी छतीया। जा०।

शुद्ध शब्द रुप— १. भरी २. रेण(रात) ३. कब रे ४. गिरधर ५. नागरन ६. जरी ७. केसरियो ८. सवा र ६. करोड़ना १०. चढ्यो ११. मरोड़ना १२. गिरधर नागर १३. चरण १४. सर(सिर) १५. गिरधर १६. करोड़ना १७. वतियां १८. करवत १६. बेह।

हाड चाहाम चतां[1] हरु लेई ई ई ई ई,

जस प्रे(पर) क्यु धव्रणा[2] ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा । म० ।

ग्रब तु तूं) चेत चेतन नज प्राणी ई ई ई ई ई,

जम डारेगा गल पासा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा । म० ।

मीरा के प्रभु ग्रध्र[3] नाग्र[4] ग्र ग्र ग्र ग्र ग्र,

चरण कमल मेरा वासा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा । म० ॥

[कृति पत्रांक– ६]

३१. राग बलावल ताल दीपचंदी

हे ग्रावे छे रे, गोपाल रंगीलो । टेक ।

हे ज्र[5] कर्स[6] पाग केश्रीया[7] वामो सोवत, तलक ग्रदक छबीलो । ग्रा० ।

हे ब्रद्राबन[8] की कुंज्र[9] मे मोहन मलिया, हस क्र[10] ग्रचो[11] हे गुगट ढीलो । आ० ।

मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[12], सहेस गोप्या रो हे यो, रसिक रसिलो । आ० ।

[कृति पत्रांक–१८]

३२. राग सारंग ताल कहरवा

हे कठड थया हो माधव मुद्रा मे, हारे वारी कागद न्ही लख्यौ[13] कटको रे । टेक ।

गोकल म्हे[14] ग्रब बात क्रत[15] हे, काकान व्र[16] कुबज़्या संग ग्रटको रे । क० ।

रुप काली अंग कुबड़ी, हांरे वारी ताप्र[17] श्रजी[18] का लटक्यो रे । क० ।

मोर मुगट श्र[19] छत्र वीराजे, कुंडल(ळ) की नाही झलको रे । क० ।

व्रंद्रांवन[20] की कुज गलण मे, हारे यारी देखु हो, सांवरीया थारो लटको रे । क० ।

मिरा के प्रभु गरध्र[21] नागर, नीच संगत संग कांई भटको रे । क० ।

[कृति पत्रांक–७]

शुद्ध शब्द रुप– १. चिता (चित से) २. घबराना ३. गिरधर ४. नागर ५. जर(जरी) ६. कसर ७. केसरियां ८. वृंदावन ९. कुंजन १०. कर ११. कर्यो १२. गिरधर नागर १३. लिख्यौ १४. में १५. करत १६. कान कंवर १७. ता पर १८. सरीजी १९. सर(सिर) २०. वृंदावन २१. गिरधर ।

३३. राग आसावरी ताल कहरवा

हे कहेज्यो नींद न आवे, कहेज्यो जी नीद न आवे । टेक ।
सेझड़लि सुरंगी वाला झी[1] रेणो[2], दुजी नेण सतावे । क० ।
कव्रे[3] होसी पापीया तुमारी रे मलण, रसक मोहन घरे आवे । क० ।
मीरा के प्रभु गर्ध्र[4] नागर्न[5], वीन वीगत उपजावे । केहे० ।

[कृति पत्रांक-७]

३४. राग मांड ताल दादरा

हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलणा,
रे कुण ने सिखाया तुजे मीठा वोलना । टेक ।
हे ज्र[6] कसि(यो) फेटो केश्रयो[7] जामो, माथे मुगट सवर[8] क्रोडाना[9] । कु० ।
हे हात चंढयो पग पालकी, चाले म्रोडना[10] । कु० ।
मिरा के प्रबु ग्रध्र[11] नागर, चर्ण[12] कमल चत जोड़ना । कु० ।

[कृति पत्रांक-६]

३५. राग मांड ताल दादरा

हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलना । कु० । टेक ।
मोर मुगट श्र[13] छत्र बीराजे, कुँडल(ळ) झलके कपोलना । कु० ।
हात चढ्यो पग पावड़ी, चाले मरोड़ना । कु० ।
मीरा के प्रभु गध्र[14] नागर, माथै मुगट सवा क्रोडना[15] । कु० ।

[कृति पत्रांक-१०]

३६. राग कालिंगड़ा ताल कहरवा

हे कुण माने थारी वातीया[16], कुण माने थारी बातीया ।
जाश्रो झूठा बोला, कुण माने थारी वातीया । टेक ।
हे कालकी वाता तो मारा श्रा ···· ···· ···· हरदा मे खुचत हे,
क्रवत[17] व्हे[18] गई मारी छतीया । जा० ।

शुद्ध शब्द रूप— १. मरी २. रेण(रात) ३. कव रे ४. गिरधर ५. नागरन ६. जरी ७. केसरियो ८. सवा र ६. करोड़ना १०. चल्यो ११. मरोड़ना १२. गिरधर नागर १३. चरण १४. सर(सिर) १५. गिरधर १६. करोड़ना १७. वतियां १८. करवत १६. बेह ।

हे भोर भयो जब आओ मेरे आंगणे, कठ रे गया सा सारी रातीया । जा० ।
मों तन माला थे कठ दे भुला सो, हार रयो थारी छतीया । जा० ।
चुवा चुवा चन्ण[1] अगर अरगचो, सुदो लगायो थारी छतीया । जा० ।
मोरा के प्रभु (गि)गरधर नागर, जनम जनम था दासीया । जा० ।
[कृति पत्रांक–६]

३७. (गरबा)

हे केस करी अे रे केसे क्री[2] अे ।
नर्मोईड़ा[3] सु(सूं) प्रोतड़ी केसी क्रीअे, भुठा बो बोला सु प्रीतडी ।
केसे क्रिअे । टेक ।
आप गोकल म्हे[4] छाओ रहे हो, हम रोओ रोओ अखीया निरओअे[5] । न० ।
हे जाउंगी अटारी लेउंगी कटारी, जर्ये[6] रज अब सखाओ म्रीअे[7] । न० ।
चुण चुण कलिआ मे सेज ब्णाउ[8], भ्मर[9] पलंग प्रे[10] भुरमरोअे । न० ।
[कृति पत्रांक–१६]

३८. राग भेरवी ताल कहरवा

हे खडी छु खडी छु खडी छु, कबकी द्रवार(द्वार) कडी छु । टेक ।
सब सुखीया[11] सु (सूं) हस हस बोलो, मे[12] काई नार बुरी छु । क० ।
सब सुखीया सु रास रमो छो, हम सु मुखडे न बोलो । क० ।
सब सुखीया के मेहेल पधारो, हु[13] हरदा मे अडी छु[14] । क० ।
सब सुखिया मोतन की माला, मे हीमो की कल्ली छु । क० ।
सब सुखीया सोना को गेहेणो, मे(मैं) ही हीर कणी छु । क० ।
मिरा प्रभु (गि) गरधर नागर, चरण कमल म्हे[15] जड़ी छु । क० ।
[कृति पत्रांक–६]

शुद्ध शब्द रुप– १. चंदण २. करी ये ३. नरमोइड़ा (निरबोहिड़ा) ४. में ५. नीर भरिये ६. जाय रे ७. मरिये ८. वणाऊं ९. भ्रमर १०. परे(पर) ११. सखियां १२. मैं १३. हूं (मैं) १४. छूं १५. में ।

३९. राग बलावल ताल दीपचंदी

हे गई दध वेचरण आप बिकारिण, गई दद वेच्रण[1] आप विकाआरणी[2] । टेक ।
मे दद वेच्रण जाती व्रदावन[3], वीच मे मलिया[4] हे द(ध)णी । ग० ।
है आडो-आडो डोले औ रसीलो, वोलत अटपटी वारिण । ग० ।
दद मेरो खादो मटकीयो तोरी, मुख प्र[5] की[6] हे निसाणी । ग० ।
हे गुगट खोल्यो, लाज लीदी, ओर की[7] हे मन जाणी । ग० ।
मीरा सु गध्र[8] मलीया, ज्यु दुद(ध) मे पाणी । ग० ।
[कृति पत्रांक-१८]

४०. राग भेरवी ताल त्रताल

हे चल्यो जा रे व्रजवासी, अप्णी[9] डगर्तू[10] चल्यो जा व्रजवासी । टेक ।
मे दद वेचण जाती व्रंदावन, अदवीचे प्राण डारी हे प्रेम की पासी । च० ।
तेरे तो खात्र[11] जोगण होउंगी, क्रवत[12] लेउंगी मै कासी । च० ।
मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[13], चरण कमल रज की मे(मैं) दासी । च० ।
[कृति पत्रांक-८]

४१. राग पीलु ताल कहरवा

हे छेल छबीला थांने, चलवा न देसु (स्यूं) रामा । टेक ।
माता जसोदा थासु अरज क्रे[14] छे, कान क्रे[15] छे नुग्राई[16] मे वारी रामा ।छे०।
मोर मुगट श्र[17] छत्र वीराजे, कुंडल(ळ) की लटक बताओ ।
जी मे वारी रामा । छे० ।
जमना की नीरा सीरा[18] धेन चारावे, वंसी को सबद सुणाओ ।
जातु मेरे रामा । छे० ।
मिरा के प्रभु गरध्र[19] नागर, हरी के चर्ण[20] लपटाओ रहुंगी ।
तु मेरे रामा । छे० ।
[कृति पत्रांक-७]

शुद्ध शब्द रुप— १. वेचण २. विकाणी ३. वनरावन (वृंदावन) ४. मिल्या ५. पर
६. (करी)की र, ७. करी ८. गिरधर ९. अपणी १०. डगर तूं ११. खातर
१२. करवत १३. गिरधर नागर १४. करे १५. का करे १६. नुगराई
१७. सर(सिर) १८. तीरां १९. गिरधर २०. चरणां ।

४२. राग काफी ताल त्रताल

हो जी रंग भीनी होरी थांसु खेलुंगी । टेक ।
फागरा म्हे[1] पिया लाज काअे की, वुरी भली सु मे नाअे(ही) डरुंगी । हो० ।
कांन कुंवर भर मुठ चलावे, हुं तो गुगट का पट प्रे[2] झेलुंगी । हो० ।
कन (क) कटोरो केश्र[3] घोरी, हु तो रगीला प्रीतम प्रे[4] ढोलुंगी । हो० ।
गोकल याकु मे(मैं) जांरा न दूंगी, भं[5] पचकार (इ)रा पे(डा) लुंगी । हो० ।
मिरा के प्रवु (भू) ग्रध्र नाग्र[6], हु तो फगवा ले न छोडूंगी । हो० ।
[कृति पत्रांक–२६]

४३. राग पीलु ताल कहरवा

हु[7] तो वारी जाउअे भोरी(ली) नरादल, खेलरा होरी दे । टेक ।
कान कुवर मारे दुवारे ठाडे, भर्प[8]चकाररा ले । हु० ।
काउ की ग्रजी[9] मे नाम्रे रहुंगी, फागरा को रस ले । हु० ।
मेरे पछवाड़े धुम मचो हे, हे मारो ही मन हे । हु० ।
मिरा के प्रवु (भू) ग्रध्र नाग्र[10], हर के चररा चत रहे । हु० ।
[कृति पत्रांक–२६]

४४. राग खमाच ताल त्रताल

हु[11] तो सु(सूं)बाली कछु न्ही[12] जाणं, मोसुं प्रीत लगाअं अब काहां जासी रे ।टेक।
अत गोकल अत मुथ्रा[13] नग्रि[14], बीच मल्या अबन्यासी रे । हु० ।
वंद्राबन[15] की कुज कलरा[16] मे, सहेस गोपी न व्रजबासी रे । हु० ।
तेरे तो खात्र[17] जोगरा वेहुंगो, क्रवत[18] लेउंगी कासी रे । हु० ।
हु(हूं) व्रखभारा की कुवर लाडलि, मारो जोबन तो सु[19] जासी रे । हु० ।
मिरा के प्रवु(भू) ग्रध्र नाग्र[20], तुम करहु दासी रे । हु० ।
[कृति पत्रांक–२२]

शुद्ध शब्द रुप– १. में २. पर ३. केसर ४. परे(पर) ५. भर ६. गिरधर नागर ७. हूं(मैं) ८. भर ९. वरजी १०. गिरधर नागर ११. हूं(मैं) १२. नहीं १३. मुथरा १४. नगरी १५. वृंदावन १६. गलण १७. खातर १८. करवत १९. सो(सब) २०. गिरधर नागर ।

४५. राग धनाश्री ताल कहरवा

हे व्रजवासी व्रजवासे(सी) से व्रजवासी ।
मोसु न्हेड़ो[१] लगाश्रे, गश्रो रे व्रजवासी । टेक ।
व्रंद्रावन[२] म्हे[३] बंसि बजाई, लो गयो प्राण नीकासी । व्र० ।
तेरे तो खात्र[४] प्रोन[५] तजुगी, क्रवत[६] लेउंगी कासी । व्र० ।
मिरां के प्रभु गरधनाग्र[७], चर्ण[८] कमल की दासी । व्र० ।

[कृति पत्रांक–५]

४६. राग आसावरी ताल कहरवा

हे लुटे छे रे लुटे छे छुटे ।
मही दद माखण[९], गुवाली मारो लुटे, कोई भीडे वारे दद मारो लुटे । टेक ।
हे रहो र गुवालण, ग्रव्र[१०] नक्र[११], तु श्रणई वाता सु न्ही[१२] छुटे । म० ।
मे(मैं) दद बेचण जाती व्रंदांबन[१३], महीड़ो क्रो[१४] छे मारो भुठे । म० ।
जाअे पुकारुगी कंसराअे कु, पकड़ मगाउ थाने उठे । म० ।
छोडो रा लाल जी, हार हमारो, मोर तन की लड़ा टुटे । म० ।
छोडो रा लाल जी छे वडो हमारो, जर कसरो पलो टुटे । म० ।
छोडो रा लाल जी बईया हमारी, काचुरी कस टुटे । म० ।
मीरा के प्रवु (भू) (गि) गरधर नागर, लागी लगन नई टुटे । म० ।

[कृति पत्रांक–६]

४७. राग होरी ताल कहरवा

हो साम[१५] मे(मैं) तो गई थी, हो प्रमेश्रवा[१६] मे(मैं) होली खेलण गई थी । टेक ।
चुवा चुवा चन्ण[१७] अगर्अ[१८]रगयो, हो साम केश्र[१९] कीच मचाई थी । हो० ।
अत गोकल अत्त मुथ्रा[२०] नग्री[२१], तो वीच मे फाग मचाई थी । हो० ।
हमारी भीजोई श्र[२२] की चुनड़ीया, तो अप्णी[२३] पाग बचाई थी । हो० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नाग्र[२४], हो साम फगवा गोद भराई थी । हो० ।

[कृति पत्रांक–३१]

शुद्ध शब्द रुप– १. नेहड़ो २. वृंदावन ३. में ४. खातर ५. प्राण ६. करवत ७. गिरधर नागर ८. चरण ९. माखण १०. गरब(गर्व) ११. न कर १२. नहीं १३. ब्रंदावन(वृंदावन) १४. करो १५. श्याम १६. परमेसरवा(परमेश्वर) १७. चंदण १८. अगर(अंगरे) १९. केसर २०. मुथरा २१. नगरी २२. सर(सिर) २३. अपणी २४. गिरधर नागर ।

४८. राग परज ताल कहरवा

हे हरी का मलण, केसे होग्रे रे।
मे जाण्यो न्ही[1] रे, हा रे मे जाण्यो न्ही रे। ह०। टेक।
मेरे आंगण फर्गया[2] ललना, मे तो रही रे अबागण[3] सोग्रे रे। मे०।
ज्यो प्रभु था आवता जाणती तो, देती दीवलो जोग्रे रे। मे०।
ज्यो मारा प्रवुजी ने आवता जाणती, तो जाजम देती वीछाग्रे रे। मे०।
ज्यो मारा प्रवुजी आवता जाणती, तो देतो ढोल्यो ढाल रे। मे०।
ज्यो मारा प्रभुजी ने आवता जाणती, तो देती मंद्र[4] खोल रे। मे०।
मिरा के प्रभु गध्र[5] नाग्र[5], राखो च्रण[6] कमल री छाओ रे। मे०।

[कृति पत्रांक–१७]

४९. राग समाज ताल ग्रताल

हा हा रे गुगट को, हा हा रे गुगट को वारी रे।
गुगट को लटको भारी रे, गुगट को लटको। टेक।
हरी जरी की साड़ी सोवे, उप्र[7] कोर कीनारी रे। गु०।
हरी ज्री[8] की अंगीया सोवे, उप्र हार हजारी रे। गु०।
अंजन मंजन सवको संजन, राई लुण उतारु रे। गु०।
मिरा के प्रभु ग्रध्र[9] नागर, हर चर्ण[10] चत अटक्यो रे। गु०।

[कृति पत्रांक–७]

५०.

हेली ज्यो घ्र[11] ग्रावे ग्रे ग्रे ग्रे ग्रे ग्रे साम साव्रो[12] मत दीज्यो रे गाली।
मारो वाल गोवींदो जाण के मत दीज्यो रे गाली। टेक।
मोर मुगट श्र[13] छत्र विराजै कुंडल(ळ) झलके भारी। म०।
व्रंदावन[14] की कुंज क(ग) लण मे रास मे[15] रादा प्यारी। म०।
मिरां के प्रभु ग्रध्र नाग्र[16] च्रण[17] कमल वलीहारी। म०।

[कृति प्रत्रांक–१६]

शुद्ध शब्द रूप– १. नहीं २. फिर गया ३. अभागण ४. मिंदर(मंदिर) ५. गिरधर नागर ६. चरण ७. ऊपर ८. जरी ९. गिरधर १०. चरणां ११. घर १२. सामसांवरो(श्यामसांवरो) १३. सर(सिर) १४. वृंदावन १५. रमे १६. गिरधर नागर १७. चरण।

मीरां के प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले अप्रकाशित पद

परिशिष्ट (२)

१. आज मारे[1] आंगणी हरिजन आया रे। टेर।
दुधां दईयां सु (सूं)। पाव परवालुं[2] पग धोय पाथल पाया जी ॥ १ ॥
कु कु[3]-केसर की गार घलाऊं[4] रे। मोतीयाँ चोक पुरावा जी ॥ २ ॥
बतीस भोजन तेतीस विध सै। आपणै हाथ जीमाया जी ॥ ३ ॥
फुलां रो मंगलो फुलां री सैज्या। उपर फुल बरसाया जी ॥ ४ ॥
मीरां कहै प्रभु (भू) गिरधर नागर। आनंद मंगल[5] गाया जी ॥ ५ ॥

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १४५]

सं० पाठ – १. म्हांरे २. परवाळूं ३. कुंम कुंम ४. घोळावुं ५. मंगळ
शब्दार्थ – परवालुं – धोवूं।

२. ओलगीया अब घर आई हो।
अंतर खोल कहूँ घट भीतर। सुंदर वदन दिखाई हो ॥ टेर ॥
नैनां (णां) नीर आभ ज्यूं वरसै। विरखा इमट लगाई हो ॥
रुतवंति इक राम कंथ विन। वदन फिरत विलखाई हो ॥ १ ॥
च्यारु पोर च्यार जग[1] वीते। नैनां (णां) नींद[2] न आई हो ॥
पूरण ब्रह्म परम सुख दाता। थे म्हांरी भली निभाई हो ॥ २ ॥
निस दिन पंथ निहारत सजनी। इक पल जुग सम जाई हो ॥ ३ ॥
जन मीरां कूं मिल्यो है रमियौ। जनम जनम मित्राई हो ॥ ४ ॥

[अ० सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर ह० लि० ग्रं० सं० ११३]

सं० पाठ – १. जुग २ नींद
शब्दार्थ – मित्राई–मित्रता

३. उधो प्यारे वह गई प्रेम कटारी ।। टे० ।।

यो मन मंत[1] हसती ज्यों मात्तौ[2] आंकस दे हारी ।। १ ।।

जाका पिय प्रदेस वसत है सो क्यूं जीवे वृज नारी ।। २ ।।

जसे भभंग[3] तज गयो कंचरी सो गति भई है हमारी ।। ३ ।।

मीरां के प्रभु (भू) गिरधर नागर चरन (ण) कवल[4] वलिहारी ।। ४ ।।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७५७३]

सं० पाठ – १. मस्त २. मैं तो ३. भुजंग ४. कंवळ, कमळ

शब्दार्थ – कंचरी-कंचुकी (कांचळी),

उधो विन कुण ल्यावै पाती ।। टेक ।।

४. उघो जी आये कांई कांई ल्याये। हे उधो कहां छोडे संग साथी ।। १ ।।

वाचत पाती भरि आई छाती। नैन (ण) रहे दोऊं राती ।। २ ।।

हा (थ) त पांव मेरा श्रेसैं जलत है। जूं दीपग मैं वाती ।। ३ ।।

सवै गोपीन[1] को त्यागन कीनौं। कुवंज्या संग रहे राती ।। ४ ।।

मीरां के प्रभू गी (गि) रधर नागर। मुनि संग रहे सा (थी) तीं ।। ५ ।।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२५६ से]

स० पाठ – १. गोपीयन (ण)

५. ऐरी वोरी अपना स्यांम खोटा। अव दोस कहा[1] कुवजा को ।। टेर ।।

कुवजा चेरी कंस राजा की। वै नंद जी का ढोटा ।। १ ।।

आप तो जाय द्वारका छायैं। मिलन(ण) का भया टोटा ।। २ ।।

मिरां कै प्रभू गिरधर नागर। कुवजा वड़ीं हरि छोटा ।। ३ ।।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १४५—पत्रांक–५४]

सं० पाठ – १. कहां

पाठान्तर—

जीनका र दोस कुबज्या काये।

विरी अपना स्यांम खोटो। ग्रह अपनो ।। टेर ।।

कुबज्या दासी कं चरण की। उवै नंद जी का ढौटा रे ।। १ ।।

आप तो जाय दुवारका छाये। हमकूं दिया दसोटा रे ।। २ ।।

कुबज्या लेअर संग चढाये। रातु सरणप[1] लोटीया रे ।। ३ ।।

ऐक अचुबौ[2] एसौ र सुणीयौ। कुबज्या बडी हर छोटा रे ।। ४ ।।

आप न आवै(पस)तिया नै भेजीया। क्या या कागद का टोटा रे ।। ५ ।।

मीरां कै प्रभु गीरधर नागर (च)सरण। कमल(चि)सित ज्यो रे ।। ६ ।।

[रा० शो० सं० चो० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६]

सं० पाठ–१. सरप(सर्प) २. अचम्बो(आश्चर्य)

६. काई मिस आया जी राज अठै ।। टेर ।।

राय आंगना[1] विचै उभा ही दीसो आगा जावोला कठै ।। १ ।।

कुबजा नाचन(ण) चावै सो नाचो राज रो कांई जी व(घ)टै ।। २ ।।

मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर तन मन हरि कै पटै ।। ३ ।।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७६६४]

सं० पाठ – १. आंगण

७. कित गये नेहड़ो लगाय ।। टेर ।।

जनम मरण को सांवरो संगाती तलफ तलफ जीव जाय ।। १ ।।

नत[1] ऊठ दरसण करती साम[2] को हरि विन रही मुरजाय ।। २ ।।

पेहली प्रीत करी हरी हमसुं अव दीनी छिटकाय ।। ३ ।।

गोकल ढूंढ व्रंदावन ढूंढे ढुंढी वृज सारी राय ।। ४ ।।

मो अवला की अरज सुणे ने दरसण दीजो आय ।। ५ ।।

मीरां के प्रभु (गि) गीरधर नागर चरण कवल (ळ) चीत[3] लाय ।। ६ ।।

राज० शो० ग्रं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

सं० पाठ – १. नित २. स्याम ३. चित

पाठान्तर —

क्यूं जी हरे (रि) की(कि) त गए नेहड़ो लगाय ॥ टेक ॥
बंसी वजाय मेरो मन हर लीनों रस भर तान सुनाय ॥ १ ॥
एक एक जीव मे असी आवत है मरुंगी जहर वीस खाय।
हम कूं छांडी गयो विसवासी नेह की नाव चढाय ॥ २ ॥
हम कुलवंती सों तुम त्यागी रहै दासी कै जाय।
मीरा (रां) कहै प्रभु (गि) गोरधर नागर रहे हो मधुपुरी छाय ॥ ३ ॥

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १६६७]

८. कुण करै मांरी[1] भीर रांमजी विनां कुण करै मांरी भीर ॥ टेक ॥
एक समै प्रैहैलाद[2] उवार्‍यो धर नरसिंघ सरीर ॥ १ ॥
एक समै द्रोपदी पति[3] राखी खेंचत (बा)वाढ्यो चीर ॥ २ ॥
ढांका भी तारया रांमजी वंका[4] भी तारया तारया है कालू कीर ॥ ३ ॥
मीरां कै प्रभू हर अवनासी साहिब गैहैर[5] गंभीर ॥ ४ ॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३।

सं० पाठ— १. म्हांरी २. प्रह्लाद ३. पत ४. वांका ५. गहर।

पाठान्तर—

कोण करे मारी भीड़ हरि विनां कौंन करै म्हारी भीर। टेक।
ऐक समें गजराज उवारयौ काट्यौ है भ्रम जंजार। १।
ऐक समें प्रैहलाद उवारयौ धाट्यौ है नरसंघ सरीर। २।
ऐक समें द्रोपता की पण राखी खेंचत बधि गयौ चीर। ३।
मीरां के प्रभु (भू) ह (र) अविनासी तुम साहव गहर गंभीर। ४।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लिं० ग्रं० सं० ८२६१।

९. गोविंद रे रंग राची रांणाजी मैं तो गोविंद रै रंग राची । टेर ।
सभ सिंगार बांध पग नूंपर[१] । लोक लाज तज नाची । १ ।
गई हो कुमति लही साधु की संगत । भगति रूप भई सांची । २ ।
गाय गाय हरि के गून[२] निसदिन । काल व्याल[३] सुं वांची । ३ ।
उन विन सब जग खारो लागै । और बात सब काची । ४ ।
मीरां गिरधर लाल प्रभु (भू) सूं । भगति रसीली जाची । ५ ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २०६ ।

सं० पाठ— १. नुपुर २. गुण ३. काळ व्याल ।

१०. राग कल्याण—

चरण रज मेमा[१] म्हम[२] जांनी[३] हो चरण रज मैमा हम जांनी (णी) । टेर ।
जीन[४] चरण नैन सैं गंगा नीकसी भागीरथ भूपत आंणी । १ ।
जीन चरणन सै उधरै सुदामा विपत हरीसं पत्य आंणी । २ ।
जीन चरणन छै (सैं) अहैल्या उधरी गौतम रिख[५] की पटरांणी । ३ ।
जीन चरनन छै (सैं) कुवज्या उधरी सैस गोपीयां में ठकुरांणी । ४ ।
मीरां कै है प्रभु(भू) (गि)गीरधर नागर हर चरणां मै लपटानी(णी) । ५ ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ ।

सं० पाठ— १. महिमा २. म्हे, हम ३. जांणी ४. जिन, जिण ५. रिखी ।

पाठान्तर—

सोइ चरन(ण) बरहमंड[१] भेजे नख सुरसरी झरन ।
सोइ चरन रज परसत वही तारि गौतम घरन ।
स चरन वलिवंधि पचयो विद्र रूप स धरन ।
दास मीरां लाल गिरधर अधम तारन तरन ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ ।

सं० पाठ— १. ब्रह्माण्ड ।

११. छाड़ द्यौ गिरधारी वो मारग मांरौ[1] । टेर ।

हमारै[2] संग की दूरी गई छै । मो सिर गागरि भारी वो । १ ।

मोर मुकट पीतांबर सौहै कुंडल[3] की छिवि[4] न्यारी वो । २ ।

मीरां के प्रभु गिरधर नाग(र) चरण कंवल(ळ) वलिहारी । ३ ।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २८८४

सं० पाठ– १. म्हांरो २. म्हारे ३. कुंडळ ४. छवि ।

पाठान्तर–

छोड़ दौ गीरधारी हो मारग मारो । टेर ।

सग की च(स)हेली मारै दुर गहि है मं च(स)र गार[1] भारी । १ ।

मैं दव वे(च)सन जात विंद्रावन । विस(स्व)मलयो(गि)गीरधारी । २ ।

मौर मुगट सर च(छ)त्र विराजै । कुड(ळ) की सव न्यारी । ३ ।

तुम तौ नंदजी कै छैल स (छ) वीलै । मै व्रक भांन दुलारी । ४ ।

मीरां कै प्रभू (गि) गीरधर नागर । तुम जीते हम हारी । ५ ।

रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९६ ।

सं० पाठ– १. गागर २. छव, छवि ।

राग सोरठी

१२. जासां[1] जासां जि सावरिया थांरे वारने[2] हो ।

जबतै परघट[3] भये भाव व्रज मै ।

अे जब से दुख गये सब व्रज के ॥

ये जसोधा(दा) भंरम भुलानी ये जि भुले पालन(ण) हो ॥

जासां जासां जि सावरिया थांरे वारने हो ॥

मात पिता कि वंद छुटई वावा नंदराय कि धन[4] चराई ॥

कु(कू)द पड़े कालि दह में विसिये र कारने हो ॥

जासां जासां जि सावरिया थांरे वारने हो ॥

आधा सुंरुंवध सुरु मारे केसई कंस पकड़ पछाड़े ।
जुमला-अरजन और पुतना तारने हो इंद्र कोउ चढो ।
या व्रज प कोइय न भु(भू)प छुटावन हारो ।
महर करो कान्हा ननक पर (गि) गीरवर धारन (णां) हो ।
जासां जासां जि सांवरीया थांरे वारने हो ।।
जवसे प्रीत तुम्हारी लगी जबसे लोक लाज सब कुल[५] की त्यारी हो ।
महर करो मीरा(रां) पर उभो वारने(ण) हो ।।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० २५३४४ ।]

१३. जौगीया जी आज्यौ म्हांरे देस ।।
म्हे तो,पल पल जोऊं थांरी वाट । जौगीयाजी आज्यौं मारे देस ।टेक।
आंवण आंवण कह गया वारो कर गया कौल अनेक ।
गणतां[१] गंणतां गस गई रे वारी आंगलिया री रेख। १ ।
रादे(धे) जी पूजे अंबकौ रे वारो । भर मोतीड़ा री थाल ।
वीनरावीन[२] पाई सासरो रे वारी । वर पायौ गौपाल। २ ।
ज्यौं मु[३] थांने ऐसा जांननी[४] वारो । आंगण वावु[५] खजुर।
ऊंची चढ कर जौवतो रे वारी। नेड़ा व (सो) छौ हो के दूर। ३ ।
पुरव जनम की परीतड़ो[६] हो रामां । मत दीजो च(छ)ट(का)ये ।
मीरां कहे प्रभु(भू) गिरधर नागर। (मि)मीलीया नंद के(कि)सोर। ४ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५८६ ।]

१४. जोसोड़ा रे जोसत[१] जोड़ी (ई) ले । कवरे मीले माने[२] राम । टेर।
पांना जु[३] पीली(ळी) पड़ी रे । जेसे पीलो(ळो) पान । १ ।

---

१२. सं० पाठ– १. जास्यां २. वारणे ३. प्रगट ४. घेनु ५. कुळ ।

१३. सं० पाठ– १. गिणतां २. वृंदावन, विनराविन ३. मूं, मैं ४. जांणती ५. वावूं, बुहावूं ६. प्रीतड़ी ।

१४. सं० पाठ– १. ज्योतिष २. म्हांने ३. ज्यूं

आप अखे(के)ला हो रया सजनी। मेरा ल(त)लफत प्रान(ण)। २।
मीरा(रां) के प्रभु कबरे (मि)मोलोगे। श्रीपति सरी(श्री) भगवान। ३। ❀

[अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७०।]

राग सोरठ–

१५. जोगीये मेरी न जांणी पीर।
अब तो जाय वदेस बैठा। काऊ की सुध न सरीर। टेक।
याद न आवै व्रज के मांही खेलत जमुना तीर।
ग्वालन[1] को दध खोस खाते। खोसि पीवत खीर। १।
वन बन डोलत चाव पांवते। पीवत जमुनां नीर।
व्रज वनिता संगि करै बिलास। मन मै होत अधीर। २।

❀ पाठान्तर–
जौसीड़ा रे जोतक जोय रें कवै मिलै श्री भगवांन। टेर।
थारो तो जोतक कूड़ा (ड़ो) नही रे कब घर आवै स्याम। १।
पिव कारण मै पीली (ळी) भई रे जैसे पीलो(ळो) पांन। २।
आप तो परसण होय रहे हो मेरो व्याकुल(ळ) प्रांन। ३।
मीरां के प्रभु (भू) गिरधर नागर श्रीपत श्री भगवान। ४।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५।]

जोसीड़ा तू जोतिग जोय र सुण कद मिलसी भगवान। टेर।
(शेष पूर्ववत्) [पिलानी से प्राप्त हरजसों से]

राग काफी

जोसीड़ा तू जोतग जोये र सुण कब मि(ल)सी भगवान। टेर।
(शेष पूर्व) [राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५।]

---

१५. सं० पाठ– १. ग्वालण।

मो दिन लाला भुलि गये हो। भूप भये वड़ भीर।
मारां के प्रभु(भू) गो(गि)रधर । तुम आखर जात अहीर। ३ । ❀

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६० ।]

१६. नीतरा आवें ओल(ळ)मा ॥ कांई भरम धरे संसार ॥ १४ ॥
कांई थारे लागे छे ॥

रांणेजी सांड्या भेजीया ॥ मीरां ने पाछी फेर ॥
कुल(ळ) की तारण असतरी ॥ झपट चली राठोड़ ॥ १५ ॥
कांई थारे लागे छे ॥

त्यारयो पीयर सासरो रे ॥ त्यारयो माय मोसाल ॥
मीरां सरणे रांम के ॥ झक मारो संसार ॥ १६ ॥
प्यारो माने लागे छे गोपाल ॥

नैंनन बांन[1] परी हेली मारै[2] नैंनन वान परी। टेर।
जीतू[3] देखु जीत मेरी जो आली जीवन प्राण जारी। १।
माधो री मूरत मारै उर वीचैं अटकी हिरदा मैं आंन अरी। २।
कब की ठाडी पंथ निहारूं अपनै ही भवन खरी। ३।
मीरा(रां) गिरधर हाथ (वि)बीकानी लोक कहै वीगरी ड़ो)। ४।

[संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से।]

❀ पाठान्तर–

जोगीया तें मेरी पीर न जाणी।
मैं तो आसिक बंदी तैंडी। नेक दया नहीं आंण। टेक।
तुम भी स्वारथ को सगो परमनाथ नहीं पहचांणी।
तेरै मेरै भयो विछोहा। कोई दांणां पांणी। १।
तुम विन मोहि कल न परत हैं। मीन विनां पांणी।
तुम विना हम कसे जीवैं। तरफ तरै न विहाणी। २।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६० ।]

---

१६. सं० पाठ– १. बांण २. म्हांरे ३. जित ।

१७. नांम से अटकी । सौ मीरां हर[१] नांम से अटकी । टेर ।
कोइ क(हे) मीरां भई बावरी । कोई कहे भटकी । १ ।
भर मटकी मकी[२] । या सरक ऊपर सौ मटकी पटकी । २ ।
मीरां कहे प्रभू गी(गि)रधर नागर । हर चरण[३] लपटी । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७ । पत्रांक–१५८ ।]

१८. बुदन[१] भीजै मोरी साड़ी म कैसै आंउ[१] । टेर ।
ऐक[२] गरजै दुजी पवन जकोलै[३] तीजो ललना दे गारी : १ ।
ऐक जोबन दू)दुजी मही की मटकी तीजो जमना जल[४](ळ) भारी । २ ।
मीरां कै प्रभु(भू) गी(गि)रधर नागर अवगत की गत न्यारी । ३ ।

[रा० शो० संस्थान चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ ।]

१९. ब्रहेंन[१] उभी पंथ सर । सांई अजहूं न आया हो । टेर ।
सांवन(ण) भादव यों लसे । वृखा[२] रत[३] आई हो ।
उर घटा घनघोर हयौ । नेनां(णां) झर लाउ(इ) हो । १ ।
माई बाप तुम कूं दई । तुम ही भल जाने(नों) हो ।
तुम तजि आंन भ्रतार कूं । हृदे नहीं आंनो हो । २ ।
तुम हो संमर्थ पूरण । पूरा सुख दीजे हो ।
मीरां हरि की ब्रहनी । अपनी करि लीजै हो । ३ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ८२९१ से ।]

२०. भगति दुहेली हो श्री जी राई ।
भगति दुहेली हां जी । मारी[१] रांम नाम ल्यौ[२] लागी राइ । टेर ।
मीरां जनमी मेड़त । पावन किया राटोड़ ।

---

१७. सं० पाठ– १. हरि २. मटकी ३. चरणां ।

१८. सं० पाठ– १. बूंदन २. एक ३. झकोलै ४. जळ ।

१९. सं० पाठ– १. बिरहन, बिरहिण २. बिरखा ३. रुत ।

आगला भव की भगति है । तुम मति जाणो ओर । १ ।
सीसोद्या को नसणौं । ही दुपति की धाम ।
सेवा सालिगरांम की । और नहीं कोई कांम । २ ।
असो भगति कठण है । जैसी खाडा-धार[1] ।
जै साधू सुमरण करै । तो क्या जांण संसार । ३ ।
बैकुंठां को वैसनूं और छत्र की छाहां ।
गादी तकीया रेसमि । रांम विनां (बे)कांम । ४ ।
वीस रो प्यालौ मेलीयौ । दीज्यो मीरां हाथि ।
करि चरणांमत पी गई । थे जांणो रुघनाथ । ५ ।
बीसरो प्यालौ पीय कै । सूती खूंटी तांणि ।
स्याम सूलून[4] सांवरै । झटके जगाई मोहि आंणि । ६ ।
गरड[5] चढ्या र हरि आईया । पूरी मन की आस ।
रेम झेम[6] बाज घूघरा । मिंदरीया भयौ उजास । ७ ।
मीरां विरह मैं वावरी । माथै भगति कौ मोड़ ।
रंग राति मानी फीरै धनि मीरां राठोड़ । ८ । ❀

[रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८ से ।]

❀ पाठान्तर– राग राजववोधी–

भगति दुहेली छे राणांजी ॥ म्हांरी भगति दुहेली छै ॥
थे तौ समझि भजोजी भगवान ॥ टेक ॥
भगति दुहेली राम की ॥ जिसी पांडा की धार ॥
सिर साट धारण करी । म्हांरौ कांई करै लौ संसार ॥ १ ॥
दसोता कौ वेसणौं ॥ हींदूपति को धांम ॥
सोडि पथरणां रे सभी ॥ म्हार रामजी विनां वेकाम ॥ २ ॥
सुघ पालां कौ वैठवो ॥ और छत्र की छांइ ॥
भगति विनां भगवांन की ॥ म्हारै ऐ नही आवै दाइ ॥ ३ ॥
साधू म्हारै कुटुंव कवीलो ॥ ररकां र भरतार ॥
मीरां दासी रावली(ळी) ॥ म्हारै नहीं छै लोकाचार ॥ ४ ॥

[भारतीय विद्या मंदिर, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।]

---

२०. सं० पाठ– १. म्हारो २. लौ ३. खाण्डाधार ४. सलूणों ५. गरुड़ ६. रिमझिम ।

२१. राग सोरठी—

मनमोहन सु' रूप लुभानी हो ।

मैन'ढुरि गयो स्याम सुद्र(र) दिसि ज्यु सीलैता संघ समानी । १ ।

कोई भला कहो कोई बुरा कहो मै सिरलीनी मांनी । २ ।

मीरां प्रभु(भू) गिरधर मीलिबे की जुगि जुगि चली कहानी । ३ ।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० २८८४ ।]

२२. माई मांनै' रांम मिलण कब होय । टेर ।

हर मांरै आंगण हुय गया सजनी । हूं रही अभागण सोय । १ ।

चुड़लौ नहि पैहैरू' सजनी चूक न राखौं । गैहैणौं मै रालूली खोय । २ ।

पाटी न पाड़ूं सजनी मांग न सवांरूं । कजलौ(ळो) मे डांरूंगी धोय । ३ ।

मीरां कै प्रभू हर अवनासी । संग चलूंगी रथ जोय । ४ । ❀

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ ।]

२३. जा दिन तैं तुम बिछुरे हो मेरै भई हांणी ।

तेरै कारन बन बन डोलूं । होये के प्रेम दे(द)वांनी(णी) । ३ ।

खांन पांन की सुधि न कोई काया कुमलांणी ।

अब कछु नही रह्यौ बाकी । पंड तजत प्रांणी । ४ ।

पितत पांवन त्रिरद तेरौ । वेद पुरांण बखाणी ।

मीरां कौ अब दरसन(ण)दीजे । गी(गि)रधर सुख खांणी । ५ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६०]

❀ पाठान्तर—

माई म्हांनै रांम मिलण कब होइ । टेक ।

हरि म्हांरै आंगणे हो गया-सजनी । हूं रे अभागिण रही सोइ । १ ।

चुड़लो न पहरूं रांमजी चूंप न दिवाड़ु । गहणो मै रालू(ळू)ली खोई । २ ।

पटोया न पाड़ुं रांमजो मांग न सवांरूं । कजलौ मै रालू(ळू)गी धोई । ३ ।

मीरां के प्रभु हरि अवनासी संगि चलूंगी रथ जोई । ४ ।

[भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।]

---

२१. सं० पाठ— १. सूं २. मैण, नैण ।

२२. सं० पाठ— १. म्हांने २. पेहरूं ।

२४. पद—

थांरी साध संगत परी छांडो रा। गणगोर जौ पुजौ रा। टेक।
और पुजै देवी देवता। थे पुजौ गणगौर (रा)।
मन चित्या फल पावस्यौ। थे मति जाणो ओर रा। १।
नहीं पूजां देवी देवता। नही पूजां गणगौर (रा)।
मारो[1] प्रम[2] सनेही गोवींदो। थे मति जांणौ ओर रा। २।
सेवा सालगरांम[3] की। साध संगत रो काम (रा)।
थे सो[4] वेटी राठोड़ की। थे(थां)ने राज दीनौं भगवान(रा)।
राज करे ज्यांने करणे द्यौ। म्हं(मैं) सतन की दास (रा)।
चरण रेसा साध क। म्हांनै रांम मिलण की आस(रा)। ४।
लाजै पीयर सासरो। लाजै माय मोसाल (ळ) (रा)।
चौथौ लाजे मेड़तौ। थे(थां)नै कांई कहीसी[5] संसा(र) रा। ५।
नां हम कौई चौरी करां। नां हम कौई करां अकाज।
पुन रे मारग चालतां। म्हांनै कौई[6] कहीसी संसार (रा)। ६।
क्यौं लाजै पीहर सासरो। क्यु(यूं)लाजे माय मुसाल(क)(रा)।
मीरां चरणौं[7] रांम कै। म्हांने गुर(रु) मीलाया रेदास रा। ७। ❀

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५८६।]

❀ पाठान्तर—

गोरल—

भाभीजी गोरज पूजो राज॥ संतां रो संग निवारो राज॥ टेक॥
संईयां पूजै गवरजा॥ थे पण पूजौ गौर॥
मन वांछत फल पावस्यो॥ भाभी जो तूटै गिणगोर राज॥ १॥
नंही पूजूं गिणगोर नैं॥ नहीं पूजूं आन देव॥
वाल सनेही गोविंदो॥ जांको थे नहीं जांणौ कहूं भेव राय॥ २॥
म्हे तो गिणगोर न पूजां राज॥ मोहन मित्र वीया रो छे॥
सेवा सालिगरांम की॥ साध संत रो कांम॥
थे वेटी राठोड़ की॥ थांनै राज दीयौ छे भगवान राय॥ ३॥
राज करै ज्यांनै करण दै॥ मैं संतन की दास॥
सेवा करसूं साध री॥ म्हानै रांम मिलण की आस राय॥ ४॥
लाजै पीहर सासरो॥ लाजै माय मोसाल॥
नितरा आवै ओल(ळ)मा॥ थांनै वुरा कहै संसार राय॥ ५॥

---

२४. सं० पाठ— १. म्हारो २. परम, प्रेम ३. साळगरांम ४. छो ५. कहसी ६. कांई ७. सरणं।

चोरी करां न कुमारगी ।। नहीं कुमावां पाप ।।
कुल कौ तांतौ लागीयौ ।। म्हांसूं कांई हठ लागा छो आप राय ।। ६ ।।
कद ठाकुर परचौ दीयौ ।। कद मांनी परतीत ।।
कुल की कांण ज छोड़ दी ।। या नहीं छे राजा री रीत राय ।। ७ ।।
पीहर जांऊं न सासरै ।। नंहीं जाऊं पीयां रै पास ।।
मीरां सरणें रांम कै ।। म्हांनै गुरु मलीया छै हरिदास ।। ८ ।

[रा० प्र.० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से ।]

थाने(थांने) रांणाजी पुचे(छे) वात ।। कांई थांरे लागे छे गोपाल ।। टेर ।।
कांइी थांरे लागे छे गोपाल ।।

जेमल के घर जनम लीयो हे ।। मीरां थांरो(म्हारो) नांव ।।
रमतो ने लादो कांकरो ।। सेवीया सालगराम ।। १ ।।
मीरां वेठी मेल मे ।। हांतां(थां) तो मरदंग ताल ।।
पावां वांधा गुगरा ।। कांई नाचे(नात्रां) दे दे वो ताल ।। २ ।।
वस रा प्याला राणैजी मेल्या ।। दो मीरा के हात ।।
चरणांमत कर पी गया(गई) ।। रांपण वालो रांम ।। ३ ।।
सांप-टपारो रांणेजो मेल्या ।। दो मोरां के हात ।।
हंस हंस मीरा कंठ लगायो ।। यो तो मारे नवसर हार ।। ४ ।।
रांणेजी सनेसो भेजीयो रे ।। मीरां री खबर मंगाय ।
मुई मोरां ने घीस(सा) वज्यो ।। काला(ळा) वेल जुताय ।। ५ ।।
मीरां उतरे मेल सुँ रे ।। उगव स[ग?]लो भार ।।
यो ले(यो ल्यो) रांणां थांरा मेलड़ा ।। नीत री करे छे राड़ ।। ६ ।।
प्यारो माने लागे छे गोपाल ।। हे जी मारो जनम सुदारण सांवरीयो ।।
मांने त्यार(रे)गो गोपाल ।।

मे(थे, म्हे) मोटा कुल मां जनमीया ।। ऊंची थारी जात ।।
रांणां जी सरोपो वर पाया ।। थांरे तीन कुंट को राज ।।
कांई थारे लागे छे गोपाल ।। ७ ।।

जेसा पांणी उसका ।। जेसो यो संसार ।।
आवे झकोलो पवन को जान न लागे वार ।। ८ ।।

प्यारो मांने लागे छे ।।

"उना भोजन जीमलो ।। पेरो दीषणी चीर ।।
सीसोद्या घर आवीया ।। सगला मेला मे थांरो सीर ।। ९ ।।

कांई थारे लागे छे ।।

उनाँ भोजन तज दीया मे ।। तजीया दषणी चीर ।।
राणां सरीषा वर तज्या ।। सगला (सारां(धां))मे मारो सीर ।। १० ।।

प्यारो मांने लागे छे ।।

ठंडा टुकड़ा थे पीवो कांई ।। पीवो पाटी छाछ ।।
भु सुवो भुषा मरो ।। कठे मीले गोपाल ।। ११ ।।

कांई थारे लागे छे ।।

मीठा लागे टुकड़ा कांई ।। अम्रत लागे छाछ ।।
भु सुवां भुषां मरां ।। माने काले मीले कीरतार ।। १२ ।।

प्यारो मांने लागे छे ।।

मीरां उतरया [मिहल] सुं जी ।। लीवी दुवारका री वाट ।।
समजायो समजे नही ।। ले जाती वेकुंट ।। १३ ।।

प्यारो मांने लागे छे ।।

लाजे पीयर सासरो ।। लाजे माय मोसाल ।।

२६. मा(म्हा)रा मोर मुगट वंसीवाला[1] ने-की(कि)ण राख्या वी(वि)लमाय ।

ऐ जी कीण राख्या छे छोपाय । टेर ।

तु(तूं) वडभागण राद(ध)का । कोण कीया छल-छंद ।
कर राख्या क्रस्न कु । भुज को वाजु(जू) वंद । १ ।
तु(तूं) वडभागण राद(ध)का । कोण तपस्या कीन ।
तीन लोक को नाथ है । सो तेरे आदीं(धी)न । २ ।
मुरली(ळी)वाला मोवना । मुरली(ळी) नेक वजाय ।
ऐ मुरळी मेरे मन हर लीया । जर अंगना न सुहाय । ३ ।
अलक चांप चवर करे । अद(ध)र उसीसा लेत ।
कोण पुन की मुरलीया । अद(ध)रन को रस लेत । ४ ।
ददसुत के नीचे वसे । मोती सुत के वीच ।
सो मांगत व्रजनायका । साम[2] करो वगसीस । ५ ।

२६. सं० पाठ - १. वंसीवाळा २. स्यांम.

लाला लेलो दो लख देऊं । होरा लो दस बीस ।
साम[२] हमारे ऐ कहे । कसे करु बगसीस । ६ ।
प्यारी भीजे प्रेम में । कर प्रीतम से प्यार ।
सपने मीलीया सावरो । सखी आंख खुली दुख भाग । ७ ।
वीहवीन (विरहणी) के व्रक्ष को । मरम न जांणे कोय ।
डाला पात फल फु(फू)ल मे । रादे(धे)रादे(धे) होय (८)
अरे कठीण अहीर के । नेक पीर पीछाण ।
तो मुख दरसण कारणे । छड-दइ[३] कुल(ळ)-कांण । ९ ।
वीनराविन[४] री कुंज गली(ळ) मे । बोलत दादु[र] मोर ।
मीरा(रां) ने गी(गि)रधर मीलया[५] । नागर नंद-कीसोर । १० ।

[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७०]

२७. मीरांवाई रो पांवणीयो रुड़ो । टेक ।
पावणीयो घर आवयो मीरा सज सोळे सीणगार ।
सोळे सीणगारां री ओपमा मीरांबाई रो चुरलीयो लायो । १ ।
घर राकु[१] जीमण खीचरी मीरा(रां) पावणीया ने खीर ।
सुचसु[२] जीमांऊ मारे रांमजी नु[३] जीण दीठा............ । २ ।
पावणीयो घर चालीया आ । मीरा(रां) चली रे भोलाऊ साथ ।
मीरां को प्रभु गी(गि) रधर थे तोरो नही नेण हजुर । ३ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६६५ से]

२८. मेवाड़ौ रुठै तौ मांरो[१] कांई कर देसी । गोमंद का गुण गास्यां । टेक ।
गोमत[२] मात पिता गुर(रु) गोमंद-णो (गो) मद गाया री जास्यां ऐ । १ ।
रांणौजी रुठौ(ठै) तौ मांरो काई बिगड़ैलो । हर[३] रुठां मर जास्यां ऐ । २ ।
कुल[४] की लाज तीणां जूं तोड़ो । भगत-नीसांण बजास्यां ऐ । ३ ।
मीरां कहै प्रभू गी(गि)रेधर नागर । हर रट हर मिल जास्यां ऐ । ४ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८५१ से]

---

२. स्यांम ३. छोड़ दी ४. विनरावन, व्रंदावन ५. मिळया ।
२७. सं० पाठ– १. रांद्दू २. रूचसूं ३. नूं ।
शब्दार्थ– सीणगारा—शृंगार । ओपमा—उपमा । पांवणीया—अतिथि ।
२८. स० पाठ– १. म्हांरो २. गोविंद ३. हरि ४. कुळ ।
शब्दार्थ– तीणां जूं—तृण के समान ।

राग सोरठ ।

२९. मैं तो लीयो है रामड़ीयो[1] मोल ।
कोई कै[2] सूंगो कोई कै मुंगो मैं तो लीयो तराजे[3] सुं तोल । टेक ।
आ भीरज[4] को सब लोक देखत है मं लीयो है भजंता[5] ढोल । १ ।
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर पल चारो वोल । २ । ❀

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६३९ से]

३०. मैं व्रेहन[1] वैठी जागु जगत सव सोवै री मा ऐ । टेर ।
ऐक जो व्रेहन अेसी देखी : असवन माला(ळा) पोवै । १ ।
तारा गिन(ण) गिन(ण) वीस वीविती : नैन[2] भरे भर जोवै । ३ ।
मीरां कैहै प्रभु वेग दरस दो तम मीलीया[3] सुख होवै । २ । ★

[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७२ से]

❀ पाठान्तर– १.

माई मैं तो लीयो री गोविंदो मोल । टे० ।
कोई कहै सोंगो कोई कहे मूंगो । लीयो री तराजू तोल । १ ।
कोई कहैं छांनै कोई कहै छुपकै । लीयो री वजंता ढोल । २ ।
याकूं सव लोक जाणत है । लीयो अमोला मोल । ३ ।
मीरां के प्रभू हरि अविनासी । पूरव जनम को कोल । ४ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ० सं० ७३ से]

पाठांन्तर– २.

लियौ छै रामइयौ मोल । माई मैं तो लियौ छै रांमइयो मोल । टेक ।
नां कोई हलकौ नां कोई भारी । लीयो छै तराजू तोल । १ ।
नां कोई सूंघौ ना कोई मूंघौ । लीयौ सिर साटै मोल । २ ।
नां कोई छांनै नां कोई चोरी । लीयौ छै वाजंतै ढोल । ३ ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर । पूरव जनम को कोल । ४ ।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ से]

★ पाठान्तर–

मै व्रहैन वैठी जागु जगत सव सोवै री माई । टेर ।
एक विहैनी अैसी देखी आंसूवन माला पोवै री माई । १ ।
यु है तन मन मेरा पुरजा व्याकुल वदन जो रोवै री माई । २ ।
मीरां के प्रभू हर अभनासी वहूर मरण नहीं होवै री माइ । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से]

---

२९. सं० पाठ– १. रामइयो २. कहै ३. तराजू ४. व्रिज, व्रज ५. वाजंता ।
३०. सं० पाठ– १. विरहण, विरहिन २. नैण ३. मिळियां ।

राग सांमेरी।

३१. मोहि रे मोहि रे मोहि रे सांवरे बाल-कानें हुं मोहि।
नंद-नंदन नटनागर मोहा[1] तन-मन सुप्यों[2] तोही रे। टेक।
मोर-मुगट पीतांबर राजे कुँडल[3] झलके[4] सोई रे।
मधुरि-मधुरि धुनि वेनु वजावे और न ऐसा कोई रे। १।
त्रंरूप[5] अनुप लाल गी(गि)रधर को तामे रहो मन मोही रे।
मीरां प्रभु गीरीधर कव मलहि तन-मन में सुध होही रे। २।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२८४ से]

३२. यो तो रंग धतां लग्यो हे माय। टेक।
भांग तमाखू छोंतरा सब कोई पीवै लाय।
रांणाजी भेज्यो विषरो प्यालो लीनो सीस चढाय। १।
चरणांम्रत कर पी गई मैं चढियौ मोदक माइ।
हरि-रस प्यालो जे पीवै री दुजो कछु न सुहाइ। २।
गुर(रु)-परताप साध-संग मिल कर मिलिया गिरधर आय।
महा हलाहल जहर की री व्यापो न तन मैं लाय। ३।
लोक-लाज कुल[1] की सब त्यागी हरि भगतन कै माय।
जन मीरां मतवाली[2] कीनी लै पुन पाय। ४। ❀

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३७६४४-पत्रांक-३४]

❀ पाठान्तर—१
यो रंग धतां चढ्यौ छै ये माय
पिया पियाला निज नांव का। ओर न रंग सुहाय। टेर।
भांग तमांखू छौंतरा। सब कोई पीयै लाल।
प्रेम पियाला जे पियै। तिनका और हि ख्याल। १।

---

३१ सं० पाठ– १. मेरा, मोही २. सौप्यां, सूंप्या ३. कुंडळ ४. झळके ५. त्रिरूप।
३२ सं० पाठ– १. कुळ २. मतवाळी।
शब्दार्थ– पुन=पुण्य।

राग मारु।

३३. रूप लोवानी[1] हो पीया तेरै रूप लोवानी हो।
निस नहीं आवै नींद री। दीन फीरहै[2] दिवांनी॥
प्यास लगी तेर नांम की वीरहै[3] वोहरानी।
सुक-सुया-दी[4] तन पंच निहार तौ जीकै अंक न जानी हो।
यो ओसर यों ही गयो सुनि सखी ये सयानी हो।
आव हम पी सेज री मुज ओर न भाव (वै) हो।
प्रभु गिरधर बिनां तन ताप न जाव (वै) हो॥ १॥
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से]

राग किलाण।

३४. रांम नामै मेरै धां[1] माने वासी।
रासीयो[2] राम रिजाऊं हे माय।
व्रहैंया जार की भलै साखी री। उठै जै जावै हुलसाहुं हे मायै।
मानेकुं[4] मार सांबैद[5] सातेगुरै[6] का। दुरैमतै[7] दुरहांयहु ये माय।
झांको नावै सूं रात का रैझोरी। कासण पै मे चड हु हे मायै।
गांनै को ढोलै वाणो आंभारि। मागा नैवाई घुणै गाहु ये माय।
तानै कारतार मानै कार मारै हंगै। सुंती सुरते जगाहुं हे मायै।
थे सो जी प्रभु घाणैनामी[8]। वीड़दै[9] कोसो हे गाहु ये मायै।

गुर-परसाद साध की संगत। मिलिया हरजन पाया।
जन मीरां भई मतवाली। कोई पुरबले भाया। २।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से]

पाठान्तर—२—
यौ रंग धतां चढ्यौ हे माय।
पीया पीयाला निज नांव का। और न रंग सुहाय। टेक।
भांग तवाखू छांतरा। सब कोई पीयै लाल।
..............................। मिलीया हरजन आय।
जन मीरां भई मतवाली। कोई पुरवले भाग। २।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं०सं० १०८४७]

३३ सं० पाठ— १. लुभानी २. दिन फिरै ३. विरह ४. सुख-शय्या ही।
३४ सं० पाठ— १. हृदां २. रसियो ३. विरह ४. मन कूं ५. सवद ६. सतगुरु
७. दुर्मति ८. घणनामी ९. वीड़द।

मोहुं रै वालै आ क्रीपा कीजो । रांजै[10] चंरैण की पांहुं ये- मार्य ।
मै मंदवांगण[11] क्रम आवागंण[12] । कीरते[13] कीसै गुण गाहु ये मा ।
मीरां कै प्रभु ग्रधे-नागैरे[14] वाने कावाल[15] ला पैराहुं ये माय ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं सं० ८३६८ से]

३५. ले चालो नी सांवरा रै देस उघो माहने[1] । टेक ।
मोरमुकट सिर छत्र वीराजै गुघरवारे[2] केस । १ ।
सिव सनकादिक ओर ब्रह्मादिक पार न पायो सेस । २ ।
हार सिणगार सवै तज देउंगी करुंगी मै भगवा भेस । ३ ।
मीरां के प्रभु गीरधर नागर रावेजी वालक-वेस[3] । ४ । ॐ

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७से]

३६. वरत ऐकादसी करीय नणदल नावा[1] कुं चलीय (ये) । टेक ।
भोग[2]-दांन ब्रामणकु दीजै गउ-सेवा करीय (ये) । १ ।
गंगा जमुना ओर सुरसत्ती तरवेणी त्तरीये । २ ।
राधा रुखमण ओर सतभामां कुवज्या संग रहीऐ । ३ ।
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर हरि-चरणां सीत्त[3] रहीऐ[4] । ४ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से ।]

ॐ पाठान्तर–

राग सोरठ ।

मानुहि(ही) ले चालो उधा सांवरारै देस । टेर ।
गोकल चा(छा)डि मथुरा सो(छो)डी । चा(छा)डयी छै ब्रज को देस । १ ।
उभी राधा अरज करै छै । गलै विच खुल रह्या केस । २ ।
तेरै तो खातर जोगण होउंगी । कसुंली मै भगवा-वेस । ३ ।
मीरां कैहै प्रभु गीरधर नागर हरजी सु अधक सनेच(स) । ४ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६]

---

१०. रज ११. मंदमागण १२. अभागण १३. कीर्ति १४. गिरधर नागर १५. कांवल ।
३५ सं० पाठ– १. म्हांनै २. अरु घुंघराले ३. भेस ।
३६ सं० पाठ– १ न्हांवा २. भोम, भूमि ३. चित, श्रित ४. रखीए ।

३७. वावरी[1] भई हरी कै संग न गई । टेर ।

एक दीन हर मोरै घरै आया मै दध मथत रही ।
मै अपराधण मांन ज कीनो चलतो भेट ज लही । वाव० । १ ।
इथ गोकल उथ मुथरा नगरी वीच मै वैरण भई । हम ।
इथ उत मं मथ हो सखी री मोवन सैन दई । वाव० । २ ।
आप तो जाय दुवारका मै छाए हमनै कछुव न कइ[2] ।
मीरां कै प्रभु गीरधर [नागर] गोपी व्याकल[3] थई
वावरी भई हरी के संग न गई । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से]

३८. विरज[1] कौ वसवो[2] री सा(छा)डो रै, राज करै तेरो कांन । टेर ।

वरज जसौदा अपनैं लाल कु(कूं)जव देखु जव आडो । १ ।
अत गोकल अत मथुरा विछै[3] नंदको[नंदन] ठाडौ । २ ।
मीरां कहै प्रभू गीरधर नागर माहि मांगै मो पे गाडो । ३ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९]

३९. वीनैराविन[1] मै को डैरा चाहै ।
रुखैमाणै पारैणै धांरे लामी ।। ❀

यो(ओ)लुडी लागायै किया सूंनै आवेन्यासी[2] ।
वीनांराविनै मे मागांलै[3] गारवै । १ ।

साईयां रुडै नायैकै आसो ।
पीतड़ीनां दै घाव में घूंमै पाडै ।।

ताहै मुंगरैवालो[4] वांसी वाजासो[5] ।
पीतैड़ि[6] लगायै है किसानांवा[7] । २ ।

मीरां कै प्रभु घ्रारैधारै-नांगांरै[8] ।
चशणै-कांवालै[9] की दासी ।।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३९८ से]

---

३७ सं पाठ– १. बावरी २. कही ३. व्याकुळ ।

३८ सं० पाठ– १, व्रज २. वसवो ३. विचै, बीच ।

३९ सं० पाठ–१. विनराविन, वृंदावन२. अविनासी३. मंगळ४. मुगटवाळो । ५.वजासो ६.प्रीतड़ी ७.किसनवा ८.गिरधर नागर ९.चरण कंवळ (कमळ)

❀ रुखमणी परण घर लासी ।

पद–

४०. वीरो[1] मारो[2] भलांई आयो र।
हें जी मारा तन को दरद गमायो ।। टेक ।।
सुर नर मुनि ज्याको ध्यान धरत ह सेस पार नही पायो ।।
सो दरसन(ण) सिव ब्रंह्मा दुरलभ सो मोय छनम[3] वतायो ।। १ ।।
मात पिता अर कुटम कवीलो सबकी लज्या राषी ।।
मेरी मेरे पीता कि त्रीभवन पत[4] चल आयो ।। २ ।।
नणदल जठानी वोल बोलै छी तीन को गरभ नवायो ।।
मोसाली सव नीचा किना हरद-सूख सव छायो ।। ३ ।।
ज्सवंविध[5] साज ल्यायो माहेरो, चुंदड़ घाट उठायो ।।
कवरी कलस[6] धरयौ सिर उपर वीर कलस बधायो ।। ४ ।।
कवरी कलस दीयो नणदल न वीरो मीलवा आयो ।।
ज-जकार[7] होत सुरपुर म सषीयन मंगल गायो ।।
मीरा(रां) कहै कवरीयन वोर असो वीरो गायो ।। ६ ।।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७, पत्रांक ४ से]

राग रेगटो।

४१. वांवरो[1] घर जाण दै मोय सांवराजी सै कांम है। टे०।
मोर मुगट सर धरै उं[2] सं(च)दन की खों(खोर) हो।
वांयां तो बाजुबंद जु करया उवाकै गल-मोतीयन की माल[3] है। १।
वीद्रावन[4] मै रास रच्यो है सैस गोपी ऐक कांन है।
और कै आनंद है रादे को कोन हवाल हैं। २।
दासी मीरां लाल गी(गि)रधर और को नहीं कांम है।
सांवरी सुरत देख कै मैरौ तो मन अरांम है। ३।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से]

---

४० सं० पाठ– १. बीरो २. म्हांरो ३. छिण में (क्षण में) ४. पथ ५. जिस विध ६. कळस ७. जै जै कार, जय जय कार।

४१ सं० पाठ–१. बावरी २. उर ३. माळ ४. वृंदावन, विनराव्रन।

४२. सजन घर वेला ही आज्यौ। टे०।
वहूत दिनां की जोऊ छौं[1] वाटड़ी।
घणां घण सुख ल्याज्या(ज्यौ)। १।
औ बिरियां कब होइगी कोई(कहे) संदेसा। २।
मीरां के उस नाह का मन खरा अंदेसा। ३।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २८३८० से]

४३. सतगुरु वेगा आजोजो म्हारा जनम सुधारण राम।
अबै मोहि मति छिटका जो जी[1]। टेर।
जा दिन सैं तुम बिछड्या रे दिन दिन दुख्ख अपार।
रोय रोय नै मारी[2] अंखियां राति सुख नहि पायौ लगार। १।
झूठी माया याहां पडी रे उन मैं त(ते)रौ ध्यांन।
हात जोडनै करु वीनती मोय तुमारो आन। २।
आकुल(ळ) व्याकुल(ळ)फिरु वदन की आवौ वैहन[3] के भरतार।
अबकै [किरपा करो मनमोहन दो मोकूं दीदार। ३।
आज मिलौ के काल मिलौ रे तलफ तलफ तलसाय[4]।
हिरदे हरि दरसण की लग रही गुरु विन भरम न जाय। ४।
ब्रह्म प्रसंगी सतगुरु म्हारा दूर करौ भ्रम-नास।
दासी मीरां अरज करै है वे सतगुरु मै दास। ५।

[अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से]

४४. सांवरा सु[1] प्रीत लगाई री माई री सांवरा से प्रीत लगाई। टेव।
जल डूबत गजराज उबारयो संतन के सुखदाई।
ऐसा[1] सांम[2] कुं मै कबै नहो विसरु[3] राखु(खू), माहरा[4] हीरदा रे माही री। १
शिव ब्रह्मा जाकुं रटत निरंतर सेस सहस्त(स्र) मुख गाई।
च्यार वेद वाकुं नैत-नैत[5] कहै वाकों कोई पार न पाई। २।
नित नुव[6] दरसण करु री सांम को देख-देख सुख पाई।

---

४२ सं० पाठ– १. छूं।
४३ सं० पाठ–१. ज्यो जी। २. म्हांरी। ३. बिरहन। ४. तन जाय।
४४ सं० पाठ–१. स०। २. स्यांम। ३. बीसरूं। ४. म्हारा। ५. नेति–नेंति। ६. नव,नया।

सांवरी सुरत की लेत बलैयां नी(नि)त नी (नि)त होत भलाई। ३।
जनम मरण को भे[7] सब मिटीयो हरि-सरण में आई।
मीरा(रां) के प्रभु गी(गि)रधर नागर हरख-हरख गुण गाई। ४।

[राज०शो० सं०० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से]

४५. सांवरे न जांणी म्हांरी पीर रे लाल। टेर।
रोइ-रोइ अंखीयां लाल भई है।
आंसूड़ा सूं भीज्यौ म्हांरो चीर चीर झर रर रर। १।
हम जाने प्रभु की ठोड़ विलूंबे।
कैसे धरे मन धीर धीर धर रर रर। २।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर।
ताकर[1] मारयो प्यारो तीर तीर रर रर। ३।

[पिलानी से प्राप्त हरजसों से]

४६. राग सोरठ।

सावलीयो[1] जोवा-सरको राधा नेणां भरि-भरि नैणां नरखो[2]। टेक।
सैस सखी मिली मंगल गावै कोटि सखो मन हरख्यो। टेक।
मोर-मुगट पीतांबर सोहै कुंडल की छवि नरखो। टेक।
संख चक्र गदा पदम वीराजे सुधामापुरी वरसो। टेक।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर वर पायो सरवर को। १।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से]

४७. राग मारु

सेझड़ली सरखी री सेझड़ली संवारी।
तेरे ग्रह[1] आवन[2] कह गये प्रभु मोहन नंद-कुमार। टेक।
जाई जुही चंपमाल पाडल फूल गुलाबी।
कुंदनि वरी केतकी करना कि कलीयां[3] डारी। १।

---

७. भेद, भय।

४५ सं० पाठ—१. ताक'र, ताक कर।

४६ सं० पाठ—१. सांवलियो। २. निरखो।

४७ सं० पाठ—१. गृह, घर। २. आंवण। ३. कळियां।

विविध भांति बौहो गीदवा करवीरी दै हौ संवारि।
दासी मीरां लाल गिरधर तौसी नवी नीनारि। २।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से]

४८. राग विहागरो।

सेभड़ी बनाय स्यांमां तेरै पोढै गिरधर आय। टेक।
केतकि चंपौ केवडौ अवर[1] सुगंधी जाय।
सौडि[2] सुपेदी गीदवौ पचरंग पिलंग विछाय। १।
बिरहनि ऊभि मग जोवै हौ प्यारे प्रीतम मिलीये आय।
जांन करौ तुझ वारेनै हौ जन मीरां वलि जाय। २।

[रा० प्रा० विं० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से]

४९. होरि आई हौ पीया मारै[1] देस।

हो लख[2] भेजु(जूं)संदेसो होरी आई हौ वालम मा[रे] देस। टेक।
लख-लख पतीया पियाजी कूं भेजु(जूं) उधो जी गयो रै संनेस। १।
आंवां जी पाका महुं झड लागा नीबुंका(वा) पाका मारै देस। २।
पीउ कै कारण मै जोगन[3] हुंगी करुं मै भगवा-वेस। ३।
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर राधाजी बालक वेस[4]। ४।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से।

---
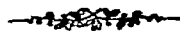
४८ सं० पाठ–१. और, अर। २. सौंदी।

४९ सं० पाठ–१. म्हांरें। २. लिख। ३. जोगण, जोगिन(ण)। ४. भेस।

मीरां के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियां ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती हैं शेष पद नहीं ।

परिशिष्ट ३

१. अब हरि कहां गऐ नेहरौ[1] लगाय । टेर ।
छोड़ चल्यौ बिसवासीघाती प्रेम की वात सुणाय । १ ।
घायल कर निरमायल कीनी खवर न ली मोरि आय । २ ।
छोड़ चल्यौ है व्रहै[2]-समंद्र मैं नेह की नाव लगाय । ३ ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर रया[3] छौ अवधपुर छाय । ४ ।

[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

२. अरी नंदनंदन सौं मेरौ[1] मन मान्यो कहा करैगो कोई री । टेक ।
हों तो चरन-कमल[2] लपटानी(णी), जो भावै सो होय री । १ ।
वे घर छाडि आवै घर मेरै पर घर लोग रिसांय री । २ ।
नंद-नंद सौं मै कबहूं न तोरौ[3] मैं मिलोंगी निसांन(ण), बजाय री । ३ ।
सासु(सू)लरै(ड़ै)मोरी ननं(ण)द रिसांनी हसत बटउवा[4] लोग री । ४ ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर विधनां लिख्यौ संजोग री । ५ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ से]

३. आज सखी मेरै अणंद बधावो घर मे गी(गि)रधर लाधौ हो । टेक ।
वन ढुढौ[1] वृंदावन ढुढो ढुंढ लीयो वृज बाधो है ।
विच[2] ज(झ)रोखे जां(झां)खन(ण) लागी घर मे गी(गि)रधर ठाढो है । १ ।
दुद(ध) दई मोरे घरत घणो हे सौं-सौं[3] (सोर-सोर) दध खायो है ।

---

१ सं० पाठ–१. नेहड़ो । २. विरह । ३. रिया, रह्या ।
२ स० पाठ–१. म्हांरो । २. चरण कंमळ । ३. तोडौं । ४. बटाऊ ।
३ सं० पाठ–१. ढुंढयो । २. वीच । ३. चोर–चोर ।

कब कि ठाढो पंथ नीहारू वांय पकड़ हर बावो है। २।
र्मो(मोर)-मुगट पीतांबर सोवै ओर रेसमी वागो है।
मोरां कै प्रभु गीरधर नागर: व्रह बूज्यो रंग लागो है। ३।
[राज शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से।]

४. आ वदनामो[1] लागै मीठी रांणा जी माहाने[2]।
आ विदनामी लागै मीठी। टेर।
साध-संगत मै(में) निसदिन जातां दुरजन(ण)-लोकां दीठी। १।
प्रेम-गल्यां[3] मै(में)मोवरण मिलग्या क्यूं कर फिरु अफूटी। २।
सासू नरणद मा(म्हां)री देरांणी जिठांणी बळ-जळ भई अंगीठी। ३।
थै तौ हौ सीसोद्या रांणा मैं हूं दूदाजी री बेटी। ४।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर चढेगयौ[4] रंग मजीठी। ५। ❀
[राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से।]

५. ऐ री कुबजा नै जादु डारा जिन[1] मोहन ली(लि)या साम[2] हमारा। टेर।
निर्मल जल(ळ)जमना जी को छाड्यो जाय पिया जल खारा। १।
इति[3] गोकुल उत मथुरा नगरी वीच वहै जल-धारा। २।
जमना कै नीरां-तीरां धेन चरावै मोहन मुरली-वारा। ३

❀ पाठान्तर—
आई वदनामी मीठी राणा जी मा(म्हां)नै आई वदनामी मीठी।
सावरो गरी को मौहन मिल्यो क्यो करि फिरोलो अफुठी।
रानां वात करै छी सावरीया सो लाग अभुठ भीठा।
मीरा(रां) के प्र(भू)भु गिरधर नागर हरदे वरछै अगीठी। १।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से]
पत्रांक— ८२-८३।

---

४. विरह।

४ सं० पाठ—१. बदनांमी। २. म्हांनै। ३. गळयां। ४. चढग्यो।

५ सं० पाठ—१. जिण। २. श्याम। ३. इत।

मोर–मुगट पीतांबर सोहै कानां कुंडल(ळ) छविवारा। ४।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर हम उनकी वै मा(म्हां)रा। ५। ❀
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से]

६. कत गश्रो[1] सांवरौ जादु कर केंसै। टेर।
बंसी वजाय हरचो मन मेरो। ल गश्रो[2] सत हर कै। १।
वृंदावन की कुंज गलं(ली)[3] मै ल संप(ब)[4] गश्रो सत धरकै। २।
मीरां कै प्रभु कपटी देख कबऊ न मले[5] ग्रग भरकै। ३।
[राज०शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से]

७. राग सोरठ देस।
कांई तेरे कुब्रज्यांसे मन रादी(जो), हम से अनबोलन(णां) माराज[1]। टेर।
हम से कहे सी(सि)णगार उतारो द्रग अंजन कजरा धोय डारो।
सीर पे ती(ति)लक रमायो पहेरो चोलणा हो मारांज। १।
हमरो कहे जेर उस लागे उनके जांणे मदन-रस पागे।
हम से दु(दू)र-दुर भागे अ नहंस बोलणा माराज। २।

❀ पाठान्तर—१.
कुबजां न जादुकारा जीन मोया स्यांम हमारा टेर।
कुबज्या वैंरन कोस-वद(विध) जलमी मोया स्यांम हमारा। १।
ग्रत गोकल ग्रत मुथरा नगरी विस(च) वहै मज(फ)धारा। २।
आस–पास रतनागर सागर विच वैहै प(र)स धारा। ३।
सीतल जल जमुना जी को त्यागे जाय पिया जंल खारो। ४।
काथा सौनो लुंग चौफा(सुपा)री पांनन मै कसु खारो। ५।
सीतल स(छ)यां कंदम की त्यागी धु(धू)प सैया ची(सि)र धारा। ६।
जमुना की नीरां-तिरां धेन चरावै मोहन वंसीवारा रे। ७।
मोर–मुगट पितांबर सोवै कांना कुंडल धारा। ८।
मिं(मी)रां कै प्रभु गोरधर नागर चरण–कमल सी(चि)त धारा। ९।
[राज शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से]

६ सं० पाठ–१. गयो। २. ले गयो। ३. गलिन। ४. ले सब। ५. मिले।
७ सं० पाठ–१. महाराज, मा'राज

जमुना-कनारे वंसी बजावे वंसी में कछु अचरज गावै ।
तरंसी तान सुणावे च(छ)तीयां चो(छो)लणां माराज । ३ ।
वंसी की धुन सुन मेरे मन भई व्रज की सकी(खी) सब देखन(ण) आई ।
प्रेम उमंग मन भाई वन-वन डोलणां माराज । ४ ।
मीरां राग वळ-मळ गावै सो गत सुर नर नही मुन्की[2] पावे ।
हीऐ हरकतृ(खत) ललचावे कर सु(सूं)दांवणा हो माराज । ५ ।

[अनूप सं० ला० लालगढ़, पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से]

८. काहे कूं देह धरी भजन बिन काहे कूं देह धरी । टेक ।
गीता भागोत सुंनी नहीं श्रवना(णां) तीरथ डग न भरी । १ ।
भूका(खा) वेर भोजन नहीं दीनौं रांमजी गुर-सेवा न करी । २ ।
मीरां के प्रभु हरि अबनासी संगत सूं सुधरी । ३ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२ १ से]

९. काहू कि(की) मैं व्रजी[1] नाय रहूं । टेर ।
सखी सहेली सू न मोरी हेली नो किसी वात कहूं । १ ।
ओ मन लागो सायव-सेतीं सबका बोल सहूं । २ ।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण लपट रहूं । ३ ।

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से]

१०. कैसे जीउं री माइ हरि विनि कैसै जीउं री माई । टेक ।
झडत दादर मोर जल-चर जल सै वीछुड़े[1] तलफ-तलफ मर जाइ । १ ।
पीया वीना पीलीभई कां घगघण खाई औखद मुलानी ।
चंचुर वेद फिर फिर जाई ।

---

२. मुनि की ।

९ सं० पाठ–१. वरजी ।

१० सं० पाठ–१. विछुडे ।

दासी हौए वंन-वंन फी(फि)रु बीथा तन छाई ।
दासी मीरां लाल गीरधर मील्या सुखदाई ।३। ✿

११. गिरधारी म्हांसू प्रीत निभाजा(ज्यो) हौं । टेर ।
औ तौ जीव प्रभू औगुणगारौ औगुण दिसा मत जाज्यौ हो ।१।
काया-नगर मै में भोड़ पड़ैला जद म्हांरो(रे) उपर[दया]कराज्यो हो ।२।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर बाहि पकड़ ले जाजो(ज्यो) हो ।३। ★
[अनूप सं० ला० लालगढ पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से]

✿ पाठान्तर

कैसे[1] जोऊं माई मैं हरि बिन कैसैं जीऊं माई । टे० ।
कमठ दाद(र)[2] बसत जल मे जलहि उपजाई ।
छाडि जल सूं बीछड़ तलपि[3] मर जाई ।१।
आंमै क[4] डाली सूवटौ बैठो सूवा रै उडि जाई ।
पिठि पाछैं जम खडा काठ घुंण खाई ।२।
पांनां ज्यूं पीरी भई बिदन[5] तन-त[न]छाई ।
ओखद को लागै नहि बैद झखि जाये(ई) ।३।
पांच पंचा पाज बांटधी जोति द्रसाई ।
येक मै दुभेला रहता सो क्यूं बिछराई ।४।
दुरबल हूवै वन-व्रन फिरी हेला दे धाई ।
दासी मीरां लाल गिरधर मिले सुखदाई ।५।
[राज० शो० स० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३६६ से]

★ पाठान्तर

जी ग्रि(र)धारी म्हांरी प्रोति न्र(नि)भाज्यौं । टेक ।
य्यौ जीव छै प्रभू वोगुंण आऐ वोगुण[6] दिसा थे मैति जाज्यौ ।१।
काया–नग्र(गर) मे (में) भोड़ि पड़ैली जैदि[7] म्हारो ऊपर कराज्यौ ।२।
मीरां के प्रभू ग्रि(गिर)धर नागर बांहै पकड़ि न्रि(नि)भाज्यौं[8] ।३।
[राज० शो० सं० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८६६६ से]

सं० पाठ–१. कैसे । २. दादुर । ३. तकफ, तड़फ । ४, आंम की ५. वेदन (वेदल
६. ओगण । ७. जदि । ८. निभाज्यो ।

गिरधर लागै री नीको मोहन लागै री नीको । टे० ।
लटपटी पाग मोहन सिर सोहै सिर केसर को टीको ।
मैं मेरै दिल राचि[1] रहो री राग सुण्यौं वंसी को । १ ।
चलो री सखो स्यांम कौ निरखां मुख देखां मेरा पित्र कौ ।
नैंन(णं) सूं नैंन मिलाइ र(स)खी री भौ भागौ मेरा जीव कौ । २ ।
कड़वा तेल कहां ज पुरुसौं किसन खवईया घी को ।
वृंदावन की कुंज गलिन[2] मैं मांगे दान मही को । ३ ।
माखन(ण) खाइ मटके(कि)यां पटकी औंर टंटोल्यो[3] छोको ।
मी(रां) रा के प्रभु(भू) गिरधर नागर दुख मेटो मेरा जीव कौ । ४ ।।

राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्र० सं० ७६३६ से

पद —

गी(गि)रधर कै मन भाई रांणांजी मै तौ सांची रांम संगाई ।टेक।
जैमल कै घर औतार ली(लि)या हे । रांणां कू(कु)ल व्याहाई ।
भोग रोग व्यापे मेरी सजनो । श्री भगिति[1] परगट हौऐ आई । १ ।
पुरवे[2] जनम को मै थी-गौपका । चुक पड़ी मु(झ)ज माई ।
जगत लेहेर ल व्यापी घट भोथर । दीदो ह(रि)री छटकाई । २ ।
लौक लाज कू(कु)ल की मरजादा । छौडी सकल वडाई ।
मेरी कह्यौ थे मानो रांणां जी । वरजै मी(रां)राबाई । ३ ।
जो तम हाथ हमारौ पकड़ौ । खबरदार मन माई ।
दे(स्यूं)सूं सराप साचे मन तौको । जल वल भसम हौऐ जाई । ४ ।
जनम् जनम् कौ प्र(ति)थी[3] प्रेमेसर[4] । थारी नही (छूं) छु लुगाई ।
थारे म्हारे झूठो सनेहो रांणाजी । गावे मीरांबाई । ५ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १२५७७

सं० पाठ—१. राजी । २. गळिण । ३. टंटोळ्यौ ।
सं० पाठ—१. भगति २. पूरव ३. पति ४. परमेसर ।

पाठान्तर—
राग सोरठ।

राणां जी हूं तो गिरधर कै मन भाई।
लोक लाज कुल(ळ) की मरजादा। छाड़ी सकल बड़ाई हो। टेक।
पुरब जनम की गोपिका हो। चूक परी[1] मो मांई।
जगत लहरि व्यापी घट भीतर। तब मोहि दई छटकाई हो। १।
जैमल कं कुल जनम मेरतै। रांणां को ले व्याही।
भोग रोग होये लागा री सजनी। वा भक्ति प्रगट होय आई हो। २
मात पिता सुत कुटुंब (क)बीलो। या सब झूंठ सगाई।
परम सनेही गी(गि)रधर पीतम। वाही सुं सुरत लगाई हो। ३।
जो तुं हाथ हमारो, पकरो[2] तो। खबरदार मन मांहो।
देऊं सराप सांचे मन तुमको। जरि भसमी होई जाइ हो। ४।
जनम जनम गी(गि)रधर की दासी। तुम री नांहि लुगाई।
तेरै मेरै झूठो सनेहा। गावै मीरांबाई हो। ५॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९० से

गी(गि)रधर प्रीतम प्यारो रांणा जी। म्हारो गी (गि)रधर प्रीतम प्यारो। टेक।
है घट माह[1] घट ही से दूरा। सबको सरजणहारो।
गौतम नारा[2] ह(रि)री ऐहेल्या[3]तारी। कीर कौटम[4] सब तोरा[5]। १।
गजकाज पी(पि)यादा ध्याया। द्रौपता को चीर बधायो।
प्रतग्यां प्रहलाद को राखो। हरीणांकुस और बीडारचो। २।
नांमदेव की छान छवाई। प्र(भू)भु धना को खेत नीपायो।
दास कबीर के बाल(ळ)द लायो। आप भयो छै बणजारो। ३।
ढोला बाजा सफल जुग लोग खारो। रांम नाम को टेक पकडी।
दुंनीया झक मारो। ४।
नाग व्यथ[6] और कंस पछाड्यो। नख पर गी(गि)रधर धारचो।
मिरां कहै प्रभू गिरधर नागर। रांणै जि(जी) कुंण बिचारचो। ५॥

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७ से।]

सं० पाठ—१ पड़ी। २ पकड़ो।

सं० पाठ– १. मांह, मांही। २. नारी। ३. अहिल्या। ४. कुटुम्ब। ५. त्यारचो। ६. नाथ।

गा (गो)व्यंदा सूं प्रीति करत जबं ही क्यूं न हटकी।
अब तौ वात फैलि पड़ी जैसं बीज बटकी । टेक।
अबै चूकौ तौ गैर नांही । जैसै बीज बटको । १ ।
घर घरी माफ घेरा होत । वांणी घट घट की।
सांवरौ तौ मेरा सीस परि । मैं लोक लाज पटकी । २ ।
जल मैं घुली गांठि परो रसनां गुन(ण) रटकी।
अबै छुड़ांऊ तौ छुटै नांही मैं कैहो बार झटको । ३ ।
मद के हसतो समा' फिरत प्रेम लटको।
मोरां के प्र(भू) भु गिरधर बिनां कोन जाने घटकी । ४ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८ से।

* पाठान्तर– १ राग प्रजा।

गोव्यंदा सु(सूं) प्रोति करि । ते जवतै क्यौ नहो अटकी री।
अब तो वात फैल परि । जैसे बोज बटकी री । टेक ।
प्रेम की घुरी गांठि दीनो । रसना रटेती।
अव तौ छुड़ाया छुटै नांहीं । अनेक बेर झुटकी री । १ ।
घरि घरि महि मथाना । वानी घट घट की।
सुनि सुनि सब सीस धारो । लोक लाज पटकी । २ ।
बीच कौ विचार नहीं । छप परी तटकी।
ज चुकै तो ठौर नाही । जैसै कला नटकी । ३ ।
मद के गजराज जैसे । प्रेम मगन लटकी।
मीरां प्र(भू)भु भगति बुद । हिरदा में गटकी । ४ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।

पाठान्तर–२ "राग मारू

तबहो क्यो न हटकी री गोबींदा सु प्रीत करत।
अब तो मन फैल परो जैसै बीरुध वटकी ।।
घर घर घर घोलो मथानी वानी घट घट की।

सं० पाठ– १. सनान।

सुनी सुनी हु सीस धरो लोक लाज पटकी री ॥
बीच को वीचार नही छाप परी ठेड कीरां ।
जो चुकु तो खेर नही जैसै कला नटकी री ॥
मद के गयेद जैसै मत पेमलट की री ।
मीरा प्रभु भक्ती वुद हीरदे अट्कीरी ॥

अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० २२३ से ।

गोविंद ना गुण गास्यां । रांणा जी मैं तो गोविंद ना गुण गास्यां । टेर ।
राणे जीं रूठे तो सांम[1] रखेला । गोविंद रूठा[2] कमलास्या[3] । १ ।
..........मंदिर जाऊं । हरि दरसन(ण)नित पास्यां । २ ।
साध सगत मां बैस(ठ)करी नै । लोक लाज गमास्यां । ३ ।
सतसंग रूपी नांव वेसो न । भवसार तिर जास्यां । ४ ।
विखना प्याल्या रांणौ जी भेज्या । इम्रत कर गटकास्यां । ५ ।
मीरां कहै गिरधर नागर । निरभै नोवत वास्यां (वजास्यां) । ६ ॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं २०६ से ।

पाठान्तर–१

गिरधर रा गुण गास्यां । रांणाजी मे(म्हे)तो । टेर ।
साध संगत भगति ह(रि)री की । सहजे ही तर जास्यां । १ ।
म्हारै छैं पण चरणांमत रो । नित उठ दरसन(ण)जास्यां । २ ।
कथा कीरतन चित कर सुणस्यां । महा प्रसादी पास्यां । ३ ।
सुण सुण वचन साधके मुख के । खांत करे करि गास्यां । ४ ।
नाम अमोलक ईम्रत रूपी सिर रै । साटै ल्यांस्यां । ५ ।
लोक कुटंब की लाज न मा(म्हां रै । अस्टक गोविंद गास्यां । ६ ।
प्रेम प्रतीत जमां निसवासर । बोहोर न भव जग आस्यां । ७ ।
थे हट मांड्यो स हम उपरि । विसरा प्याल्या पास्यां । ८ ।
जन(जिण)मारगी(गि)ये संत पधारया । ऊन मारगीयै में(म्हे)तो जास्यां । ९
जन मीरां गिरधर जी रै चरणै । पीवत मन न डुलास्यां । १० ॥

राज० शो० सं० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से ॥

सं० पाठ– १. राज । २. रूठ्यां । ३. कुमळास्यां ।

❀ पाठान्तर–२

गोमंदा रा गुण गासां रा(णा)जी मे(म्है)तो गोम(द)न रा गुण गासां। टेर।
राणु जी रुसला तो सैर राखवो ह(रि)री रूठा केम ला(जा)आं। १।
राम नाम की जा(झा ज(झ)चलाया वौ भ(व) वै सागर ती(ति)र जासां। २।
चरणामत कौ नेम हमारै वौ नी(नि)त उठ दरसण जासां। ३।
बी(वि)सरा प्याला राणा जी भेजा वौ ईम्रत कर गट कासां। ४।
यो संसार ही नाम जान कै वौ ताकौ संग छीटकासां। ५।
मी(रां) रा कै प्र(भू)भु गा(गि)रधर नागर चरण मै चत लासां। ६।।

संत साहित्य मंडल बीकानेर के लि० ग्रं० से।

पाठान्तर–३

गोविंद का गुण-गास्यां। टे०।
रांणौ जी रूसैला तो गांव रखैला। हरि रूठां कुमलास्यां। १।
राम नाम की जिहाज चलास्या। भो सा(ग)र तिर जास्यां। २।
चर्णामृत को नेम हमारै। नित उठि दरसन(ण)जास्यां। ३।
विख रा प्याला राणै भेज्या। इंम्रत करि करि गटकास्या(स्यां)। ४।
यौ संसार विनास जानि कै। ताको संग छिटकास्या(स्यां)। ५।
लोक लाज कुल कांणि(णी)तजि कै। निरभै निसांण घुरास्या(स्यां)। ६।
मीरां के प्रभू हरि अविनासी। चरन(ण)कमल वलि जास्या(स्यां)। ७।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं ७३ से।

✱ पाठान्तर–४

राणा जी म्हे तो गोविन का[1] गुण गास्यां। टेर।
चिरणामत को(रो)नेम हमारौ नित की[2] मंदर जास्यां। १।
थे रूस्यां म्हारो कुछ न वीगड़ै हर रूस्यां मर जास्यां। २।
राणा जी म्हे तो गोविन रा। टेर।

मैं दासी गिरधर चिरणां की तन मन सै लव लास्यां । ३ ।
मीरां के प्र(भू)भु गिरधर नागर फेर जलम नहीं पास्यां । ४ ।
राणाजो म्हे तो गोविन रा । टेर ॥

पिलानी से प्राप्त हरजसों से ।

पाठान्तर—५

राणा जी म्हे तो गोविंद रा गुण गासां । टेर ।
ओ संसार असार जांण कै ताकौ संग छिटकासां । १ ।
लोक लाज कुल कांण त्याग कै निरभै निसांण घुरांसां । २ ।
रांणी जी रूठ तौ वारौ देस रखावसी हरि रूठां मर जासां । ३ ।
चरणामृत को नेम हमारे नित उठ दरसण जासां । ४ ।
विखरा प्याला रांणजा भेज्या इमरत कर गटकासां । ५ ।
मीरां कहै प्र(भु)भु गिरधर नागर चरण कमल चित लासां । ६ ॥

अनुप सं० ला० लालगढ पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ।

राग विलावल ।

डार गयो मोहन गल पा(फां)सी ।
पीत[१] कारकण[२] वन वन डो(लूं)लु ।
। डा ।
छो(छि)पे मुथरा के वासी । डार गयो मोहन गल पासी ।
वो(वि)रह की दाडी[३] जोगन हुवगी । प्रान तजु करवट लेवु(वू)कासी ॥
। डा ।
मीरां क(के) परभु गी(गि)रधर नागर । तुम ठाकर हम तेरी दासी ।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७८ से ।

सं० पाठ—१. गोविन्द रा । २. रा ।
सं० पाठ– १. प्रीत । २. कारण । ३. दासी ।

राग विहंग ।

जगत सारो सोवै रै आली में(मैं) व(वि) रहन जा(गू)गु सारि रे(ण)न ।टेर।
रंग महल मै(में)विरहन ठाडी । असुरन(ण)माला(ळा) पोवै रै । १ ।
यो तन मेरै पुरजन पुरजानी । नत उठ श्याकुल(ळ)होवै रै । २ ।
मीरां के है प्र(भू)भु गी(गि)रधर नागर आवा(ग)घमण¹न होवै रै । ३ ।।

राज शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से।

जैहर दी(दि)यो मैं जांनी(णी)हो जी रा(णां)नां ।
अपना कुल (ळ)को संख्या मेटो मैं हो अवला वोहोरानो¹ । टेक ।
कंचन काटि(टी)अगन मैं डारयो । नीकस्यो वा रापा(णी)नी हो ।
न्याव की(कि)यो मा(म्हा)रो परमेसुर छणया दूधर पा(णी)नी । टेक ।
मा(म)रुधर मेवाड़ मेड़तो लेटू मा(म्हां)रा कुल(ळ)की कांनि हो ।
हाथल(ळ)तो राना(णां)जी सो जोरया गिरधर को पटरा(णी)नी हो । टेक ।
कोटक भूप वारो सांधो पर सावा(वां) हा(थ)त विकानी हो ।
मीरां के प्रभु(भू) गिरधर नागर चर(ण)न कव(ळ)न लपटानी हो ।। १ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से पत्रांक--७६ ।

पाठान्तर--

जहैर दी(दि)यौ मैं जां(णी)नी । राणाजी जहर दीयौ मैं जां(णी)नी ।
अपना कुल कौ पडा दी करि लै । मैं अबला वौरानी । टेक ।
जैसे कंचन कम्यौई कसोटी । हौन है वारैहवानी ।
सुपत्र भगत प्रिवि प्रसेवा रौ । मैं हरि हाथ विकानी । १ ।
वीख कौ प्यालौ राणै दी(दि)यौ । अचयो मी(रां)रा जांणी(नी) ।
मीरां के प्र(भू)भु न्याव निवेडयो । छाणो(ण्यो) दूध र पांणी । २ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से पत्रांक--८६

सं० पाठ—१. आवागमन, आवागमण ।

सं० पाठ—१. वोरानी ।

राणां जी जहर दो(दि)यौ मैं जांणी
आपणा कुल को कारण राख्यौ । हूं अबला वो ही राणी ।'टेक।
कंचन लेर अंगनि मैं डारयौ । निकस्यौ बौरां वानी(णी) ।
मेरौ न्याव कीयौ परमेसर । छार पौढ़ धर पाणी । १ ।
राणै जी परधन पढाया । सुण ज्यौ जी तुम राणी ।
जो साधाँ को सग निवारो । तौहि करूं पटराणी । २ ।
कोटिक भूप वांस संतन परि । जाकै हाथ बिकांणी ।
हथलेवो रांणा जी सू जोडयौ । गोविंद की पटराणी । ३ ।
मुरधर देस मेडतं मारूं । ज्यांरी मैं वेटी कहांणी ।
मीरां के पति राम गोसांई । चरण कमल लपटाणी । ४ ॥
भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० से

पाठान्तर–

रांणा जी जहर दीयौ म्हें जांणी ।
अपना कुल का पड़दा करिल्यौ: म्हे अबला वहौराणी । टेक ।
जब लग कंचन कसियो नांही: होतं न वारा वानी
प्रभु मेरौ न्याव कीयौ है: छांण्यौ दूध र पांणी । १ ।
कोटिक भूप वारौं संतन परिः जिनकै हाथ विकानो ।
मीरां के प्र(भू)भु गिरधर नागर संतचरण लप(टां)ताणी । २ ॥
रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८ से
जाके प्रिय न राम वैदही ।
सो त्यागीयै कोटि वैरी सम जदपै(पी) परम सनेही । टेर ।
पिता तज्यो प्रहलाद वध वभीखन[1] भरथ तजीमहि ।
नाव विसर गई ग्वा(लि)नि हरि लेऊ हरि लेऊ वोलै । १ ।
पेम[2] विवसि ग्वालनि भई कुछ ओर ही और वोलै ।
मीरां प्र(भू)भु गिरधर न मिलौंगी-भई दासी विन मोलै । २ ॥
संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० से ।

सं० पाठ–१. विभीखण । २. प्रेम ।

राग सोरठ

जोगीया रे आज्यो रे ईण देस ।।टेर।।
पैरण चो (ला) ला भसम कंथा । भेख धर्यौ वेस ।
सांई तेरे कारणै । मैं तो प्रिड[1] कीयो परवेस ।।१।।
कर उपाय् पतराख मेरी । ले जावौ अपने देस ।
आउंगी मै नाहि रहू रामजी वी (वि)ना परदेस ।२।।
आगै केता पतत उभारया । तेरौ काहा संदेस ।
जिद करू कुरवांण तुज पर । धरू न दूजी देह ।३।।
दरद दिवानी भई बावरी । डौली सांवरा रे देस ।
दासी मीरां भई पंडर । पलट्या काला केस ।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६१ से

सं० पाठ १. पिंड

पाठान्तर १ (राग सोरठ)

जोगीया आवौ नि आ देस ।
नैनज देखु नाथ मेरौ । ध्यांन करू आदेस ।।टेर।।
आयौ सांवण मांस सजनी । भरे जल थल नाल ।
रावली (लि् या नै को (कि) रण विलमाय् राख्यौ । ब्रिहन भई वेहवाल।१।।
वीछड़ीयां कोई भो भयां रे जोगी । ऐ दिन अंहैला जाय ।२।।
वामु मुरत मांहारै मन वसी रे । वाली छी (छि) न भर रह्यो न जाय ।३।।
मीरां कै कोई नांहि दूजो । दरस दो हर आय् ।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से

पाठान्तर २

जोगीया आवोजी ऊन देस ।
नजर पड़ै जब नाथ मेरो । धाय् करू आदेस ।।टेक।।

आया सावण मांस सजनी । भरीया जल थल नाल ।
रावलिया कीण (बि) लभाई राख्यौ । ग्रहेणी विहाल ।१।।
बिछड़ीया कौई दन भया । जौगण दन ऐला जाय ।
एक वरीया देहो नीद्रया फैरी । नगर म्हारं आय ।२।।
वा मुरत मेर उर बसे । पल भर रह्यौ नाहो जाय ।
दासी मीरां कै कौई नाही दूजौ । दरसण दो है (हे,) रि आई (य) ।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७ से पत्रांक १७७-७८

राग सोरठ

जोगिया जाये बस्यौ परदेस ।
जहां गयो फेरि आवै न जावै । कुंण जाय कहै संदेस ।।टेक।।
बेगमपुर जाको गम नांही । कौंन करै परवेस ।
चलत चलत सुर नर मुनि थाके । थाके विप्र नरेस ।१।।
देस बदेस संदेस न चहूंचै । जाणयौ न परै लवलेस ।
कहौ कौन ले जाव सनेसो गुर । झने[1] जाण्यौ परेस ।२।।
बहोत भांति मैं जतन कीनां । नां नां विधि के पेस ।
तातै मेरै मिलण कौ । मन मांहि रह्यौ अनेस ।३।।
वांको न आवन मेरो न जावन । तो अब कहा करेस ।
या तन ऊपर भसम लगाऊं । मुंड मुंडाऊ केस ।।
मीरां प्रभु गी (गि) रधर कै कारन पहरया भगवां भेस ।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६० से

सं० पाठ १. जन

पाठान्तर १

जोगीयाजी छाड़ रह्या परदेस ।।टेक।।
जब का बिछड़्या फेरि नि (नीं) मिलीया । बोहोरि न दीया जी संदेस ।१।।
या तन ऊपरि भसम रमाऊं । खौर करूं सिर पेस ।२।।

भगवां भेस करूं तुम कारणि। ढूंढत च्यारयूं देस।३।।
मीरां के प्रभू तुमारे मिलण मन। जीवण जनम अनेस।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

जोगीया दरसण दीज्यौ राज।
कर जोड्यां करणां करूं। मोहि बाहां गह्यां की लाज।।टक।।
लोक - लाज बिसारि डार्‌यौ[1]। छोड्यौ जग - उपदेस।१।।
पांच मुद्रा भाव कंथा। नक सक[2] राख्यौ साज।
जोगणि होइ [जुग] ढुंढस्यू। म्हारी घरि घरि फेरी आजि।२।।
दरध (द)वांन तन जाण आपणूं। मिलीया दीनदयाल।
मीरां के मनि आनंद भया। रुंम रुंम[3] खुसीयाल।३।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ-संग्रह से

सं० पाठ—१. डारी। २. नखसिख। ३. रोम – रोम।

देसड़लो हो राणा रुडो थां (रो रा।
म (मैं): कबुन[1] 'रहोंजी। कदे न गुथाऊं सी (सि)र जूड़ो।टेर।
पाटी नही पाडूं मांग सवारुं। कदे न परु[2] था (थां) रो चूड़ो।१।।
मी(रां) रा के प्रभु गी [गिरधर] नागर वर पायौ छै पूरो।२।।

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० २०६ से

सं० पाठ—१. कवहुं न। २. पेरूं।

दुखन(ण) लागै री नैन (ण) दरस बीना दुखण लागे री नैन।।टेर।।
क (ल) ल न पड़त मोय। ऐक पग ठाडी भई छैमासी रैंण।१।।
व्रह[1] अगन मेरै अंग लगी। बोलत मीठा वेण।२।।
ब्याकुल विकल(ल)भई हरी(रि)कारणौ। करवत वह गयो अेन।३।।
मीरां कहे प्रभु कबही मिलोगे। दुख मेटण सुख देंण।४।।

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ संग्रह से

सं० पाठ–१. बिरह

पाठान्तर

दुखन लागै नैन दरस वि (नां) नी ।।टेर।।
जब के तुम बिछूरे मेरे प्रभूजी । कबहू न पायौ चैन ।१।।
ब्रिह बिथा कासु कहुं सजनी। करवत बै गई श्रेन ।२।।
एक टक ठाडी पी(पि)या पंथ निहारूं । भई छमासो । रैनि ।३।।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी । दुख मेटण सुख दैन ।।४।।

[राज० शो० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से

न भावै थांरौ देसड़लौ रूड़ौ ।।टेर।।
हर की भगत(ती) करै नहीं कोई । लोक बसै कूड़ो ।
दोय कुल (ल) त्याग भई मैं बोरी । नाख[१] परी चूड़ौ ।१।।
मांग रु पाटी उतार धरु सब । काटु सिर कौ जूड़ो ।
मीरां हटोली कहै संतन सूं । वर पायौ मैं पूरो ।।२।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५१ से

सं० पाठ–१. माल्यो ।

पाठान्तर १

न भावै थांरौ देसड़लौ रूड़ौ ।
हर को भगत करै नहीं कोई । लोक वसै कूड़ौ ।।टेक।।
दोय कुल त्याग भई मैं वौरी । न्यहा परौ चूड़ौ ।१।।

मांग रु पाटी उतार धरु गी । काटु सिर को जूड़ो ।२॥
मीरां हटलो कहै संतन सू । वर पायो है पूरो ।३॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८५४ से

पाठान्तर २

न भावै थांरो देसड़लो रुड़ो ।।टेर।।
हर की भग [ती] करै नहि कोइ, लोक बसै कूड़ो ।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८६२ से

२२

नारी [ड़ी] हूं न जाणे, वेद भडो[1] ही अनारी है ।। टेर ।।
पीर पीर[2] पात होसी[3], । पीलंग पर डारै है ।१।।
तुम घर जावो वेद, । रोग मोरो भारी है ।२॥
धुरका[4]मे (में)वेद भ (व)से तम जावो जासू मेरी आ(या)री है।३।।
मी [रां] तो तीहारी दासी, सदा ही पिया री है ।४।।

रा० शो० सं० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६३९ से

सं० पाठ—१. बड़ो २. पीली, पीली ३. जैसी ४ द्वारिका, द्वारका

२३

पाठान्तर १

नारी गजैजवंति
नारी ऊन जाणै वैद, निपट अनारी है ।।टे०।।
पीली पीली पांन जैसी, पिलंग पर डारी है ।
तुम घर जावो वैद, मोहि रोग [illegible]

लगी है कलेजा मांही: मूरख टटोलै बांही ।
जबतैं सिधारो रांम, बिरह- बांन मारी है ।२।।
बूंटी सब झूठी भई, कारी हू न लागै काई ।
द्वारका मैं बसं वैद, तासूं मेरी यारी है ।३।।
मीरां कूं जिवाई चाहो, तुम घर आवो स्याम ।
रोग को कटईयौ मेरो, कुंज को विहारी है ।।४।।

राo शोo संo चोपासनी, जोधपुर के हo लिo ग्रंo संo २८८४ से

२४

पाठान्तर २

नाड़ी हू न जांणै वैदो, निपट अनाड़ी है ।।टेर।।
पीरी पीरी पांन जैसी, पलग पर डारी है ।
तुम घर जावो वैदो, मोह रोग भारी है ।१।
करक कलेजै मांह, मुरख टंटोलै वांह ।
रोग हू को भ्रम नांही, झूठा भ्रमधारी है ।२।
बुंटी सब झूठी भई, कारी कम सारी है ।
माधोवंन वसै वांसु, मोरी तारी है । ३ ।
रहत है उदास वास, जीवना की थोरी आस ।
प्रेम हूं के लागे वान, ब्रह हूं की जारी है ।४।
मीरां कुं जीवाई चाहो [तो] मम घर सांम आवो ।
रोग को कटइयो मेरै, कुंज नो विहारी हैं ।५।

राजo शोo संo चोपासनी, जोधपुर के हo लिo ग्रo संo ७६६४ से

२५

पाठान्तर ३

राग जअवंती मांडी-
नाड़ी ही न जांनै वैदो । निपट अनाड़ि है ।।टेक।।

पिरी पिरी पांन जैसि । पिलंग रि डारि है।
तुम घरि जावौ वेदां । मेर रोग भारि है।१॥
जड़ि बूंटि सवही झूंठी । ओखदि सवहि खारि है।
उठि, वैदा जावौ घरि । मोहि रोग भारी है।२॥
द्वारिका में बानव दो । जासू मोरी तारी है।
मीरां के प्रभू ग्रि (गिर) धर नागर । कारी करम सारी है ॥३॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि. ग्र० सं० ८३६६

२६

पाठान्तर ४

नाड़ऊ न जानै बैंदा । निपट अनाड़ी है ॥टेर॥
पीरी पीरी पान सी । पलंग प्र (पर) डारी हैं।
तुम घरे जाव्रो वेद । मेरे रौग भारो है।१।
बूटो सब झूठी भई । कारीऊ न लागै काई।
द्वारका में वसवो दो। जासू मेरी हारी है।२।
चनन की खोर लीयें । और वेंजिती हीयै।
मै तो रमकुं असै जांणै। तुम विन माली हौ।३।
मी (रां)रा कुं जीयाई चाहौ। मम घरि आवौ साम।
रोग के कटईया मेरे । कुंज के विहारी हौ ॥४॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६६५ से

२७

राग सोरठ :

पतीय्या[1] म (मैं) कस[2] लीखु (खूं), लीखीये न जाय् ॥टेक॥

पतीय्या लीखु तो, लीखीय न जाय ।।
पतीय्या लीखु कछु लीखीय न जाव, बतीय्या[3] कहीय न जाये ।
कलम गहु (हूं) तो मेरो कर कंपत है, जीवरो अंत थरराये ।।
ब्रीह[4] बीथा कासु (सूं) कहु सजनी, नैनै[5] रहे जल (ल) छाये ।
समारी दीसा वधो देख चले हो, तुम कज्यो[6] समझाये ।।
मीरां के प्रभु गीं (गि) रधर नागर, रहे जी मधुपुर छाये ।
पतीय्या कस लीखु लीखीये न जाये ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८६२ से

सं० पाठ–१ पतियां । २ कैसें । ३ बतियां । ४ बिरह । ५ नैंण, नैन । ६ कहीज्यो ।

२८

पाठान्तर– १ (राग सोरठि)

पतियां मैं कैसै लिखूं, लिख्यौ न जाइ ।। टे०।।
कलम भरत मेरो कर कंपत है, हिरदे रहहो घरराई ।१।
किस विध चरण कमल मै गहसू, सबही अंग थरराई ।२।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चरण रहू लिपटाई ।३।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से ।

२९

पाठान्तर– २ (राग सोरठ)

पतीया मैं कैसै लिखू, लिखीए न जाय ।टेर।
कलम गहत मेरो कर कांपत है, नैन रहे जल छाय ।१।
अंतरगत की कोई न जांनत, चूंठ कलेजो खाय ।२।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर बैग दरस दो आय ।।३।।

राज० शो० सं० ...

३०

पाठान्तर—३

पतीया मैं कैसे लिखूं, लिख्यौ न जाई ॥ टेर ॥
बात कहूं मौहि बात न आवै । नैंन रह्या छै झरलाई ।१॥
कलम भरत मेरौ कर कंपत है । हिरदौ रह्यौ थरराई ।२॥
किस विध चरण कवल मैं गहसूं । सबही अंग थरराई ।३॥
मीरां के प्रभू हरि अबनासी । चरण रऊं लपटाई ॥४॥

रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से

३१

पाठान्तर—४

पतीयां मैं कैसे लिखूं, लिखौ रो न जाइ ॥टेक॥
कल न परत मेरो कर कंपत है । नैन रहे झड़ लाई ।१॥
बात कहूं तौ कहत न आवै । जीवड़ौ रह्यो छै डराई ।२॥
बिपत हमारी देखि तुम चाले । हरिजी सूं कहीयौ जाइ ।३॥
मीरां के प्रभू सुख के सागर । चरण कंवल बलि जाइ ॥४॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

३२

बाबी[1] मी (रां) रा मांन लो थे म्हांरी,
थांनै सईयां बरजे सारी ॥ टेक ॥
राजा बरजे रैयत बरजै, बरजै सो परवारी ।
कंवर पाटवी सो बी बरजै, और सेहेल्यां[2] थारी ।१॥
सीसफूल सिर ऊपर सोहे, विंदली सोभा भीरा ।
गलै गुंजारी करमै कांकंण, नेवर की झणकार ।२॥

साथां कै संग वंट बटवी, लाज गमाई सारी ।
ऊठ सूवांरै नित-प्रित[3] जावो, ल्यावो फूल कूंगीरी ।३।।
वडा घरां का छोरु कू (वा)चावो[4], नाचो दे दे तारी ।
वर पायो हींदवाणी सूरज, अब कांई दिल में धारी ।४।।
तार्‌यो पिहर सासरो, तारी मायै मूसारी[5] ।
मीरां नै सतगुरुजी मिलीया, चरण कंव (ल्) ल बलिहारी ।५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१६६ से

सं० पाठ–१. भाभी । २. सहेल्यां । ३. नितप्रति । ४. कुवावो । ५. मुसाल् ।

३३

विड़द घटै कैसै माई हौ ।
गैन भगत को सांसो मेट्यो । आप भयो हरि नाई हौ ।।टेक।।
भीलनी[1] का बेर सुदांमा का तंदूल । द्रोपता री चीर वड हौ[2] ।
करमाबाई री खीचड़ो आरोगी (ग्यो) कबीर के बालदि[3] आई हौ ।१।
दुरजोधन का मेवा त्याग्या । साग विदुर[4] घरि पाई हौ ।
धनां भगत की खेत नवायो[5] । नांमदेव हरि छांनि छवाई हौ ।२।
ज्यां पह(र) से रयां माटी तुलसी । ज्यांरी पुजा लाई हौ ।
मीरां के प्रभु गीरधर नागर । दास की सार दिखाई हौ ।। ३ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१६२ से

सं० पाठ–१. भीलणी । २ ...

३४

राग खमायची ।

मथरा जावो तो थांनै नंद की द (दु)वाई । टेर ।।
सब मिल गवाल् सबै मिल गोपि, में तो थांरे दरसण आई॥१॥
नैना री सोभा इधक विराजै मैं, तो थांरे लोचन लोभाई । २ ।।
सोलें सहस गोपका त्यागी, कुबजा नै कंठ लगाइ । ३ ॥
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, कुबजा रीनै धीनै[१] है कमाइ ।। ४ ।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६४ से

सं पाठ— १. धिन, धन (धन्य)

३५

मर (मेरे) (रे) भाव (वें) परभुजी वीनां, सोही है उजाड़ ।। टेर ।।
सुखघ[१] (ग) यो सरवर उड् गया, हंसला रही है नीमांणी नार । १ ।।
गज परभु कमनीसवासर कर, नही पासूं आहार । २ ।
ऐक सम (मै) मोतियां र (रे) मोल, ह (हं)सा चुगत जवांर । ३ ।
मीरां तो कव गीरधर नागर, हरी चरणा ची(चि)त लाव । ४ ।
मा (रै) र वीना म; माश्रो जी र, सोइ है उजाड़ ।। ५ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४, पत्रांक-७-८ से

सं पाठ— १. सुक ।

पाठान्तर—१.

आज म्हारे भावै माधो विनां, वसत उजार ।। टेर ।।
ऐक समौ मोतियन के भरोसे, हंस चुगत जवार । १ ।।
सुक गये सरवर उड गये, हंस रही नीवाणी नार । २ ।।
सरवर भरिया हसा जी आया, वैठा छै पांख पसार । ३ ।।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, अब कै पार उतार ।। ४ ।।

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि०ग्रं०सं० १०७ से

३६

मेरो मन राम ही राम टैवे [रटै] ॥ टेर ॥
राम नांम जपि लीजे रे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे । १ ॥
कनक कटौरे इम्रत भरियो । पीवत कू (कुं)ण नटै रे । २ ॥
जैसे अवहूं ईसक लगी रस । मु (ह) व उलट लटै रे । ३ ॥
रांम नांम कैसे तजि देऊं । मैं लीयो है सीस सटै रे । ४ ॥
मीरां के प्रभू स (सु) ख के सागर । तन मन तापहि पटै रे ॥ ५ ॥

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ से

३७

में तो रांमा दर [द] दीवानी । दरद न जांने(णे) कोई । टे० ।
अंतर गति नै लागी उदासी । किस विध रहणा होई । १ ॥
सूली उपर सेझ हमारी । किस बिध रहणा होई । २ ॥
में तो तुम्हारी चेरी भई हूं । तुमै मति जानू दोइ । ३ ॥

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ से

पाठान्तर–

म्हारो मन रामौई राम रटै ॥ टेर ॥
भाल तिलक गल तुल (ल)छा की मा ला)ला, फ(फे)रत कौन हटै । १ ॥
कनक कटौरा मैं इमरत भरियौ, पीवत कौन नटै । २ ॥
जनम जनम का खत छै पुराणा, नाम लियां तै फटै । ३ ॥
जिम तिम करके राम सिमरलौ, जाकूं वेद रटै । ४ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, लीयौ छै सीस सटै ॥ ५ ॥

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से

३८

मैं अमली हरि नांव की । मुझि बाइड़ि आवैं ।
पी(पि)या पोयाला नांव का । कछु और न भावैं ॥ टेर ॥
या तन की कूंडी करूं । मन पोमत भेऊं ।
ग्यान नलणीया हाथिथे ले । इम्रत रस पीऊं । १ ॥
पीया जोगी भरथरी । गुर गोरख पावैं ।
धनि माता मैंणांवती । सुत पैं राज छुड़ावैं । २ ॥
और अमल किस काम का । चढि उतारि जावैं ।
अमल करो इक नांव का अमरापुर पावैं । ३ ॥
अमल का(कि)या मावा किया । सुखि रैंणी विहावै ।

३९

वीठल रह्यो वसी म्हांरै मन, विठल रह्यौ वसी ॥ टेर ॥
व्रहैन[1] काली नाग ज्यौं रैं, म्हांरै काजलडै रे डसी ॥ १ ॥
ओखदीया अलगा करो रे, म्हांनैं छिम पावौं सोधसी ॥ २ ॥
भोजनीयां भावे नहीं रे, म्हांरै नैणां की नींद नसी ॥ ३ ॥
अै पैला दुरज (ण)न लोकडा, म्हांरी वात न जांने ईसी ॥ ४ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, कहौ गत की किसी ॥ ५ ॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८२ से

सं० पाठ—१. विरहण ।

४०

वे न मिलै उसकीं[1] मैं दासी ॥ टेर ॥
गोकल् ढुंढ वनरावन[2] ढुंढ्यो, ढुंढे लई मथरा अरु कासी ॥ १॥
इण बीरजवा से प्रीत न करीये, डार गये गल् प्रेम की फासी ॥ २ ॥
इत गोकल (ल्) उत मथरा नगरी, बीच मिलै पूरण अबनासी ॥ ३ ॥
मी(रां)रा कैहै प्रभु गीरधर नागर, चरण कवल (ल्) चितहर की मै दासी ॥ ४ ॥

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से

सं० पाठ—१. जिणरी, जिणांरी । २. बिनरावन, बिंदरावन ।

४१

वैद बन (ण) आवजो[१]
जी म्हांरो व्याकुल (ल) भयो रे, सरीर, हकीम वण आवजो ।।टेर।।
ओखद म्हांरै रांम नांम कौ, सोई हिरदै लिखावजो ।
वेगाई वेग पधारो गिरधर, चरण खोल[२] रज पावजो ।।१।।
मोर–मुकट सिर–छत्र विराजै, केसर तिलक वणावजो ।
संख चक्र गदा पदम विराजै, गरुड़ चढनै वेगा ध्यावजो ।।२।।
दरद दिवांनी को वैद रामैयौ, सूतोडी नैं आंण जगावज्यो ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, हंस – हंस कंठ लगावज्यो ।।३।।

अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० ११३ से

सं० पाठ—१. आवज्यो । २ खोल् ।

४२

सतसंग में परी[१] हो धिन–धिन आज नी घरी ।टेक।
श्रवण सुणत श्रीमत भागवंत, रसनां रटत हरी ।
सांवरी सूरत मोहनी मूरत, उर विच आन अरी ।।१।।
मोर–मुग (ट) त पीतांबर सोहै, कांना कुंडल जरी ।
वद्रावन की कूंज गलन मैं, मुरली की टेर करी ।।२।।
भली भई घर सांम पधारे, आज सुनाथ घरी ।
निरधन तै मैं भई धनवंती, ब्रह्मा ताप हरी ।।३।।
मन डूबौ लीला सागर मांही, एही थाट थरी ।
मीरां कह प्रभु गिरधर नागर सर(णौ) नै आंन परी ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४२ से

सं० पाठ—१. पड़ी ।

४३

सांवरे रंग राची रा(णां) ना जी, राम सो रंग राची ।।१।।
देउ देव गारो मलु हरा दाम सुं, वा तो मो मन नहीं है काची ।।२।।
देस वदेस[१] जुग[२] सोही जांनै (णैं), बांधि घुघरा नाची ।।३।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, हूं तो जनम-जनम की दासी ।।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से

सं० पाठ—१. विदेस । २. जग ।

राग सोरठ

४४

हरि विन क्यों जीउ माई
उर कदा उर कमठ, जलचर जलां उपजाई ।
मीन पलभर बीछरैं, तौ (त) लफ मर जाई ।।१।।
वीस भक्ति प्रतपल कीन्हीं, जोति दरसाई ।
एकरा सेभ सदा रह्यो सो, क्यूं पीव विसराई ।।२।।
वप विरह कै वस परी, जैसे काउ धन खाई ।
अब की वेर न आवीया तैं, करक राह जाई ।।३।।
पी(पि) या विन पीरी[1] भई,जैसे विथा तन छाई ।
ओखद मोकुं नी लगै, लगा–वोराई ।।४।।
व्याकुल(ल) अइ वन–वन फिरी, टेर सुनाई ।
दासी मीरां लाल गिरधर, मिले सुखदाई ।।५।।

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह०लि० ग्रं० से

सं० पाठ –१. पीली ।

पाठान्तर—१

हरि बिन क्यूं जीवूं इ माई ।।टेक।।
पात जैसो भई पीरी, बेदन तन छाई ।
औखद तौ अनेक दीनी, मोहि लगी नहीं कांई ।१।
सबक सीतलमीन दादरा, जल ही उपजाई ।
मीन जल सौं बिछटै तातैं, तलफ मरजाई ।२।
जाग निस दिन सुमर पहैरं, अब सोइ मत जाई ।
पाच चोर महाबली, तौको हरैगा भाई ।३।
बिरह बैदन लाइगी तन सौ, जैसे काठ घौरा खाई ।
वौखद तौ अनेक दीनी. मोह लगी वहेराई ।४।
वीस पछ प्रतपाल कीन्हीं,प्रभु जोगीया नु जोति दरसाई
दासी मीरां राम प्रभु, मिले सुखदाई ।।५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

पाठान्तर—२

मैं हरि विन ना जियो[1] माई ।
पान तै पियरी भई, जैसे काठ घुंन (ण) खाई । टेर ।
ओखद मूल कछु नहिं लागै, वैद फिर जाई ।१।।
मीन दादुर वसत जल (ल) में, जलहि उपजाई ।२।।
एक दिन जल तें वीछुरे, हों तलफ मरि जाई ।३।।
तवक टूटे जंजीर छुटे, खंजर खा मरिजाई ।४।।
ज्ञान गासिन मा (रे) र सतगुर, पार व्है जाइ ।५।।
जंगल–जंगल हरि को मैं ढूंढो, प्रभु को चितलाइ ६।।
एक दिन जौ हरि मिलि है, हों खटक मिटजाई ।७।।
सकल वृज की ललित सोभा, क्रस्हन[2] उर छाई ।८।।
दासी मीरां लाज गिरधर, मिले सुखदाई ।९।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४७५६ से

सं० पाठ—१. जिहों । २ कृष्ण, किसन ।

४५

देव गंधार—

हों तो गोविंद सों अटकी
थकत भए दोऊ द्रग मेरे, तकि सोभा नटकी री ।१।।
लोक–लाज कुल (ल) कांनि[1] मेटी, सखी रहूं न घर अटकी री ।२।।
बिन गोपाल (ल) लाल सुनि सजनी, को जानै घटकी री ।३।।
हों तो भई सांवरे कै बसि, लोग कहै भटकी री ।४।।
मीरां प्रभु के संग फिरूंगी, कुंज–कुंज ठटकी री ।५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ से

सं० पाठ—१. कांण, काणि ।

[मीरां के वे पद जिनकी अधिकांश पंक्तियां पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है,]
केवल एक या दो पंक्तियां नहीं मिलती।

१

अेसो पीव जांण न दीजै हो, अेसो पीव जांण न दीजै हो। टेक।
चंदण का लेसाय जु लपटाय रहीजे, हो लपटाय रहीजे।१।
जु केसर में हीगलु जैसे, राच रहीजे हो।
पांच सात सखी मी (मि) लकै, रस पीयो हो ॥ २॥
साम[1] सलुणों सांवरो मुख, दीठ जीय हो।
तुम ही पूरण साईयां पुरा, सुख दीजो हो ॥ ३॥
तन मन जोबन वारके, नीव लाल कीजीये हो।
मीरां व्याकुल (ल्) भई आपणों कर लीजे हो ॥ ४॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के०ह०लि०ग्रं०सं० ७६३६ से

सं० पाठ-१. स्यांम।

टिप्पणी प्रस्तुत पद से साम्य रखने वाला पद मीरांसुधासिंधु, मीरांमाधुरी, मीरां-बृहत्पदावली भाग १ आदि में आया है किन्तु, उनसे प्रस्तुत पद की प्रथम दो पंक्तियों के अतिरिक्त पद नहीं मिलता। पाठान्तर में कुछ पदों की अधिकांश पंक्तियां मिलती हैं।

(राग मारू)

पाठान्तर—१. अेसौ पीव जांन दीजै हो ॥ टेक ॥
चलि री सखी मिलि राखिये, मुख निरखत जीजे हो ॥ १॥
स्यांम सलौनौ सांवरौ, नैंना रस पीजै हो ॥ २॥
मीरां बिरहनि व्याकुली [अपनी] करि लीजे हो ॥ ३॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से

पाठान्तर—२.

ग्रैसे जन जान न दीजै हो ।
ग्रायो मिलां सहेलड्यां । बांथा सुख लीजै हो ।। टे० ।।
नैन सलौने साइयां । देख्यां सू जीजै हो ।
तन धन जोवन वारकै । निछरावलि कीजै हो ।। १ ।।
ग्रपणी ग्रारत कारणे । वाकै पाई परीजै हो ।
चंदन के ए[क]रूंख ज्यौ । चरण लिपटीजै हो ।। २ ।।
हाथ जोड़ि विनती करुं । मेरी ग्ररज सुणी जे हो ।
मीरां व्याकुल बृहनी । वाकू दरसण दीजे हो ।। ३ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

पाठान्तर—३

ग्रैसे जन जांण न दीजे हो ।
ग्रावो मिलो सहेलड्यां । वातां सुष लीजे हो ।।टेक।।
नैन सलूंनै सांइयां । देष्यां सू जीजे हो ।
तन धन जोवन वारिकै । नछरावलि कीजे हो ।।१।।
ग्रारति ग्रापणी कारणै । वाकै पाई परीजे हो ।
चदण केरा रुंष ज्यूं । चरण लिपटी जे हो ।।२।।
हाथ जोरि बिनती करुं । मेरी ग्ररज सुणी जे हो ।
मीरां व्याकुल ब्रिहनी । जाकूं दरसण दीजे हो ।।३।।

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह०लि० ग्रं० से

पाठान्तर –४

ग्रैसौ पीव जांन न दीजै हो ।।टेक।।
चलि री सषी मिलि राषिये, सुष निरषत जीजे हो ।।१।।
स्यांम सलौंनो सावरौ, नैंना रस पीजै हौ ।।२।।
मीरां बिरहनि व्याकुली, अपनी कर लीजै हो ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से

पाठान्तर—५

इसो पीव् जान न दीजै हो ।
स्यांम सलौना लौडइणां, मुष देख्यां जीजै हो ।।टेक।।
आवो सषी सहलड्यौ, वातां सुष लीजे हो ।।१।।
आरति आपणी कारणे, वाकै पाई पड़ीजै हो ।
आत्माध्यांन लगाई कै, वाकै चरणा चित दीजे हो ।।२।।
चंदन केस नाग ज्यूं लपटाई रहीजे हो ।
कर जोड़े बीनती करौं, मेरी अरज सुणी जैं हो ।।३।।
मीरां व्याकुल बिरहनी, अपनि करि लीजै हो ।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २७ से

पाठान्तर ६

जानै न दीजै हो, असो ही प्रभु जान न दीजे हो ।
तन मन धन करु बारनै, हरदै घरि लीजे हो ।।
आवो सषी मुषी देषिये, नैना रस पीजे हो ।
जांही जांही वद रीझ है, सोही सोही वद कीजे हो ।
सुन्दर स्यांम सुहावणो, मुष देवै जीजे हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सो तो वडो भागी हो ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से

पाठान्तर—७

जान न दीजे हो ईसो, पीय जान न दीजै हो ।
स्यांम सलौंनौ सांवरौ, मुष निरषत जीजे हो ।।टेक।।
चलौ री सषी मिली देषीए, नैनां रस लीजे हो ।
आरति अपनी री सषी, वांकै पाय परीजे हो ।।१।।
तन मन धन वारि कैं, हीरदै धरि लीजे हो ।
जिही जीही विधि हरि मिलैं, सोई सो विधि कीजे हो ।।२।।
भलो कहो कोई बुरी कहो, दोस न दीजे हो ।
मीरां प्रभु गिरधर मिलै, मोहि अभै-पद दीजे हो ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से

२

एकण सूं हंस बोल रे धूत'र' जोगी ।।टेव।।
अंग भभूत व गले (ले) मृगछाला, कुंज कुंज हंस खोल रे ।।१।।
सेली सींगी भभूत को बटवो, अब तो मुनज खोल रे ।।२।।
जगत वदीत करी मन–मोहन, ओर कहा[1] वजावत ढोल रे ।।३।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोल रे ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

सं० पाठ—१. कईं ।

टिप्पणी-मीराँ माधुरी पृ० ६६ पद सं० २७५ तथा पृ० ४८-४९ पद स० १२५ पर प्रस्तुत पद से साम्य वाला पद है किन्तु, प्रथम पंक्ति साम्य तथा कुछ शब्द साम्य के, दोनों पदों में प्रर्याप्त अन्तर है ।
मीरांसुधासिन्धु–पृ० ६३० पद सं० २१–से प्रस्तुत पद में २ पंक्तियां कम है तथा क्रमान्तर से थोड़ा भेद है। मीराँ वृहत्पद–संग्रह पृ० २९८ पद सं० २४२-२४३, मीरां वृहत्पदावली–पृ० ११६ पद सं० २४१, मीरांसुधासिधु से साम्य रखने वाला ही पद है। अन्य कई संग्रहों में मीराँसुधासिधु से पूर्णतया मिलता हुआ पद ही दिखाया गया है ।

पाठान्तर—१

हाँ रे जोगी एकर सुं मुख बोल ।।टेक।।
काजल रेख नैन अनीयाली, बूंद मनी द्रिग खोल ।।१।।
अंग बभूत गलै म्रिघछाला, घर घर भीख म[त]डोल ।।२।।
जगत वदीत कीनी प्यारे, कहा वजाऊं ढोल ।।३।।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोल ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ से

३

उधौ लागी कटारी प्रेमनी, प्रेमनी प्रेमनी रे उधौ ला० ।।टेर।।
गोकल(ल)सूं रे वालौ मु[थ]रा सिधायौ, वात पूछां छां कुसल(ल्) खेंमनी ।।१।।
मैं जल(ल्) जमनां कौ भरण जात ही, माथै गागरीया हेमनी ।।२।।
मीरां के प्रभु हरि[1] अवनासी, सांवरी सुरत सुंदर स्यामनी ।।३।।

अनूप सं० ला० लालगढ, पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से

सं० पाठ—१. हर

टिप्पणी–मीराँसुधासिन्धु के पृ० २८२ - २८३ पद सं० २३ से अन्तिम दो पंक्तियां
मिलती हैं। शेष नहीं।

मीरांमाधुरी-पृ० १४२ पद सं० ३६० प्रथम पंक्ति भेद के साथ २ द्वितीय
पंक्ति नही मिलती, शेष मिलती है।

पाठान्तर—१
लागी कटारी प्रेमनी उद (ध) व जी, प्रेमनी प्रेमनी ।।टेर।।
गोकुल थी वालो मथुरा गया था, हूं वात पूछूं कुसल खेमनी ।।उधो०।।
जल जमना जल भरवा गया था, माथे गगरीया हेमनी ।।उधो०।।
मीरांबाई कहै प्रभु गिरधर नागर, सावरी सुरत सुंदर समांनी ।।उधो०।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से

पाठान्तर—२. प्रेमनी प्रेमनी, प्रेमनी उधव जी लागी कटारी प्रेमनी ।।टेर।।
काचै धागै हरि सूं बंधाणा, ज्यूं, तांणे ज्यूं तेमनी ।।१।।
जल जमना जी रौ भरवानै गई थी, माथै गागरिमा हेमनी ।।२।।
गोकल सूं तुम मथुरा पधारया,वात पूछू छूं कुसल खेमनी ।।३।।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर,आसा लगी छै थारा नामनी ।।४।।

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

४

कज्यौ[1] रे आदेस जोगीया न, कज्यौ रे आदेस ।
आउंगी मै नाथ रहूंगी, करु जटा धर भेस ॥टेर॥
कंथा पेरु भस्म रमाऊं, लेऊं थ्रो उपदेस ।
गीणतां गीणतां घस गईजी, मा(म्हां)री आगलियां[2] री रेख ॥१॥
माला मुद्रा मेखला रे, जोगी सील खपर लीयो हाथ ।
जोगण होय नै सब जुग ढुंढ्यौ, इण रामईया रै साथ ॥२॥
प्राण हमारौ जहाँ बसे रै, जोगीया है खालो खोड़ ।
मात पिता परबार[3] सु रै, जोगी रही रै तीणां ज्यु तोड़ ॥३॥
पांच पचीस सु बस कीया रे, जोगी पला ने पकड़ कोय ।
मीरां व्याकुल (ल) ब्रहनी[4] रे, जोगी तुम मिलीयां सुख होय ॥४॥

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से *

सं० पाठ—१. केज्यो । २ आंगलियां । ३. परिवार,परवार : ४. बिरहनी ।

टिप्पणी–१. मीरां सुधासिंधु पृ० ६२६ पद सं० १८० पद की ५ पंक्तियां क्रमभेद से मिलती हैं शेष पद नहीं ।

टिप्पणी–२ *संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० संख्या उन ग्रंथों पर न होने के कारण नहीं दी गई है । अतः ऐसा (*) चिह्न इसी बात का प्रतीक माना जाय ।

५

करणां सा (स्यां) म मेरी ।
हूं तो होय रही चेरी तेरी, झूरु नित टेरी टेरी ॥टेर॥
दरसण कारण भई हू बावरी, ब्रहे[1] बीथा तन घेरी ।
.... प्रीत पाछे प्रेगी प्रेरी ॥१॥
तेरै तो कारण जोगण हूं भई हूं, देउं नगर बीच फेरि ।
.... कुंज सब हेरी हेरी ॥२॥
अब मैं प्रांण तजूंगी पीया बीना, गयो तन भसमै करोरी ।
.... अजहूं नाथ नै मिलैरी मिलैरी ॥३॥
जिन(ण) मिरां कुं गी रवर मिलीया, सुख उपज्यो दुख ग्योरी ।
.... रहूं चरणां चेरी चेरी ॥४॥

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

सं पाठ—१. बिरह ।

टिप्पणी-मीराँमाधुरी-पृ० १८२ पद सं० ५०० से प्रस्तुत पद की ३-४ पंक्तियां मिलती हैं वे भी क्रमान्तर से शेष नहीं
मीराँसुधासिंधु-पृ० २०० पद सं० ११२ (बिरह) पद की ४ पंक्तियों का साम्य है। पद पूर्ण भिन्न है। पाठांतर कहीं २ अवश्य मिलते हैं।

होरी

पाठान्तर—१

कारण सुणि स्याम मेरी, मैं तो होय चेरी तेरी ॥टेक॥
दरसण कारण भई वावरी, व्रिह विथा तन घेरी।
तेरैं कारण जोगण होऊंगी, देऊंगी नगर बिच फेरी॥
....कुंज सब हेरी हेरी ॥१॥
अंग भभूत गलै म्रिग छाला। यौ तन भस, करुंगी!
अजहूं न मिल्या रांम अ(वि)बनासी,बन बन विचि फिरुंगी॥
....रऊ निति टेरी टेरी ॥२॥
जन मीरां कूं गिरधर मिलीया, दुख मेट सुख मेरी।
रुंम रुंम साता भई उरमैं, मिट गई फेरा फेरी॥
..............................रहूं चर(ण) नन तर नेरी ॥३॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

पाठान्तर—२

करण सुनि स्याम मेरी, हूं तो होइ रही तेरी चेरी ॥टेर॥
दरसन कारन भई वावरी, व्रह विथा तन घेरी।
तेरै कारण जोगन होउंगी, देउ नगर विच फेरि॥
....कुंज वहेरी हेरी ॥१॥
अंग भभूत गलै म्रगछाला, यो तन भसम करोरी।
अजहूं न मिलै राम अविनासी, वन वनि वीच फिरुंरी॥
....रोऊ नित ढेरी ढेरी ॥२॥
जन मीरां ईं गिरधर मिलिया, दुष मेटन सुष देनी।
रुंम रुंम साता भई उर मैं, मिटि गई के ए फेरी॥
रहूं चरनन नित चेरी ॥३॥

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

टिप्पणी—मीराँ सुधासिंधु पृ० २०० पद सं० ११२ -पद पूर्णतया मिलता है।

पाठान्तर ३

करुणा सुण स्याम मोरी, मैं तो होय रही चेरि तोरि तोरि ।।टेर।।
दरसण कारण मई वावरी अँह व्यथा तन घेरी ।
....प्रीत उर प्रेरी प्रेरी ।।१।।
तोरैं तौ कारण जोगण होय रही, दई नार विध फेरी ।
....कुंज वहेरी हेरी ।।२।।
अब मैं प्रान तजूंगी पीया बिन, यौ तन भस्म करुंरी ।
....अजूंना मिल्यौ री मिल्यौरी ।।३।।
जन मीरां कूं गिरधर मिलीया,सुष उपज्यौ दुष गयौरी गयौ ।।४।।

अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

६

कौंई दिन याद करोगे, रमता राम अतीत ।।टेर।।
आसण मार गुफा विच वैठे, याही जोगीयन की रीत ।।१।।
जो लीनैं झंडा नहीं संग चलैगा, छोड़ चल्यौ अध बीच ।।२।।
अगर चंदण की धूंणो धूकाई, दू[१] रंग मैलन कै बीच ।।३।।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, जोगी किसका मित ।।४।।

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

सं० पाठ—१. दयूं ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु-पृ० ६२५ पद सं० ७ से प्रस्तुत पद की तीन (प्रथम) पंक्तियां मिलती हैं, शेष दो नहीं । मीरां के पदों के अन्य अधिकांश संग्रहों में मीरांसुधासिंधु से पूर्ण समानता रखने वाला ही पद दिया गया है ।

७

घड़िय न आवड़ै रे वाला, तम दरसण विन मोय।
तम विन मेरे प्रांन(ण) पीयारे, जिवन कीस विध होय। टेर॥
वेग पधारो वाला मां, ब्रंहन[१] लो वतलाय ।
उर भूष न, लागं नीद न आवै, ब्रं सतावैं मोय।
घायल ज्यु घुमत रहूं, दरद न जांणे कोय ॥१॥
दीन गमायो पाय कैं, रैण गमाइ सोय ।
प्राण गमाया भुरतां, नैण गमाया रोय ।२॥
जेऊ अेसि जांणति, प्रीत कीया दुष होय ।
नगर ढंढोला पेरति, प्रीत करो मत कोय ।।३।।
पल–पल पांथ निहारति, वैठ रहो मघ जोय ।
मिरां कहै प्रभु गीरधर नागर, रांम मिल्यां सुष होय ।।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से

सं. पाठ—१. विरहण।

(राग कालिगड़ौ)

पाठान्तर—

घडीय न आलगै वाला हो, तुंम दरसण विना मौय।
तुंम विना मेरैं प्रांन पियारे, जीवण कैसे होय ।।टेर।।
दिवस न भूष, रैन नहि निद्रा, ब्रंह सतावैं मोय।
घायल ज्यूं घूंमूं सदा, दरद न जानै कोय ।।१।।
दिवस गमायो षाय कै रे, रैन गमाई सोय ।
प्रांण गमायो झूर कैं, मै नैंन गमाऐ रोय ॥२॥
जे हूं अैसी जांनती रे, प्रीत कीया दुष होय।
नगर ढंढोल्यो फेरती रे, प्रीत करो मत कोय ।।३।।
पल पल पथ निहारतां, दीठ रही मग जोय।
मीरां कै है प्रभु गिरधर नागर, तुम मिलियां सुष होय ।।४।।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं०. से

८

जावा दो ये सईयां, जोगी किसका मीत ॥टेर॥
सदा उदासी मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ॥१॥
बोलत बचन मधूरै से मीठै, जोरत[1] नांही प्रीत ॥२॥
म[2] जाण्यौ जोगी लेय निभेगो, छोड चले अध बीच ॥३॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, प्रेम पीयोला[3] मीत ॥४॥

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

सं० पाठ—१. जोड़त। २. मैं। ३. पीयालो, प्यालो।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ० ९२८ (पद सं० १४) से प्रस्तुत पद की प्रथम तीन पंक्तियां पूर्णतया मिलती हैं, शेष दो नहीं।

९

तुम बिनि रांम सुनै को मेरी ॥टेक॥
ऊभी खेवटंणी अरज करत है, मलवा नै नाव पछम कूं घेरी ॥१॥
नदियां गहरी नाव पुरांणी, अध पर नाव भंवर नैं घेरी ॥२॥
खेई है सोई पार करैगा, बूड़ जाइ तौ रही काहा[1] तेरी ॥३॥
मीरां कै प्रभू हरि अवनासी[2] दोऊं कुल(ल) त्याग सरण लई तेरी ॥४॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

सं० पाठ १. कहां। २. अविनासी।

टिप्पणी मीरांसुधासिंधु–पृ० ४४ पद सं० ७३ से प्रस्तुत पद की आधी प्रथम, आधी चोथी पंक्ति के तथा कुछ शब्दान्तर के साथ पद समानता रखता है। यही पद मीरां वृहत्पदावली भाग १ (स्व. पु. ह. ना) में पृ० १९८ तथा मीरां वाईनां भजनो के पद सं० ४६ पर भी दिया गया है।

पद सांईवानी ।

१०

द्रस्टी मांनु[1] प्रेमनि कटारी है ॥टेर॥
लागत वेहाल भई घर हूं की, सुध नांही, तन हूं मैं व्यापी पीड़ मतवारी है ॥१॥
खीमि ती दोय च्यारी वावरी भई है,सारी निस दिन व्रहलिया आस की पुकारी है ।२॥
चाहत चकोर चंदा दिपग पतंग, जैसे जल विनै मरे मीन असी प्रीत प्यारी है ॥३॥
विनां देख्यां कैसे जीवैं कल(ल्) न पड़त, हीयैं जोय वाकु असी कहीयो मीरां तो तिहारी है ॥४॥

राज. शो. सं चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६४ से

सं. पाठ—१. मांनो

टिप्पणी—मीरां वृहत्पदावली-भाग १ (स्व. पु. ह. ना.) पृ० ३०८ पद सं० ६११ से प्रस्तुत पद की तीसरी पंक्ति नहीं मिलती तथा अंतिम पंक्ति में अंतर है। शेष पद मिलता है। यही पद मीरांमाधुरी के पृ० २२ पद सं० ५६ पर भी दिया गया है।

पाठान्तर — १.

सावरा की दिष्ट मानु, पेम की कटारी है ॥टेर॥
देषत ही विहाल भई, सरीरा री सुध न रही ।
तन ही मैं प्रेम प्रगटौ, मनिह मितवाली हैं ॥१॥
सषी मिल दोय च्यारी, वावलो भई न्यारी है ।
मैं तो व्याकौल भई, जानौं कुंज़ि की वहारी हो ॥२॥
चंद कौं चकोर चाहैं, दीपक पतंग जालै ।
जल विन मिन दुषी, असो प्रीत प्यारी है ॥३॥
बीनती हमारी उधो, माधो लग पुहचाईवौ ।
माधो जी कु असे कहीवौ, मीरां तो तुमारी है ॥४॥

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६५ से

पाठान्तर—२

सावरा को दिष्टि मानु, प्रेम की कटारी हैं ।।टेक।
दीषत ही बेहाल भई, सरीरा री सूधें नी रेही।
तनही मां प्रेम प्रगटो, मनह मित बली है ।।१।।
सषी मिल दोय च्यारी, बावली भई न्यारी हैं ।
मां तौ व्याकुल भई, जानौं कुंजि की बिहारो है ।।२।।
चंद्र को चकौर च्हैहे, दीपग पतंग जालै है ।
जल बिना मिन दुषिया, अैसी प्रीत प्यारी है ।।३।।
वीनती हमारी उधो, माधो लग पहुचाईवो ।
माधो जी कुं अैसे कहीवो,मीरां तो तुमारी है ।।४।।

संत साहित्य संग्रम, बाकानेर के ह० लि० ग्रं० से

पाठान्तर—३

सावरे की द्रसट मानो, प्रेम की कटारी है, लागत बेहाल भई।
गोरस की सुधी गई मनहूंन, व्यापो प्रेम भरे मतवारी माई ।।
चंद तो चकोर चाहै, दीपत पतंग जारै जल बिन मरे मीन।
अैसी प्रीति प्यारी है, सषी मिले दोय च्यारि सुनोरी सयानी नारी ।।
ईनऊ न जानो नाही कुंज के बिहारी है,मोर तो मुकट माथ छवि गीरधारी है।
सावरी सुरत परि माधकरी, मुरतपरि मीरां वलिहारी है ।।१।।

रा. प्रा. वि प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ से

टिप्पणी—मीरां माधुरी–पृ० २२ पद सं० ५६ से पद पूर्णतया मिलता है ।

पाठान्तर—४

(राग जैजैवंती)

सांवरा की दीष्ट मानु प्रेमनी कटारी है ।।टे०।।
सषी मील दोय च्यार वावरी सी भई,
नारी मैं तो उवाकू नीको ज्यानो कुंज कै विहारी ।।१।।
लाग वीहा[ग] भई गोरस की सुध नाही तनकूं,
मैं वाप्यौ कांम मन मतवाली है ।।२।।
चंद चकोर नीरषे दिपक पतंग जल कै,
जल वीन मीन नल कै अैसी पीत प्यारी है,
अैसी तुम कहीयो उधो, मीरां तो तीहरी है ।।३।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ६२६६ से

पाठान्तर—५

सावरे की द्रसट मानो, प्रेम की कटारी है ।
लागत बेहाल भई, गोरस की सुधी गई ।।
मनहू न व्यापो प्रेम भर मतवारी है माई ।
चंद तो चकोर चाहै, दीपग पतंग जारै ।।
जल बिन मर मीन, अैसी प्रीति प्यारी है ।
सषी मिले दोय च्यारि, सुनोरी सयानी नारी ।।
ईनहून जानो नाही, कुंज को विहारी है ।
मोर तो मुकट माथ, छवि गीरधारी है ।।
सावरी सरत परे माधकरो,मूरत परि मीरां बलिहारी है ।।१।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० से

११

नातो हरि नाम को मोसूं, तनक न तोड़यो [जाई] ।।टे०।।
पीया कीजि पीरी पड़ी रे, लोग कहे पिडरोग ।
छांनै लांघन मैं कीया री सजनी, राम मिलण कै जोग ।।१।।
खिण आंगणे खिण डागले (लैं) रे वाला, खिण खिण ऊबी होइ ।
घायल ज्यूं घूमंत फिरूं रे, म्हारो मरम न जाणे कोई ।।२।
बावल वेद बुलाईया, म्हारी पकड़ी दिखाई बांह ।
मूरिख[1] वैद न जानई, म्हारे करक कलेजा मांहि ।।३।।
जा जा वैद घर आपणे रे, म्हारो तू नाम न लेह ।
मै तो दाधी ब्रहकी रे, तू काई दासै (जैं) देह ।।४।।
रे रे पापी पपीहा (ह्या) री रे, पीया को नाम न लेह ।
कोईक ब्रहनि साम्हलै रे, तो पीव भरण जीव देहि ।।५।।
काढि कलेजा में धरु, इडि कै वां ले जाई ।
ज्यां देसा म्हारो पीव बसै, वै देखे तू खाई ।।६।।
पीव मिल्या जी ऊवरी रे, नातर तजूं हमारी देह ।
दासी मीरा रामराती हरि, विनि किसो सनेह ।।७।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० स० ७३ से

स. पाठ· –१ मूरख

टिप्पणी:—मीरांसुधासिंधु - पृ. १८५ पद सं. ७२ से प्रस्तुत पद की आधी बाहरवीं तथा अन्तिम दो पंक्तियां नहीं मिलती – शेष पद मिलता है ।

पाठान्तर—

नातो नांव कौ मोसूं, तनक न तोड्यौ जाइ ।।टेक।।
पाना ज्यूं पाली (ली) पड़ी रे, लोग कहे पींडरोग ।
छांनै लांघण मैं कीया सजनी, राम मिलण कै जोग ।।१।।
बाबल(ल) बैद बुलाइया रे,पकड़ि दिखाई म्हारी बांहि ।
मूरिख बैद मरम नहीं जांणै, करक कलजा मांहि ।।२।।
जाहो (ओ) बैद घरि आपणै रे, म्हारो नांव न लेह ।
म्हे तो दाधी ब्रिहकी तूं काहे कूं ओखदि देह ।।३।।
मांस गले - गलि छीजीया रे, कर करह्या गलि आहि ।
आंगलिया कौ मूंदडौ म्हारे, आंवण लागौ बांही ।।४।।
रहो रहो पापी पपइया रे, पीव कौ नांव न लेह ।
जे कोई ब्रिहनि साम्हलै तो, पीव कारणि जीव देह ।।५।।
खिण मिंदर खिण आंगणे रे, खिण खिण ठाढी होई ।
घायल ज्यूं घूमूं खरी, म्हारी विथा न बूझै कोई ।।६।।

भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

१२

नथ म्हारी दीजो जी व्रजवासी ।
मै तौ चरण कमल (ल) की दासी ।।टेर।।
रास रमंता नथ म्हारी घ(ग)म गई, सब कूं ओलंबौ आसी ।
ग्वाल - बाल सारा मिल हेरौ, ग्वालन(ण) भई उदासी ।।१।।
व्रंना(दा)वन में रास रमोगे, रास रमण कुण आसी ।
मै तौ म्हारे पीहर जासां[1], बाबल(ल) ओर घड़ासी ।।२।।
समदरीया मैं सीप नीपजे, उनका मोती पौवासी ।
गोकल(ल) मै इक सोनी वसत है. बाबल(ल) उनकूं बुलासी ।।३।।
यूं मत जाणौं नथ फबी, मोवत में वां दलाली मै जासी ।
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, चरण कवल की दासी ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ़ पेलेस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं.११३ से

सं. पाठ—१ जास्यां

टिप्पणी–मीराँसुधासिंधु पृ. ६६३ पद सं. ३५१ से प्रस्तुत पद की द्वितीय पंक्ति तथा ६वीं आधी पंक्ति नहीं मिलती तथा शेष पद का क्रमान्तर-भेद भी है ।

१३

नैनन[1] मैं नंदलाल बसो मेरे नैनन मैं नंदलाल ।
अधर सुधारस मुरली (ली) राजे उर, वैजंति माल (ल) ।।टेक।।
मोर-मुकट मकराकृति कुंडल(ल) अरुन(ण) तिलक दीयौ भाल(ल) ।
मुभ्रु ब(त्रि)न मोहन करत है,कीडा संग सखा ब्रजवाल ।।१।।
जमुना - तटि निकट वंसी वट, विहरत कुंज रसाल ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर भक्ति वछल प्रतिपाल ।।२।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ से

सं. पाठ - १. नेनण

टिप्पणी–मीरांसुधासिंधु पृ ८१३ पद सं १ से प्रस्तुत पद की प्रथम, द्वितीय और अन्तिम पंक्तियां मिलती हैं, शेष दो नहीं,किन्तु जो मिलती हैं उनमें भी क्रमान्तर है । मीराँ माधुरी पृ. १६-१७ से इस पद की चार पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं ।

पाठान्तर—राग राम कली

नैनन में नंदलाल बसो मेरे नैनन में नंदलाल ।
....
मधबन मोहन करत है क्रीड़ा सग सखा प्रजवाल ।।१।।
....

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह लि. ग्रं. सं. १८८२ से

१४

पपइया रे पिव की वाँणि[1] न बोल
सुण पावैली व्रँहनी[2] थांरी लै ला पांष मरोल[3] ।।टेक।।
चांच काऊं थारी पपइया रे, ऊपर डालर लूंण ।
पीव हमारा मै पीया की रे, तूं पिव कैहै सो कूंण ।।१।।
थारा तो सवद सुहावणा रे वाला ! जो पीव मेलौ आज ।।
चांच मढाऊं थारी सोवनी रे, तूं म्हांरे सिरताज ।।२।।
प्रीतम कूं पत्तीया लिषूं रे वाला ! कऊ वानूं ले जाय ।
जाय पीया जी नैं युं कहौ जी, थांरी व्रंहन धांन न षाय ।।३।।
प्रीतम तम मत जांण ज्यौरे वाला ! तम बिछड्या मोहि चैन ।।
तन सुप जब हीया वसरे वाला ! देषूं भर भर नैंन ।।४।।
मीरां व्याकुल व्रँहनी रे वाला ! पिव पिव करत्त विलाप ।।
तम मिलीयां सुष पावसां, प्रभु अंतरजांमी आप ।।५।।

राज. शो सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं सं ७१४३ से

सं. पाठ—१. वांणी । २. विरहणी । ३. मरोड़ ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु - पृ० १९४ पद सं० ९६ (दसवीं और १२ वीं) दो पंक्तियों के अतिरिक्त पद पूरा मिलता है ।

पाठान्तर—१

पपीया रे पीव की बानी न बोलि ।
सुनि पावैगी व्रहनी रालै ली पांष मरोड़ि ।।टे०।।
चांच कटांऊ पपीया रे, ऊपरि कालो रे लौंण ।
पीव हमारे मै पीव की रे, तूं पीव कहै सो कौंण ।।१।।
थारा सबद सुहावणा रे, जौ पीव मिलावै आज ।
चांच मंडाऊ थारी सोहनी, तुम्हारे सिर साजि ।।२।।
पीतम कूं पतियाँ लिषूं, कागा तू ले जाइ ।
पीतम कूं तू यौ जाइ कहियौ, थारी व्रहणी अंन न षाइ ।।३।।
तुम मति जानो प्रीतमा हो, तुम बिछड्या मोहि चैन ।
मोहि चैन न जब होइगा, भारि भारि देषूं नैंन ।।४।।
मीरां दासी वारणै हो, पीव पीव करत विहाइ ।
वेगि मिला प्रभू अंतरजामी, तुम विन रह्यो न जाइ ।।५।।

रा. प्रा. वि. प्र. जयपुर के ह. लि. ग्रं.सं. ७३ से

पाठान्तर — २

पपईया रे पीव की वांण न बोल ।
सुण पावैली ब्रंहनी रे थारी, लैला पांप मरोर ।।टेक।।
चांच कटाऊं थारी पपईया रे, लाऊं कालर लूंण ।
पीव म्हारा मैं पीव की रे, तूं पीव कहैस कूंण ।।१।।
थारा तौ सबद सुहावणा रें वाला ! जो पीव आवै आज ।
चांच मंढाऊं थारी सांवरी रे, तू म्हारे सिरताज ।।२।।
प्रीतम कूं पतीयां लिषूं रे, कागवा तूं ले जाय ।
जाय पीया जी नें यूं कैहै ज्यारे, थारी ब्रेहन धान न षाय ।।३।।
पीतम तुंम मत जान जो रे,तम बिछड्यां मोय चैन ।
तन सुष जब ही पावसूं, देषूं भर भर नैंन ।।४।।
मीरां व्याकुल ब्रंहैनी रे, पिव पिव करै रे विहाय ।।

रा. प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह लि. ग्रं. सं. १०८५२ से

पाठान्तर — ३

पपईय रि पिव की वांण न बोल ।
सुण पावेला ब्रंहैनी, लैला पाँष मरोल ।।टेक।।
चांच कटाऊं थारी पपईया रे, लाऊं काल (ट)र लूंण ।
पीव हमारा मे पीया की रे, तू पिव बोलै कूंण ।।१।।
थारा तो सबद सूहावणा रे, जो पिव आवे आज ।
चांच मंडाऊ थारी सोनवी रे, तूं म्हारे सिरताज ।।२।।
पीतम कूं पत्ताया लिपू रे, तूं ले जाय ।
जाय प्रभूजी नै यूं कहै ज्यौरे,थारी ब्रंहन धान न षाय ।।३।।
प्रीतम तम मत जांण जो रे. तम विछर्‌या मोहि चैंन ।
तन सुष जब ही पाव सूं रे, देषूं भर भर नैंन ।।४।।
मीरां व्याकूल ब्रंहैनो, पिव पिव करे विहाय ।
तम घर आवौ राम पियार, तम विन रहीयो न जाय ।।५।।

राज. शो. सं. चौपासनी जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. ७१४२ से

१५

पीया तेरे नांव लोभानी[1] हौ ।
काऊ कौ मै बरजी नांहि रहूं ॥टेर॥
सखी सहेली सु(ण)न मेरी हेली, नीकी बात कहूं ॥१॥
सासू नणदल देराणी जेठानी, सबका वचन सहूं ॥२॥
तन धन सब अरप(ण)न ले करहूं, उलटौ पंथ गहूं ॥३॥
मीरां कहै प्रभु गोरधरनागर, सतगुर सरणै रहूं ॥४॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. १०८५१ से

सं. पाठ —१ लुभांनी ।

टिप्पणीः-मीरांसुधासिंधु पृ. ८६९ पद सं. १ से प्रस्तुत पद की प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता ।

पाठान्तर—१

पीया तोर नांई लूभानी हौ ।
नावै लेवत तिरता सुण्यां, असै पवन और पांणी हो ॥टे०॥
सुकरत केई नां कीया, बहू करम कमानी हो ।
गनिका किर पठाव, तै बकूंट पठानी हो ॥१॥
पुत्र हेत पदई दई, जुग सार जांणि हो ।
अज्यामल-से उधारिया, जम-त्रास मिटाणी हो ॥२॥
अरध नाम कूंजर लियौ, गई ओधि बिलानी हो ।
चक्र ले हरि आइया, जिन किवि कुरबांणि हो ॥३॥
नाव महातम गुर दीयो, सोई वेद बखाणि हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, परतित बंधानी हो ॥४॥

राज. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह लि. ग्रं. सं ८३९९ से

पाठान्तर—२

पीया तेरै नांव लुभांनी हो ॥
नांव लेत तिरता सून्या, जैसे पाहन पांनी हो ।।टेर।।
सूंकृत कबहूं नां कीयो, बहूं करम कमानी हो ।
गिनका सूवा पठावतां, वैकुंठ पठांनी हौ ।।१।।
अज्यामेल साउ धरै, जम्म - त्रास मिटानी हो ।
पुत्र हेत पदवी दिवी, जग सारै जांनी हो ।।२।।
अरध नांव कुंजर लीयौ, वाकी अवध घटानी हो ।
गुरुड़ छाड़ हरि ध्यावीया,पसूं-जूंन मिटानी हो ।।३।।
सोई नाम सतगुरु दिया, सोई वेद वषांनी हौ ।
मीरां दासी कारणे, अपनी कर जानी हौ ।।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि.ग्रं.सं ७१९१ से

पाठान्तर- –३

पीया तेरै नाम लोभानी हो ।।
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसे पाहन पानी हो ।।टेक।।
सुकृत कोऊ नां कीयौ, बहू करम कमानी हो ।
गिनका सूवा पठावतां, वैकूट पठानी हो ॥१॥
अज्यामेल - से उधरे, जम - त्रास मिटांनी हो ।
पुत्र हेत पदवी दिवी, जग सारै जांनी हो ।।२।।
अरध नाम कूंजर लीयौ, वाकी अवध घटानी हो ।
गुरड छाड़ि हर ध्यावीया, पसू - जूंण मिटानी हो । ३।।
सोई नाम सतगुर दया, सोई वेद वषानी हो ।
मीरांदासी कारणे, अपनी कर जानी हो ।।४।।

राज. शो. सं चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७१४३ से

पाठान्तर—४

नाम लभांनी हौ, साईं तेरै नामि लुभांनी हौ ॥
नाव लेत तरते सुनै मैं, पाहन पानी हौ ॥टेक॥
अरध नाव कुंजर लीयौ, वाकी अवधि बिहांनी हो ॥
अड़ छाड़ि हरि ध्याईये, पसु-जुनि मिटानी हौ ॥१॥
अजामैल ऊधारीय्यौ, जम-त्रास मिटानी हो ॥
पुत्र हेत पदई दई, सव कांहू न जानी हौ ॥२॥
सुक्रंत तो कछु नां कीयो, वौह क्रम कमानी हो ॥
गनिका कीर पढ़ावता, बैकुंठ पठानी हो ॥३॥
नाव महातम गुर कह्यौ, अर वेद बषानी हौ ॥
मीरां व्याकल ब्रहनी, अपनी करि जांनि हो ॥४॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं ३६१५२ से

पाठान्तर—५

नाम लोभांनी हो, पीया तेरे नाम लोभानी हो ।
नाम लेत तरता सुनिया में तौ पथर पानी ॥टेक॥
सुक्रत तो कछु नां कीया, वहू कर्म कमानी हो ॥
सूवा पढावत गनका तारी, वैंकूंठ वसानी हो ॥१॥
पतती अजामेल तारी औ, जंम-त्रास मिटानी हो ॥
पुत्र हेत पदवी दई, सव काहू तें जानी हो ॥२॥
अमीष प्रेहेलाद की, सुनी अकथ कहानी हो ।
द्रपदी चीर वधारीया, भया भूप वीसानी हो ॥३॥
अरध नांम कूंजर तर्‌यौ, जव आई तुलांनी हौ ॥
चक्र ले हरि धाये हो, पसू-जोन मिटानी हो ॥४॥
नाम महेमा गुर कह्यौ, परतीत वंधानी हो ॥
मीरां प्रभू हरि मिलै, मेरी वेदनां जानी हो ॥५॥

राज. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८२६१ से

पाठान्तर — ६

पीया तौरे नाम लुभानी रे।
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसै पांहन पाणी रे ॥टेर॥
अरध नाम कुंजर रट्यौ,वाकी अवधि सिरानी रे।
गरुड छाड हरि आविया, पसू-जूण मिटाणी रे ॥१॥
सुकरत कछू नां कियौ, बहु करम कमाणी रे।
गिनका कीर पठावतां वैकुंठ पठाणी रे ॥२॥
अज्यमिल - से उधरे, जमत्रास मिटाणी रे।
पुत्र हेत पदवी लही, जग सारे ही जाणी ॥३॥
नाम म्हातम गुरां दीयौ, सो वेद वषाणी रे।
मीरां दासी राज री, अपनी कर जांणी रे ॥४॥

अनूप सं. ला. लालगढ़ बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११३ से

पाठान्तर — ७

पीया तेरै नांव लुभाणी हो।
नांव लेत तिरता सुण्या, जैसैं पाहण पांणी हो ॥टेक॥
सुक्रत कोई नां कीयौ, बोहो क्रम कुमांणी हो ॥
गिनका कीर पठावतां, वैकूंट वसांणी हो ॥१॥
अरध नांव कूंजर लीयौ, वाकी अवधि घटांणी हो ॥
गरड छांड़ि हरि ध्याइया, पसू–जूंणि मिटाणी हो ॥२॥
अजामेल - से उधरे, जम - त्रास मिटाणी हो ॥
पुत्र हेति पदवी दइ, जग सारै जाणी हो ॥३॥
नांव म्हातम गुर दियौ, सो ही वेद बषाणी हो ॥
मीरां दासी कारणे, अपणी करि जांणी हो ॥४॥

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

१६

हरजस । राग सोरठ

पीया वीनं[1] सूनों मोरो देस ।
जा तन को रोहे मार स्या हें, कोई आसै हे पीव मिलावै ।।१।।
कोई छांनै मानें करू पेस तेरे कारणे, वन बन ढूंढ करू जोगण को वेस।।२।।
जागैतै वाही तो आना प्रीयौ, पाछै रैहुयेगा केसैं ।।३।।
मीरां कै प्रभु ग्र(गिर)धर नागरे, तांजैं गाय नांवै नारेसंघ ।।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८३९९ से

सं. पाठ – १ बिन

टिप्पणी—मीरां सुधासिंधु पृ. १६५ पद सं. ६७ प्रस्तुत पद की प्रथम तथा आधी द्वितीय पंक्ति मिलती है, शेष पद नहीं ।

१७

राग मारू —

पीया मोहे आरत तेरी हो ।
तेरे कारण साईयां ह्म करू सेभ संवेरी हो ।।
आयो सांवण भादवो, बरषा को आगम हो ।
भुट घटा मट हुयि रही, नैना भर लायो हो ।।
मेनन(ण)ते भरवाभर वरषो येक धारा हो ।
या तन भीज काव वो, तन ताप वुभावो हो ।।
या तंन को दीवलो(लो) करू मनछा की बाती हो ।
तेरे कारण साऐया[1], जारू नेस[2] राती हो ।।
पाटी पारी(डी) प्रेम की, वह मांग सुवारू हो ।
तेरे कारण साईयां, जोबन तन गारू हो ।।
सेभडोया न वरगीया, वह फूल बेछावु हो ।
रेण गेणु तारा गेणु, पीआ अजहु न आये हो ।।
मात पिता तमकु दइी तम ही भल जाणु हो ।
तम वेण वोरन, साईयां, हीरद नहीं आणु हो ।।
पुरण पुर पुरीणां, पुरो सुप दीजै हो ।
मीरां प्रभु विरहणी, अपणी करे लीजैं हो ।।
पीया मोहे आरत तेरी हो ।

अनूप सं ला लालगढ, बीकानेर के ह. लि. ग्रं सं २२३ से

सं० पाठ—१. साईयां । २. दिन, नित ।

टिप्पणी — मीरांसुधासिंधु पृ. १६६ पद सं. १९ से पद की प्रथम तीन पंक्तियों तथा अन्तिम पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता ।

पाठान्तर—१

पीया मोय आरत तोरी रे ।
तोरि नै तोरा नाम री, मोय सांज संवेरी रे ॥टेर॥
आयौ सावण भादवौ, विरषा रितु आई रे ।
वीज भल - भल हो रही, नैण भर लाया रे ॥१॥
या तन को दिवलो करू', मनसा की वाती रे ।
सैजडीयां वहु रंगीयां, चंगा फूल विछाया रे ।
रैण गई तारा गया, साई अजहू नी आया रे ॥२॥
पाटी पांडू प्रेमनी, वुध मांग संवारू रे ।
सांई तौरे कारणे, धन जोबन वारू रे ।
तुम प्रभू पूरण पूरणा पूरौ जस लीजै रे ।
मीरां दासी राज री, अपनी कर लीजे रे ॥३॥

अनूप सं. ला. बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११३ से

पाठान्तर—२

पीया मोहि आरत तेरी हो ।
काहे को दिपक करू', काहे को वाती हो ॥टेक॥
या तन को दीपक करौं, मनसा की वाती हो ।
तेल धुवां वे प्रेम का, जारौ दिन राती हो ॥१॥
सेजरीया बऊ रंगीया, चुनि फूल विछाये हो ।
मारग जोउ स्याम को, अवऊ नही आये हो ॥२॥
म वच क्रम तोमों लगी, चाहौ सो कीजै हो ।
मीरांबाई बा(आ.प री, अपनी कर लीजै हो ॥३॥

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह. लि.ग्रं. से

पाठान्तर—३

पीया मोहि आरति तेरी हो ।
आरति तेरी तेरा नाम की, मोइ सांझ सवेरी हो ।।टे०।।
या तन को दिवलो करु, मनसा की वाती ।
तेल जालाऊं प्रेमको, वालूं दिन राती हो ।।१।।
पाटी पारु ग्यान की, बुधि माग सवारु हो ।
साइ तेरै कारणे, धन जोवन गारु हो ।।२।।
आयौ सावण भादवो, वरषा रुति आई हो ।
वीज झलामल होइ रही, नैणां झड़ लाई हो ।।३।।
सेजडल्यां वोहो रंगीया, चंगा फूल विछाया हो ।
रेणि गई तारा गिनत, प्रभू अजहू न आया हो ।।४।।
थे छो पूरण ब्रह्मजी, पूरा सुष दीजो हो ।
मीरां व्याकुल व्रहनी, अपनी कर लीजै हो ।।५।।

रा. प्रा. वि. प्र. जयपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७३ से

(राग मारु)

पाठान्तर—४

पिया मोह आरत तेरी हो,तेरी तेरा नाव की मोह सांझ सवेरी हो ।।टेर।।
नैन मैं झरना झरै, वरसै एक ही धारी हो ।
भीजत है तन कपवा,तन ताप निहारी हो ।।१।।
मांग संवारु ग्यांन की, बुध पाटी पारुं हो ।
सांई तेरे कारणै,धन जोवन वारूं हो ।।२।।
या तन का दिवला करूं,मनसा की वाती हो ।
लोही सिंचु तेल ज्युं,वारुं दिन राती हो ।३।।
सेज सुंवारु सांईया, प्रेम फुल विछाया हो ।
मारग जोऊं पीवका,अजहू नहीं आया हो ।।४।।
मेरा प्रीतम एक तुम, दुजा नांही जानुं हो ।
तुम विन ओर भरतार कुं,हृदै नहीं आंनु हो ।।५।।
तुम हो पुरण पुरण, पुरा सुष दीजै हो ।
मीरां वीरहन व्याकुली अपनी कर लीजै हो ।।६।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६४ से

पाठान्तर—५

आरति तेरी हो पीया, मोहि आरति तोरी हो।
आरति तोरी तौरे नांव की, भजूं सांज सँवेरी हो ॥टेक॥
या तन को दिवलो करुं, मनसा की वाती।
तेल सींचावूं प्रेम को. जागियौ दिन राती हो॥१॥
पाटि पाडु प्रेम की, वलि मांग संवारौ हो।
थार कारन साईयां, धन जोवन वारों हो॥२॥
आया सांवन भादवौ, व्रिषा रुति आई हो।
बिरह जड़ लह्यौ प्रेम को, नेणां झड़ लाई हो॥३॥
सेजड़ियां वहू रंगीयां, फूलां सेज विछाई हो।
रैन गिई तारा गिण, हरि अजहूं न आया हो॥४॥
थे छो पूरण पूरवा, पूरा सुष दीज्यौ हो।
मीरां व्याकुल व्रहनि, अपनी करि लीज्यौ हो॥५॥

राज. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८३९९ से

पाठान्तर—६

आरति तेरी हौ पिया, मोहि आरति तेरी हौ॥
तेरीज तेरी नाव री, मोहि सांझ सवेरी ॥टेक॥
या तन कौ दीवलौ करौं, मनसा की वाती।
तेलज पूरौ प्रेम रौ, जालौं दिन राती॥१॥
पाटी पाडौं ग्यान की, बुधि मांग सवारौ हौ।
तेरे कारण सांईयां, धन जोबन वारूं हौ॥२॥
सेझड़ियां हू रंगियां, चगे फूल विछाये हो।
बाटज न्हालूं सांझ की पीव अजहू न आये हो॥३॥
आंवन आंवन कहि गये, पीय अजहूं न आये हो।
भौंह घटा घन उमोय्या, नैणी झड़ लाये हो॥४॥
तुम हो पूरण पूरणां, पूरा सुष दीजे हो।
मीरां विरहनि व्याकुली,बडभागी तौ रीझै हो॥५॥

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ से

पाठान्तर – ७

आरति तेरी हो पीया, मोहि आरत तेरी हो।
तेरी तेरा नाम की, मुज सांझ सवरी हो॥
नैनां का झरणा झरै, बरसै येक धारी हो।
भीजत है तन कांचुकी, तन ताप निवारी हो॥
मांग सवारो ध्यान की, बुद पाटी पाडी हो।
साई तेरे कारन, घन जोवन वारी हो॥
तेल जलावै प्रेम को, जालू दिन राती हो।
सेज सांवरी साईये, प्रेम फूल विछायो है॥
मारग जोउ पीव का, अद जह नहीं आये हो।
मेरा प्रीतम येक तु, दूजा नहीं जान हो॥
तुम विनि ओर भरतार को,हरदै नहीं आन हो।
तुम तो पुरन पुरना, पुरा सुष दीजे हो।
मीरां ब्रहैन लाडली, अपनो कर लीजै हो॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. स. १८९० से

१८

प्रीत निभाजौ[1] जी सांवरिया ॥टेर॥
थे छौ वाला सुखडै रा[2] सागर, ओगण दिस मत जाज्यो जी ॥१॥
मन नहि धीजै दिल न पतीजै, मुखड़ेरा वचन सुणाजौ जी ॥२॥
मैं छूं दासी जनम जनम की, रमता आंगण आजो जी ॥३॥
मो अवला(ला) पर किरपा कीजौ,दया कर दरस दिखाजौ जी ॥४॥
मौ नुगणी मैं(में) गुण कछु नांही,ओगण चित न लाजौ जी ॥५॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, बेडौ पार लगा जौ[3] जी ॥६॥

अनूप सं. ला लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११३ से

सं. पाठ—१ निभाज्यो। २. सुखड़ेरा। ३. ज्यो।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ६२२-६२३ पद सं. १३९ से प्रस्तुत पद की प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता।

पाठान्तर—२

राणां जी मां(म्हां)नै प्यालो क्यूं रे पठायो । भयो नहीं थारो भायो ।।टेर।।
आज काल की नहीं है मीरां, जब ब्रह्मंड रचायो ।१।।
मेड़तीया घर जन्म लियो है, मीरां नाम धरायो ।२।।
रतन कटोरा मैं विष ले घोल्यो,दयाराम पांडेयौ लायो ।३।।
आगो पाछो जोयो नांही, चरणाम्रत कर पायो ।४।।
बुरी वात तो हम नहीं कीनी, रांणौ क्यु रे रीसायौ ।५।।
प्रहलाद की प्रत्यंग्या राखो, खंभ फोड़ कढि आयो ।६।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, हरख हरिजस गायो ।७।।

रा० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के हु० लि० ग्रं० सं० २०६ से

२०

वोल सूवा राम राम बोलै तो वलि जाऊ रे ।
सार सोना की सल्या मंगाऊं, सूवा पींजरो वणाऊं रे ।
पींजरा री डोरी सुवा, हाथ सूं हलाऊं रे ।१।
कंचन कोटि महल सुवा, मालीया वणाऊं रे ।
मालीया मैं आई सुवा, मोतियां वंधाऊं रे ।२।
जावतरी केतकी तेरै, वाग मैं लगाऊं रे ।
पला री डार सुवा, पींजरो वधाऊं रे ।३।
घृत घेवर सोलमा–लापसी * परसाऊं रे ।
आमला को रस सुवा, घोलि घोलि पाऊं रे ।४।
वैठक कै तो कारणै सूवा, चांनरमी विछाऊ रे ।
पेम[1] कै प्रताप सुवा, झांझ वणावाऊं रे ।५।
केसर भरीयौ वाटकौ, तेरै अंगि से लगाऊं रे ।
मीरां के प्रभू हरि अविनासी, सरणै आयां सुख पाऊं रे ।६।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

सं० पाठ—१. प्रेम ।

टिप्पणी—१. मीरांसुधासिंधु पृ० ७७० पद सं. ६१ से उक्त प्रस्तुत पद की ६ और ७वीं पंक्तियां नहीं मिलती। शेष मिलती हैं।

*टिप्पणी—२. सोलमा लापसी – मारवाड़ (राजस्थान) में गेहूं के दलिये को घृत में भूंज कर लापसी नामक मिष्ठान (मांगलिक अवसरों पर) बनाया जाता है जिसमें एक मन के पीछे सोलह सेर घृत डाला जाता है। उसे 'सोलमा लापसी' कहते हैं।

२१

भाभी मीरां हो ! सांधा को संग निवारि[1]।
थाहारी[2] लोक नंद्या करै, बाई उदा हो ! लोकां नै लीकां रो भाव ॥
म्हें म्हाकौ राम लड़ावस्यो, भाभी मीरां हो ! लाजै सैंस मेवाड़।
लाजै कौंभाजी[3] रो बंसरणौं, भाभी मीरां हो ! लाजै नौकोटी मारवाड़ ॥
लाजी दूदाजी रो मेड़तो, भाभी मीरा हो ! लाजै माइ मोसाल।
लाजै है पीहर थारो सासरो, भाभी मीरां हो ! थांपरि राणौं कोपीया ॥
बाटकड़ै बिष घोलने, बाई उदा हो ! थे दीज्यौ म्हारै हाथै।
म्हे अमरत करि आरोग्स्यां[4], बाई उदा हो ! सांथरि सेज बिछाई ॥
नैणां मै बिष संचर्‌यो, बाई उदा हो ! मंदर ऊंचो छै उजास।
सही साधौ रौ तारण आवई, बाई उदा हो ! दुज्या[5] पंचाली हरे रा पाव ॥

राᄋ प्राᄋ विᄋ प्रᄋ जयपुर के हᄋ लिᄋ ग्रंᄋ संᄋ ८ से

संᄋ पाठ — १. निवारो। २ थांरी। ३. कुंभाजी। ४. अरोगस्यां। ५. दूयां।

टिप्पणी – मीरांसुधासिंधु पृᄋ १६४-१६५ पद सं. ३४६ सुधासिंधु में बहुत बड़ा पद है, किन्तु प्रस्तुत पद आधा ही मिलता है।

२२

राग धनासरी।

मीराँ रंग लागो हरी।
सब रंग अटक पड़ी, मीरा (रां)रंग लागो हरी।। टेर।।
गी(गि)रधर गासां[1] सतीय न हूंसा, मन वसिया घणनामी।
जेठ बहू रो नातो राणा जी, थे सेवग मे (मैं, म्हे) सां।स्या) मी।।१।।
छापा तिलक मनोहर वनासां, सील संतोख सीणगारो।
ओर कछु नहीं भावै हो राणांजी, ओ गुर गीयांन[2] हमारो।।२।।
राज करतां नरग (क) पड़ता, जां जीव रवी सुत खाया।
वोरी क रांना (णां) सतावां, काई करेलो मा [रो] कोई।।३।।
गज कुं तज के खर नहीं व्रठसूं[3], आ पीण वात न होई।
कोई यांनै कहो कोई मंनै कहो, गुण गोवींदरा गासां।।४।।
जी(जि)ण मारग मे (म्हां)रा साध पोहोता[4], जीणं[5] मारग मे जासां।
गिरधर धणी क कुब[जा] गी(गि)रधर, मात पिता सुत भाई।
थे थर मे माहो रांणाजी, गाव मीरांवाई।।५।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४ से

सं० पाठ—१. गास्यां। २. ग्यांन। ३. चढसूं, वैठसूं। ४. पधार्या। ५. उण।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ० ३९२ पद सं० ३८ से उपर्युक्त पद की पंचम, सप्तम तथा अष्टम पंक्तियों को छोड़, शेष पद मिलता है किन्तु, पंक्ति-क्रमान्तर-भेद अवश्य है।

पाठान्तर–१

सो मीरा रंग लाग्यौ राम हरी।।टे०।।
कंठी तिलक दोवड़ी माला[1], सोल वरत सिणगारो।
ओर सिंगार सोकै नहीं राणाजी, यो गुर ग्यान हमारो।।१।।
भलि कोई निंदो भलि कोई विंदो, गुंण गोविंदजी का गास्या।
जिन मारग मेरा संत पधार्‌या, जी मारिग म्हे जास्यां।।२।
भजन करस्यां सती न होस्या, मन मोह्यौ घणनामी।
जेठ वहू कौ नातो नही हो, थे सेवक म्है स्वामो।।३।।
राज न करस्यां जीव न सतास्या, कांई करैलौ म्हारो कोई।
हसती चढि म्हे षर नही चढस्या, ऐ तो वात न होइ।।४।।
ना कोई मेरं मात पिता है, ना कोई बंधू भाई।
थे थांकं म्हे म्हाकै राणाजी, यूं गावै छै मीरावाई।।५।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

सं० पाठ—१. माला।

पाठान्तर—२

राग धनाश्री।

मीरां रंग लाग्यो हो नांव हरी, और रंग अटकि परि ॥टेक॥

गिरधर गास्यां सति न होस्यां, मन मोह्यौ घणनांमी।

जेठ बहु कौ [नातो] नांही राणाजी, थे सेवग म्हे स्वामी ॥१॥

चोरी करां न जीव सतांवां, कोई करेगी म्हाकी कांई।

गज सूं उतरि गधे न चढिवी, या तो बात न होई ॥२॥

चूड़ौ तिलक दोवड़ी माला, सील वरत सिणगार।

और वरत नहीं भावै मोहि राणांजी, यहू गुर ग्यांन हमारा जी ॥३॥

भावै कोई निंदो भावै कोई वंदो, म्हे तो गुण गोविंदजीरा गास्या।

जीं मारगि वै संत गया छै, वीं मारगि म्हे जास्यां ॥४॥

राज करंता नरकि पडतां, भोगी जो रे लीयां।

जोग करंता मुकति पऊता, जोगी जुगि-जुगि जीया ॥५॥

गिरधर धनी धनी मेरै गिरधर, मात पिता सुत भाई।

थे थांकै म्हे म्हांकै रांणाजी, यूं कहै मीरांबाई ॥६॥

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह- लि० ग्रं० स० ८३ से

पाठान्तर ३

मीरां रंग लागौ राम हरी, और रंग अटक परी ॥टेक॥

कंठी तलक दोवड़ी माला, सील वरत सिणगारौ।

और सिंगार न भावै हो राणाजी, यौ गुर ग्यान हमारौ ॥१॥

चौरी न करस्यां जीव न सताम्यां, कांई करैलौ म्हारो कोई।

हसती चढ़ि म्हे खर नहि चढस्यां, या तौ बात न होई ॥२॥

राज करता नरक पडतां, भोगीया जमलीया।

भगति करता मुकति पऊंता, जोगी जुग-जुग जीया ॥३॥

भावै कोई निंदो भावै कोई बिंदो म्है गुण गोविंद का गास्यां।

जी मारिग म्हारा सत पधारया, जी मारिग म्है जास्यां ॥४॥

राज न करस्यां सती न होम्यां, मन मोह्यो घणनामी।

जेठ बहू को नातौ नही हो राणोजी, थे सेवग म्हे स्वामी ॥५॥

साध हमारौ गोतक डूबौ, नां कोई बहू भाई।

थे थांकै म्है म्हाकैं हो राणाजी, यूं गावै मीरांबाई ॥६॥

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

२३

सोरठ—

म्हांरी सुध जेरां जांणो त्यौं लीज्यौ जी ।
हौं तो थांरी दासी जनम जनम की, किरपा रावरी कीज्यौ ॥टे०॥
विश्व रो प्यालो रांणै भेज्या, अमरत करि करि लीज्यौ ॥१।
भक्ति - वछल प्रभु विड़द तुमारी, भावै त्यौं कीज्यौ ॥२॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, मिलि विछरन[1] मति दीज्यौ ॥३॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं०सं० २८३८० से

सं० पाठ — १. विछड़न ।

टिप्पणी – मीरांसुधासिंधु पृ० ३२२ पद सं. ७ से इस पद की प्रथम तथा द्वितीय पंक्ति के कुछ साम्य के अंतर से पद नहीं मिलता ।

२४

राग केदारौ —

रै मनि परसि हरि के चरन(ण) सुभग सीतल ।
कव(म)ल कोमिल, त्रिविधि ज्वाला हरन(ण) ॥टेक॥
ते चरन(ण) प्रहलाद परसे, इंद्र पाई[1] धरन(धरण) ।
ते चरन धु[2] अटल कीहौ, राखि अपनी श्रवन(ण) ॥१॥
ते चरन गयो लोक मांपे, ते चरन वले धारन(ण) ।
ते चरन ब्रैहमंड छीन्यौ, सुरसरी नंख भरन(ण) ॥२॥
ते चरन ग्रधारि नख परि, इंद्र को वल हरन(ण) ।
तेई चरन काल के श्र[सर]परि, गोप - लीला करन(ण) ॥३॥
ते चरन गउ चारि बन मैं, कुडीआ भरन(ण) ।
दास मीरा रां) लाल गो(गि)रधर, अधम त्यारन तरन(ण) ॥४॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से

सं० पाठ — १. पदवी । २ ध्रू ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ० ७६५-७६६ पद सं. ४७ से प्रस्तुत पद की प्रथम चार पंक्तियां मिलती हैं, शेष में अंतर है ।

पाठान्तर—१　　　　　　　　　　(राग सोरठ)

मन सँ पस[र] हर के चरण ।
सुभग सीतल कंवल कोमल, त्रिमंद जाला हरण ।।टेर।।
जै चरण प्रहलाद परसै, इंद्र - पदवी धरण ।
सोई चरण ध्रु अटल कीनौ, राख अपणी सरण ।।१।।
जै चरण वन गउ चराई, कुबडी अभरण ।
सोई चरण काली नाग नाथौ, गोप-लीला करण ।।२।।
जै चरण ब्रीह्मंड भेद्यौ, नख सुरसुरी धरण ।
सोई चरण रज परस सील पर, तारै गौतम धरण ।।३।।
दास मीरां लाल गिरधर, अधम तारण तरण ।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं. ७६३६ से

२५

रामैया मैं तो दरद दिवानी(णी),मेरा दरद न जांणे कोय ।।टेर।।
घायल की गत घायल जाणैं, ओर न जाणे कौय ।१।
सूली ऊपर सैज हमारी सौवन(णा),किस विध होय ।२।
सुख संपत मे सव कोई अपना,विपत पर्‌यां नहिं कोय ।३।
सुख के सागर सदयण आगर, क्रस्न गुण दोय ।४।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, वैद सावरी होय ।५।

अनुप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ७७ पद सं. २०८ से उपर्युक्त पद की प्रथम तीन पंक्तियों के अतिरिक्त पद नहीं मिलता ।

पाठान्तर—१

हेली मैं तो दरद दिवानी, दरध(द) न जाणें मेरा कोई ।।टेर।।
सूली ऊपर सेज हमारी, सौवना किस विधि होई ।।१।।
घायल की गत घायल जांणै, और न जाणै कोई ।।२।।
सुख संपत मैं सब कोई साथी, दुख विपता नहीं कोई ।।३।।
मीरां कहै प्रभू हर अवनासी, दरसण दीज्यौ मोइ ।।४।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १०८४७ से

पाठान्तर—२.

हेली मै तो दरद दिवानी, दरद न जांणै कोय ।।टेक।।
सूली ऊपर सेझ हमारी, सोवण किस विध होय ।१।।
घायल की गत घायल जाणै, और न जांनै(णै) कोय ।२।।
सुख संपत मै सव कोई नेडा, विपत पड्यां नहि कोय ।३।।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर, राम मिल्यां सुख मोय ।४।।

रा. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७१४५ से

पाठान्तर—३

हेली मैं तो दरद दिवानी, दरध न जाणै री कोइ ।।टेक।।
सूली ऊपर सेझ हमारी, किस विधि सोणा होई ।१।।
मीरां के प्रभू हरि अबिनासी, राम भज्यां सुष होई ।२।।

भारतीय विद्या मन्दिर, वीकानेर के ह० लि०ग्रं० से

पाठान्तर—४

हेली में तो दरध दिवांनी दरध, न जाणै कोय ।।टेर।।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विध होय ।१।।
घायल की गत घायण जांणै, जे कोई घायल होय ।२।।
हीरां की पारष जुंहरी जांणै, और न जांणै कोय ।३।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, बैद सांवरो होय ।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ़, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११२ से

पाठान्तर—५.　　　　　　(राग काफी)

हेरी मै तो दरद दीवानी, मेरा दरद नै जाणै कोय ।।टेर।।
सुली कै ऊपर सेज हमारो री,सुवणा कीसी वीध होय ।।१।।
गीगन मंडल मै सेज हरी की,कीस वीध मिलणा होय ।।२।।
घायल की गत घायल जानैं, जो तन पीड़ा जो होय ।।३।।
जोहरी की गत ज्यूहरी जानै, सो जीन जुहैरी होय ।।४।।
दरद की मारी वन वन डोलु, बैद मिल्या नहीं कोय ।।५।।
मीरा कहै प्रभु गीरधर नागर, वेद सावलीयो होय ।।६।।

संत साहित्य मडल, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

पाठान्तर—६

हेली मे तो दरद दीवानी, दरद न जाणे मेरा कोय ।।टेर।।
गायल की गत गायल जाणे, जे कोइी गायल होय ।।१।
सुष सपत में सव कोइी साती,बीपत पड्या नहीं कोय ।।२।
सुली उपर सेज हमारी, सुवणा कसी बीद होय ।।३।।
मीरा के प्रभु ग्रहन बीयाकुल, वेद रमया होय ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं १७०

२६

रामईया बिना नींद न आवै ।
नींद न आवै व्रेह[1] संतावै, प्रेम की आंच डुरावै डूरावै ।।टेर।।
पीया जोत विन मिंदर अंधारौ, दीपक दाय न आवै ।
पीया जी विनां मां(म्हां)रो सेज अलूंणो, जागत रैण विहावै,
कवै घर आवै आवै ।।१।।
दादुर मोर पपैया बोलै, कोयल सब्द सुणावै ।
घटाघोर औलर हूय आई, दांमन दमक डरावै,
नैन(ण) झर लावै[2] लावै ।।२।।
कहा करुं कित जाऊं मोरि सजनी, वेद न कोइ रै वतावै ।
व्रैह नाग मोरि काया डसी है, लहर लहर जीव जावै,
जड़ी घस लावै लावै ।।३।।
है कोई अैसी सखी रे सहेली, पियाजी कूं आंन मिलावै ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, मौ मन भावै कवै वतलावै ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ पेलेस, वीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं. ११३ से

सं. पाठ — १. बिरह . २ ल्यावै ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ४५१ पद सं. ३५ से प्रस्तुत पद की तीसरी और छठी पंक्ति नहीं मिलती, शेष पद मिलता है ।

पाठान्तर— १

रमईया बीना नींद न आवे, घर आगणे न सुहावे ।।टेर।।
पीया जी वीना मारे मीदंर अंदेरो, दीपक दाय नी आवे ।
पीया जी वीना मारी सेज अलुणी, तो जागत रेणी वीवहावे,
कबे घर आवे ही आवे ।।१।।
कहा करु कीत जाउ मेरी सजनी, वेदन कोइ न मीटावे ।
व्रीहनाग मेरी काया डसी हे, तो लहरी लहरी जीव जावे ।
जडी गसी लावेई लावे ।।२।।

दादर मोर पपैया बोले, कोयल सबद सुणावे।
प्रेम घटा उमंग होय आई, तो दामण चमण चमक डरावे,
नेन जडी लावेई लावे ।।३।।
सुन री सषो री सहेली सजनी, पीयाजी कु आनी मिलावे।
मीरा के प्रभु हरी अबीनासी, तो माधोजी मन भावे,
कबे हसी के बा(ब) तलावे ॥४॥

अनूप सं. ला. लालगढ, बीकानेर के ह लि ग्र. सं. १७० से

२७

लगन कौ नांव न लीजीये भोली(ली) लगन कौ ।।टेक।।
लगन लगी कौ पेंडोई न्यारो, पांव धरत तन छीजीये ।।१।।
जेहूं लगन लगाई हे चाह्वं, तो सीस की आस न कीजिये ।।२।।
लगनि लगी छे हे म्रग नाद सूं, सनमुख छांन सहीजीये ।।३।।
लगन लगाई पतंग दीपक सें, वारि फेरि तन दिजीये ।।४।।
लगन लगी जैसे जल मछीईन सें, बिछरत प्रांन(ण) दविजीये ।।५।।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चरन(ण) कवल[१] चित दीजिये।।६।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८२६१ से

सं. पाठ — १. कमल, कंवल।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ.७५७ पद सं. २३ से इस पद में दो पंक्तियां कम हैं। प्रस्तुत पद की प्राय: सभी पंक्तियां मिल तो जाती हैं, किन्तु पंक्ति-क्रमभेद है।

२८

लागत मोहन प्यारो राणा जी मां(म्हां)नै लागत मोहन प्यारो ।।टेर।।
जांकी कला मै हालत चालत, बोलत प्राण आधारो ।१।।
ताकी माया मै सब जग भूल्या, उपुर-स[1] है न्यारो ।२।।
तुम कहते अरधग्यां हमारी, हमसे लगायो कारो ।३।।
चवदे भवन मही व्यापक रहें, तेसो बीज वर है हमारो ।४।।
तुम भी तो झूठे राणा हम भी तो झूठे,वो झूठो है राज पसारो ।५।
तोसे पुरस कौ,सवद झूंठो राणा, फूटौ है हीयौ तमारो[2] ।६।
सालु पीतांबर मोतीया की माला(ला),वो ले ले अंग माहि डारो ।७।
छापा तिलक तुलछी की माला, वो साध संगत निसतारो ।८।
जै जै दिन में तो हरि वीना खोया, वो डग मनुज अवतारो ।९।
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर,चरण कवल(ल)बलिहारी ।१०।

सत साहित्य संगम, बीकानेर के ह लि.ग्र से

सं. पाठ — १. ऊपर सूं । २. थांरो

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ २८२-२८३ पद सं. ३६ से उपर्युक्त पद की चौथी तथा अंतिम पंक्ति पूरी तथा सातवीं पंक्ति आधी नहीं मिलती, शेष पद मिलता है ।

२९

लाज वैरन (ण) भई सखि मोहे ।
हाथ मां उसके ऐक तीर है, औमैंहु ततवीर है ।।
नहा सील तकदीर है ओमैंहु, हय लाज वैरन भई ।
चलत गोपाल पिय के संग क्यौं नां गई ।।
कठिन क्रूर अक्रूर आये रथ चढाये नई ।
लै गए नंदलाल पिय को हाथ भीवत[1] रही ।
कठिन छाती स्याम विछुरत विहर क्यौं ना गई ।
लिखी पाती स्यामजी को काह्या पठवो दई ।
कठिन छति स्यामजी की दया नेकू न भई ।
दास मीरां लाल गिरधर प्राण दक्षिणा[2] दई ।।१।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४७५६ से

सं० पाठ—१. भींचत । २. दखणां ।

टिप्पणी–मीरां माधुरी–पृ० २५-२६ पद सं० ६६ से उक्त प्रस्तुत पद की प्रथम तथा बीच की चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं। मीरांसुधासिंधु–पृ० ५७८ पद सं० १० से प्रथम, पांचवीं, छटी, सातवीं, तथा आठवीं पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं।

३०

बरसवोई कर रे मेहा म्हांरो, प्रितम वालां घर रे ।।टे०।।
मोटी मोटी बूंदन वरसन(ण) लागी, सूके सरवर भरे रे ।।१।।
वहोत दिनन सौं प्रीतम पायो, मोहि विछुरन[1] को डर रे ।।२।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सावरीयो छै म्हांरो वर रे ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं ३७९४४ से

सं० पाठ— १. बिछड़न

टिप्पणी – मीरांसुधासिंधु–पृ० ४४१ पद सं० १ से प्रथम तीन पंक्तियां थोड़े शब्दान्तर से मिलती हैं, किन्तु अंतिम नहीं मिलतीं।

३१

वंसीवारा आजो मारे[1] देस।
थांरी अजव सुरत बाई भेस, वंसीवारा आजो मारे देस ।।टेव।।
आवन आवन केहे गये, कर गऐ कोल अनेक।
गीनता[2] गीनता घस गई, आगली(ली)या की रेष ।।१।।
या कपटी सूं प्रीत न करीयें काहा[3] जाने पर पीर।
हम छोडी नीज धाम मैं, आप उतर गये तीर ।।२।।
जेह ऐसो जानती, प्रीत कीये दुष होय।
नगर दुहायी फेरती प्रभु, प्रीत करो मत कोय ।।३।।
हम गोकल तम मथरा का, अव कैसे मीलणो होय।
मीरा के प्रभु गीरधर नागर मील(मिल)(बि)वीछरो मत कोय ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६३६ से

सं० पाठ— १ म्हारे। २. गिणतां। ३ का।

टिप्पणी-मीरांसुधासिंधु–पृ० १९५ पद सं० ९९ वें पद की प्रथम चार पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं।

पाठान्तर—१

वंसीवाला आय जौ मांरै देस ॥टेर॥
थांरी सांवरी सुरत ह़ षवेस ॥टेर॥
आंवण आंवण कै गयौ जोगी, कर गयो कवल अनेक।
गुणतां गुणतां घस गई मारै, आंगणलीया रि रेष ॥१॥
पगे षडाउ पैरलो जौगी, कृ(कर)लो भगमां वेस।
डगर हमारै आवजौ, करजो आलेष आलेष ॥२॥
आंगण वाउ रे लेसी, लंवै पेड़ खजुर।
जण चढ जौउं थारी वाटडी, नैंडा वसो कै दुर ॥३॥
राय आंगण कैसोक मै, राषु वाग लगाय।
कलोअन कै मस आवजो रे जौगी, राषुली वलमाय ॥४॥
पांनन ज्यु पोलि परी, लौक कैहै पंड रोग।
सांना लागण मे कीया. रांम मीलनवि जौग ॥५॥
पीत कीआ सुष उपजैं वीचडिआं दुष होय।
नगर ढंढौलो फेरति, पीत म करजौ कौय ॥६॥
पीर हमारौ मेड़तै जौगी, सासरीयौ चीतौड़।
मीरां नै गीरधर मल्यां, नागर नंद कीसौर ॥७॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से

पाठान्तर २

वंसिवाला आई जौ म्हारै देस, थांरी सावरी सुरत हरदे वसे ॥टेर॥
आवन आवन कह गयो हेली, कर गयौ कवल अनेक।
गिनंता गिनंता घस गई हेली, आंगलीयां री रेक ॥१॥
कागद नहि स्याही नही हेली, कलम म्हारे लेस।
पंछी कौ परवेस नही हेली, किण संग लिषू रे संदेस ॥२॥
इक वन ढूढ सकल वन ढूढ्यौ,ढूंढि फिरी सारो देस।
तारै तौ कारण जोगण होसूं रे, करसूं भगवा भेस ॥३॥
मोर मुकट मकराकृत कुंडल, गूघर वाला केस।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर,प्रीत कियां दुष देस ॥४॥

अनूप सं० ला० लालगढ, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

पाठान्तर—३

वंसीवारा आवज्यो मारे देस, थारी सावरी सुरत हद वेस
[हरदे वसे] ।।टेर।।
आउं आउं कह गयो सांवरा, कर गयो कवल अनेक ।
गीणते गीणता घस गई, मारी आगलीया की रेष ।।१।।
मै बरागण राम की, थारै मारै कदकौ कौ सनेह ।
बीन पाणी बीन साबुना रे, सावरा हूगई धोर सपेद ।।२।।
जोगण हूई जगल सब हेरु, तेरा न पाया भेस ।
तेरी सुरत कै कारणं सावरा, धरै लीया भगवा भेस ।।३।।
मोर मुकट पीतांवर सोहै, घुघर वाला केस ।
मीरा कह प्रभु गीरधर नागर, हूण वढा सनेस ।।४।।

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

३२

सजन घर आव रै मीटा[१] बोला ।।टेर।।
थांरे तो कारण सब तज दीना, काजल(ल)तीलक तमोला(ला) ।।१।।
रषत रती बीन नांहो रहती, बीन मासै बीन तौला ।।२।।
वी (मी)रा के प्रभु गीरधर नागर, कर धर रही छ कपोला ।।३।।

अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि०ग्रं० सं० २०६ से

सं० पाठ—१. मीठा, मिठ ।

पाठान्तर—१ (राग सोरठ)

सजन घरि आवोजी मीठा ब्रोला ।
या रुसन मै का लगयो बोहो, अब तो मेटि अवाला ।।टेक।।
आरत बहोत बिलंब नहि करणां, आय्यां ही सुष होला ।
तन मन प्रांन करों नोछावर, अब प्रभु कहा कहोला ।।१।।
आवो निसंक संक नहीं करणां, आयां ही होय रंगरोला ।
तरै कारण सब कुछु त्याग्या, काजल तीलक तंब्रोला ।।२।
बिन देष्यां व्याकुल भई सजनी, कर धर रहै कपोला ।
मीरा तो गीरधर विना हो, षिण मासो षिण तोला ।।३।।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६० से

टिप्पणी – मीरांमाधुरी–पृ० ८७ पद सं० २३७ की तीसरी से लेकर आठवीं पंक्ति क्रमभेद से मिलती है, शेष नहीं ।

पाठान्तर—२

साजन घर आवौजी मीठा बोला ।।टेक।।
आव निसंक संक मत मांनें, छांदे देइ भकभोला ।।१।। : रामा :
तरे कारण सबही त्यागया, काजल तिलक तमोला ।।२।।
तन मन वार करु निछरावल, लीज्यो स्यांम मोहोला ।।३।।
तुम देष्यां विन कल न पड़त, कर द(ध)रही जी कपोला ।।४।।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी,तौ आया होइगा मारा वाला ।।५।।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६१

टिप्पणी–मीरांवृहत्पदावली–पृ० २६६ पद सं ५६० से दूसरी तीसरी तथा पांचवीं पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता। वे पंक्तियां भी क्रमभेद से हैं।

पाठान्तर—३

साजन घरि आवौ मीठा बोला ।।टेक।।
कबकी षड़ी षड़ी पंथ निहारुं, थां आयां होसी भला ।।१।।
आव निसंक संक मति मानै, आया ही सुप ह्वैला ।।२।।
तन मन वारि करुं नवछावरि,दीज्यौ स्याम मोहोला ।३।।
आतरि वोहोत बिलम नहीं करनां, आया ही रंग रहला ।।४।।
तेरै कारणि सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला ।।५।।
तुम बिनि कल न परत है, कर धरि रही कपोला ।।६।।
मीरां के प्रभू हरि अविनासी, षिण मासा षिण तोला ।।७।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

पाठान्तर—४

साजन घर आवौ हो मीठा बोला ।
कबकी षड़ी मैं पंथ निहारुं, थां आयां होसी भला ॥टेर॥
अव निसंष संक मत मांने, आयांई सुष रैहैला ।
तन मन वार करुं निछरावल, दीजौ सांम मोहोला ॥१॥
आव सलूना विलम न कीजै, थों आयांई रंग रहैला ।
तेरं कारण सव सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला ॥२॥
तुम देष्यां विन कल न परत है, कर धर रही कपौला ।
मीरां कै है प्रभू हर अभनासी, षिण के मासौ षिण तोला ॥३॥

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १०८५१ से

राग गलतांनी सोरठ —

पाठान्तर—५

साजन घरि आवो मीठा वोला ॥टेक॥
कबकी षड़ी षडी पंथ निहारुं, थां आयां होसी भला ॥१॥
आव् निसंक संक मति मांनै आयां ही सुष ह्वैला ॥२॥
तन मन वारि करुं नवछावरि, दोज्यौ स्यांम महोला ॥३॥
आतरि वहोत विलम नही करनां, आयां ही रंग रहला ॥४॥
तेरै कारणि सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला । ५॥
तुंम देष्यां विन कल न परत है, कर धरी रही कपोला ॥६॥
मीरां कहै प्रभू हरि अवनासी, षिण मासा पिण तोला ॥७॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

३३

राग लुर ।

संता काचे रीज्यौ मा(म्हा)रो ईतरो जोर,आज बसो मा(म्हा)रे सेर मैं ।।टेक।।
धिन घड़ी पल आप पधार्‌या संता,चरण पवीत कीनी मा(म्हां)री भोम ।१।
अचलो(लो) विछाय करुं प्रना(णा)म, सीस निवाऊं मा(म्हां)रा दोनूं कर जोर ।२।
मा(म्हां)रा कम कठन होय लागा, आप पधारो जांरां निरमल होई ।३।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, साईयां साधुड़ा रो हिरदो वड़ो कठोर ।४।

राज० शो० सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७६६५ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु—पृ० ७७६ पद सं.८० से इस पद की द्वितीय पंक्ति नहीं मिलती, शेष पद मिलता है ।

३४

राग सोरठ ।

संईयां अरज बंदी री सुणि[1] हो ।
मो निगुणी रा सगुणा साहिब, अवगुणगारो रा गुण हो ।।टेक।।
राणैं जी पीयालौ विख रौ भेज्यौ,मोहि भगति रो पण हो ।१।।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर,म्हे कांई जांणा राणैं जी कुण हो ।२।।

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ से

सं. पाठ—१ सुण ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ३४१ पद सं. ६१ से इस पद की अंतिम पंक्ति के अर्द्ध भाग को छोड़ कर सम्पूर्ण पद मिलता है, किन्तु मीरांसुधासिंधु इस पद की ६ पंक्तियां है जबकि उक्त पद में ४ पंक्तियां ही हैं

पाठान्तर— १

सांईयां अरज बंदी री सग हो ।
मो निगुणी रा सुगण साहिब, ओगणगारी रा गुण हो ।।टेक।।
हूं तौ थांरो दासी जनम जनम री, तुम हौ हमारै वर हो ।
दीनदयाल करौ मो पर तुम, हौ गिरवरधर हो ।१।।
राणो जी प्यालौ विष नौं भेज्यौ, मोहि भगति नौ पण हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, कांई जांणु रांणों कुण हो ।२।।

संत साहित्य संगम बीकानेर के ह. लि ग्रं से

(राग गिरनारी सोरठि)

पाठान्तर— २

साईयां अरज बंदी की सुणि हो ।
मो निगुणी का सुगण साहिबा, औगणगारी का गुण हो ।।टेक।।
हूँ द सी तेरी जनम जनम की, तुम हो हमारे बर हो ।
दीनदयाल करि मोपे, मेहो सबही डर हो ।१।।
राणी जी विसरो प्यालौ भरि भेजीयौ, म्हारै भगति रौ पण हो ।
जाकूं राखै रांम गुसांई, तौ मारणहारो कुण हो ।२।।
आन देव म्हारी दाइ न आवै, तुम सूं लागै म्हारो मन [हो] ।
जैसै चद चकोर निहारै, यूं सुमरुं छिनि छिनि हो ।३।।
बेर बेर मोहि ब्रिह सतावै, ज्यूं काठे लागो घुण हो ।
मीरां नांव पीयालै छकी, कांई जांणू राणोजी कुंण हो ।४।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

३५

साजन वेला(ला) घर आजौ (ज्यौ) हो ।
आदि अंत के मित्र हो, हम कूं मुख लाजौ हो ।।टेर।।
हरि बनात चरना(णां) कल धरजौ, उठ मारग जोऊं हो ।
तोर (रे) कारण साईयां, भर नींद न सोऊं हो ।१।।
हरि बना सूरत कत धरजौ, मनसा न वैसर जौ हो ।
नजर पड़ा तम उपरै, मन तन धन वारजौ हो ।२।।
अवन्यासी आया सुण्या, म नव न(नि)ध पाई ।
मीरा(रां) कै दिल माहिला, दुख टेर सुणाऊं हो ।३।।
वा वरीया कव होवसी, कोई कहे सनेसा हो ।
मीरा(रां) कहै अैसी बात का, प्रभू खरा अनेसा हो ।४।।

राज. शो सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं. ७६६५ से

पाठान्तर—१

सजन वेला घर आज्यौ हो ।
आदि अंत के मंत हो, हम कूं सुख लाज्यौ हो ।।टेक।।
निस दिन मोहि [क] ल ना पड़े, नित मारग जोउ हो ।
साई तेरे कारणे, भारि नींद न सोऊं हो ।१।
अबनासी आया सुनों, जब नवनिधि पाऊं हो ।
साहिब सूं मन मांहिलौ, दुख टेरि सुनांउं हो ।२।
बावरीया कब आवसी, कोई कहत संदेसा हो ।
मीरां कहै इस बात का, मोहि खरा अंदेसा हो ।३।

राज शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं. ८२६१ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु—पृ. १६६ पद सं. २८ से उपर्युक्त पद की प्रथम चार तथा अंतिम दो पंक्तियां कुछ शब्दान्तर से मिलती है, शेष नहीं ।

३

हरि न वूझि वात माई मेरी,हरि न वूझि वात ।
देह मांहीं प्रांण पापी, निकसि क्यूं नही जात ॥टे०॥
रैण दूंधारी[1] व्रेहन[2] घेरी, तारां गितणे[3] विहाये ।
का कटारौं कंठे छेदौं, क मेरौ विख खाये ॥१॥
मुखां न वोलैं पल न खोल, सांझ अरु प्रभाति ।
अवोलण केई दिन वीते, काहि की कुसलात ॥२॥
सुपनैं मैं द्रस पायौ मैं, न जांणू जात ।
नैंण उघड़े मिले नांही, करौंगी तन घात ।३॥
आवैणा कहै गया छा हरि, आवैण की वात ।
दास मीरां लाल गिरधर, वालक ज्यूं विललात ॥४॥

राज. शो. सं. चौपासनी. जोधपुर के ह लि. ग्रं सं. ८२९९ से

सं. पाठ—१. अंधारी । २ विरहण । ३ गिणत ।

पाठान्तर—१

स्यांम नैं वूझी मोरी वात माई, मुनै स्यांम नै वुझी वात ।
आवण कहै गये आये नही, आवण ही की राति ।
रैण अंधेरी वीजली चमकै, तौ तारा गीणत वैहाल माई ।१॥
मुख न वोलै यो या पाट न खोलै, दीपै सरसरो रात ।
अवलो दउ जात हेरी माई, काहे की कुसलात माई ।२॥
काढि कटारी कंठ पहरो, काहे मरु विख खाय ।
वेग मोरा(रां)वाई के ठाकर, राज मेल्या दुख जाय ।३॥
माई मुनैं स्याम नु वुझी वात ।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह लि. ग्रं. सं. १८९० से

टिप्पणी-मीरांसुधासिंधु पृ १७९ पद सं.६० से प्रस्तुत पद की चौथी और आठवीं पंक्ति नहीं मिलती । इसी तरह पाठान्तर की भी प्रथम पांच पंक्तिय मिलती हैं, शेष नहीं ।

३७

राग विहंग—

हर विन पलक न लागै मेरी, सां(स्यां)म बिन पलक न जागै मेरी ।।टेर।।
हरि बिन मथुरा असि लगत है, चंद विन रैण अंधेरो ।१।।
पात पात बिंद्राविन ढुंढ्यौ, कुंज किलण[1] सब हेरी ।२।।
दिन ही न भूख र(रैंण)हण नहीं नीद्रा,तलफ तलफ रही हेरी ।३।।
मिरा(रां) के प्रभु गिरधर नागर, अब क्यूं भई अवेरी ।४।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. १६६७ से

सं. पाठ—१. गलण ।

टिप्पणी मीरांसुधासिंधु–पृ.२०३ पद सं. १२२ से उपर्युक्त पद की प्रथम तीन पंक्तियां मिलता हैं, किन्तु उनमें भी शब्दान्तर है। शेष दो पंक्तियां नहीं मिलती।

३८

हरि मारै आवन की कोई कहियौ रे ।।टेर।।
आप न आवै पतियां न भेजै, वांण पड़ी ललचावण की ।१।।
अै दौय नैन क्यौ नहि मांनै, नदीयां उलट गई सावन(ण) की ।।२।।
कहा करूं कित जाऊं मोरि सजनी,पांख नहीं उड जावन(ण)की ।।३।।
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, दासी भई तौरै पावन(ण)की ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं ११३ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. १७५–१७६ पद सं. ४७ से इस पद की प्रथम तथा अन्तिम पंक्ति पूर्णतया नहीं मिलती ।

३९

हेली म्हांसू हरि बिन रह्यौ न जाई ।।टेक।।
चौकी तो राखो भावं पहरा भी राखौ, ताला कांन जुड़ाई ।।१।।
बाबल रूसो भावै मायड रूसौ, वीरो जी परोरी रिसाई ।।२।।
सुसरो भी रूसो भावै सासू भी रूसो, खावद खरोरी रिसाई ।।३।।
चहूदिसा री सजनी सनमुख जोउ, कब रे मिलौगा हरि आई ।।४।।
मीरां के प्रभु राम सनेही, और न आवै म्हारी दाई ।।५।।

रा.-शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं. ८२९१ से

टिप्पणी —मीरांसुधासिंधु पृ ३९४ पद सं ४३ से इस पद की अन्तिम पंक्ति पूरी तथा दूसरी पंक्ति आधी नहीं मिलती।

पाठान्तर—१

हेली मोमूं हरि विनि रह्यौ न जाइ ।।टेक।।
सासू लड़ो री सजनी नरणद खिजो रो, पीव क्यूं न रहो रिसाइ ।।१।।
चौकी भी मेल्हौ सजनी पहरा भी राखौ,ताला(ला)क्यूं न जडाइ ।।२।।
पूरब जनम की प्रीति हमारी सजनी, सो क्यूं रहैरी लुकाइ ।।३।।
मीरां के तौ सजनी राम सनेही, और न आवै म्हारी दाइ ।।४।।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह.लि. ग्रं. से

पाठान्तर—२

सजनी मोसू हर विन रह्यौ न जाय ।।टेक।।
सासू लडौरी सजनी नरणद खिजोरी, पिव क्यूनी रहोरी आय । १।।
चौको भी मेलौ सजनो पौहोरौ भी राखौ, ताला क्यूंनी जड़ाय ।।२।।
पूरब जनम की प्रीत हमारी सजनी, कैसे रहूं री लुकाय ।।३।।
मीरां कै तौ सजनी राम सनेही. और न आवै मांरी दाय ।।४।।

राज शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ७१४३ से

४०

राग देसी —

श्रीतुलसी सुख निधान दुख हरन(ण) गुसाई।
बार बार प्रना(णा)म लीखूं, अब हरो सोक समुदाई ।।टेर।।
घर के स्वजन हमारे जेते, सबन उपाधि बढाई।
साध सगत अरु भजन करत मोही, देत कलेस महाई।१।
बालपनां(णां) ते मीरां कीनी, गिरधरलाल मीताई।
सो तो अब छुटत नांहि, क्यूं हू[1] लगी लगन बरीयाई।२।
मोर मात पिता के सम हो, हर भगतन सुखदाई।
हमको काहा उचत करबो है.सो लीखीयौ समुदा[झा]ई।३।
मीरा(रां) कहे प्रभु गिरधर नही छाडुं, प्राण क्यूनि जाई।
एह पत्री मै लीखी आप सूं, उतर लीखा गुसांई।४।

संत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. से

स. पाठ—१. क्यूं हो।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ६६० पद सं. १० से इस पद की अंतिम दो पंक्तियां नहीं मिलती। शेष पद मिलता है।

पूर्व प्रस्तुत मूल पदों के पाठान्तर

परिशिष्ट—५

[पृष्ठ सं० २५ पद सं० ४६ का पाठान्तर]

पाठान्तर—१

अरी हू गोविंद सो अटकी, तकत भये दोउ द्रग मेरे ।।१।।
लख सोभा नटकी कर मुरली, कटि काछनी राजै दामन उत पटकी ।।२।।
विन गोपाल लाल सुन सजनी, को जा[नै]न घटकी ।।३।।
हूं तो भटे सांवरे के बसि, लोग जाने भटकी ।।४।।
मीरा(रां) गिरधर रसिक लाल, संग कुंज लटकी ।।५।।

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० पत्रांक १५८-१५६

पाठान्तर—

राग रामकली ।

गोबिंद सौं अटकी री हूं गोबिंद सौं अटकी ।
थकित भयौ दोउ द्रग मेरे, देखि छवी नटकी ।।टेक।।
हौं तो रंग सांवरे राची, लोग कहै भटकी ।।१।।
विना गुपाल लाल बिन सजनी, को जाने घटकी ।।२।।
कर मुरली कंकन अति राजत दुति दांमने फटकी ।।३।।
लोक लाज कुल कांनि बिसारे, ग्रह नर हौं अटकी ।।४।।
मीरां प्रभु जी कै संगि रहूंगो, कुंज कुंज लटकी ।।५।।

रा. प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८८२ पत्रांक–५२ से

पाठान्तर—३ (राग रामकली)

गोबिंद सौं अटकी री हूं गोविंद सौं अटकी ।
....
अंग अंग आभूखन(ण) राजत बनमाला छटकी ।।२।।

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं.

[पृ० सं० १४, पद सं० २७ के पाठान्तर]

पाठान्तर—१

उधव म्हांनैं ले चालो जी सांवैरा कै देस ।।टेक।।
कबहु क छाडि मथरा नगरी, छाड्यौ नंदजी को देस। १।।
तुमरी कारणि जोगणि ऊंगी, करस्यां भगवां भेस ।।२।।
विभूति लगावूं गल म्रगछाला जटा बधावूं लांबा केस ।।३।
मीरां के प्रभू ग्रि(गिर,धर नागर, मन मै(में) घणां अने(न्दे)स ।।४।।

राज. शो. सं. चोपासनी जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. ८३९९ से

पाठान्तर—२

उधौ मांहा(म्हां) नै ले चालौ नी सांवरा रै देस ॥टेर॥
कबकी छोडी मथुरा नगरी, छोड्यो छोड्यो नंदजी रो देस ॥१॥
अंग व(भ)भूत गलै(लै) अगछाला(ला),सिर पर लंबा केस ॥२॥
पगां खड़ाऊ वन विचरुं, करगौ जौगिया कौ वेस ॥३॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, तन म तुंमारी पेस ॥४॥

राज. शो. सं. चौपासनी,जोधपुर के ह. लि.ग्रं. सं. १४५ से

पाठान्तर—३

उधो म्हांनै ले चालौ नी सांवरा रै देस ॥टेर॥
तारै कारन(ण)वन वन डोलूं, कर जोगन(ण) को भेस ॥१॥
अवद वदीती अजूंन आए, पडर हुय गया केस ॥२॥
है कोई असौ प्रभु कूं मिलावै, तन धन मन करुं पेस ॥३॥
मीरां कै है प्रभु गी(गि)रधर नागर, छोड्यो नार नरेस ॥४॥

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह लि. ग्रं सं १०८५१

[पृष्ठ संख्या ४३, पद संख्या ८७ का पाठान्तर]

राग सोरठ।

देखौ हरि कित गया नेहड़ौ लगाय ॥टेर॥
छोड़ चल्या विसवासघाती, प्रेम की वात सुनाय ॥१॥
घायल कर निरमायल कीनी, खवर न लीनी मेरी आय ॥२॥
वं है समद मै छोड़ चल्या है, नेह की नाव लगाय ॥३॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, रह्या छै माधोपुर छाय ॥४॥

रा. प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १०८५१ से

[पृ. सं. ८७, पद सं. १७७ के पाठान्तर]

राग सोरठ।

पाठान्तर—१

नंद घर चेरी मे रहूं बाबा, नंद घर चेरी ।।टेक।।
चरण चेउ में करूं, बंदगी चरणन चेरी।
टैल कै मिस दरसन(ण) पाऊं, मुगत होइ मेरी ।१।।
लौक लाज कौल(कुल)कांण तजकै, मगन होइ टेरी।
मोहनजी का बदन ऊपर, वार हू फेरी ।२।।
सासु नं[ण]द और देरांणी, झे(जे)ठाणी सब मिल झगड़ी।
मेरो मन लागौ रमतां राम सूं,बाला झख मारो सगरी ।३।।
कोई भली कहो कोई वुरी कहो रे, बाला मै मांड लैहू झोली।
दासी मीरां लाल गिरधर, वण रही जौ[ह]री ।४।।

रा. प्रा. वि प्र. जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. १२५८६ से

पाठान्तर—२

नद घर चेरी रसू(स्यूं) बावा नंद घरि चेरी ।।टेक।।
मात जसोदा को गोवर थांडु, पीवगो मेरो कवर कन(न्है)यो ।१।।
गोदे(द) खीलाऊं पावन की चेरी, कोटक न दो कोई ।२।।
कवंदी कोई कवंदी सुरत हमें ही मोहनजी के वदन ऊपर वारी हो ।३।।
कोटे वुरा कहो कोटे भला कहो री, माड ल(ले)हों जोरी(झोली) ।४।।
दास मीरां लाल गी(गि)रधर, भली पवनो जोरो ।५।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० से

पाठान्तर—३

हरि सू वावा नंद घर चेरी ।।टेक।।
सांवरी सुरत पर मेरो मन अट्यो, और कछु न सुहाव री ।१।
कोट काम नोछावर करहूं, मंद मंद मुसकाव री ।२।
जमना को तीर कदम की छइया, मुडी मुडी वेन वजाव री ।३।
मोर मुकट पीतांवर सोहै, कुंडल झलकत आ[का]नरी री ।४।
मीरा(रां) के प्रभु गिरधरनागर, चरन(ण) कवल(ल) लपटावरी ।५।

रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. से

[पृ. सं. ६६, पद सं. १४१]

मुज(झ) प्रेम म(में) हरि करो जी।
हरि आवनां(णा) हरि आवना(णा) जी मन भावना ।।टेक।।
मेरे द्रग तलफत द्रग देखन कु, गल कर दरस दिखायना ।१।।
लगी लगी सब कोई जानैं, आव कहो कैसे छिपावना ।२।।
मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, यो औसर नहो पावना ।३।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं से

[पृ० सं० ६६, पद सं० १४३]

मेरो प्यारो ननलाल[1] मुरली बजाय गयो बन में।
अ`जी बंसी की धुन सुन मै गई भूल, तन मन मोया मेरा प्राण ।१।।
अ`जी बण का मिरगला मोय लिया, अ`जी मोया सिंघ सियाल(ल) ।२।।
अ`जी ब्रज की गोपी मोह लइ, अ`जी चंदा मोया अकास ।३।।
अ`जी पाथर में पाणी बह गयो, जमना वही असराल ।४।।
अ`जी मीरा(रां) ने दरसण दे गयो, अ`जी वांका चिरण में ध्यान ।५।।

पिलानी से प्राप्त हरजसों से

सं. पाठ—१. नंदलाल

[पृ० सं० ७२, पद सं० १४८]

मैं तो छाडी छाडी कुल(ल) की कांनी [राणोजी] मेरो कहा करसी ।१।
सादा(धां)रै संग जासां दवारका में,(म्हे)तो भजस्यां श्रीरणछोर(ड़)।२।
दोडि र(रै) जास्यां देऊरे, लेस्यो(लेस्यां) महा प्रसाद ।३।
पगां वजावे[स्यां] घुघरा, हाथ में लेस्यो(स्यां) ताल(ल) ।४।
गास्यो (स्यां) गुन(ण) गोपाल।
पीहर छाडो मेरतो, सासरायो चीतोर (ड़ ।५।
वीखरो प्यालो राणै जी भेजोयो, मैतो इमंरत करि अरोग्यो ।६।
मीरां वाई ने गिरधर मिल्या, वह तो भगत वछिल प्रीत पाल(ल) ।७।

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह. लि. ग्रं. से

[पृष्ठ संख्या ७६, पद संख्या १६० का रूपान्तर]

म्हे जास्यां[सा]वरीया र साथ वाई म्हांन(नै) जगत हंसी है ।
जगत हसै हसि जाँणदे री टहैल करां जाय ।।टेक।।
माधुरी मुरति हिरदै वसी, म्हांने चित मे रही है लुभाय ।१।।
लोग कटुंबो निंदवै री, लगी प्रीत न घटाय ।२।।
जब देखां तव ही सुख उपजै, बिनि देख्यां जीव जाय ।३।।
सास ननद देली वोलिबो, म्हांना[णां]मात पिता पिछताय ।४।.
मीरा[रां] प्रभु गिरधर नी दासी, अबकै रऊं वारि ।।५।।

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह. लि. ग्रं. से

[पृष्ठ संख्या ८४, पद संख्या १७१ का रूपान्तर/पाठान्तर]

राधे वसि कीनो हो स्यांम सुजांन ।
धन जी रानी कुखि तुमारी,धन जी पीता वृखभान[ण] ।।टेक।।
सुनो रंग वेली राज गेहली,कहा कीया जी पुन दान(ण)।।टेक।।
सोवा जी सागर रुप उजागर, अखीयां मैं जान विजांन ।।टेक।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,दीज्यो जी भगत मोहि दान ।।टेक।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८६० से

भाव वाले पदों का रूपान्तर/पाठान्तर [पृ० ६६, पद सं० २०२]

फगवा दै गिरधारी हमारौ ।।टेक।।
गहवन मान भौंह करि बांकीं, मांगत राधा प्यारी ।१।।
नीची द्रिस्ट किये छुटि हों,क्यों कहू कुंज बिहारी ।२।।
कै तौ देऊ नांहि तो अब ही, निकसै ग्रेंड तिहारी ।३।।
मैं तन हाहा खात मनोहर, रंग चढयौं अति भारी ।४।।
जिन मीरां रस की झगरनि पर,निरखत होत बलिहारी ।५।।

रा. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं स. १०६७ से

पदों के आधार पर मीरां की आत्मकथा का अन्वेषण

परिशिष्ट–६

मीरां का जीवनवृत्त और काव्य, सम्प्रति अत्यन्त विवादास्पद रहे हैं। इसका कारण मीरां के जीवनवृत्त सम्बन्धी प्रामाणिक उल्लेख का उपलब्ध न होना तो है ही साथ ही मीरां की प्रामाणिक पदावली अभाव में भी यह समस्या जटिल हुई है। मेरी यह धारणा है कि मीरां अपने पदों में आज भी सजीव है। मीरां लोकनिधि है अतः उनकी वास्तविक खोज भी लौकिक सामग्री में ही होनी चाहिए। लोकमान्यताओं, लोकवार्ताओं किंवदन्तियों तथा लोक-काव्य एवं मीरां के पदों में मीरां व्याप्त है। आवश्यकता इस बात की है कि उस सम्पूर्ण सामग्री का चयन कर, उसमें से प्रामाणिक सामग्री अलग की जाय तथा शेष भक्त-समाज के मनोरंजन के लिए छोड़ दी जाय। इसी दृष्टि को ध्यान में रख कर प्रस्तुत पदों को संकलित किया गया है। किसी भी साहित्यकार अथवा भक्त के जीवन पर प्रकाश डालने वाले दो ही प्रकार के तथ्य हो सकते हैं–एक आंत-रिक और दूसरा बाह्य। मीरां के पदों के इस आंतरिक साक्ष्य से बहुत सी नई सामग्री उपलब्ध होती है। इन पदों को देखने से ज्ञात होता है कि मीरां के जीवन-वृत्त पर इनसे नवीन प्रकाश पड़ता है तथा कुछ ऐतिहासिक तथ्यों की पुष्टि होती है।

मीरां अपने आराध्यदेव श्रीगिरधर नागर के भक्ति–रस में रंगी, भाव-विभोर हो परिचयात्मक ढंग से गा उठी—

म्हारे हीरदे लीख्यो जी हरी नाम, अब नहीं बीसरुं।
म्हारी सेवा में सतगुरु राम ।।टेर।।
वीसका प्याला राणोराई भेज्या, दे मेड़तणी रे हाथ।
करी चरणाम्रत पी गई, थे जाणों रे रगुनाथ ।।१।।
जा य दासी म्हल में जोरे, मीरा मुई क नाही।
मुई वे तो जाल दो जी, न तो नदी में दो जी बुहाई ।।२।।
पावां वांद्या मीरां गुगरा जी, हाता लीनी ताल।
मीरां महल में ऐकली जी, भजे राम गोपाल ।।३।।

राणो मीरा परी कोपीयो जी, मारु ऐकरण सेल।
लाछरण लागें जीव कु, पीहर दीजो मेल ॥४॥
मीरां महल सु उतरी जी, राणा पकड़यो हात।
हतलेवा का साईना, मारे ओर न दूजी वात ॥५॥
रत वेल्या सीणगारिया, ऊंटा, कसीया भार।
डावो मेल्यो मेरतो जी, पहली पोकर जाई ॥६॥
सांडीड़ा साड्यो पोलाण, जा रे मीरां पाची फैर।
कुल की तारण असतरी, मुरड़ चर्ला राठौड़ ॥७॥
सांडीड़ा साड्यो फैर दे रे, परत न देसु पाव।
ले जाती बैकुंट में, समज्या नही सीसोद ॥८॥
लाजै छे पीयर सासरो मीरां, लाजे छै माय मोसाल।
लाजै दूदा जो रौ मेरतो जी, लाजै गढ चीतौड़ ॥६॥
तारूं पीयर सासरौ जी, तारुं माय मौसाल।
तारुं दुदा जी रो मेरती जी, तारुं गढ़ चीतौड़ ॥१०॥
लक्ष्मीनाथ के देवरे जी, बैठो सीसोदया साथ।
मीरां नाचे एकली जी, छाडी कुल की लाज ॥११॥
साध हमारा मै साध की, हम हें साधा आग।
साध हमारे में रम रया, ज्यु पथरी में आग ॥१२॥
मीरां को पीयर मेड़तो जी, सासरियो चीतौड़।
मीरां ने गीरधर जी मिल्या, नागर नंद किसोर जी ॥१३॥

इस पद से मीरां के जीवनवृत्त भक्ति, उपास्यदेव तथा साधु-संतों के प्रति श्रद्धा और प्रेम का पूर्ण परिचय हमें मिलता है। उपर्युक्त पद की प्रथम दो पंक्तियाँ पूर्णरूपेण मीरां के भक्तिपूर्ण उद्गार ही हैं, किन्तु पद के अंत तक आते आते लगता है जैसे यह पद संवादपूर्ण बन गया है और इसमें प्रक्षिप्त अंश का समावेश हो गया है। इस कारण इसकी प्रामाणिकता संदिग्ध भी हो जाती है। किन्तु, इतना अवश्य समझा जा सकता है कि इस पद के निर्माणकाल तक, लोकमानस में मीरां का यही स्वरूप और परिचय था। इस पद के ग्रंथ का लिपिकाल विक्रमी संवत् १८६६ है अतः संवत् १८६६ तक का मीरां का यह परिचय सिद्ध होता है।

उपर्युक्त पद से यह ज्ञात होता है कि मीरां के हृदय में हरि का नाम अंकित हो गया है। मीरां के ये हरि, उसके उपास्यदेव 'गिरधरनागर' अथवा 'गिरधर-गोपाल' श्रीकृष्ण ही हैं, किन्तु अपने आराध्य स्मरण में मीरां संकीर्ण नहीं है वह उन्हें हरि और राम दोनों ही रूपों में स्मरण करती है। यह हरि-स्मरण मीरां की आदर्श भक्ति का द्योतक है। साथ ही मीरां के 'सतगुरु' भी वे राम ही हैं अर्थात् हरि (विष्णु) के दूसरे अवतार। इससे यही ज्ञात होता है कि मीरां के उपास्यदेव अथवा आराध्यदेव ही गुरु थे। मीरां ने अलग से किसी लौकिक सत्-पुरुष को अपना गुरु नहीं बनाया। हरि के दो रूपों-राम और कृष्ण में मीरां ने कभी भेद नहीं समझा, इसी कारण ये दोनों शब्द मीरां के पदों में बार बार एक ही के पर्यायवाची शब्दों के रूप में आए हैं । यहां भी 'सतगुरुराम' कह कर मीरां अपने आराध्य की ओर ही संकेत करती है। अनेक नामों से भी वह अपने गिरधर को ही भजती है। श्रीमद्भागवत आदि पुराणों में श्रीकृष्ण ने स्वयं भक्ति को ऐसी स्थिति बताई है जब भक्त के प्रभु ही उसके गुरु होते हैं। यहां मीरां भी अपने सतगुरु का स्पष्ट उल्लेख करती है। इससे मीरां पर किसी गुरु का आरोपण असत्य ही ज्ञात होता है।

प्रस्तुत पद से ज्ञात होता है कि दूदा जी के मेड़ते और 'सिसोदियों' के गढ़ चितौड़ से मीरां का कोई सम्बन्ध है। चितौड़ के सिसोदिया राणाओं की वह 'कुल की तारण अस्तरी' है। 'राणा-राई' ने विषका प्याला भेजा था मीरां को मारने के लिए, क्योंकि मीरां ने लोकलाज छोड़ कर 'पाव गुगरा बांध' कर, हाथों में ताल लेकर, राम - गोपाल को भजा था। मीरां चितौड़ में 'मेड़तणी' के नाम से प्रसिद्ध है,तभी तो उसे मेड़तणी के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मेड़ता मीरां का पीहर है और चितौड़ ससुराल है। मेवाड़ और मेड़ता के इन दोनों कुलों से मीरां सम्बन्धित है। मेड़ता, दूदाजी के मेड़ता के रूप में और चितौड़, 'सीसोदिया' राणाओं के गढ़ चितौड़ के रूप में प्रसिद्ध है। मीरां को उसकी साधु-संगति, लोकलाज छोड़, पग घुगरू बांध कर नाचने के कारण, मारने का प्रयास किया गया। मारने के इन प्रयासों में विष का प्याला भेजना और एक ही 'सेल' (अस्त्र विशेष) से मार डालने के प्रयत्न शामिल है। विष के प्रभाव से मीरां बच जाती है और 'रथ और वैल्यौ' में वैठ कर तथा ऊंटों पर सामान वंधवा कर अपने पीहर (मेड़ता) की ओर चल देती है। इस समय मीरां सीधी

मेड़ता न जाकर, पहले प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर (पोकर) जाती है, इस कारण मेड़ता मीरां के बांई ओर रह गया है (डांवो मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई)।

पद के इस संकेत से मीरां के पुष्कर की तीर्थ यात्रा की पुष्टि होती है। मीरां के चितौड़ त्याग करने पर 'ऊंट सवार' को मीरां को वापस लिवा लाने को भेजा जाता है, किन्तु मीरां स्पष्ट कह देती है कि वह पीछे पांव नहीं रखेगी। इस पर उस ऊंट-सवार ने उसे बहुत समझाया कि आपकी इन बातों से आपके पीहर और ससुराल दोनों अपमानित और लज्जित होते हैं। आपका पीहर दूदा जी का मेड़ता है और ससुराल गढ़ चितौड़ है।[1] मीरां का उत्तर है कि मैं पीहर और ससुराल दोनों को लज्जित करने के बजाय 'त्यार' दूंगी अर्थात् गौरव प्रदान करूंगी।

प्रस्तुत पद में तत्कालीन आवागमन के साधनों का अत्यंत सजीव वर्णन है। 'रथ और बैलों' के साथ ऊंट - सवार उन दिनों राज-परिवार की महिलाओं के, एक स्थान से दूसरे स्थान जाने पर, प्रयोग किए जाते थे। मीरां भी कभी अकेली नहीं गई, उसके साथ भी पांच दस आदमी अवश्य थे।

चितौड़गढ़ में महाराणा कुंभा का बनाया हुआ वराह का मंदिर है जिसे अब तक मीरां का मंदिर कहा जाता रहा है और उसी को आधार बना कर मीरां को कुंभा की पत्नी मानने का प्रयास भी हुआ है।[2] किन्तु मीरां के पदों से यह स्पष्ट है कि वह मंदिर लक्ष्मीनाथ के मंदिर के रूप में, मीरां के समय प्रसिद्ध था। उसी लक्ष्मीनाथ के मंदिर (देवरे) में मीरां ने अपने प्रभु के भक्ति-गान गाये हैं।

मीराँ ने अपने पदों में स्पष्ट रूप से कुंभ स्याम के (कुंभ स्वामी) के देवरे (देवस्थान, मंदिर) का उल्लेख किया है। इसमे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि चितौड़-स्थित यह मंदिर मीराँबाई का मंदिर नहीं है, यह कुंभस्वामी का मंदिर है जो वि० सं० १५०५ से पूर्व बन चुका था[3]। अर्थात् मीराँ के जन्म (वि०सं० १५५५) से कई वर्ष पूर्व।

हां, यह संभव है कि मीराँ इस मंदिर में बैठा करती हो। भजन-भाव, श्रवण, कीर्तन करती रही हो। क्योंकि यह इतिहास का सत्य है कि भक्त रैदास जब चितौड़ गए थे तब इसी कुंभस्वामी के मंदिर में झाली रानी ने उनके दर्शन

किए थे। इस सम्बंध के प्रमाण रूप में रैदासजी के पैरों के चिह्नों का चबूतरा
इसी मंदिर के दालान में बना हुआ है।

मीरां के पदों को देखने से एक समस्या जटिल हो जाती है कि पदों में
वर्णित यह राणा कौन है? क्या यह 'राणा' मीरां के ससुर महाराणा सांगा हो
सकते हैं? अथवा कोई जेठ है अथवा देवर है अथवा मीरां के पति हैं? ये
राणा मीरां के पति नहीं हो सकते क्योंकि इतिहास इस बात की पुष्टि करता है
कि—मीरां के बड़े पिता (बाबोसा) राव वीरमदे दूदावत ने वि० सं० १५७३ में
मीरां का विवाह चितौड़ के महाराणा सांगा रायमलोत के ज्येष्ठ पुत्र युवराज
भोजराज से किया था। विवाह बड़ी धूमधाम से किया गया था। महाराणा
सांगा स्वयं अपने विक्रम हाथी के साथ मेड़ता गए थे। मीरां के विवाह-अवसर
पर इतना बड़ा 'तोरण' बनाया गया था कि उस पर ३०० दीपक रखे जा सकते
थे। मीरां का यह 'तोरण' कुछ वर्षों पूर्व तक मेड़ता के चारभूजा के मंदिर में
सुरक्षित था।

विवाह के कुछ वर्ष पश्चात् ही युवराज भोजराज का देहांत हो
गया था। अतः उन्हें 'राणा' शब्द से सम्बोधित नहीं किया जा सकता। मेवाड़
में 'राणा' केवल शासक के लिए ही प्रयुक्त होता है। भोजराज सांगावत कभी
मेवाड़ के राणा नहीं रहे अतः यह 'राणा सम्बोधन युवराज भोजराज के लिए
नहीं हो सकता।

---

३. "कुभस्वामी और आदिवराह के दोनों विष्णुमंदिर चितौड़ में एक ही ऊंची
कुर्सी पर पास पास बने हुए हैं। एक बहुत ही बड़ा और दूसरा छोटा है। बड़े मंदिर की
प्राचीन मूर्ति मुगलों के आक्रमणों के समय तोड़ डाली गई, जिससे नई मूर्ति पीछे से स्थापित
की गई है। इस मंदिर का भीतरी परिक्रमा के पिछले ताक में वराह की मूर्ति विद्यमान है।
अब लोग इसी को कुभस्वामी (कुंभस्याम) का मंदिर कहते हैं। लोगों में यह प्रसिद्धि हो
गई कि बड़ा मंदिर महाराणा कुंभा ने और छोटा उसकी रानी मीरांबाई ने बनवाया था,
इसी जनश्रुति के आधार पर कर्नल टॉड ने मीरांबाई को महाराणा कुंभा की रानी लिख
दिया है, जो मानने के योग्य नहीं है। मीरांबाई महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) के ज्येष्ठ
पुत्र भोजराज की पत्नी थी। उक्त बड़े मंदिर के सभा-मण्डल के ताकों में कुछ मूर्तियां
स्थापित हैं जिनके आसनों पर वि० सं० १५०५ के कुंभकर्ण के लेख हैं, जिनसे पाया जाता
है कि वह मंदिर उक्त संवत् में बना होगा। उदयपुर का इतिहास, ओझा—पृ० ६२२)

यदि यह मीरां के ससुर, जेठ अथवा देवर के लिए है तब भी ठीक नहीं है क्योंकि वे मीरां के 'हथलेवा के साईना' कैसे हो सकते हैं ? मीरां के 'हथलेवा के साईना' तो भोजराज ही हो सकते हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि यह शब्द मीरां के ससुर अथवा जेठ के लिए है तो एक प्रश्न उठता है कि मर्यादा का पोषक मेवाड़ का महाराणा, अपनी पुत्रवधु का हाथ पकड़ने की भूल कैसे कर सकता है ?

अतः यही कहा जा सकता है कि या तो यह राणा शब्द दो भिन्न भिन्न व्यक्तियों के लिए है अथवा यह पंक्ति प्रक्षिप्त मानी जाय तो यह महाराणा विक्रमादित्य के लिए संभव हो सकता है। महाराणा विक्रमादित्य सांगावत, जो महाराणा रतनसी सांगावत के पश्चात् मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठे थे। एक तो वे ऐसी ही विकृत प्रकृति के राणा के रूप में इतिहास में प्रसिद्ध हैं दूसरे वे मीरां के देवर भी थे अतः उनके लिए मीरां का हाथ पकड़ना भी सभव हो सकता है। अन्यथा न तो महाराणा सांगा रायमलोत ही ऐसा कार्य कर सकते हैं, जो स्वयं मीरां को पुत्रवधू बना कर लाए थ और न ही उनके बाद महाराणा बनने वाले रतनसी सांगावत ही। महाराणा रतनसी सांगावत ने मेवाड पर बहुत ही अल्प समय (वि० स० १५८४ से १५८८) तक शासन किया था और इस समय भी वे आंतरिक कलह में फँसे रहे और अंत में अपने मामा के साथ ही युद्ध करते हुए मारे गए। उन्हें न तो मीरां को सताने का अवसर मिला होगा और न ही वे महाराणा विक्रमादित्य जितने इतिहास में अपकीर्ति को प्राप्त हुए हैं। महाराणा रतनसी के बाद विक्रमादित्य राणा हुए और इनके बाद राजकुमार पृथ्वीराज रायमलोत का दासी पुत्र बणवीर महाराणा हुआ। बणवीर, दासीपुत्र कभी साहस नहीं कर सकता कि वह मीरां को सतावे ! बणवीर के पश्चात् उदैसी [उदयसिंह] सांगावत मेवाड़ के महाराणा हुए। महाराणा उदैसी सांगावत मीरां के चचेरे भाई जैमल वीरमदेवोत का बहुत सम्मान करते थे तथा धार्मिक वृत्ति[४] के महाराणा थे अतः उनसे भी मीरां को सताने की आशा नहीं की जा सकती। इसके विपरीत उन्होंने तो महाराणा बनते ही मीरां को मेवाड़ लाने हेतु अपने आदमी द्वारिका भेजे थे।

इस शब्द पर (समय को ध्यान में रख कर) विचार करें तो भी ज्ञात होगा कि मीरां अन्तिम रूप से वि० सं० १५९० तक चितौड़ में रही थी, इसके पश्चात् वह मेड़ता लौट गई थी। इस बात की पुष्टि बाह्य और आंतरिक साक्ष्यों

दोनों से होती है । बाह्य साक्ष्य से ज्ञात होता है कि वि० सं० १५९१ में मेवाड़ का द्वितीय शाका (जौहर) हुआ था जबकि गुजरात के बहादुरशाह ने दूसरी बार चितौड़ पर आक्रमण किया था । इस समय हुए जौहर में हाडी कर्मावती के साथ चितौड़ दुर्ग की समस्त स्त्रियों ने अपने प्राण अग्नि को समर्पित किए थे । कहते हैं इस समय १३०० स्त्रियों ने इस 'शाके' में भाग लिया था । कोई भी स्त्री जीवित नहीं बची थी ।[५] यदि मीरां इस समय चितौड में होती तो उसे भी जौहर करना होता । अतः इससे पूर्व ही मीरां ने चितौड़ त्याग कर दिया था और वह मेड़ता चली आई थी ।

मीरां के पद भी इस बात के द्योतक हैं कि जबसे उसे सताना आरम्भ किया गया उसके बहुत थोड़े ही दिनों तक वह चितौड़ में रही । अपनी व्यथा अपने बड़े पिता तक वह भेजने लगी थी—

सासरीया में दुख्ख घणेरो, सासू नणद सतावै ।
केजौ म्हारा बाबोसा ने, वेगा लेवा आवै ॥

अपनी पुत्री के इस करुण आमंत्रण पर राव वीरमदे स्वयं चितौड़ गए थे । इसी समय उन्होंने महाराणा विक्रमादित्य को भी बहुत समझाया था, किन्तु उनकी बात न मानने पर वे मीरांबाई को लेकर मेड़ता चले आए और वि० सं० १५९१ में बहादुर शाह द्वारा आक्रमण करने पर भी वे चितौड़ नहीं गए । जब कि इससे पूर्व के सभी युद्धों में वे महाराणा की सहायतार्थ गए थे ।[६]

राव वीरमदे दूदावत और उनके परिवार को, राणा परिवार द्वारा मीरां के साथ ऐसा व्यवहार करने पर अत्यन्त प्रायश्चित् हुआ था, जिसकी प्रतिध्वनि मीरां के इन पदों में मिलती है—

सास नणद दे लीवो लीवो म्हाना मात पिता पछताय ।

मीरां को भी चितौड़ के इस व्यवहार से अत्यन्त दुख हुआ था तभी तो कहती है—

मारा पियरीया रो लोक भले रो बांधे कंठीमाला

चितौड़ में मीरां के साथ जो व्यवहार किया गया उसके कारण चितौड़ त्याग ने के अतिरिक्त उसके पास और कोई चारा नहीं था । मीरां ने इसे अपने पदों में भी स्थान दिया है—

गढ़ चितौड़ ना रेवां, नहीं रहण को जोग

मीरां किसी भी किम्मत पर चितौड़ रहना नहीं चाहती थी। अतः उसे चितौड़ तो छोड़ना था पर चितौड़ छोड़ने के पश्चात् वह कहां जाय यह उसके समक्ष प्रश्न था। इसके दो ही रास्ते हो सकते थे--

१. या तो वह अपने पीहर मेड़ता लौट जाय, अथवा
२. अपने प्रभु के लीला-स्थलों के दर्शनार्थ चल दे।

मीरां के प्राप्त पदों से दोनों ही ध्वनियां और स्पष्ट संकेत मिलते हैं, किन्तु पदों के आधार पर यह निर्णय करना कठिन है कि मीरां चितौड़ से सर्वप्रथम कहां गई—पीहर, पुष्कर, वृंदावन अथवा द्वारिका ?

मीरां का मेड़ता-गमन—

सबसे पहली संभावना यही है कि मीरां अपने बड़े पिता के पास मेड़ना ही लौट गई थी और मेड़ता जाते हुए पुष्कर - स्नान करती गई होगी। इस बात की पुष्टि मीरां के पदों और इतिहास से भी होती है।[७]

विभिन्न कष्टों से तंग आकर मीरां ने अपने बड़े पिता[८] को अपनी करुण कथा कहलवाई (जिन्हें राजस्थान में बाबोसा कहा जाता है क्षत्रिय-समाज में विशेषकर) तथा राजस्थान में लड़की का बाबोसा की लाड़ली होना अत्यधिक प्रसिद्ध है। प्रत्येक कन्या अपने दादा और बाबोसा की लाड़ली होती है। यह परम्परागत प्यार मीरां को भी प्राप्त हुआ था। उसने बाबोसा को बड़े करुण स्वर में कहला भेजा कि मुझे लेने शीघ्र आ जावें। इसी संदेश के मिलते ही राव वीरमदे दूदावत चितौड़ पहुच गए और मीरां को मेड़ते ले आए। यह घटना वि० सं० १५८६ की है जबकि राव वीरमदे गुजरात के सुलतान बहादुर शाह के प्रथम चितौड़-आक्रमण के समय चितौड़ की रक्षार्थ गए थे।

मीरां वि० सं० १५६० तक मेड़ता में रही। मेड़ता मीरां को अत्यन्त प्रिय रहा है। उसके पदों में बार बार इस बात का उल्लेख मिलता है। मेड़ता के भक्ति पूर्ण वातावरण और सीधे साधे श्रद्धालु लोगों से मीरां को बड़ा स्नेह था। तभी वह बार बार कहती है—

१. म्हारा पियरीयारी बातां सतगुरु कैता जाज्यो
२. मारा पीयरीया री लोक भले री बांधे कंठीमाला

मीरां के इन पदों से भी यही संकेत मिलता है कि चितौड़ की दुखी मीरां
अपने प्रिय मेड़ते अवश्य गई थी। मीरां के पदों का यह उल्लेख कि—

'ढावों मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई'—भी मीरां की मेड़ता यात्रा की
ही पुष्टि करता है। मेड़ता आने से पूर्व मीरां तीर्थ-स्थल पुष्कर राज जाती है
और तत्पश्चात् मेड़ता पहुंचती है, यही संकेत प्रस्तुत पद का है।

मीरां के मेड़ता आगमन के कुछ समय बाद ही मारवाड़ के स्वामी राव
मालदे गांगावत ने मेड़ता पर आक्रमण कर दिया और राव वीरमदे दूदावत को
मेड़ता छोड़ कर अजमेर जाना पड़ा।[८] अजमेर राव वीरमदे, सपरिवार गए थे
अतः मीरां भी मेड़ता से उनके साथ अजमेर आ गई थी। राव वीरमदे दूदावत
अजमेर एक वर्ष ही रह पाये थे कि राव मालदे ने अजमेर पर भी अधिकार कर
लिया।[९] तब राव वीरमदे दूदावत नरणा और अमरसर की ओर चले गये।[१०]
इसी समय मीरां वृंदावन की ओर गई होगी। मीरां के वृंदावन गमन की
सूचना उसके पद देते हैं—

'रायघाट सब ढूंढ फिरि। वृदावन मेरी सांवरियौ'
जब मीरां को यह अनुभव होने लगा कि उसका सांवरा वृंदावन में है तब
वह घर से निकल पड़ी।

'घर से निकसी' (घर से निकलते ही) 'मौकुं छींक भई' अपशकुन हुआ
किन्तु दूसरी ओर 'आगे वांन सुनावै कागरिया'। इस शुभ शकुन के मिलते ही
मीरां वृंदावन को चल दी। जब वह वृदावन घूम चूकी तब उसने कहा—

वृंदावन नीजधाम। देख्यौ री मैं वृंदावन नीजधाम।
श्री जमुना ज्याकै नीकट वैहत है सब विध पूरण काम।
श्री बलदेव माहावनौं गोकल मथुरा जो विच राम।
गोवरधन श्री माणसी गंगा वरसाणौ नद गाम।
कुंज कुंज मैं कथा वसत है, नीस दिन आठुं याम।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, संतन के वीच राम॥

इन पदों के सजीव वर्णनों से भी मीरां की वृंदावन यात्रा की पुष्टि होती
है। साथ ही कुछ भक्तों ने भी मीरां की वृंदावन यात्रा की पुष्टि की है।[११]
आधुनिक साहित्यकारों में से कुछ इस यात्रा को स्वीकार करते हैं।[१२]

वृंदावन की तीर्थयात्रा करने के पश्चात् मीरां द्वारिका लौट जाती हैं जहां अपने जीवन के अंतिम समय तक वह रहती है।[१३] मीरां का द्वारिका गमन वि० सं० १५९७ तक हो गया था। सभी इतिहासकार, साहित्यकार एवं धार्मिक व्यक्ति इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि मीरां अपने जीवन के अन्तिम दिनों में द्वारिका में थी और वहीं उसने इस लौकिक देह का त्याग किया था। मीरां के पदों से भी इस बात को पुष्टि होती है। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या मीरां चितौड़ से सीधी द्वारिका गई थी अथवा पुष्कर, मेड़ता और वृंदावन जाने के पश्चात्। मीरां के कुछ पद ऐसे उपलब्ध हैं जिनसे मीरां के चितौड़ से सीधे द्वारिका जाने के संकेत मिलते हैं—

१. गढ चितौड़ै ना रहां, नहीं रहण को जोग
   बसस्यां रुड़ी द्वारिका : जांहां हरि भगतां राभोग।।
२. सादां रै संग जाय दवारका में तो भेजस्यां श्रीरणछोर।
   दोड़ि र जास्यां देउरे। लेस्यूं महाप्रसाद
३. मीरा उतरया मेल सूं जी। लीवी दवारका री बाट।।

कुछ आधुनिक साहित्यकारों की भी यही धारणा बन गई है कि मीरां चितौड़ से सीधी द्वारिका गई थी। वृंदावन आदि स्थानों को वह नहीं गई।[१४] किन्तु अंतः और बाह्य साक्ष्यों से इस बात की पुष्टि होती है कि मीरां पुष्कर, मेड़ता और वृदावन के पश्चात् ही द्वारिका गई थी।

इतना होते हुए भी मीरां का एक पद ऐसा है जिससे मीरां की सभी तीर्थयात्राओं के प्रति संदेह किया जा सकता है—

मेरा राम ने रिझाऊं अजी मैं तो गुण गोविन का गाऊं।
डालपात के हाथ न लाऊं ना कोई विरछ सताऊं।
पान पान में सायब देखूं झुक करि सीस निवाऊं।
गंगा जाऊं न जमना जाऊं ना कोई तीरथ नाऊं।
....

अड़सट तीरथ भरया घट भीतर जामें मलमल न्हाऊं।
....

साधू होऊं ना जटा बधाऊं ना कोई राख रमाऊं।

ग्यान कटारी कस कर बांधू सुरतां म्यांन चढाऊं।

पार बिरम पूरण पुरसोतम व्यापक रूप लखाऊं।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर आवागमण मिटाऊं।

यह इतिहास सम्मत तथ्य है कि मीराबाई जोधपुर के संस्थापक राव
जोधा जी रिडमलोत के पुत्र राव दूदा जी मेड़तिया के पुत्र रतनसी दूदावत की
पुत्री थी। राव दूदा जी जोधावत ने ही अपने भाई वरसी जोधावत के साथ
वि० सं० १५१८–१९ में मेड़ता में मेड़तिया शासन स्थापित किया था।[15] अतः
कालांतर में कई वर्षों तक मेड़ता दूदा जी के मेड़ता के नाम से जाना जाता रहा
है। मेड़तिया राव दूदाजी के ५ पुत्र थे:—(१) राव वीरमदे, (२) रायमल,
(३) रतनसी, (४) रायसल और ५) पीचाण जी।

इतिहास साक्षी है कि मेड़ताधीश राव दूदा जोधावत की वि० सं०
१५७२ में मृत्यु हो जाने पर, उनके ज्येष्ठ पुत्र राव वीरमदे दूदावत मेड़ता के
शासक हुए।[16] राव दूदो जी जोधावत के पुत्र अर्थात् राव वीरमदे दूदावत के
अनुज, रतनसी दूदावत की कन्या ही मीरांबाई थी। इस तरह मेड़ता के राव वीरमदे
दूदावत मीरां के बड़े पिता हुए अर्थात् पिता के बड़े भाई। राजस्थान में पिता
के वड़े भाई को 'बावोसा' कहा जाता है।

इस बात की भी इतिहास पुष्ठि करता है कि मीरां के पिता रतनसी
दूदावत, मेवाड़ के महाराणा सांगा और मुगल सम्राट बाबर के बीच हुए,
इतिहास प्रसिद्ध खानवा के युद्ध में महाराणा की ओर से लड़ते हुए वीरगति को
प्राप्त हो गए थे।[17] खानव का यह युद्ध विक्रमी सम्वत् १५८४ में हुआ था।[18]
चूंकि मीरांबाई का विवाह वि० सं० १५७३ में हुआ अतः यह युद्ध मीरां के
विवाह के ११ वर्ष बाद हुआ था। इस समय तक मीरां विधवा हो चुकी थी।

इतिहास इस बात को भी स्वीकार करता है कि मेड़ता के राव वीरमदे
दूदावत को महाराणा सांगा रायमलोत की वहन व्याही गई थी और इस तरह
चितौड़ मेड़ता के स्वामी राव वीरमदे दूदावत की ससुराल थी और महाराणा
सांगा रायमलोत उनके साले थे। इसी कारण उन्होंने महाराणा सांगा रायमलोत

की जीवनपर्यन्त, प्रत्येक युद्ध में सहायता की थी। यहां तक कि महाराणा के जीवन के उस अन्तिम युद्ध (खानवा) में भी मेड़तिया राव वीरमदे दूदावत ४००० सैना लेकर अपने दोनों छोटे भाईयों, रतनसी और रायमल के साथ महाराणा की सहायतार्थ गये थे जबकि महाराणा सांगा के जवांई (पुत्री के पति) मारवाड़ के स्वामी रावगांगा बाघावत उस युद्ध में नहीं थे। इसी युद्ध में राव वीरमदे दूदावत के दोनों भाई (रतनसी और रायमल) वीरगति को प्राप्त हुए थे।

इन्हीं राव वीरमदे दूदावत सहित पांचो भाईयों के बीच सबसे बड़ी कन्या मीरांबाई थी। अतः उन्हें बड़े लाड प्यार से पालापौषा गया था। मीरां का बचपन अपने यशस्वी दादा राव दूदा जोधावत की स्नेहमयी गोद में बीता था। अभावों से दूर राज वैभव और दुलार प्यार में पली मीरां, लौकिक दुर्भाग्य भी अपने साथ लाई थी। इस कारण मीरां को लौकिक सुख कभी प्राप्त नहीं हो सका। मीरां के जन्म के कुछ समय पश्चात् ही मीरां की माता का स्वर्गवास हो गया, जब वह विवाह के योग्य हुई तब अर्थात् वि० सं० १५७२ में उसके दादा राव दूदा जोधावत की मृत्यु हो गई। विवाह होने के कुछ वर्ष पश्चात् ही उसके पति इस संसार में नहीं रहे। उसके लौकिक पति उसके सभी सांसारिक आनन्दों की इतिश्री कर, उसे वैधव्य दे गए। मीरां अभी इस कष्ट को भूल भी न पाई होगी कि उसकी ससुराल के पितातुल्य ससुर महाराणा सांगा और मीरां के पिता और पिता के भाई (रायमल) की मृत्यु लीला ने मीरां को अत्यधिक दुखी कर दिया। इस प्रकार एक एक करके मीरां के सभी सहारे इस दुनियां से चले गए। केवल एक सहारा बचा और वह भी पीहर में, राव वीरमदे दूदावत का।

चितौड़ में महाराणा सांगा के समाप्त होते ही मीरांबाई के दुर्दिन प्रारम्भ हो गए। महाराणा सांगा की मृत्यु होते ही मीरां को अपमानित, प्रताड़ित कर कष्ट दिए जाने लगे जिसकी पराकाष्ठा महाराणा सांगा के द्वितीय उत्तराधिकारी उन्हीं के पुत्र महाराणा विक्रमादित्य सांगावत के शासन काल में हुई। अपने कुकर्मों के लिए इतिहास में कुख्यात महाराणा विक्रमादित्य ने अपनी भाभी को कष्ट देने में कोई कमी नहीं रखी, जिसकी लम्बी विथा मीरां के पदों में वर्णित है। यद्यपि इन पदों में कुछ अतिशयोक्ति, किंवदन्ती अथवा अप्रामाणिकता हो सकती है किन्तु सर्वथा मिथ्या संकेत, ये नहीं हो सकते। मीरां के पदों में पुनः पुनः उल्लेख है, मीरां को सताने, विष देने का—

१. तीसरा प्याला राणो राई भेज्या, दे मेड़तणी रे हाथ ।
२. मीरां ने जहर इंम्रत कर पीयौ
३. कनक कटौरे विष घोलियौ, दीयौ मीरां के हाथि
४. राव राना जहर दीन्या अधिक सौभा लसी
५. प्याला में वीष घोल दिया है, पीया है नीजदासी
६. कनक कटौरा में इमरत भर्‌यो, पीवत कौन नटै ।
७ कनक कटोरे लै विष घौल्यौ, दयाराम पांड्यो लायो ।
८. राणो मीरां पर कौपीयो जी, मारु एकरा सेल

इसी प्रकार—
'राणा' के साथ-साथ श्वसुर - परिवार के अन्य लोगों ने भी मीरां को जी भर के सताया । इसीलिए मीरां को कहना पड़ा—

१. सासरिया मैं दुःख घणौ रौ सासू नणद सतावै
....
देवर जेठ म्हारो कुटब कबीलौ नितउठ राड़ चलावे
२. देवर जेठ म्हारै कुबुधि, नीत की राड़े पछाड़
३. सासु नणद मारी देवर जैठांणी सब ही मिल जगड़ी
४. सास बुरी है मारी नणद हठीली

उपर्युक्त सभी पदों में मीरां को जहर देनें तथा सताने की करुण व्यथा भरी है । राणा-मीरां संवाद, इनमें से कुछ पदों की विशेषता है । राणा को मीरां के प्रत्युत्तर सारगर्भित और विद्वतापूर्ण हैं । मीरां की दृढ़ भक्ति और दुष्टों से दूर रह कर 'हरिजन' के साथ हरि-स्मरण करने के संकेत इन पदों में मिलते हैं । 'कनक कटोरे विष घोलियो' से यही ज्ञात होता है कि मीरां जैसी राजवधू को विप देते समय भी उचित पात्र चूना गया था । इसका कारण एक तो यह हो सकता है कि मेवाड़ का राजमहल इतना सम्पन्न था कि हीन से हीन कार्य हेतु भी सोने के कटोरे ही प्रयुक्त होते थे अथवा मीरां राजवधू थी अतः उस हेतु चरणामृत के नाम से भेजा गया विष भी सोने के कटोरे में ही होना चाहिए अन्यथा संभव है प्रतिदिन के विपरीत पात्र में प्रभु का चरणामृत देख कर मीरां को कुछ संशय हो जाता । यदि यह पद प्रक्षिप्त भी माना जाय तब भी इतना तो निश्चित है कि लोक - धारणा यही थी कि चितौड़ की राजवधू को विप भी सोने के कटोरे में दिया गया था ।

वि० सं० १५८८ से १५९१ तक का समय महाराणा विक्रमादित्य का ही है जब मीरां प्रतिदिन के कष्टों से दुखी होकर चितौड़-त्याग करती है। अतः कालक्रम से भी मीरां के पदों के निर्दयी और उसे सताने वाले राणा, विक्रमादित्य ही हैं। साथ ही इतिहास में इस बात का पर्याप्त उल्लेख है कि महाराणा विक्रमादित्य अपने बुर्जुग और चितौड़ के रक्षक सरदारों की हंसी उड़ाया करता था, उन्हें अपमानित करता और सताता था, जिसके कारण वे सभी चितौड़ छोड़ कर चले गए थे। इन सरदारों और सामंतों के चले जाने पर उसने ५०० पहलवान रख लिए। ऐसा व्यक्ति जो अपने दादा और पिता के समय के अनुभवी और चितौड़ के रक्षक सरदारों का अपमान कर, उन्हें चितौड़ छोड़ देने को विवश कर सकता है, उसके लिए भक्तमती नारी को सताना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अतः सभी दृष्टियों से यही ज्ञात होता है कि मीरां को सताने वाला, विष देने वाला राणा, विक्रमादित्य ही था।

मीरां को विष बड़े योजनाबद्ध तरीके से दिया गया था। इसका मार्मिक चित्रण मीरां ने अपने पदों में किया है—

कनक कटोरे विष घोलीयो, दीयो मीरां के हाथि
हरि चरणौदिक करि लीयौ, हरि जी भयो सुनाथि
सब मलि मतो उपाइयो, मीरां नै विषै द्यौ
कहयो मुख्यौ माने नहीं, नीच लग्यो हठ यौं
नगर वस बांमण बांणीयां, भीतर सुंदर पंवार
मुऊ मोड़े मुलक्या करे। समझे नहीं गंवार ।।

(सोने के कटोरे में विष घोला गया और उसे मीरां को भेजा गया। वे जानते थे कि सभव हे ऐसे मीरां इसे पान न करे। अतः इसे हरिचरणों का 'चरणामृत' कह कर भेजा गया। यह विष एकाएक नहीं भेजा गया। विष भेजने से पहले सबने बैठ कर विचार किया कि मीरां से छुटकारा पाने का एक ही तरीका है कि मीरां को विष दिया जाय। इस कार्य हेतु 'मुख्या' नाम के व्यक्ति को पकड़ा गया, किन्तु वह नीच भी हठ पूर्वक मना करता रहा। उसका संभवतः यह संकेत था कि नगर में (चितौड) ब्राह्मण और बनिये रहते हैं जो धार्मिक-प्रवृत्ति की जातियां हैं अतः मीरां को विष देने जैसा पाप कर्म चितौड़ में मैं नहीं कर सकता। वह गंवार मुंह मोड़े हुए मुस्कराता रहा, पर कुछ समझा नहीं।)

ष देने की इस घटना का उल्लेख मीरां ने अपने पदों में तो बार-बार
किया ही है साथ ही अन्य भक्तों और साहित्यकारों ने भी इस घटना का और
मीरां को सताने का उल्लेख किया है। १९

मीरां को विष देने के साथ-साथ लालच आदि भी दिए गए थे। इनका
संकेत मीरां के पदों से मिलता है—

राणो जी कागद मोकल्या जी। द्यो मेड़तणी ने जाहे।
साधां री संगति छोडि द्यो। थांका कुल ने लाछण थाह ॥
काठन की माला तजौ जी। पहरो मोतीहार।
भगताई थे दूर करो जी। सब ही राज तुमार ॥२॥

किन्तु, मीरां इस पर भी विचलित नहीं हुई। मीरां के कुछ पदों में मीरां
को विष देने के साथ सर्प पिटारा आदि भेजने का उल्लेख मिलता है—

सर्प पीटारा राणा जी भेज्या। द्यौ मेड़तणी ने जाय ॥

नागरीदासजी ने मीरां को विष देने की घटना का सविस्तार उल्लेख
किया है—

'मीराँबाई सौं राना बहौत दुख पाय रहै, राना के घर की रीत तें, इनके
भिन्न रीत, यह भगवन्न सम्बन्धी सत्यसंग विसेस करे, देह-सम्बन्ध को नातो
व्यौहार, कछु न मानै, राना बहुत समुझाय रहयौ, निदान एक विष को प्यालो
उनकौ पठ्यो, कहयौ चरनामृत को नाम ले कै दीजियो, उनके प्रण है,
चरनामृत के नाम तें पी जायेंगे, सो असौ ही भयो, जानि बूझ पियो,
राना तो इनके मरिबे की राह देखत रह्यो अरू यह झांझ मृदंग संग ले के परम
रंग मौं एक नयों पद बनाय ठाकुर आगै गावत भये, यह पद बहुत प्रसिद्ध भयो, सौ
वह यह पद—

रानै जू विष दोनौं हम जानो।
जान बूझि चरनामृत सुनि, पीयो नही बौरी भौरानी ॥
कंचन कसत कसौटी जैसै, तन रह्यो बारह बानी।
आपुन गिरधर न्याय कियौ, यह छान्यो दूध अरू पानी।
राना कौटक वारौ जिहि पर, हौं तिहि हाथ विकानी।
मीरां प्रभु गिरधर नागर के, चरन कमल लपटानी।[२०]

पाद टिप्पणियां—

१ (क) जयमल वंश प्रकाश – गोपालसिंह मेड़तिया, पृ० ७०
(ख) उदयपुर राज्य का इतिहास-पहला भाग-गौरीशंकर हीराचंद ओझा
पृ. ३५८
(ग) मारवाड का इतिहास–विश्वेश्वर नाथ रेऊ, पृ० ११८
(घ) मारवाड़ का मूल इतिहास–पं० रामकर्ण आसोपा, पृ० ११३
(ङ) पूर्व आधुनिक राजस्थान–डॉ० रघुवीरसिंह सीतामऊ, पृ० २३
(च) महाराना सांगा–हरबिलास शारदा, पृ० ९५
(छ) वीरविनोद–श्यामलदास, पृ० ३६२

२. (क) उदयपुर राज्य का इतिहास–ओझा, पृ० ६२२
(ख) एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज आफ राजस्थान–कर्नल टॉड, पृ० २३२
३. महाराणा कुम्भा—रामवल्लभ सोमानी, पृ० २८०
४. मुंहता नैणसी री ख्यात–सं० बदरीप्रसाद साकरिया, पृ० १११
५. नैणसी री ख्यात (प्रथम भाग) पृ० ५५
६. (क) गोपालसिंह मेड़तिया, वर्ष २ खण्ड २
(ख) डावों मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई—
७. सुधा (लखनऊ) फाल्गुन वर्ष २ खण्ड २–लेखक–गोपालसिंह मेड़तिया
८. मारवाड़ रा परगना री विगत (नैणसी) भाग २ सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, पृ० ५२
९. (क) जयमल वंश प्रकाश–गोपालसिंह मेड़तिया पृ० १
(ख) मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ३–पृ० ९८
१०. अमरसर के कछवाहे–देवीसिंह मड़वा, शोधपत्रिका, पौष वि.सं. २००९ भाग ४ अंक २
११. (क) वृंदावन आई जीव गुसांई जू सों मिली झिली, तिया मुख देखिबे की पन लै छुटायो ।।
—प्रियादास जी की भक्तिरस बोधिनी टीका
(ख) जा ब्रज जीउ मिली पन हौं तिय, देष तनै सुण ताही छुड़ायौ
—राघवदास जी दादूपंथी
(ग) ता पीछै मीरांबाई गंगादिक तीरथ करिकै अरू श्री वृंदावन हू आये, तहां जीऊ गुसांई जू को प्रण स्त्री के न देखिवे को छुटाय–सबौं गुरु गोंविंदवत सनमान सत्संग करि द्वारिका कौं लले (नागरी दास)
१२. डा० सत्येन्द्र, डा० कृष्णलाल आदि
१३. डा० प्रभात, मीरांबाई शोधप्रबन्ध
१४. डा० हीरालाल माहेश्वरी–राजस्थानी भाषा और साहित्य
१५. जयमल वंश प्रकाश—गोपालसिंह मेड़तिया, पृ० ७०
१६. उपर्युक्त, पृ० ७१–७२
१७. (क) मारवाड़ का मूल इतिहास–रामकरण आसोपा पृ० १२५-१२६
(ख) महाराणा सांगा–हरविलास शारदा पृ० १४४
(ग) उदयपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौ०ही० ओझा पृ०३७३-३७४
१८. उदयपुर राज्य का इतिहास, ओझा (पहली जिल्द), पृ० ३७४–७५
१९. (क) नाभादास की भक्तमाल
(ख) नरसी मेहता
(ग) नागरी दास, (घ) ध्रुवदास
२०. नागरी दास

पदानुक्रमणिका

पद-संकेत पृष्ठ संख्या

परिशिष्ट (१)

राग-रागिनी पद संग्रह-अनुक्रमणिका

परिशिष्ट (२)

मीराँ के प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले अप्रकाशित पदों को अनुक्रमणिका

परिशिष्ट (३)

मीराँ के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियाँ ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है, शेष पद नहीं।

परिशिष्ट–४

मीराँ के वे पद जिनकी अधिकांश पंक्तियां पूर्व प्रकाशित पदों मे मिलती है, केवल एक या दो पंक्तियां नहीं मिलती ।

परिशिष्ट—५

पूर्व प्रस्तुत मूल पदों के पाठान्तरों की अनुक्रमणिका ... २२७

शुद्धिपत्र

'भूमिका के अन्तर्गत'

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	अघुनावधि	अद्यावधि
१	२२	सभा	सभी
४	२२	उपरोक्त	उपर्युक्त
८	२	सत	संत
८	२२	रागरागनियों	रागरागिनियों
८	२५	रागिनडियों	रागिनियों
८	२८	नमें	इनमें
८	२८	रागनियां	रागिनियां
६	४	रागनी	रागिनी
६	४	रागनियां	रागिनियां
६	२६	कुल	कुछ
१०	१	सूचिपत्र	सूचीपत्र
१०	७	के	के' की आवश्यकता नहीं है
११	१	--	पदों की
१२	६	--	कुछ छूट
१२	१७	--	किया है
१२	१६	वश्वसनीय	विश्वसनीय
१२	२१	हरजसों	हरजस
१२	२३	छ	कुछ
१२	२६	अघुनावधि	अद्यावधि
१३	१७	तथा	यथा
१३	२२	सकलन	संकलन
१४	५	संमव	सम्भव
१४	७	कों	का
१४	८	क	किया
१४	२१	सकलन	संकलन
१४	२२	गितेरोध	गतिरोध
१४	२४	भावसम्य	भावसाम्य
१५	२	से	में
१५ (फुटनोट)	३	स्पष्ठ	स्पष्ट

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१६ (फुटनोट)	१७	के	के' की आवश्यकता नहीं
१६ (फुटनोट)	१२	प्रभाव	प्रकाश
१६ (फुटनोट)		उन पर की	उनकी
१६ (फुटनोट)		सभी	सभी शब्द की आवश्यकता नहीं
१८ (फुटनोट)	१०	मीर्राबाई	मीराँबाई
१९	१३	का	के
१९	१४	अजर अमर अलौकिक	अजर, अमर, अलौकिक
१९	९	लि	लिं
१९ (फुटनोट)	११	मिल	मिस
२१	६	।	?
२२	२४	जीवनि	जीवनी
२३	३	वह	वे
२४	२१	जोगेश्वर	'जोगेश्वर'
२६	१	जिस विरद	जिन विरदों
२६	२	वही	वे ही
३२	७	मिलया	मिलयां
३३	३	हमार	हमारे
३४	२४	को	'को' की आवश्यकता नहीं
३५	७	आने	जाने
३५ (फुटनोट)	६	जी	जीव
३६ (फुटनोट)	२५	बछड़ें	बछड़े
३७	४	हैं	है
३७	५	अध्यात्मिक अलौकिक पूर्ण ब्रह्म	अध्यात्मिक, अलौकिक एवं पूर्ण ब्रह्म
३८	१९	मारां	मीराँ
३८ (फुटनोट)	५	मोरां	मीराँ
४१ (फुटनोट)	१	प्रभाषक	प्रकाशक
४१ ,,	,,	प्रतिक	प्रतिष्ठान, जोधपुर
४३	४	माराँ	मीराँ
४३	५	शद	शब्द
४४	९	छिन	घिन
४४	१३	चरण	प्रथम
४४	१४	सत	संत

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
४४	२१	छिन्न	भिन
४४	२२	सतां	संतों
४५	४	सत-समागम	सत-समागम
४५	१६	सागां	लासां
४६	१७	दर्शनार्थ	दर्शनार्थ
४७	१४	कल्पना तो क्या, विचार भी असंभव है	विचार तो क्या, कल्पना भी असंभव है।
४७	१८	गृहित	गृहीत
४७	२३	( )	स्थान नहीं
४८	२२	संदेहात्मक	संदेहास्पद
४८	२३	विवादात्मक	विवादास्पद
४९	६	किंवदतियों	किंवदतियों
४९ (फुटनोट)	८	श्री विश्वेवर	श्री विश्वेश्वर
५० (फुटनोट)	११	सूर्य राम	सूर्यराम
५० (फुटनोट)	१२	ससस्या	समस्या
५० (फुटनोट)	१६	चतुर्वेदी	चतुर्वेदी
५२	२६	श्री विश्वेवर	श्री विश्वेश्वर
५२ (फुटनोट)	१	इतिहासवेता	इतिहासवेत्ता
५२ (फुटनोट)	८	जीपां	पीपां
५३ (फुटनोट)	५	संस्कृते	संस्कृत
५३ (फुटनोट)	७	का	मार
५३	१२	अस्तवल	अस्तवल
५४ (फुटनोट)	१	पदवि	पदवी
५४ (फुटनोट)	८	वागबिल	दाइबिल
५४ (फुटनोट)	९	सूर्यत्रंण	सूर्यवश
५४ (फुटनोट)	१४	थनधन	धनधन
५४ (फुटनोट)	१७	अथं	अर्थ
५४ (फुटनोट)	१८	प्रकाथ	प्रकाश
५४ (फुटनोट)	१९	उज्जवल	उज्ज्वल
५५	१४	वाङ्गमय	वाङ्मय
५५ (फुटनोट)	३	फ्र्न्च	फ्रेंच
५५ (फुटनोट)	५	(रेयिस्तान)	(रेगिस्तान)
५७	१०	तथा मूल पाठ अनुसंधान सम्बंधी सिद्धान्तो	(यह वाक्य दो बार छप गया है—होना एक ही बार चाहिए।

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
५६	२४	का	को
६१	२२	निणय	निर्णय
६२	६	एव	एवम्
६२	८	,,	,,
६२	८	अपने	आपने
६२	८	एव	एवम्
६२	१०	भहत्व	महत्व
६२	१३	काय	कार्य
६२	१६	( )	की' शब्द होना चाहिए
६३	३	( )	मीराँबाई की बृहत्पदावली
६४	३	अत्यंत प्रिय है	अत्यंत लोकप्रिय है।

'मूल पदावली के अन्तर्गत'

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	काढि	काढ
३	शीर्षक पंक्ति	माग	भाग
३	१८	ग्र०	ग्रंथ
३	१ (सम्पा० पाठ)	वालपणों	बाळपणों
४	१	खबायची	खमायची
५	शीर्षक पंक्ति	माग	भाग
६	२ (सम्पा० पाठ)	कहीं	कांई
६	४ (सम्पा० पाठ)	गेहणे	गे'णों
७	३ (सम्पा० पाठ)	सांईया	सांईयां
८	१५	फूले	फल
८	३ (सम्पा० पाठ)	बधावना	बधावणा
८	४ (सम्पा० पाठ)	सुंणे	सुण
८	५ (सम्पा० पाठ)	मंगल	मंगळ
९	१ (सम्पा० पाठ)	वसरी	वंसरी
११	२ (सम्पा० पाठ)	आखड़ली	आँखड़ली
१३	३ (सम्पा० पाठ)	याकं	जाकं
१३	५	हांसे	यां से, यहां से

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१६	२ (सम्पा० पाठ)	गोप्या	गोप्याँ
१६	३ (सम्पा० पाठ)	सावरिया ने	साँवरिया ने
१६	३ (सम्पा० पाठ)	आंगलिया री	आंगळियां री
१६	४ (सम्पा० पाठ)	यारे	हमारे
१७	१४	(इंद्र)	(इद्रगढ़-संग्रह)
१८	३ (सम्पा० पाठ)	जानूँ	जाणूँ
२०	२ (सम्पा० पाठ)	अफूठं	अपूठो
२१	१७	ग्र०	ग्रन्थ
२१	१८	ग्र०	ग्रन्थ
२२	१६	ग्र०	ग्रन्थ
२३	१ (सम्पा० पाठ)	सावति	सावत, सीधा
२४	१४	ग्र०	ग्रन्थ
२४	१ (सम्पा० पाठ)	मच्छी	मछली
२४	१ (सम्पा० पाठ)	विरहिणी	ब्रिरहणी
२४	३ (सम्पा० पाठ)	म्हें	म्हे
२४	५ (सम्पा० पाठ)	म्हखो	म्हारो
२५	२ (सम्पा० पाठ)	ज्याने	जिण
२६	१६	ग्र०	ग्रन्थ
२६	१ (सम्पा० पाठ)	किला है	सालसा है
२७	४ (सम्पा० पाठ)	वशी	बस्या
२८	१६	ग्र०	ग्रन्थ
२८	२१	ग्र०	ग्रन्थ
२९	१ (सम्पा० पाठ)	झबीलो	छबीलो
३१	१ (सम्पा० पाठ)	पर्ण पेरण	पंरण
३२	१४	ग्र०	ग्रन्थ

नोट— मुद्रण सम्बन्धी असावधानी के कारण अनेक स्थलों पर अनुस्वार का बिन्दु उभर नहीं पाया है, अतः विद्वान् पाठकों से अनुरोध है कि वे ऐसे शब्दों का शुद्ध रूप पढ़ने का अनुग्रह करें :